॥ श्री ॥

जर्राही प्रकाश।

* चारां भाग *

❀ जिसको ❀

मथुरा निवासि श्रीकृष्णलाल ने जर्राहों के
उपकारार्थ जर्राही संबंधी उर्दू व
संस्कृत डाक्टरी आदि के अनेक ग्रंथों
का सारभाग लेकर लिखा।

* इसी को *

किशनलाल द्वारकाप्रसाद ने
अपने "बम्बई भूषण" छापखाने में
छापकर प्रकाशित किया।

Printed by Kishanlal
Bombay Bhushan Press
MUTTRA
[illegible]

निवेदन ।

मित्रवर !

यदि कोई यह कहे कि भारतवर्ष में जर्राही (शस्त्रचिकित्सा) के विषय में कोई ग्रंथ ही नहीं है, यह केवल उनकी भूल और अनभिज्ञता है। चरक सुश्रुत वाग्भट सब प्राचीन ऋषियों ने अपनी अपनी संहिताओं में इस विषय पर अध्याय के अध्याय लिखे हैं, यंत्र और शस्त्रों के नाम उनकी आकृति, बनाने की विधि, उनका उपयोग, प्रयोग की रीति, चिकित्सा आदि सबही आवश्यकीय बातें उनके ग्रंथों में लिखी हैं, पर हां उन बातों के अध्यापक वा अध्येता दोनों ही का अभाव होने से जो कुछ दोषारोपण कियाजाय वही थोड़ा है ।

हिन्दी भाषा में ऐसे ग्रंथ की बड़ी आवश्यकता थी इसलिये मैंने बहुत से उरदू, फारसी, संस्कृत व अंग्रेजी ग्रंथों से उद्धृत करके यह ग्रंथ लिखा है, इसमें फोड़े, फुंसी, सुजाक, आतशक, प्रमेह, नपुंसकत्व, नेत्ररोग आदि की चिकित्सा लिखी है एक एक विषय पर अनेकानेक नुसखे लिखे हैं । दूसरे भाग में उपयोगी अस्त्र शस्त्रों के चित्र भी दिये है । ग्रंथके आदि में नस, हड्डी, रग, पसली, कपाल, आदि दिखाने के चित्र हैं पट्टी बांधने, के चित्र भी दिये हैं, जिनके मनन करने से बहुत ज्ञान प्राप्त होजाने की संभावना है ।

यह ग्रंथ मेरी इच्छाके अनुकूल नहीं हुआ है, अवकाश मिलने पर एक बड़ा ग्रंथ लिखूंगा, जिसमें असंख्य उपयोगी विषयों का समावेश होगा ।

भवदीय—
श्रीकृष्णलाल मथुरा

पुस्तक मिलने का पता—

पं० श्रीधर शिवलालजी
'ज्ञानसागर' छापाखाना
बंबई

किशनलाल द्वारकाप्रसाद
चन्द्रभूषण छापाखाना
मथुरा ।

॥ जर्राहीप्रकाश की अनुक्रमणिका ॥

इति

पृष्ठभागप्रदर्शकअस्थिपंजर
अग्रभागप्रदर्शकअस्थिपंजर
ग भुजदंडास्थि
घ कूर्परास्थि
च वंक्षणअस्थि
ट गुल्फसंधि

इति

अग्रभागप्रदर्शकअस्थिपंजर
क कर्तास्थि
ग भुजदंडास्थि
अ कूर्परास्थि
र वंक्षणअस्थि
ट गुल्फसंधि

शिराप्रदर्शकचित्र
धमनीप्रदर्शकचित्र
१ मस्तिष्कमज्जातन्तु
२ निम्नमस्तिष्कमज्जातन्तु
३ ग्रीवातन्तु
४ नासिकातन्तु
५ स्कान्धस्थतन्तु
६ पार्श्वतन्तु
७ नितम्बतन्तु
८ जानुतन्तु
९ जंघातन्तु
१० दक्षिणजानुतन्तु
११ दक्षिणजंघातन्तु
हस्तशिराप्रदर्शकचित्र

शरीरका मुख्य आधार अस्थि पंजर परहैइसहीसेशरीरका आकार,दृढतागमनशक्तिउत्पन्नहोतीहै इसहीपरसम्पूर्णकार्यका व्यवहारनिर्भरहै शरीरमें सम्पूर्णअस्थिसंख्याइसप्रकारहै खोपडीमें ८ चहरामें १४ गर्दनकेऊपर १ करवटमें २६ उरमें १ पासूमें २४ सम्पूर्णहाथमें ६४ सबपावमें ६२ इसतरहमिलकर २०० हैं दांत ३२ औरप्रत्येककानमें तीनतीनछोटीअस्थिहै सबमिलकर २३८ होतीहै ।
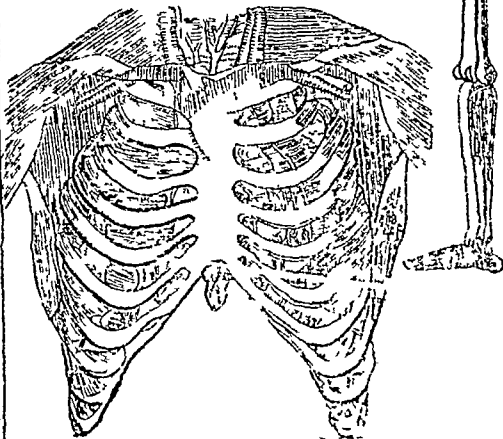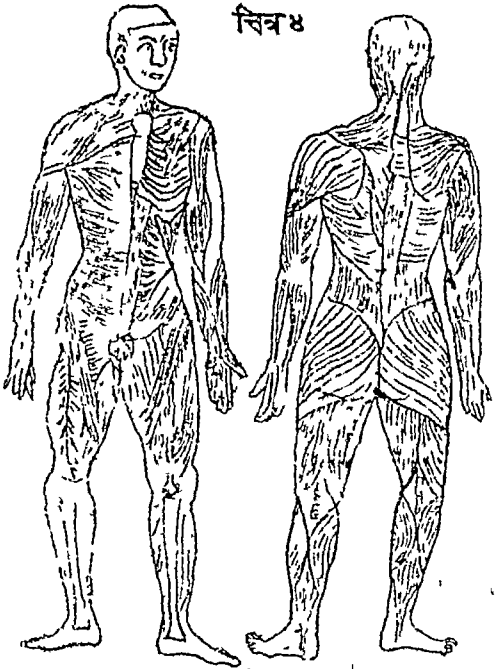
चित्र ४
बड़ी पेशीकी आकार।
१-कपाल मनुष्यकी खोपड़ी
२-दांत ३-जाबड़ा (नीचेका)
कूल्हे

जिव्हाप्रदर्शकचित्र
टकना
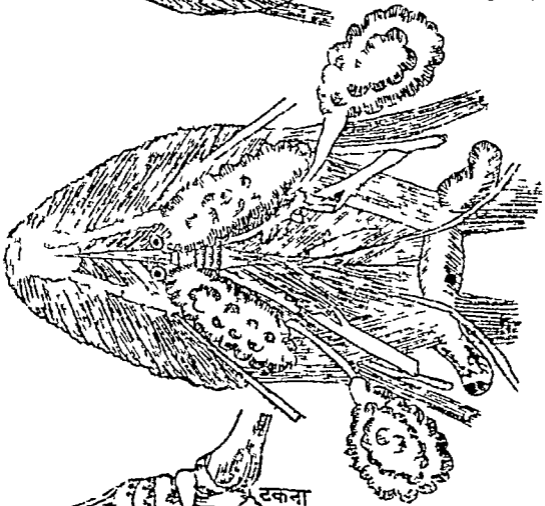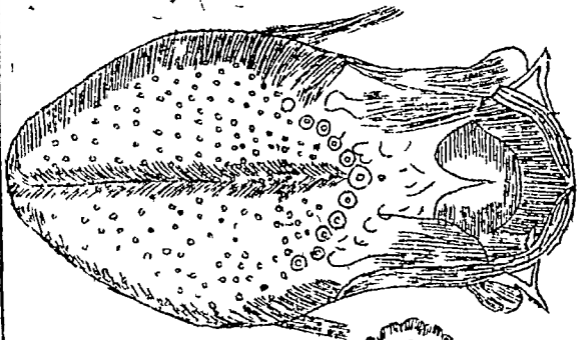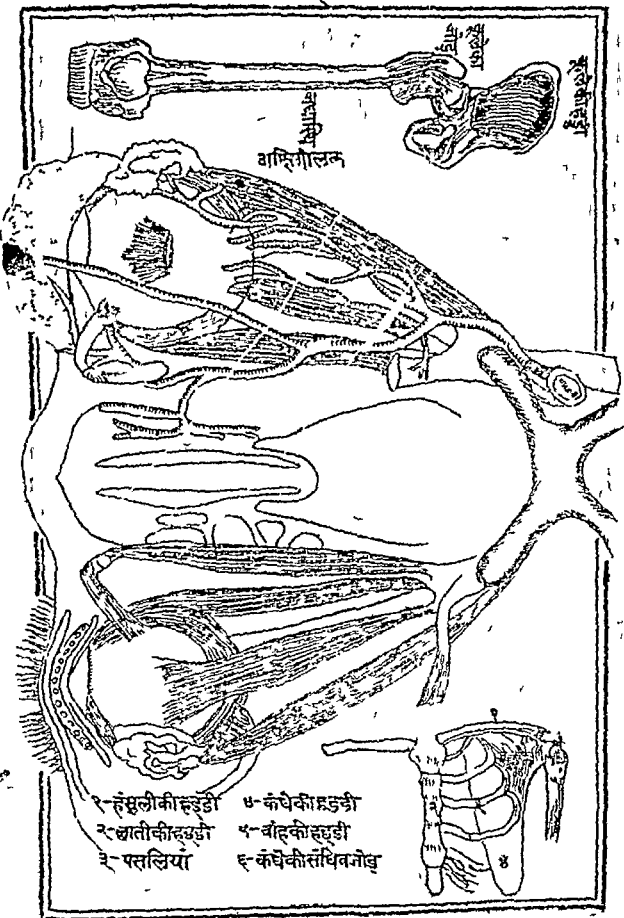
१-हंसुलीकीहड्डी
२-छातीकीहड्डी
३-पसलियां
४-कंधेकीहड्डी
५-बांहकीहड्डी
६-कंधेकीसंधिवजोड़
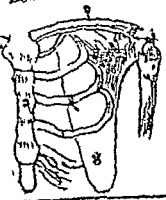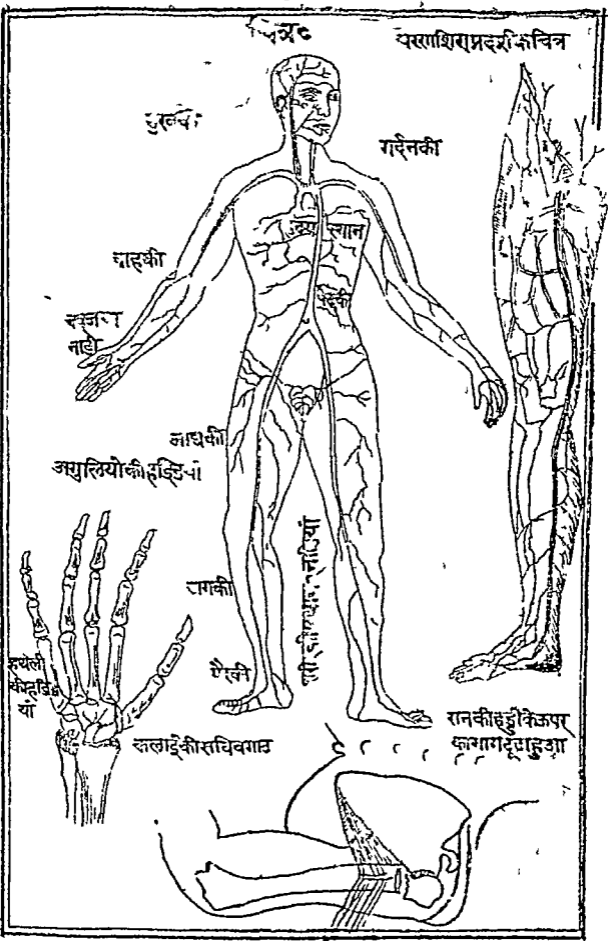
गर्दनकी
रानकीहड्डीकेऊपर

चित्र १३
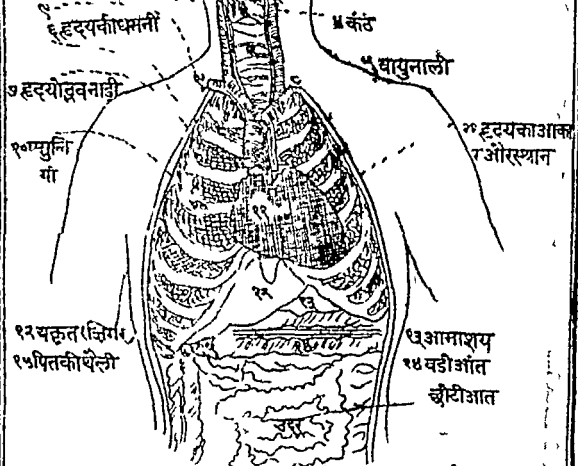
(१) खुलीहुई छाती औरउसकेभीतरहृदय औरफेफडोकेस्थानऔरआकार।
(२) खुलाहुआउदर औरआमाशययकृतआंतोकेस्थानऔरआकार।

(शीर्षतन्तुप्रदर्शकचित्र)
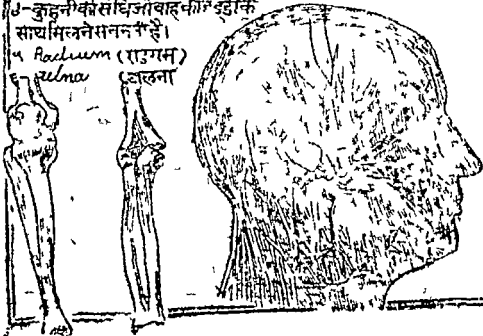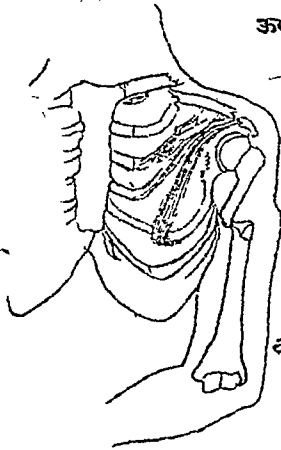
ऊपरकीबामशाखा
बांहकीहड्डीकानीचेंका
भागटूटगयाहै
कुहनी
दफ्ती
कपड़ा
कपड़ा
सिरकी
बन्दूकोंकीकिरचें
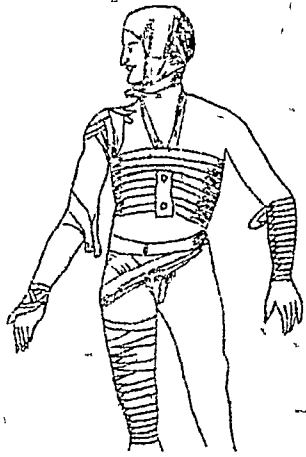
भिन्नभिन्नस्थानकेबंधन
तिकोनियाबन्धनेसिरबांधना
तिकोनियाबन्ध
नसेहाथबां
धना
द्विगुणकटिबन्धन
फोरटेल्डबैन्डेज
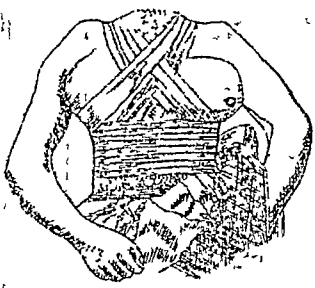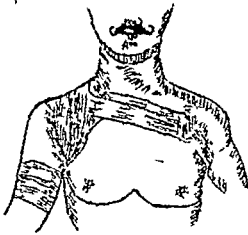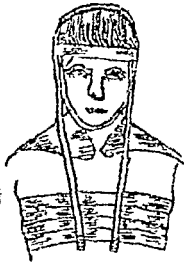
कक्षाबन्धन
द्वितीयशंखबंधन
बहुबंधनविधि
शंखबंधन
मणिबंधबंधनविधि
ग्रीवाकेपश्चिमभागकाबंधन
उष्णीषबंधन
नासिकाबंधन

तलवार के कब्जे से रुधिर बंद करना - टोरनीकट से रुधिर बंध करना - दोनो अगूठों से रुधिर बंध करना
एड़ी और जंघा का बंधन
हस्तास्त्रबंधन
जंघाबन्धन
अंगुलीयबन्धन
अंगुष्ठवटिका
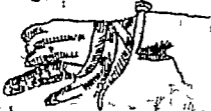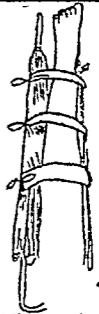
चरकीझाड़ू
झासीरव
वांसकापरचा
टूटीटांगोकेलिये
सहायककाष्ट
वांसव
वड़ीलाठी
कुर्सी
बाईटांगटूटगईहैटांगमेंसहायककाष्ट
बांधकरकुर्सीपरबैठाकरघायलको
दोसाथीउठालेजातेहैं
दोनोंटांगेंएकसाथमिला
करबांधदी।
तकिया
कपड़ेकीपट्टी

अंगुलीयबन्धन

अंगुष्टवटिका
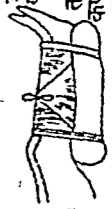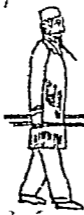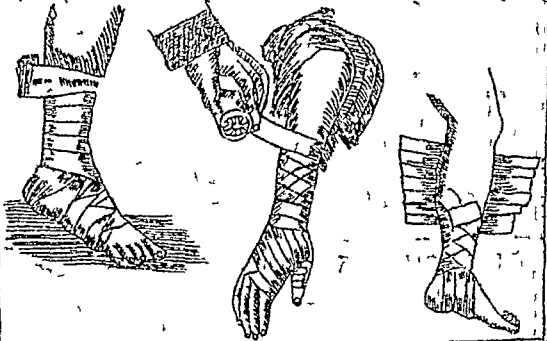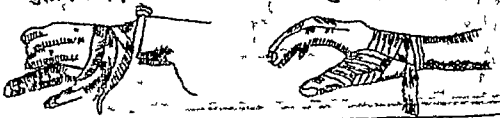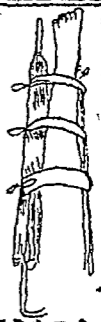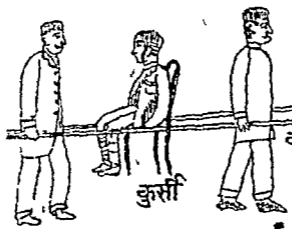
बाईटांगटूटगईहैटांगमेंसहायककाष्ट
बांधकरकुर्सीपरबैठाकरघायलको
दोसाथीउठालेजातेहैं

एकआदमीइसतरहधीरे२रोगीवघायलकोदूर
तकलेजासक्ताहै

टांगकीचोटमेंइसतरहउठाकरकु
छदूरघायलकोलेजासक्ताहै
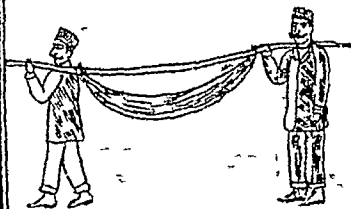
बाहकीहड्डीकीबीचकाभागटूटगयाहै
बांसकापरवालपेटकरकपडाबांधदोऔरहाथ
गलेमेंलटकालो।

पांवकेऊपरसेटांगतकलम्बीपट्टीबांधना।

चित्र ५८

वामकूले
कीहड्डी

इसचित्रमेंजांघकाहड्डी
कीगर्दनटूटीहुईदि
खाईगईहै

वाम कूलेकी हड्डी

जांघकीटूटी
हड्डी
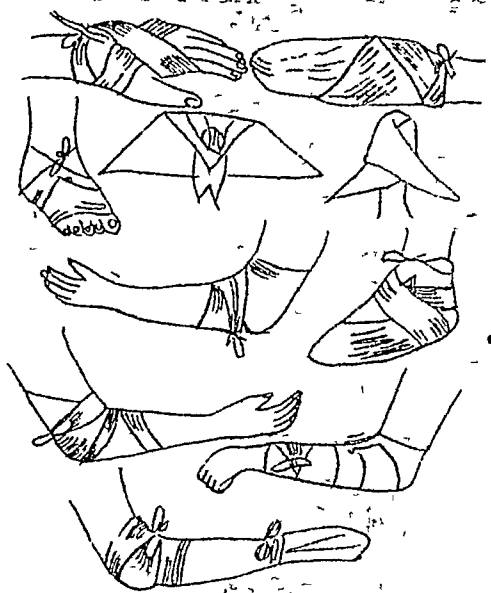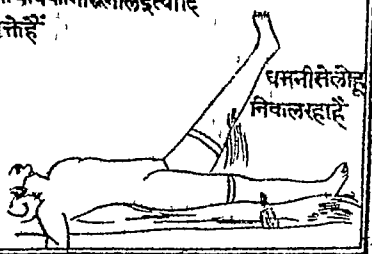
चित्रमेंदियेहुएस्थानीकेघावकोभीरूमालइत्यादि
ऐसेचौकोरवस्त्रसेबांधसक्तेहैं
धमनीसेलोहू
निकलरहाहै

श्री परमात्मनेनम ।

जर्राहीप्रकाश

प्रथम भाग

॥ मस्तक के फोडे का उपाय ॥

एक फोडा सिरके तालु पर होता है उसकी सूरत यहहै कि पोस्त के दाने की बराबर होता है और उसके आस पास हथेली के बराबर स्याही होती है और वह स्याही हवाके सद्द-श दौडती है और जहरबाद से संबंध रखती है यहां तक ये फैलती है कि सब शरीर स्याह होजाता है और वह रोगी चार पहर या आठ पहर के पीछे मृत्यु के निकट पहुंच जाता है॥ परंतु कोई इलाज करनेवाला अच्छा जर्राह मिल जाता है तो निस्सं-देह आराम होजाता है यह स्याही कंठसे नीचे न उतरी होय तौ चिकित्सा करने से आराम हो जाता है और जो स्याही कंठ से नीचे उतर आई होय वो इलाज करना न चाहिये और फोडेका निशान नीचे लिखी तसवीर में देखलो इसकी चिकित्सा इस प्रकार से की जाती है कि पहले सरेरूनस की फस्त खोले

इस तसवीर के तालु में फोडाहै और जो इस तसवीर के माथे में महीन स्याही की बूंद है वही फोडेका निशान है और जो सफेदी है वही काली सूजन जानों

और पन्द्रह तोले रुधिर निकाले और फस्द के वाद वमन करावे क्योंकि यह रोगदिल अर्थात् हृदय को हानिकरने वाला होता है ऐसा नहो कि नीचे उतर आवे इस रोग मे वमन कराना उचित है ॥

नुसखा वमन कराने का

सिरका १० तोले, लाल बूरा २ तोले, मैनफल ६ माशे इन सबको दोसेर जल में औटावे जब आधा जल बाकी रहजाय तब ठंडा कर रखले फिर इसको दो तथा तीन वारमें पिलादे तौ वमन हो जायगी और उस फोडे पर तथा उस स्याही पर तेजाव लगावें तथा प्लास्टर रक्खे जब छाला पडजाय तौ दूसरे दिन प्रातःकाल के समय काट डाले फिर ऐसा मरहम लगावे कि जिससें घाव भर जावे और खूब मवाद निकल जावे ॥

नुसखा मरहम

नीलाथोथा १ तोला, जंगाल हरा १ तोले, तबकिया हरताल ६ माशे, इन सब को महीन पीसकर सुहागा चौकिया १ तोले बिरोजा तर ४ तोले, फिटकिरी १ तोले, आंवाहलदी १ तोले, इन सबको भी पीसकर फिर सबको बिरोजे में मिलावे फिर उसमें गौका घृत ४ तोले थोडा २ करके मिलावे फिर ब्रांडी शराब तथा तेज सिरके मे इस मरहम को खूब धोकर घाव पर लगावे जब वो घाव सुरखी पर आजाय तब यह दूसरी मरहम लगाना चाहिये ॥

दूसरी मरहम

कालेतिल का तेल ऽ। लेकर ग[illegible] आदमी के सिर की हड्डी २ तोले, [illegible] २ तो[illegible] [illegible] तेल

में डाल कर जलावे जब जल जाय तब निकाल डाले पीछे दो तोले मोम मिलावै और मुर्दासंग ६ माशे, सफेदा काशकारी ६ माशे, इन सबको पृथक पृथक् पीस छानकर पृथक् पृथक् उस तेलमें डाले और मंदी आगपर पकाकर चाशनी करे जब उस चाशनी का तार बंधने लगे तो अफीम छः माशे मिलावे जब अफीम उसमें मिलजावे तब उतार कर ठंडा करके रख छोडे फिर इस मरहम को उस घाव पर लगावै और देखे कि किसी ओर सूजन तो नहीं है और जो सूजन होय तो उस सूजन पर यह लेप लगावे ।

लेपकी विधि

सोरंजान कडवा ६ माशे, नाखूना १ तोले, अमलतास का गूदा २ तोले, बाबूने के फूल १ तोले, अफीम दो माशे इनसब को हरी मकोय के रसमें पीसकर गुनगुना कर के लगावे फिर दो चार दिनके पीछे फिर उसको देखे कि उस घावमें से पीव निकलती है या पानी निकलता है जो पानी निकलता हो तो मरहम लगाना चाहिये ॥

अन्यमरहम

पहिले गुलाब के फूलों का १२ तोले तेल गरम करे और पीला मोम २ तोले उसमें डालकर पिघलावै फिर सेलखडी २ माशे, रसकपूर २ माशे, सफेदा काशगारी २ माशे, मुर्दासंग २ माशे, मुर्गी के अंडेके छिलके की भस्म ३ माशे, नीलाथोथा जला हुआ २ रत्ती, इन सबको पीस छान कर उस तेलमें मिलावै जब थोडी चाशनी हो जाय तो नीचे उतार लेवे और ठंडा करके घावपर लगावे और जो यह फोडा मुसलमान के

माथे में होय तो उसको हलवान के मास का शोरवा और रोटी खिलाना चाहिये और हिन्दूको मूंगकी दाल रोटी खिलानी चाहिये और खटाई लालमिर्च आदि सबसे परहेज करना चाहिये और जो इस दवा के लगाने से पानी निकलना बंद न हो तो इसकी चिकित्सा करनी छोडदे और जानले कि यह फोडा जहर बाद का है। आदि में छाला प्रगट होवे तो उसमें चीरादेवे और दो तीन दिन तक नीमके पत्ते बांधें पीछे यह मरहम लगावे।

मरहम की विधि।

पहिले ११ तोले गुलाब के फूलो का तेल गरम करै फिर उसमें नीम के पत्तों का रस ४ माशे, वकायन के पत्तों का रस ४ माशे, वेरके पत्तों का रस ४ माशे हरे अमलतास के पत्तों का रस ४ माशे, हरे आमले का रस चार माशे, इन सब रसोको उस तेलमें मिलावै जब रस जलजाय और तेल मात्र रहजाय तब पीलामोम २ तोले, सफेद मोम १ तोले डालै फिर सफेदा १ तोले, मुरदासंग ४ माशे, दम्मुल अखवेन ४ माशे, नीला थोथा ४ रत्ती इनसबको महीन पीस कर उस तेल में मिलावै जब चाशनी हो जाय तब उतारले फिर उसको घाव पर लगावै और एक फोडा माथे परतथा कनपटी पर तथा गुदा पर ऐसा होताहै कि उसमें कुछ भय नही होता यातो वो आपही फूटकर अच्छे हो जातेहैं या चीरने वा मरहम लगाने से अच्छे होजाते

ऊपर लिखे फोडों का निशान यह है। कि इसके दाने अर्थात् फुंसी चोटी से लेकर सब ताळुको घेरलेते है वह इस तसवीर में देखलो।

हैं ऐसे सब प्रकार के फोडों के वास्ते बहुतअच्छीअच्छी दोचार मरहम इस ग्रंथ के अंतमें लिखेंगे जो सबप्रकार के फोडों और घावों को बहुत जल्दी अच्छा कर देती है और एक रोग सिरमें यह होताहै कि बहुतसी छोटी २ फुन्सी होकर सिरमे से पानी निकलता है और जहां वह पानी लगजाता है वहां छत्तासा होजाता है और वह पानी चेपदार गोंद के पानी के सदृश होताहै इन फुंसियों का स्थान इस नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना उक्त रोग पर नीचे लिखा मरहम लगाना चाहिये ॥

मरहम की बिधि ।

गौका घृत धुला हुआ आधपाव, कबेला ६ माशे, कालीमिर्च २ माशे, सिंगरफ २ माशे, इन सबको पीस छानकर उस घीमें मिलावै फिर उस घी को एक रातभर ओसमे धर रक्खे दूसरे दिन उन फुंसियों पर लगावै परंतु इस दवा के लगाने से पहिले उस स्थान को गरम जलसे साभर मिलाकर धोडालै फिर उस मरहम को लगावै इसी तरह सात दिन तक मरहम लगावै तो आराम होजायगा और जो इस से आराम न होवै तो पारा छ' माशे, अजवायन खुरासानी, पान बगला मसाले सहित चारनग पहिलै मरहम की दवाइयां उसमें मिलावै फिर सांभर नमक और गरम जलसे धोके यही मरहम लगावै और नीचे लिखी दवा पिलावै

॥ नुसखा पीनेका ॥

गुलाब के फूल ४ माशे, मुनक्का ७ दाने, बनफशा के फूल ६ माशे, सूखी मकोय ६ माशे, इन सबको रात को पानी में भिगोदे और सबेरेही औटाकर छानले फिर इसमें १ तोले मिश्री मिलाकर पिलावे और चौथे दिन यह दवाई देवै ॥

॥ नुसखा दूसरा ॥

सफेद चीनी का मत २ मासे लेकर एक तोले गुलकंद में मिलाकर पिलावे इसके पीनेसे वमन होगी और दस्त भी होगा और दोपहर के बाद ऐसा भोजन करावे कि जो अवगुण नकरै फिर दूसरे दिन यह दवाई देवै ॥

❋ नुसखा ❋

बीह दाना २ माशे, रेशा खतमी ४ माशे, मिश्री एक तोले इनका शर्बत तथा लुआव बनाकर पिलावे जब मवादनिकल जावे तब आराम होजावेगा ॥

॥ गलेके फोडेका यत्न ॥

एक फोडा गले में होता है सूरत उसकी यह है कि पहले तो सूरत सी मालूम होतीहै उसवक्त उसके घरके लोग तथा अन्य पुरुष अपनी मतके अनुसार सुनी सुनाई दवाई तथा सेकादिक करतेहैं जब ये पांच चार दिन काहो जाता है तबउसमें पीडा और जलन पैदा होती है तब हकीम के पास जाते हे जब उस पीडा के कारण ज्वर होता है तब बहुत से मूर्ख हकीम उसको अमल देते हैं जब उससे कुछ नहीं होता तब जर्राह को बुलाते हैं और कोई जर्राह भी ऐसा मूर्ख होता है कि उस सूजन पर तेल लेप लगा देता है तो उस्सेभी रोगी को कष्ट पहुंचता है और जब यह सूजन पैदा होती है उसवक्त इसकी सूरत कछुए कीसी होतीहै फिर भिडके छत्ते के समान होजाताहै इसका निशान इसनीचे लिखी तसबीर में समझ लेना इस रोगपर ऐसा लेप लगाना चाहिये जो इस सूजनको नरम करै और इसको फोडकर मवाद निकाले वह दवा यह है ॥

नुसखा लेप ।

इसके गले में फोडाहै प्रथम सूजनसी होकर फोडा होजाताहै ।

बालछड १ तोले, नागरमोथा ६ माशे, रेवंद खताई ६ माशे, नाखूना६ माशे, उस्क रूमी६ माशे, अमलतास का गूदा २तोले इन सबको हरी मकोय के अर्कमें पीसकर गुन गुना लेप करै और सरेरू नसकी फस्त खोलें जब उसफोडे की सूरत बदल जावै तब वह मरहम लगावे जो पहिले वर्णन की गई है ॥

नुसखा

नानपाव का गूदा ५ तोले लेकर बकरी के दूध मे भिगोदे फिर उस्को निचोड कर खरल करे और उसमें दम्मुल अखवेन, केसर, अजरूत, अफीम ये सब दवा छ' छः माशे और शहत ४ तोले मुर्गीके ३ अंडेकी जर्दी इनसबको एकत्र कर खरल करे और फोडा जहा तक फैला हो उतना ही बडा एक फाया बना कर उसपर इस दवाको लगाकर इस फाये को फोडे पर लगादे जब उसमें छीछडे दीखें तो काटकर निकाल देवे जब फोडा लाल हो जाय और उसमें से दुर्गंध न आवे तब इस दवाको बंद करै, और ये मरहम लगाना शुरू करै ॥

मरहम की विधि

गुलाब के फूलों का तेल गरम करके उसमें रत्न जोति २ तो

ले डाले जब उसका रंग कबूतर के रुधिरके समान हो जावे तब उसको छानले फिर उसमें मोम २ तोले, नीला थोथा १ रत्ती मि-लावै और इसमें १ तोले जैतून का तेल मिलाकर रखछोड़े और उसघाव पर लगावे और इस रोगवाले मनुष्य को धोवा मूंगकी दाल और रोटी खिलाना चाहिये फिर एक सेर पानी को औटावै जब आधापानी जल जावे तब ठंडा करके रखछोडें फिर प्यास लगे जब इसीपानी को पिलावे कच्चा पानी नपिलावे ॥

॥ कानकी लौके फोडे का यत्न ॥

एक फोडा कानकी लौके पास होता है इसमे केवल सूजन की गांठसी होती है पीछे पककर फोडा होजाता है इस फोडेका निशान नीचे लिखी तसबीर मेंहै देखलेना इस फोडेकी चिकित्सा इस प्रकार करनाचाहिये कि प-हिले इसपै ऐसी दवा लगावेजि ससेये फोड़ा नरम होजावे क्यों कि जो इस कच्चेफोडेमेंचीरा लगा या जावेतो अपयश होता है अ-र्थात् रोग बढजाता है इसलिये चार दिनकी देरी होजायतो कु छ डरनहीं परन्तुपक्केपर चीरादेने से रोगकी बहुतजल्द शान्ति हो तीहै और पहले लगाने की दवा यहहै ॥

इसतसवीर के कानकी लौके नीचेफो-डा है जोकि कानके पास स्याही का निशान है ॥

नुसखा ।

शहतूत केपत्ते २ तोले, नीम केपत्ते २ तोले, सफेद प्याज १

तोले, सांभर नोन ६ माशे इन सब को महीन पीस गरम करके लगावे जो इस दवाके लगाने से फट जायतो बहुत अच्छा है नहीं तो इसको नशतर से चीर देवे अथवा जैसा समय पर उचित समझै वैसा करै फिर यह मरहम लगावै ॥

॥ मरहमकी विधि ॥

सरसों का तेल ७ तोले लेकर आगपर गरम करे फिर इसमें पीला मोम १ तोले, खपरिया २ तोले, उरदका आटा २ तोले इन सबको उस तेल में मिला कर खूब रगडे और ठंडा करके फोडेपर लगावे और जो इस मरहमसे आराम नहो तो वह मरहम लगावे कि जिसमें रत्नजोत मिली है और जब मास बरा बर होजावे तब नीचे लिखी काली मरहम लगावै ॥

॥ काली मरहम ॥

कडवातेल १० तोले, सिंदूर ४ तोले इन दोनो को लोहे की कढाई मे गेर कर आगपर पकावे और नीमके घोटे से घोटता रहै जब इसका तार बंधने लगे तब उतार कर ठंडा कर रख छोडे फिर समय पर लगावे और फोडे मे चीरा देना होतो चौडा चीरा देवै क्योंकि कम चीरा देनेसे इसमें मवाद रहजाता है इस वास्ते चौडा चीरा देना अच्छा होताहै ।

आंखका फोडा ।

नेत्रके फोडेका यत्न ।

एक फोडा आंखके कोनेमें होता है यह अपने आप फट जाता है इस फोडे का निशान इस तसवीर में समझ लेना ॥

इस फोडे की चिकित्सा यह है कि पहले वह मरहम लगावे जिसमे नीलाथोथा और जंगाल पडा है वह इस पुस्तक के पत्रमें वर्णन करदी गई है जब इसका मवाद निकल जाय तब यह मरहम लगावै ॥

॥ मरहमकी विधि ॥

ऊंटके दाहिने घुटनों की हड्डी २ तोले लेवै, घुटने जलाकर निकाल डाले और मोम सफेद नौ माशे, सिंदूर गुजराती ४ माशे मिलाकर खूब रगडे और लगावे और नाकमें यह दवाई सुंघावे ॥

सुंघाने की दवा ।

नकछिकनी एक तोले, सूखा तमाखू ६ माशे, कालीमिर्चे ३ माशे सबको पीस कर सुंघावै क्योंकि माद्दा ऊपर की ओर झुक जायगा तो शीघ्र आराम होगा क्योंकि यह स्थान नासूर काहै और जो इस दवासे आराम न होतो ऊंटके दाहिने घुटनेकी हड्डी वासी पानीमें घिस कर उस्की वत्ती रक्खे और उसका फाया बनाकर रक्खे क्योंकि यह चिकित्सा नासूर की है और यह फोडा भी नासुर ही के भेदों मेसेंहै दूसरे उपायसे कम आराम होताहै ।

॥ नेत्रोंकी वाफनी का यत्न ॥

एक रोग पलको में ऐसा होता है कि वह पलकके सब बालों को उडादेता है और पलक लाल पड जातेहैं इसका इलाजयहहै ।

नुसखा ।

तिल का तेल पौने छः छटांक लेकर काच के पात्र में धरै और उस में गुलाव के ताजी फूल ५ तोले मिला कर ४० दिन तक रक्खा रहनेदे अगर ताजी फूल न मिलेंतो सूखे फूलों को

दोसेर पानी मे औटावै जब आधा पानी रहे तब छान कर फिर एक सेर तिल का तेल डाल कर औटावै जब पानी जल जाय और तेल मात्र रह जाय तब ठंडा कर के सीसी में भर रक्खे इस को हकीम लोग रोगन बोलते हैं और अकसर बना बनाया अत्तारों की दुकानपर मिलताहै ऐसा गुलरोगन दोमाशे, मुर्गी के अंडे की सफेदी दोमाशे, कुलफा के पत्ते दोमाशे. इन सब को मिला कर पलकों पर लेप करै ॥

नुसखा ।

बादाम की मींगी औरत के दूधमें घिस कर लगाया करै ॥ अथवा अजमोद को मुर्गी के अंडे की सफेदी, मे घिस कर लगाया करै अथवा धतूरे के पत्तों का अर्क और भांगरे के पत्तों का अर्क इन दोनों को मिलाकर इस मे सफेद कपडा भिगो- कर सुखाले और गौके घीमें उस कपडे की बत्ती बनाकर जलावै और मिट्टी के बरतन में उसका काजल पाड कर नित्य प्रति लगाने से सब पलक ठीक होकर असली सूरत पर आजांयगे ॥

दूसरा रोग ।

इस में नेत्र के ऊपर की बाफनी में खपटासा जम जाता है इस रोग के होने से पलक भारी हो जाते हैं और भेंडे आदमी की तरह देखने लगता है ऐसे रोगमे आखोमें सलाई का फेरना बहुत गुण करता है ॥

नेत्रके नासूर का यत्न ।

एक फोडा आंखके कौनेमे वहा होता है जहां मे गीड अर्थात् आंख का मल निकलता है और इस फोडे की यह परीक्षा है कि

ो इसकी रंगत लाल होती है फिर इसका मुख सफेद हो जाता है फिर पक कर घाव होजाता है फिर घाव के होने पर नेत्रों को बड़ा दुःखदाई होता है इसको पहिले हकीमो ने नासूर वर्णन किया है और इस फोडेमें और पहिले लिखेहुए आंखके फोडेमें इतनाही भेदहै कि इसका मुख सफेद होता है और पहिले फोडेका मुख लाल होता है यह फोडा रिसने लगता है और कभी फिर भर आताहै इसकी चिकित्सा यहहै ॥

इस तसवीर कीआंखके कोनेमें जास्या ही कीवूद मालूम होतीहै उसको नासूर समझना चाहिये ॥

इलाज ।

अलसी और मेथी का लुआव निकाल कर आंखों में टपकाने से यह रोग जाता रहताहै [अथवा] मुर्गी के अंडेकीजर्दी और केशर इन दोनो को पीस कर घावपर लगावै [अथवा] अफीम और केशर इन दोनों को पीस कर नेत्रों के ऊपर लगावै ॥

॥ नाकके दूसरे घाव का वर्णन ॥

एक घाव नाकके भीतर ऐसा होताहै कि उसमे से कभी २ तो राध निकलती है और कभी बंद होजाती है इस घाव पर यह दवा बहुत गुण करती है ॥

और जो यह रोग बहुतही दुख देने लगे तो कुत्ते की जीभ को जलाकर उस मनुष्य की लार में घिसकर नेत्रो मे लगाने

से नासूर बहुत जल्दी अच्छा होता है, और जो आंखके कोंने के फोड़ों का इलाज हम लिख आये हैं वे भी इसमें गुण करते हैं, अथवा एलुआ, लोवान, अनार के फूल, सोना मक्खी, दंमुल अखवेन, फिटकरी ये सब दवा तीन तीन माशे, ले और इनको महीन पीसकर गुलाव जल में मिलाकर इसकी लंवी गोली बनाले फिर नासूर के मुख को पोंछकर उस में टपकावे तौ सात दिन के लगाने से विलकुल अराम हो जायगा ॥

। नेत्र के घाव का यत्न ।

एक फोड़ा इस प्रकार का होता है कि नेत्रों में गेहूँ के आकार का सा दिखाई देने लगता है उसके निशान नीचे की तसवीर में समझलैना चाहिये ॥

नुसखा गोली ।

सोनामक्खी को गधी के दूध में आठ पहर भिगोकर छाया में सुखावे और अफीम ३॥ माशे कतीरा ३॥ माशे, दरयाई १॥। माशे, कुदरू गोंद १॥। माशे, सफेदा २ तोले चार माशे, वबूल का गोंद १४ माशे, इन सव को कूट छानकर मुर्गे के अंडेकी सफेदी मे मिलाकर गोलिया बनावै और १ गोली को पानी में घिसकर नित्य आखों में लगाया करै तो यह घाव तुरन्त अच्छा होजायगा ।

इस तसवीर में नेत्र का घाव उँगली के पास है ।

ो इसकी रंगत लाल होती है फिर इसका मुख सफेद हो जाता है फिर पक कर घाव होजाता है फिर घाव के होने पर नेत्रों को बड़ा दुःखदाई होता है इसको पहिले हकीमो ने नासूर वर्णन किया है और इस फोडेमें और पहिले लिखेहुए आंखके फोडेमें इतनाही भेदहै कि इसका मुख सफेद होता है और पहिले फोडेका मुख लाल होताहै यह फोडा रिसने लगताहै और कभी फिर भर आताहै इसकी चिकित्सा यहहै ॥

इस तसवीर कीआंखके कोनेमें जास्याही कीबूद मालूम होतीहै उसको नासूर समझना चाहिये ॥

इलाज ।

अलसी और मेथी का लुआव निकाल कर आंखों मे टपकाने से यह रोग जाता रहताहै [अथवा] मुर्गी के अडेकीजर्दी और केशर इन दोनो को पीस कर घावपर लगावे [अथवा] अफीम और केशर इन दोनो को पीस कर नेत्रों के ऊपर लगावे ॥

॥ नाकके दूसरे घाव का वर्णन ॥

एक घाव नाकके भीतर ऐसा होताहै कि उसमे से कभी २ तो राध निकलती है और कभी बद होजाती है इस घाव पर यह दवा बहुत गुण करती है ॥

और जो यह रोग बहुतही दुख देने लगे तो कुत्ते की जीभ को जलाकर उस मनुष्य की लार में घिसकर नेत्रो मे लगाने

से नासूर बहुत जल्दी अच्छा होता है, और जो आंखके कोने के फोड़ों का इलाज हम लिख आये हैं वे भी इसमें गुण करते हैं, अथवा एलुआ, लोवान, अनार के फूल, सोना मक्खी, दंमुल अखवेन, फिटकरी ये सब दवा तीन तीन माशे, ले और इनको महीन पीसकर गुलाव जल में मिलाकर इसकी लंवी गोली बनाले फिर नासूर के मुख को पोंछकर उस में टपकावे तौ सात दिन के लगाने से विल्कुल अराम हो जायगा ॥

। नेत्र के घाव का यत्न ।

एक फोड़ा इस प्रकार का होता है कि नेत्रों मे गेहूँ के आकार का सा दिखाई देने लगता है उसके निशान नीचे की तसवीर में समझलैना चाहिये ॥

नुसखा गोली ।

सोनामक्खी को गधी के दूध में आठ पहर भिगोकर छाया मे सुखावै और अफीम३॥ माशे कतीरा ३॥ माशे, दरयाई १॥। माशे, कुदरू गोंद १॥। माशे, सफेदा २ तोले चार माशे, ववूल का गोंद १४ माशे, इन सव को कूट छानकर मुर्गे के अंडेकी सफेदी मे मिलाकर गोलियां बनावै और १ गोली को पानी में घिसकर नित्य आंखों में लगाया करै तो यह घाव तुरन्त अच्छा होजायगा ।

इस तसवीर में नेत्र का घाव उँगली के पास है ।

पलकों की सूजन का यत्न ।

नुसखा ।

(१) मोम को गरम करके लगावे । [२] किसमिस को चीर कर उसे गुनगुनी करके सूजनपर लगावे । [३] बड़ी कौड़ी पानी में पीसकर पलक की सूजन पर लगावै । [४] मक्खी के सिरको काटकरसूजनपरलगावैतो सूजन अच्छी होजाती है [५] रसौत को पानी में घिसकर पलक की सूजन पर लगाया करै तो जाती रहती है ।

एक यह रोग होता है कि नेत्रों के किनारों पर सूजन होती है । इस की चिकित्सा यह है ।

प्रकट हो कि नेत्रों के रोग तो बहुत हैं इस लिये उन सब के इलाज विस्तार पूर्वक अन्यत्र लिखेंगे यहां तो केवल घाव और फोड़ों का इलाज लिखा है ॥

नाक के फोड़ों का यत्न ।

एक फोडा नाक में होता है उसको नाकडा कहते हैं ॥ इस फोडे का निशान नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना ॥ इसरोग की चिकित्सा यह है कि पहिले यह सूँघनी सुघावै ॥

सूंघने की दवा ।

सेंधा नमक, चौकिया सुहागा, फिटकरी, कच्चा जगाल ज-

ला हुआ इन सब औषधियों को बराबर ले महीन पीस कर सुंघावै जब वह फोडा चारों ओर से नाक की त्वचा को छोडदे वेतो उस सडेहुए मांस को सुईसे छेद कर निकाल डाले फिर यह मरहम लगावै ॥

मरहम की विधि ।

गौ का घी २ तोले, नीलाथोथा २ माशे, जंगाल २ माशे, पीली राल २ माशे, सफेदा कासगारी ६ माशे, इन सब को महीन पीसकर उसको घृतमें मिलाकर पानीसे खूब धोके लगावै तौ ईश्वर की कृपा से बहुत जल्दी आराम होगा ।

नाक के भीतर घाव की दवा ।

मोम पीला एक तोला, गुलरोगन २ तोले लेकर इसमें मोम पिघलावै फिर उसमें मुरदासङ्ग २ माशे, वंग ४ माशे, ये सब मिलाकर नाक में भरे तो घाव शीघ्र अच्छा हो जायगा अथवा बनशन के फूल ९ माशे, बीहदाने ६ माशे, इन दोनों को थोडे पानी मे औटावे फिर मसलकर छान ले फिर इसको २ तोले गुलरोगन मे मिलावे, और एक तोले सफेद मोम मिला कर मरहम बनाकर घाव पर लगावे ॥

नाकके घाव की दवा ।

मुरगी की चर्बी और मोम इन दोनों को बराबर लेकर घीमें पकावै जब ठंडा होजाय तब उसमें सफेद कपडेकी बत्ती बना कर नाकमें रक्खे अथवा सफेदकत्था और मुरगीकी चरबी इन दोनों को पीसकर नाक के भीतर लेप करै अथा मुरदा संग, भैंस के सींग का गूदा, मुर्गे की चरबी इन सब को गुल रोगन में

पकावै जब मरहम बनजाय तब फिर उसमें रुई की बत्ती भिगो कर नाक मे रक्खें ॥

(२) मोम३॥माशे,कपूर३॥माशे,सफेदा १॥तोले,गुल रोगन १४ माशे पहिले गुलरोगन को गरम कर फिर उसमें मोम को मिलावै और सफेदा के पानीसे धोकर मिलावै फिर इसे गरम कर खूब घोटे जब मरहम के सदृश होजाय तब रख छोडे फिर उस घाव को देखै जो घाव नाक में बहुत भीतरा होवै तौ इसकी बत्ती बनाकर नाकमें रक्खै और जो घाव पास होतो वैसे ही लगादे इन घावों का निशान नीचे लिखी तस बीर में समझ लेना चाहिये ॥

॥ नकसीर की चिकित्सा ॥

जोनाकसे रुधिर वहा करताहै उसे नकसीर कहतेहैं यह दो

प्रकार की होतीहै एक तो बोहरान से, दूसरी खून की गरमी से जो नकसीर बोहरान के कारणसे होतो उसके लक्षण ये हैं कि चौथे सातवें नवे ग्यारहवे और चौदहवेंदिन गरमीके दिनों मे उत्पन्न होतीहैं उसेवंद न करै क्योंकि इस्के वंद करने से जान का भयहै और जो बोहरानके कारणमे न हो तौ कुदरू गोंदके द्वारा वंद करदेवै॥

॥ अन्य नुसखा ॥

जहर मोहरा खताई, बंशलोचन सफेद कत्था बडी इलायची के बीज सेलखडी इन सबको बराबर लेके पीसकर सुखावे ॥ और माथेपर तथा कनपटी पर ये दवाई लगावे ॥

॥ अन्य नुसखा ॥

ववूलकी फली १ तोले, बवूल के पत्ते १ तोले, हरी महदी१ तोले, सूखे आमले १ तोला, सफेद चन्दन १ तोले इन सबको पीसकर लगावे और जो इससे भी वंद न होतो यहलगावै ॥

॥ दूसरा नुसखा ॥

नाजके वीज सफेद चंदन एक एक तोले, कपूर ६ माशे, इनको महीन पीसकर हरे धनियेके अर्कमें मिलाकर लेपकरे ये चिकित्सा याद रखने योग्यहै ॥

॥ पीनस की चिकित्सा ॥

एक दूसरा रोग भी नाकमें होताहै उसे पीनस कहते हैं यह उपदंश से सम्बन्ध रखता है जोरोगी उपदंशको प्रगट न करे और वह कहे कि मुझेउपदंश नही हुआ तो कभी विश्वास न करे क्योंकि उपदंश वापदादे से भी हुआ करते हैं क्योंकि बहुत से हकीम और डाक्टरों ने पुस्तकों में लिखाहै और कोई २ कहते हैं कि पीनस गरम नजले से भी होती है ॥ और अपनी आखों सेभी देखाहै ॥ इस रोगमें प्रथम सुगंधि और दुर्गंधि कुछ नहीं जानी जाती फिर मस्तक और ललाटमें पीडा हुआ करती है और वाणी में भी कुछ विक्षेप होजाता है और उस्की चिकित्सा यह है उस रोगी को जुल्लाव देवे और फस्तखोले और वमन करावे और नीचे लिखीहुई नास सुंघावे।

॥ नासकी विधि ॥

पलास पापडा कंजाकी मिंगी, लाल फिटकरी, नकछिक

नी, सूखी तमाखू इन सबको बराबर ले पीसछान कर सुघावे, जो छींक बहुत आवेंतो शीघ्र आराम हो जायगा नहीं तो नाक के बीचमे की हड्डी जाती रहती है उस्के लिये देवदारू का तेल और तारबीन का तेल बहुत गुणदायक होता है ॥ अथवा कद्दूका तेल वकाहू का तेल वा पेठे का तेल गुण करता है और जो सामर्थ्य होतो चोबचीनी काया उस्की माजूम का सेवन करावे अतको हड्डी निकलकर नाक बैठजाती है और बाणी बदल जाती है ऐसी दवाइयो से घाव अच्छा होजाताहै परंतु रूपतो बिगडही जाता है औरजो येरोग उदंशके कारण से होतो उस्की चिकित्सा इस प्रकार से करे कि पहिले तो जमालगोटा का जुलाब देवे फिरवे गोलियां खिलावे ॥ जो उपदश की चिकित्सा में लिखी है और यह गोली देवे ॥

॥ गोली ॥

काली मिर्चे, पीपलबडी, सूखे आमले ये दवा एक २ तोले ले और सबको कूटछान कर सात वर्षके पुराने गुडमे मिला के जंगली बेर के प्रमाण गोलिया बनावे और प्रातःकाल के समय एक गोली मलाईमें लपेट कर खिलावे और ऊपर से दही का तोड पिलावे और दाल मूगकी और रोटी खवावे और औटाहुआ जल पिलावे इसगोलीके सेवन करनेसे नाकके सबरोग अच्छे होजायगे ॥

नाक की नौक के फोडे का इलाज

एक फोडा नाक की नौक पर होता है उस्की सूरत काली होती है और वह जोकके सदृश वढजाता है ॥ परन्तु उसका कटना कठिन है क्योंकि इसका रुधिर बंद नहीं होता है। मैंने एक बार एक मनुष्यके यह रोग देखा है उस्की चिकित्सा अपने हाथसे की परन्तु ठीक नवनी अंतको मैंने और मेरे मित्र

डाक्टर बाबू जमना प्रसाद साहबने उसको कुटुंब के लोगोंसे

एक फोडा मुख के भीतर काक के पास होता है ।

कहदिया कि रोग असाध्य है आराम होना वा न होना ईश्वराधीन है हम जिम्मेदार नहीं यह कह कर उसकी चिकित्सा बहुत प्रकार से की परन्तु कुछवस न चला येबातें इसलिये वर्णन की हैं कि यदि कोई सज्जन मनुष्य इस फोडेवाले मनुष्य को देखै तो एकहीवार इसकी चिकित्सा का प्रयत्न करें क्योंकि मेरी बुद्धि में यह रोग असाध्य हैं। एक फोडा मुखके भीतर काकके पासहोता है। उसको खुनाक कहते हैं उसका इलाज यह है कि पहिले सरेरू नस की फस्द खोले फिर यह जुलाब देवे ।

कुल्लों की विधि ।

शहतूत के पत्ते ४ नग, कोकनार ४ नग असवंद १ तोले, सावत मसूर २ तोले, इन सब चीजोंको दो सेर पानीमे औटावे जब आधा पानी रहजाय तब छान कर इसके कुल्ले करावे. और जो आराम न हो तो यह आगे लिखा नुसखा देवे ।

नुसखा ।

गेहूँ की भुसी ६ माशे, नाखूना १ तोले, खतमी के फूल १ तोले, तूमर १ तोले, सूखा जूफा १ तोले, सेंधानमक ६ माशे इन सबको तीन सेर जल में औटावे जब एक सेर पानी जल-

जावे तव कुल्ला करावे. और जो इस दवाके करने से फोडा न फूटजावै तो अच्छा है, नहीं तो नीचे लिखे हुए तेजाव के कुल्ले कराव ।

तेजाव की विधि ।

अनार की छाल ६ माशे, मूलीके बीज ६ माशे, सफेद जाज ६ माशे, नौसादर २ माशे इन सवको आधसेर तेज सिरके में औटाकर कुल्ले करावै जब फोड़ा फूटजाय तो देखना चाहियें घाव है वा पुरगया जो पुरजाय तो यह दवाई करनी चाहिये।

नुसखा ।

कोकनार नग २ गेंहूँ की भुसी ६ माशे, ख़तमी के फूल ६ माशे, गुलनार ६ माशे, इन सबको पानी में औटाकर कुल्ले करावै और जो घाव हो तो नीचे लिखी दवा करे ।

घाव की दवा ।

खतमी १ तोला, खतमीके फूल १ तोला, बनफ्सा के फूल १ तोला, लिसोड़ा १ तोला, मेथी के बीज १ तोला, इन सब को जौकुट करके एक सेर नदी के जल में एक पहर भिगोकर औटावै फिर काले तिलों का तेल मिलाकर औटावै जब पानी जलजाय और तेल मात्र रहिजाय तव छान कर उस घाव पर लगाया करै ।

और एक फोडा मुखमें जीभके नीचे होता है उसकी सूरत छाले कीसी होती है। और एक फोडा कोने की ओर को झुका हुआ होता है कारण बाहर की ओर एक गुठली सी होती है उस गुठली पर यह लेप लगावै ॥

लेपकी विधि ।

निर्विसी, हरीमकोय इन दोनों को पीसकर गरम करके लगावे ॥ और जो छालासा होता है उसकी चिकित्सा इस रीति से करै ॥

नुसखा ॥

बायविडंग, माई छोटी, माई बडी, हरा माजूफल, सेंधा-नमक इन सबको बराबर लेके पानी में औटाके कुल्ले करै और जो फूट जावे तो उसकी चिकित्सा यह है ॥

नुसखा ॥

धनियां, सूखा कत्था सफेद, माजूफल इन सबको बराबर ले महीन पीसकर लगावे और इन्हीं को जल में औटाकर कुल्ले करावे और उसमें बुरामांस उत्पन्न होजाता है और सब जीभपर छा जाता है तो उसको बीसबाईस वर्षके उपदंश का मवाद समझे इसकी चिकित्सा बहुत कठिन है और बहुत से फोडे इसी के कारण होते हैं इसी सबब से ऐसी चिकित्सा की जाती है कि उस बुरे मांसको जीभपर से अलग काट डाले तब उसमें से रुधिर बंद करने की यह दवा करै ॥

नुसखा ॥

बनात की भस्म सीपका चूना साखूका कोयला. सेल खडी. रूमीमस्तंगी खरगोश की खाल. गोमाका रस छयोंढे के पत्तों का रस इस सबको पीसकर लगावे जब रुधिर बंद हो जाय तब जुल्लाब देवे और प्रकृति के अनुसार दवाई खिलावे और ये औषधि घावपर लगावे ॥

नुसखा ॥

फिटकरी कच्ची ४ माशे. नीलाथोथा भुना ४मासे. गौका घृत ४ तोले इन दोनों दवाइयों को पीसकर घी में मिलावे

और जलसे खूब धोकर लगावे. और जो रोगी माने तो यही चिकित्सा करै और समय पर जैसा मुनासिब समझे वैसा करै।

दूसरा फोडा जो मुखके कोने की ओरको झुका हुआ होता है और उसकी गुठली बाहर को होती है- उस गुठली पर तो वह लेप करै जो पहिले इस रोग पर वर्णन कर चुके हैं और भीतर को नीचे लिखी दवा लगावे ॥

नुसखा ॥

रूमीमस्तंगी, सफेद कत्था भुना हुआ, माजूफल, बंसलोचन, गाजवां की भस्म ये सब दवा चार चार माशे ले इन सबको महीन पीसकर लगावे और मूंगकी धोवादाल और बिना चुपडी गेहूं की रोटी खाने को दे।

हाेठके फोडे का इलाज ।

एक फुंसी होठों पर होती है उसपर शुद्ध करने वाला मरहम लगावे कि जिससे वह मवादको शीघ्र ही निकाल देता है और केलेके पत्ते घृतमें चिकने करके गले मे बाधें इससे सूजन दूर होजाती है इसका इलाज शीघ्रही करना चाहिये क्योंकि ये फोडा पेटमें उतर जाता है इसका मुख बहार की ओर करने के लिये नीचे लिखी हुई मरहम काम में लावे ॥

नुसखा ।

बिरोजा दो तोले रेवतचीनी छः माशे अंजरूत चारमाशे. इन सबको पीसकर बिरोजे में मिलावे और फिर इस मरहम को जलमें धोकर लगावे जब फूट जावे और मवाद निकल जावे तो यह दवाई लगावे ॥

नुसखा ।

रसौत १ माशे तगर की लकडी तीन माशे इन सबको पीसकर गौके घी में मिलावे और जो कढाई में डालकर खूब

घोटे तो बहुत उत्तम है इस दवा के दस पांच वार लगाने से आराम होजाता है ॥

डाढके फोडाकी दवा ।

नीम के पत्ते, बकायन के पत्ते, संभालू के पत्ते, नरम्मा के पत्ते, इन चारों को बराबर लेकर जलमें औटाकर बफारा देवे. और उसी को बांधे और उसी के जलसे कुल्ले करावे ॥ और जो भीतर ही फूट जावें तो उत्तम है और बाहर फूटेतो दांत के उखाडे बिना आराम न होगा- और जो यह फोडा बाहर हुआ हो और बाहर ही फूटे तो उसको चीर डाले और चार फाक करें तथा नीमके पत्ते और नमक बांधे और जो मरहम ऊपर वर्णन किये गये हैं उन मे से कोई सी मरहम लगावे ॥ और जो इनसे आराम न होतो उसपर ये मरहम लगाना चाहिये ॥

नुसखा

काले तिलोंका तेल, मुर्दासंग ५ माशे. नीलाथोथा एक माशे पहिले तेलको गरम करके फिर उसमें मोम डालकर पिघलावे पीछे सब दवाइयों को पीसकर मिलावे जब मल्हम खूब पकजावे तब खूब रगडे और ठंडा करके काममें लावे और जो भीतर फूटे तो वह कुल्ले करावे जो खुनाक रोगमें वर्णन किये गये हैं और जो घाव भीतर से शुद्ध हो जाय तो वह तेल भरदे जो ऊपर कह आये हैं ॥ और यहां भी लिखते हैं कि वह तेल तारपीन या जलपाई का तेल है और जो मुख के भीतर छोटे २ छाले होय तो बरफ के पानी से कुल्ले करावे तो निश्चय आराम हो जायगा ॥

ठोडी के फोडेका इलाज ।

एक फोडा ठोडी पर होता है उसके पास लाल सूजन होती है ॥ इस फोडेका निशान आगे लिखी तसवीर समझलेना

इलाज

एक फोडे पर जंगाली मरहम लगाना चाहिये और जं. गाली मरहम वह है जिसमें रेवतचीनी और बिरोजा मिला है जब गवाद निकल जावे तब स्याह मरहम लगावे और जो उसके नीचे गुठली हो जाय तो उसपर नीम के पत्ते अथवा जतके पत्ते और नोंन पीसकर बांधे बज वह पक जावे तब वे मरहम लगावे जो लिखे गये हैं ।

॥ कानके फोडेका इलाज ॥

कानके भीतर एक छोटासा फोडा होताहै उसकी चिकित्सा यहहै कि फिटकरी सफेद तथा समुद्र फेन पीसकर कानमें डालदेवो और ऊपर से कागजी नीबूका रसडाल देवे जबमवाद बंद होजाय और पीडा शांत हो जाय तो मूली के पत्ते मीठे तेलमें जला के छानले और उस तेलको कान में डालेतो अराम होजायगा औरइसका निशान इस तसबीर में समझलेना चाहिये ।

। दांतोंकी पीडाका इलाज ।

जो दांतोंमें पीडा हो अथवा हिलतेहो या उनमेंसे रुधिर बहताहो तथा दांतों से दुर्गंधि आती होतोये दवाई करै ॥

॥ नुसखा ॥

जाज सफेद ३ माशे, अनारका छिलका तीनमाशे इन दोनों को एक सेर पानीमें औटाकर कुल्ले करावे और जम्हीरी के पत्ते दांतोंपर मलै अथवा हरा धनियां तेज सिरके में पीस कर मलै

अथवा ताडके वृक्षका छिलका कचनारका छिलका, खजूरका छिलका, महुए की छाल इन सबको एक एक तोले लेकर जलावे अथवा इन सबकी राख एक एक तोलेले और रूमी मस्तंगी चार माशे सफेद मूगें की जड छ० माशे, सोना माखी तीन माशे, इन सबको पीसकर मिस्सी के सदृश दातों परमले, अथवा सफेद कत्था एक तोले फिटकरी सफेद छ॰ माशे माजूफल छः माशे इनतीनो को जौकुटकरके एक सेर जलमें औटावे जब आधापानी जलजाय तब कुल्ले करावे ॥ अथवा लोहचूर ८ तोले हरा माजूफल ४ तोले, नीला थोथा भुना हुआ १ तोले, सफेद कत्था २ तोले, छोटी इलायची के दाने ६ माशे इन सबको महीन पीसकर मिस्सीकी तरह दांतोपर मले। अथवा लोहचूरा पाव सेर बिना छेदके माजूफल आध पाव छोटी इलायची छिलके समेत

१ तोले नीलाथोथा १ तोला, लाल कत्था १ तोला, रूमी मस्तगी ४ माशे, हर्रा कसीस ४ माशे, सोनामाखी ४ माशे इन सबको महीन पीसकर दांतोंपर मलै अथवा तांबे का बुरादा १ छटांक अनार का छिलका १ छटांक माजूफल २॥ तोले फिटकरी १ तोले इनसबको महीन पीसकर दांतोंपर मलै अथवा रूमी मस्तगी, माजूफल, हर्रा कसीस माई वडी, हडेका छिलका फिटकरी भुनी. लीलाथोथा भुना मौलसरी के पेडकी छाल सब को बराबर लेके महीन पीसकर दांतों पर मंजनकरै और मुखको नीचा करके लार टपकावे फिर पानखाकर लारको बंदकरै अथवा कपूरको गुलाब जलमें और सिरके में मिलाकर इन तीनोंको गौकेदूधमें मिलाकर कुल्ले करावे अथवा कपूर और नमक दोनों को पीसकर दांतो पर मलै अथवा फिटकरी भुनी एक भाग, शहत दो भाग, सिरका १ भाग इनतीनों को आगपर पकावे जब गाढा होजावे तब दांतों पर मलै तो दांतका हिलना बंदहो ॥ अथवा सुपारी की राख, कत्था सफेद, काली मिर्च, रूमी मस्तगी, सेधानमक इन सब दवाओं को बराबर ले महीन पीसकर दांतों को मले तो दांतों का हिलना बंद होय अथवा माजूफल, कुलफाके बीज इनको पानी में पीसकर कुल्ले करावे तो दांत और मसूडोसे खून निकलना बंदहोय अथवा बारहसींगे के सींग की भस्म सेधानमक इन दोनों को महीन पीमकर दांत और मसूडों पर मलने से खून निकलना बंदहोय अथवा पुराना लोहका चूरण हबुलास रूमीमस्तगी इनतीनों को बराबर ले महीन पीसकर दातोपर मलने से खून निकलना बंदहोताहै । अथवा माजूफल फिटकरी इन दोनों को बराबर ले

और सिरके में जोश करके कुल्ले करनेसे मसूडों का घावअच्छा होता है अथवा कुदरू गोंद मस्तंगी इनको पीसकर मसूडोंके घाव पर लगाना चाहिये ॥

गजे का इलाज

जो सिरमें गंज होतो उसकी यह चिकित्सा करै काली मिर्च छः माशे कल्लोंजी एक तोले इन दोंनो दवाई योंको गौ के घीमें जलावै और घोटे जब मरहम के सदृश होजावे तो पानी में घोले और सुकतर करै अर्थात नितार लेवे पहले उस्के जलसे सिरको धोवे फिर उस मरहम को लगावे और जो इससे आराम नहोतो यह दवाई लगावे ॥

नुसखा

काली मिर्च छः माशे केवला हरा छःमाशे मेंहदीके पत्ते हरे छःमाशे सूखे आमले छमाशे नीमकेपत्ते छःमाशे नीलाथोथा छः माशे सरसो का तेल पांचतोले पहिले तेल को कडाई मे गरम करै फिर इन सब दवाइयों को डाले जब जलजाय तब घोट कर ठंडा करके लगावे । अथवा हालम दो तोले लेकर जलावै जब जलकर कोयला होजाय तब पीसकर कडवेतेलमें मिलावै फिर इसको दोपहर तक धूपमें धरे रक्खै फिर इसको लगावै तो गंज निश्चय अच्छी होय जानना चाहिये कि सिरके फोडों के भेदतो बहुत है जो सबको वर्णन करता तो ग्रंथ बहुत बढ जाता इसलिये संक्षेपसे लिखाहै परन्तु जो फोडे सिर मे होते हैं उनसब की चिकित्सा इन्ही मरहमों से करना चाहिये क्योंकि ये सब मरहम बहुत ही गुण कारकहै ॥

कंठके फोडे का इलाज

एक फोडा कंठमे होताहै उसे कंठमाला भी कहते हैं उस्की सूरत पहिले ऐसी होती है कि बाई ओर वा दाहिनी ओर गले में गुठली सीहोजाती है फिर बढकर बडी गांठ हो जाती है ॥

इस फोडे की चिकित्सा इस प्रकारसे करनी चाहिये कि पहिले तो तहलील अर्थात बैठाने वाली दवाई लगाना चाहिये क्यों कि जो यह बैठ जावे तो बहुतही अच्छा है और बैठाने वाली दवा यह है ॥

खाकसी पांच तोले शोरंजान कडवा एक तोले कुदरूगोंद एक तोले इनसब को हरी कासनी के रसमे पीसकर लगावै और उस्के पत्ते अर्थात् मकोय के पत्ते गरम करके बांधे जब वे गुठलियां न दीखे तो फस्त खोलै और बमन करावै और जो इससे आराम न होयतो उक्त दवाइयों को सोये के अर्कमे पीस कर लगावै और जो बर्णन की हुई दवाओं से गुठलीयां न बैठेतो लेप करै

लेप

गुलाब के फूल, गेरू, गुलनार, सूखी मकोय, दम्मुल अखवैन, मूरिद के बीज इन सब दवाईयोको एक एक तोला ले महीन पीस मुरगी के अंडेकी सफेदी मे मिलाकर गोलियां बनाकर छायां में सुखावै फिर एक गोली अंगूर के सिरके में पीसकर लगावै और जो इसके लगाने से भी न बैठै और पक जावै तो यह दवा करै ॥

नुसखा

कडवा तेल आध पाव और रविवार वा मंगलवार को मारा हुआ एक गिरगट आक के पत्ते नग७ मिलाये नग७ इनसबको तेलमे जलाकर खूब घोटे और ठंडा करके लगावे और कदाचित इस घाव के आसपास स्याही आजाय और घावसे पानी निकलता होतो बहुत बुरा है ॥

अथवा जो स्याही नहो और गांठ फूटी भी न हो तो उस्के बैठाने को और दवा लिखते हैं ॥

छुहारेकी गुठली, इमलीके पत्ते इमली के चीयां, महंदीके पत्ते इन सबको बराबर ले महीन पीस कर गुनगुना करके पतला पतला लेप करै ॥
अथवा एक मूसेको तिलके तेलमें पकावे फिर उस तेलको लगावे तो गांठ बैठ जायगी ॥

अथवा दो मुख के सांपको मारकर जमीन मे गाढदे जब उसका मांस गल जावे तब हड्डीको डोरे में बांधकर गलेमें बांधना अथवा बूदार चमडा बांधना अच्छा होता है ॥

अथ धुकधुकी का यत्न ।

एक घाव कंठमें होता है उसको लौकिक मे धुकधुकी कहते हैं उसकी सूरत यह है कि उसमें से दुर्गंध आया करती है और कंठसे लेकर छाती के नीचे तक घाव होता है जो घाव में गढे हों तो इसकी चिकित्सा न करै क्योंकि महान वैद्यो ने लिखा है कि ये फोडा अच्छा कम होता है और जो चिकित्सा करनी अवश्य होतो ये करें और इस घाव का निशान आगे लिखी तसवीर में समझलेना ॥

इलाज ।

समुद्रफेन पावसेर को पीस छानकर एक तोले नित्य फकावे और उसके ऊपर जामुनके पत्ते पानीमें पीसकर पिलावे और उस घावपर ये दवा लगावे मनुष्य के सिरकी हड्डी को बासी जलमे पीसकर लगावे अथवा सूअर का विष्टा कन्या के मूत्र मे पीसकर लगावे । अथवा एक घूसको मारकर शुद्ध करे और छछूंदरको मारकर शुद्ध करै फिर इन को आधसेर कडवे तेलमे जलावे फिर इस तेलको छानकर लगावे ॥

अथ कखलाई का इलाज।

एक फोडा कांखमें होता है उसको लौकिक में कखलाई कहते हैं॥ उसकी सूरत यह है कि किसी २ मनुष्य के बगल में कई गुठलियां होती हैं और एक उनमें से पकजाती है जबतक वह अच्छी नहीं होने पाती तबतक और दूसरी पकजाती है इसी प्रकारसे कई बार करके छः सात होजाती हैं और एक सूरत यह है कि एक गुठलीसी होकर पकजाता है फिर वह पककर शीघ्र ही फूटजावे तौ बहुत अच्छा है चीरा देना पडता है बिना चीरने के अच्छी नहीं होती जो रोगी बलहीन हो तो फोडे की यह सूरत होती है जो ऊपर कह आये हैं और जो बलवान् हो तो यह सूरत होती है कि पहिले कांखमे सूजन सी होती है और बहुत कडी होती है वह बहुत दिनों मे पकती है देर होने के कारण नश्तर वा तेजाब लगाते हैं तो रुधिर निकलता है बस यही हानि है जब नीमके पत्ते बांध चुकते हैं तो मरहम लगाने के पीछे पानी निकला करता है बस इसी प्रकार से रोग बढ जाता है इस फोडे का निशान नीचे की तसवीर मे समझलेना। इस फोडे की चिकित्सा यह है कि पहिले वे पत्तियां बाधे जो डाढ के फोडे के वास्ते वर्णन कर चुके हैं॥ जब नरम होजाय तब वह मरहम लगावे जिसमें नान पाव का गूदा लिखा है अथवा यह औषध लगावे।

नुसखा

गेहूंका मैदा. शहत, और मुर्गी के अंडेकी जर्दी इन तीनों को मिलाकर लगावे इस दवाके लगाने से बहुत जल्दी फूट जावेगा और जो नरम होतो चीर देवे फिर नीम के पत्ते नमक और शहत बांधे और यह मरहम लगावे ॥

मरहम ।

नीलाथोथा तीन माशे. कोकनार जला हुआ एक तोले इन दोनों को पीसकर इसमें थोडा निखालिस शहत मिलाकर रगडे जब मरहम के समान होजाय तब लगावे और जो इससे आराम न हो तो यह दवा लगावे ॥

नुसखा

मूअर की हड्डी और सूअर के बाल जलाकर दोनों एक २ तोले लेकर सूअर की चरबी में मिलाकर खूब रगडे और लगावे और घाव न सूखा हो तो सूअर की हड्डी की भस्म उसपर बुरके तो घाव सूख जावेगा और जर्राह को चाहिये कि घावपर निगाह रक्खे कि घाव पानी न देवे जो घावमें से पानी निकलता होतो उसके कारण को जानना उचित है कि किस कारण से उसमें से पानी निकलता है ॥ प्रकृति मनुष्य की चार प्रकार की होती है । पानी तो रतूबत के कारण से निकलता है और रुधिर पित्तके कारण से और पीली पीब कफके कारण से और असल पीब खुश्की के कारण से निकला करती है और उचित है कि जो मरहम योग्य समझे वह लगावे ॥

छाती के फोडे का इलाज

एक फोडा छातीसे तीनचार अंगुल ऊपरहोता है उस्कीसूरत यह है किपहिले तो ददोडासा होता है और फिर बढजाता है फिर अपना विकार फैला देता है इस फोड़ा को तहलील अर्थात बैठाना अच्छा नहीं क्योंकि दाहिनी ओर को होताहै तो इसमें बडा भय रहता है कि फोड़े पेटमें न उतर जाय और जो बांई ओर होवे तो कुछ डर नहीं और जो आदि मे बैठ जाय तो भी कुछ डर नहीं और पकजावे तो चीर डाले और नीम के पत्ते बांधे फिर उसके घावपर यह मरहम लगावे ॥

॥ मरहम की विधि ॥

राल सफेद २ तोले, नीलाथोथा १ रत्ती, विलायती साबन एक माशे इन सबको पीसकर गौके पाचतोले घीमें मिलावे फिर इस्को पानीसे धोकर घावपर लगावे इसी सूरतका फोडा बालकके हो अथवा तरुण के होतो बुद्धिमानी से चिकित्सा करे और इसफोडे का बीज सफेद पीलापन लिये निकले तो शीघ्र आराम होजायगा और जो पीव सफेद लाल रंग मिला हो तो इसी मरहम जो अभी ऊपर वर्णन की है. काशगारी सफेदा चार माशे मिलावे और इसीवाव पर लगावे ईश्वर की कृपासे बहुत शीघ्र आराम हो जायगा इस फोडे बाले रोगी की तसवीर येहै ॥

स्त्रीकी छाती के फोडे का इलाज

एक फोडा स्त्री के स्तन पर होता है उसकी चिकित्साभी इसी प्रकार से होसक्ती हैं जैसी कि ऊपर छाती के फोडे में अभी लिख चुके हैं और उस फोडेपर पहिले वोही मरहम लगावे जिसमें अंडेकी जर्दी लिखी है अथवा वह मरहम लगावै जिसमें नानपाव का गूदा लिखा है इन मरहमों के लगाने से फोडा फूट जाय तो उत्तम है और इनके लगानेसे न फूटे तो वह मरहम लगावै जिसमें आंवा हल्दी लिखी है और जो इससे भी नफूटे तो इसमें चीरा देवै और जो आपही फूटजावे तो बहुत ही उत्तम है और जोफूटे फोडे के घावका मुख ऊपर को हो और दवानेसे पीव निकलती होतो उसके नीचे नश्तर देवे वा गुदी के नीचे बांधे और वालक को दूध पिलाना बंद न करै और जो दूध पिलाने में हानि समझे तो न पिलावै और यह मरहम लगावै ॥

मरहम

सुपारी अध भुनी ६ माशे, कत्था अधभुनासफेद ६ माशे, सिंदूर गुजराती ६ माशे, सफेदा काशगारी ६ माशे, गौकाघृत साततोले पहिले घीको गरमकरके उसमेंएक तोले पीला मोम पिघलावे फिरसब दवाईयों को पीसकर मिलादे और खूबघोटे जब ठण्डा होजाय तब छ' माशे पारा मिलाकर खूब रगडे फिर इस को लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होय ।

एक फोडा दूध रहित स्तनों में होताहै उसकी सूरत यह है कि पहिले एक फुन्सी मसूरकी दालकी वरावर होतीहै और भीतर एक गुठली चनेके प्रमाण होतीहै वह दिनप्रति दिन बढती जाती है और वह फुन्सी अच्छी होजाती है और वह गुठली तरंग

के होतो एक अथवा दो वर्षके पीछे आम की बराबर होजाती है और जो वृद्ध स्त्री के होयतो आठ नौ महिनोंके पीछे आमकी बराबर होजाती है जब गुठली इतनी बढजाती है तब सूजन हो जाती है और उसमें पीडा होती है और ज्वर भी हो आता है और दवाइयां पिलाने से तपजाता रहता है और उस गुठली पर घरकी अथवा उन लोगों की दवाई लगाते हैं जो कुछभी नहीं जानते जब किसीसे आराम नहीं होता तब जर्राह को बुलाते हैं यह पाषाणके भेदोंमें सेहै इसको कंकण बेल कहते हैं यह काटेसे भी नहीं कटता इसकी चिकित्सा में जर्राह को उचित है कि हकीम की सम्मति भी लेतारहै क्योंकि दवाओं की प्रकृति को वे लोग खूब जानते हैं और लेप करने को यह औषधि है पहिले नीचे लिखा बफारा देवे ॥

बफारे की दवा

संभालूके पत्ते महुए के पत्ते इन दोनों को पानी मे औटा कर बफारा देवे और यही पत्ते बांधे जो कुछ आराम हो तो यह करते रहना चाहिये नही तो सोवे का साग औटाकर बांधे और जो इससे भी आराम न हो तो यह लेप लगावे ॥

लेपकी विधि ।

नाखूनां एक तोला, खुव्वाजी के बीज एक तोला, खतमी के फूल एक तोला, खतमी के बीज एक तोला, अमलतास का गूदा दो तोले, शोरंजान कडवा बनफसा के फूल उश्कर्मी अलसी ये सब दवा छ: छ: माशे इन सबको पीसकर गरम करके लगावे ॥ जो इससे आराम हो जाय तो उत्तम है और हकीम को चाहिये कि इस रोगी को जुल्लाब देवे तथा फस्त खोले और जो आराम न हो तो वह दवाई लगावे कि जिसमे

खाकसी है जिनका वर्णन ऊपर कर दिया गया है और एक नुसखा लेप का यह है ॥

लेप की बिधि

मुर्दासंग, शोरंजान, कडवा, गेरू, सूखीमकोय, सब बराबर ले. इन सबको पानी में पीसकर लगावे जो इससे भी आराम न होवे तो देखे कि फोडा कहां से नरम है ॥ उस पर जैत के पत्ते, नीम के पत्ते और सांभर नमक पानी से पीसकर बांधे और आसपास वह लेप लगावे जो ऊपर कह आये है और जो इनपत्तो से भी न फूटे तो नीम की छाल पानी में घिसकर लगावे और जो किसी से आराम न होवे तो ये फाया लगावे।

फाहे की विधि।

लालमैंनफल, बबूल का गोंद, लौंग, बिलायती साबुन, भैंसागूगल इन सबको बराबर ले पानी में पीसकर कपडे में जमाकर रखछोडे और समय पर फोडे की बराबर फाया कतर कर लगावे जो इसके लगाने से फूट जावे.तो जैत के पत्ते और नीम के पत्ते बांधे जब फोडेमे शक्ति न रहे तो ऊपर कहे हुए मरहमो में से कोई तेज मरहम लगावे और जो फोडे के फूटने के पीछे उसमे सडा हुआ मांस उत्पन्न होजावे तो चिकित्सा न करे और जो चिकित्सा करनी अवश्य हो तो संपूर्ण स्तन को कटवा डाले तो आराम होगा और हकीम को चाहिये कि दवाई प्रकृति के अनुसार करे और जर्राह को उचित है कि वह मरहम लगावे जिससे घाव पानी न देवे ॥ और जो स्तन न काटा जावे वह मरहम यह है ॥

मरहम

जंगाल एक तोला, शहद एक तोला, सिरका दो तोला,

इन सबको मिलाकर पकावै जब तार बँधने लगे तब ठण्डा करके लगावै और घाव को देखना चाहिये कि घाव में रुधिर निकलता है या पानी निकलता है और असाध्य का लक्षण यह है कि घाव के चारों ओर स्याही होतीहै और दुर्गंध आती है और पीव काली निकलती है और फफोंदी के सदृश सफेदी होती है। फिर उस घाव की चिकित्सा न करै क्योंकि उसको कभी आराम न होगा। और साध्य का यह लक्षण है कि घाव चारों ओर से लाल होता है और पीव गाढा और पीलापन लिये निकलता है जो घाव की सूरत ऐसी हो तो निःसन्देह चिकित्सा करै परमेश्वर के अनुग्रहसे निश्चय आराम होगा।

एक फोडा छाती पर कौडी के पास अथवा कौडी के स्थान पर होता है जैसा इस तसवीरमें देखलो इलाज इसको तेज मरहम से

पकाकर फोडे अथवा चीर डाले उसकी भी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये क्योंकि यह फोडा रहजाता है। और जो घाव मे सामने बत्ती जावे तो चिकित्सा न करै. और जो दाहीं तथा बाईं ओर बत्ती जावे तो इसी प्रकार से चिकित्सा करै। जैसे कि ऊपर वर्णन कर आये हैं, और एक फोडा पीठ पर होता है उसकी भी चिकित्सा उसी रीत से करनी चाहिये जैसा कि छाती क फोडे का वर्णन कर आये हैं, और वह मरहम लगावै जिसमें जलाहुआ कोकनार लिखा है।

और एक फोड़ा नाभि के ऊपर होता है उसकी चिकित्सा

वैसी करनी उचित है जैसा कि पेट के फोडे में वर्णन की गई है और वह मरहम लगावै जिसमें रसौत और तगर की लकडी लिखी हो, इन तीनों फोडों की एकही चिकित्सा की जाती है एक फोडा पेडू के ऊपर होता है उसकी लम्बाई और चौडाई बहुत होती है यहां तक बढता है कि तरबूज की बराबर होजाता है, इसकी चिकित्सा भी शीघ्र करनी चाहिये कि स्याही न आने पावै और जो स्याही आजावै तो चिकित्सा न करै, क्योंकि ये असाध्य है परन्तु जो करनी अवश्य हो तो इसकी चिकित्सा इस प्रकार करे। और आगे लिखी यह मरहम लगावै

मरहम

नीम के पत्ते एक सेर, आंवाहलदी आध पाव, हलदीकची आधपाव- काले तिलों का तेल एक सेर, पहिले तेल को तांबे के बर्तन में गरम करै फिर उसमें नीम के पत्ते डाले जब नीम के पत्ते जलकर स्याह होजावै तो उनको निकाल कर दोनो हलदियोंको जो कूट करके तेलमें डाले जब वे भी स्याह होने लगें तब तेलको छान कर रक्खै और फोडे पर लगावे और जो इसके लगाने से कुछ आराम न हो तो वही करै जो ऊपर वर्णन किया गया है और समय पर जैसी सम्मति हो वे वैसे करैं परन्तु जहां तक हो सके इसको असाध्य कहकर छोड देना चाहिये ॥

एक फोडा पेडू और जांघ के बीच मे होता है। वह भी कंठमाला के भेदो में से है और लौकिक में उसका नाम (बद) विख्यात है॥ उसकी सूरत यह है कि पहिले एक गुठली सी होती है और लोग उसको उपदंश के संदेह में छिपाते हैं यद्यपि वह बालकों के भी हो जाती है और जो उसको न छिपावै तो शीघ्र आराम हो सक्ता है और फिर इसकी चिकित्सा कठिन पड जाती है और इसके इलाज बहुत से हकीमो ने अपनी अपनी

किताबों में लिखा है अब अपनी बुद्धि के अनुसार इसकी चिकित्सा लिखते हैं बुद्धिवानों को चाहिये कि पहिले वे दवा लगावैं जिससे यह बैठ जावे बैठालने की दवा यह है ॥

नुसखा ।

चूना एक तोला लेकर उसे मुर्गी के एक अंडे की सफेदी में मिलाकर लेप करै

अथवा मनुष्य के सिरकी हड्डी पानी में घिसकर लगावै ।

अथवा ईसबगोल को पानी मे पीसकर बदके ऊपर लेपकरै

अथवा सफेद कत्था, कलमी तज कवेला. बबूल का गोंद, छः छः माशे इन सबको पानी में पीसकर गाढा गाढा लेपकरै और जो न बढे तो पकानेकी दवाई लगावै वह दवा यह है ॥

नुसखा ।

एक अंडे की जर्दी निखालस शहत एक तोले, गेहूंका मैदा एक तोले, इनको मिलाकर लगावे ॥ और जो न फूटे तो नश्तर देवे और जो नश्तर देने में कच्चा निकले तो नीम के पत्ते, हरी मकोय, नरमा के पत्ते जैत के पत्ते और बकायन के पत्ते इनसब को पानी मे औटाकर बफारा देवे और इन्ही को बांधे सातदिन तक यही करते रहे इससे खूब नरम हो कर मवाद निकल जावे फिर यह मरहम लगावै ॥

मरहम ।

प्रथम गौका घृत आधपाव लेकर गरम करे फिर उसमे दो तोला पीला मोम पिघलावे फिर सफेद राल सात तोले मिलावे जब खूब मिलजावे तब एक सकोरे मे रखकर पानी से धोवे और चार तोले भांगरे का रस मिलाकर घावपर लगावै और एक लेप यह है जो आदिमे फोडे को तहलील करके फोड देता है और कच्चे फोडे को पका देता है ॥

॥ नुसखा लेप ॥

हालों, तज, अलसी, मैथी के बीज, ये सब एक एक तोले, एलुआ कमंगरी, साबुन, भैंसागूगल, रेवत चीनी, लाल सज्जी ये सब छः छः माशे इन सबको पानी में पीसकर गरमकर गाढार लेपकरै और ऊपर से बंगला पान गरम करके बांध देवै और इस लेपके बहुतसे गुणहै और जो इस लेपको चोटपर लगावै तौ सज्जी न डालै किन्तु सज्जी के बदले सैंधा नमक मिलावै ॥ और जो चोटसे हड्डी टूट गई होतौ आंबा हल्दी और मिलादेवै तौ परमेश्वर के अनुग्रह से आराम होजायगा ॥

एक फोडा अंडकोशों के नीचे होताहै उस्को भगंदर कहतेहैं उस्में सूजन होतीहै और ज्वर भी होताहै उस्की चिकित्सा बदकी चिकित्सा के अनुसार करनी योग्य है और उन्ही पत्तीयों को बफारा देवें और वह मरहम लगावे जिसमें अलसी और मेथी लिखी है जब नरमहो जावैतौ चीरनेमें देरीन करें फिरपीछे नीम के पत्ते और नमक बांधे और यह मरहम लगावें ॥

॥ मरहम की विधि ॥

पहिले गौकाघृत सात तोले लेकर गरम करै फिर एक तोले सफेद मौंम उस्में डालकर पिघलावे फिर सिंदूर गुजराती दोतोले सिगरफ रूमी सफेदजीरा सेलखडी काली मिर्च कत्था सफेद सुपारी ये सब एक एक तोलेले और लीला थोथा एक माशे ले इन सबको महीन पीसकर उसी घृतमें मिलावै और आगपर रक्खै जब खूब चासनी होजावे तो ठंडा करके लगावे औरजो इससे आराम न हो तो वह मरहम लगावे जिसमें बेरके पत्ते हैं और जोरह जावेतो तेजाब लगावे जिसमे गिरगट है ।।

॥ गुदाके फोडेका यत्न ॥

एक फोडा गुदामे होता है इस्को बवासीर कहते हैं यह

किताबो में लिखा है अब अपनी बुद्धि के अनुसार इसकी चिकित्सा लिखते हैं बुद्धिवानों को चाहिये कि पहिले वे दवा लगावै जिससे यह बैठ जावे बैठालने की दवा यह है ॥

नुसखा ।

चूना एक तोला लेकर इसे मुर्गी के एक अंडे की सफेदी में मिलाकर लेप करै

अथवा मनुष्य के सिरकी हड्डी पानी में घिसकर लगावे।

अथवा ईसबगोल को पानी मे पीसकर बदके ऊपर लेपकरै

अथवा सफेद कत्था, कलमी तज कवेला बबूल का गोंद, छः छः माशे इन सबको पानी में पीसकर गाढा गाढा लेपकरै और जो न बढे तो पकानेकी दवाई लगावै वह दवा यह है ॥

नुसखा ।

एक अंडे की जर्दी निखालस शहत एक तोले, गेहूंका मैदा एक तोले, इनको मिलाकर लगावे ॥ और जो न फूटे तो नश्तर देवे और जो नश्तर देने में कच्चा निकले तो नीम के पत्ते, हरी मकोय, नरमा के पत्ते जैत के पत्ते और बकायन के पत्ते इनसब को पानी मे औटाकर बफारा देवे और इन्हीं को बांधे सातदिन तक यही करते रहे इससे खूब नरम हो कर मवाद निकल जावे फिर यह मरहम लगावे ॥

मरहम ।

प्रथम गौका घृत आधपाव लेकर गरम करे फिर उसमे दो तोला पीला मोम पिघलावे फिर सफेद राल सात तोले मिलावे जब खूब मिलजावे तब एक सकोरे में रखकर पानी से धोवे और चार तोले भांगरे का रस मिलाकर घावपर लगावै और एक लेप यह है जो आदिमें फोडे को तहलील करके फोड देता है और कच्चे फोडे को पका देता है ॥

॥ नुसखा लेप ॥

हालों, तज, अलसी, मेथी के बीज, ये सब एक एक तोले, एलुआ कमंगरी, साबुन, भैंसागूगल, रेवन्त चीनी, लाल सज्जी ये सब छः छः माशे इन सबको पानी में पीसकर गरमकर गाढा२ लेपकरै और ऊपर से बंगला पान गरम करके बांध देवै और इस लेपके बहुतसे गुणहैं और जो इस लेपको चोटपर लगावै तौ सज्जी न डालै किन्तु सज्जी के बदले सेंधा नमक मिलावै ॥ और जो चोटसे हड्डी टूट गई होतौ आंबा हल्दी और मिलादेवै तौ परमेश्वर के अनुग्रह से आराम होजायगा ॥

एक फोडा अंडकोशों के नीचे होताहै उसको भगंदर कहतेहैं उसमें सूजन होतीहै और ज्वर भी होताहै उसकी चिकित्सा बदकी चिकित्सा के अनुसार करनी योग्य है और उन्ही पत्तीयों को बफारा देवें और वह मरहम लगावै जिसमें अलसी और मेथी लिखी है जब नरमहो जावैतौ चीरनेमें देरीन करें फिरपीछे नीम के पत्ते और नमक बांधें और यह मरहम लगावें ॥

॥ मरहम की विधि ॥

पहिले गौकाघृत सात तोले लेकर गरम करै फिर एक तोले सफेद मौंम उसमें डालकर पिघलावै फिर सिंदूर गुजराती दोतोले सिगरफ रूमी सफेदजीरा सेलखडी काली मिर्च कत्था सफेद सुपारी ये सब एक एक तोलेले और लीला थोथा एक माशे ले इन सबको महीन पीसकर उसी घृतमें मिलावै और आगपर रक्खै जब खूब चासनी होजावै तो ठंडा करके लगावै औरजो इससे आराम न हो तो वह मरहम लगावे जिसमें बेरके पत्ते हैं और जोरह जावेतो तेजाव लगावे जिसमे गिरगट है ।।

॥ गुदाके फोडेका यत्न ॥

एक फोडा गुदामें होता है इसको बवासीर कहते हैं यह

जो यह फोडा आपही फूट जावे तो वह मरहम लगावे, जिसमें सुहागा और नीलाथोथा है जब वह घाव अच्छा होजाय और बत्ती जाने के माफिक स्थान रहजावे तो चीरडाले वा तेजाब लगावे और जो चारों ओर से बराबर अच्छा होजाय तो सुखाने के वास्ते यह मरहम लगावे ।

मरहम की विधि ।

पहिले शीसे की गोली को कुश्ता करै और उसकी भस्म ६ माशे लेवे और सफेदा काशगरी ६ माशे, सिन्दूर ६ माशे. राल सफेदा २ माशे. गौ का घी ६ माशे इन सबको पीसकर गरम करके मिला देवै फिर मोम पीला ६ माशे मिलाकर खूब रगडे फिर उसको घाव पर लगावै ॥

। बांहके फोडेका यत्न ।

एक फोडा वांहपर होताहै इसका निशान आगेकी तसबीर में देखलो और चिकित्सा इस प्रकार से करो जैसाकि कंध के फोडे में वर्णन की गई है और कंधे से घुटने तक सात फोडे होते हैं और एक फोडा कोहनी पर होताहै उसमे से पानी निकलता है उस पर यह मरहम लगावे ॥

॥ मरहम ॥

काले तिलोंका तेल पावभर, सफेद मोम दो तोले नीला थोथा दो माशे, सोनामाखी दो माशे, मस्तंगी रूमी छःमाशे,

विरोजा हरा छःमाशे माजू दो तोले, फिरोजा सूखा एकतोला नौसादर पांच माशे मुर्दासंग ५ माशे, सेलखडी २ माशे, बूरा-लाल २माशे, सुहागा चौकिया भुना २माशे जगाल एक तोले प्रथम तेलको गरम करे फिर उसमे मोम को पिघलावे फिर ये सब दवा महीन पीसकर डाले जब मरहम के सदृश होजावे तबठंडा करके लगावै ॥ और घुटने से नीचे सात फोडे होतेहैं इनके निशान तसवीर मे समझो ॥

॥ उंगलीके फोडेका यत्न ॥

एक फोडा उगली में होताहै उसको त्रिषभरी कहते हैं और बहुत से मनुष्य इसको बिसारा कहते है जो उसमें बुरामांस होतो चीर डाले और जो न चीरे तो तेजाब लगावे जब मांस कट जावेतो वह मरहम लगावे जिसमें शीशे का कुश्ताहै ॥

हथेली के फोडे का यत्न ।

एक फोडा हथेली में होताहै उसकोभी चीर डालना चाहिये और जो तुम फूटने की राह देखोगे तो उँगलिया जाती रहेंगी और जो उँगलियां सीधी न हो तो भेडों की मेंगनियां पानीमे औटाकर बफारा देय और भेडों के दूध का मर्दन करे अथवा २ आतशी शराब मेंले ॥ और कंधेसे अगुली तक चौदह फोड़े होते हैं जिनकी चिकित्सा बहुत कठिनाईसे होती है और बहुत से ऐसे फोडे होते हैं वो शीघ्र अच्छे होजाते हैं ॥

॥ पीठके फोडेका इलाज ॥

एक फोडा पीठमें होताहै उसको अदीठ कहतेहैं ॥ और

उसके आसपास छोटी २ फुंसियां होतीहैं और वह फोडा पीठ के बीचमे होताहै वह केकडे के सदृश होता है और लम्बाव तथा चौडाव मे बहुत बडा होता है और उस फोडे के पकजाने के पीछे एक छिद्र होताहै और उसमे पानी निकलता है अथवा पका पीव निकलती है और छीछडा नही निकलता है इस फोडेका निशान ऊपर लिखी तसवीर मे देखलो !

इस फोडे की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि उसकी षारफांक करके चीरडाले और उसपर सांभर नमक नीमके पत्ते फिटकरी और शहत बांधते रहें कि मल आदि से शुद्धरहे ॥ परन्तु ध्यान रक्खे कि इसकी सूजन बाईं ओर को न आजावे और जो दैव योग से सूजन बांई ओर को हो आवेतो दाहिने हाथकी बासलीक नसकी फस्त खोले और पन्द्रह तोले रुधिर निकाले औरजो इतना रुधिर न निकले तो चार दिनके पीछे बाये हाथकी भी बासलीक नसकीफस्त खोले और फोडेपर ये मरहम लगावे ।

॥ मरहम की बिधि ॥

चूक चून सज्जी नीला थोथा साबुन राई सुहागा आक का दूध ये सब दवा २ तोले गौका घृत १२ तोले प्रथम घृत को गरम करके म बुन मिलावे जब खूब चाशनी होजाय तब ठंडा करके लगावे और जो घाव भर आने के पीछे सूजनहो आवे और सूजन के पीछे पेचिश होजावे तो उसकी चिकित्सा करना उचित और ये दवाई पिलावे ॥

॥ नुसखा ॥

खतमी के बीज, खतमी का रेशा, छःछः माशे इनदोनों को रात्रिको पानीमे भिगोदे और सबेरे ही छानकर फिर पहले चार माशे नाजबू के बीज फकाके ऊपर से इसे पिलादे और जो इन चारो फोडो मेंसे दाहिनी ओरका फोडा होवे तोभी इस प्रकारसे चिकित्सा करै जैसाकि अभी वर्णन कीया है औरजो फोडा बांई ओर होतो उसके अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये और ये तीन फोडा कुछ बहुत भयानक नहीहै जैसी चाहैं तैसी चिकित्सा करें॥

पसली के फोडेका यत्न ।

एक फोडा पसलीयों पर होता है इसका निशान नीचे की तसबीर में समझलो क्योंकि ये भी स्थान नासूर का है और बांई ओर की पसली का फोडा पेटमें उतर जाता है उसमें से आहार निकलता है और ये फोडा बडी मुशकिल से अच्छा होता है वरने अच्छा नहीं होता ॥

कोख के फोडे का यत्न ।

एक फोडा कोखपर होता है उसकी चिकित्सा इस प्रकार से करनी योग्य है जैसी कि ऊपर वर्णन करी गई है और इन दोनो फोडो का निशान इस तसबीर में समझलेना ।

नाभिके फोडे का यत्न ।

एक फोडा नाभिमें होता है इसका निशान भी आगे लिखी तसवीरमें समझलेना लेना और चिकित्सा इसकी इस प्रकार से करे कि पहिले उन पत्तियों का वफारा देवे जो ऊपर अंडकोशों के फोडे की चिकित्सा में कही गई है और नीमके पत्ते सफेद प्याज के पत्ते खारी नमक इन सबको पीसकर के गरम करके लगावे और जो फोडा ठीक ठीक पकजावे तौ चीर डाले और जो आपही फूट जावे तौ भी नश्तर देना अवश्य है क्यो कि बिना नश्तर लगाये इसका मवाद निकलता नहीं किन्तु गुदा के द्वारा होकर निकलने लगता है इसी लिये नश्तर से चार फांक करके ये मरहम लगावे ॥

मरहम ।

काले तिलोंका तेल आधसेर. सफेद मोम दो तोले मुर्दासंग छः तोले सफेद कत्था एक तोले कपूर छः माशे नीलाथोथा चार रत्ती. अरंड के पत्तोंका रस चार तोले प्रथम तेलको गरम करे फिर मोम डालकर पिघलावे फिर इनसब दवाइयोंको मिलाकर जलावे और सब दवा पीसकर मिलाके चाशनी करे फिर ठंढा करके काममें लावे और गाढी और बुरी पीव निकले तौ ये दवाई पिलावे ॥

॥ नुसखा ॥

पित्त पापडे के पत्ते, सफेद चंदन, रक्त चन्दन, गाजवां, मुलेटी छिलीहुई, खतमी के फूल, वनपशा के फूल, ये सब छः छः माशे ले और इन सबको रात्रि समय जलमें भिगोदेफिर सवेरेही मलकर छानले और उसपर गेंहूंका सत्त, वंशलोचन जहरमोहरा खताई, दम्मुल अखवेन , ये सब एक एक माशे लेकर महीन पीसकर उस पानी में मिलाकर पिलावै और फोडे के आसपास यह लेप लगावे ॥

॥ नुसखा ॥

पित्त पापड़े के पत्ते, चिरायते के पत्ते, पित पापडे के बीज ये सब एक एक तोला, निर्विसी छः माशे, रक्तचन्दन १ तोला, सफेद चन्दन १ टोला, अफीम १ तोला, मिश्री १ तोला, नीम की छाल १ तोला इन सब को जल में पीसकर गरम करके लगावे। और जितने फोडे पीठ की ओर होते हैं उन सवकी चिकित्सा करना बहुत कठिन है उन सब पर लेप लगाना गुण करता है ॥

चूतड के फोडे का इलाज।

एक फोडा चूतड के ऊपर होता है चाहें दांही ओर हो या वांही ओर हो उस की चिकित्सा भी इन्ही मरहमो से करनी चाहिये क्योंकि कुछ डर का स्थान नही है और जो इन मरहमो से आराम न हो तो यह मरहम लगावे ॥

नुसखा

काले तिलोंका तेल १५ तोला विलायती साबुन ३ तो॰ सफेदा काशकारी २ तोला सफेदा गुजराती २ तोला प्रथम तेल को गरम कर उसमें साबुन को पिघलाकर चाशनी करै जब मरहम ठीक होजाय तब उसे ठण्डा कर घाव मे लगावे। अथवा सफेद राल २ तोला महीन पीस छानकर तिलों का तेल ४ तोला. लेकर मिलावे और नदी के जल में धोवे जब खूब सफेद होजाय तब उसमें कत्था सफेद ४ माशे. नीलाथोथा २ माशे रसकपूर ३ माशे सबको पीसकर घाव में लगावे।

चूतड के नीचे के फोडे का इलाज।

एक फोडा चूतड से नीचे उतरकर होताहै लोग उसको भी बवासीर कहते हैं, परन्तुये फोडा बवासीर के भेदो मे से नहीहै लेकिन यह स्थान नासूर का है उसकी सूरत यह है कि पहिले

एक गुठलीसी होती है आर आपही आप रिसने लगती है उसकी चिकित्सा इस प्रकार से करना चाहिये प्रथम उसमे चीरा देकर उसको चार फाक करै क्योंकि उसके भीतर एक छीछडा होता है सो वगैर चीरने के उसका निकलना कठिन है इस लिये इसमें चीरा देकर छीछडा निकालकर फिर मरहम लगावै।

॥ नुसखा ॥

पहिले कालें तिलोंका तेल पांच तोले गरम करै फिर उसमें छः माशे मोम डाले और सोंफ. गेरू, मुर्दासङ्ग नीला थोथा ये सब एक एक तोला लेकर महीन पीसकर मिलावे और आग मंदी करदेवे जब चाशनी ठीक होजाय तब ठंडा करके लगावै ॥

॥ जांघके फोडेका यत्न ॥

एक फोडा जांघमे होताहै उसको गम्भर कहतेहैं इसमे भी एक बडीसी गुठली होजाती है और वह सातमासके पीछे प्रगट होतीहै इस फोडेमें डरहै इसफोडेका निशान आगे लिखी तसवीर मे समझ लेना और चिकित्सा उसकी यहहै कि उसको ठीकर चीर डाले और सब मवाद निकाल देवै पीछे उसके बुरेमांसको इतना काटेकि चार चार अंगुल गढा होजावै फिर उसपर नीमके पत्ते सफेद बूरा फिटकरी इन सबको एक सप्ताह तक बांधे फिर ये मरहम लगावै ॥

॥ मरहम की बिधि ॥

राल सफेद दो तोला, नीलाथोथा एकरत्ती, इन दोनो को महीन पीसकर छ' तोला घृतमे मिलावै फिर उसमें एक माशे साबुन डाले फिर उसको नदीके जलसे अथवा वर्षाके जलसे

अथवा वर्षा के जल से या वरफ के जल से खूब धोकर लगावै और एक फोड़ा जांघ के नीचे की ओर को होता है वह भी इन्हीं मरहमों से अच्छा होता है ।

घोंटू के फोडे का इलाज ।

एक फोडा घुटने के जोड पर होता है उसकी चिकित्सा बहुतही कठिन है क्योंकि पहिले एक पीली फुन्सी होती है । उसकी तसवीर आगे देखलो ।

जब वह फुन्सी फूट जाती है तो उसके चेप से बहुत घाव होजाता है अन्त को उसमें वत्ती जाने लगती है फिर वह असाध्य होजाता है और जो मनुष्य उसकी चिकित्सा करै तो इस प्रकार से करै. पहिले तेजाव लगाकर घाव वढादे और उसमें एक सफेदसा मांस होता है उसको निकाल डाले जब घाव कडा होजाय तो वह मरहम लगावै जिसमें रतनजोत है और जो उसके लगाने से आराम न हो तो ये आगे लिखी मरहम लगावै ।

मरहम विधि ।

कुदरूगोंद १ तोला, पारा ६ माशे, काले तिलो का तेल २ तोला इन सबको एक कढाई मे डालकर खूब रगड़ना चाहिये जब मरहम के सदृश होजाय तब लगावै ।

पिंडली के फोडे का इलाज ।

एक फोडा पिंडली पर होता है उसकी सूरत यह है ।

पहिले इसकी चिकित्सा यह है कि तहलील करनेवाला लेप लगावै तो तहलील होजावे. और वासलीक नसकी फस्त खोलें और यह आगे लिखा लेप लगाना चाहिये।

लेप

अमलतास २ तोला, बाबूना के फूल १ तोला, खतमी के फूल १ तोला, सुर्खी मकोय १ तोला. नाखूना १ तोला, गेरू १ तोला. मूरिद के बीज ६ माशे, अफीम २ माशे; शोरंजान कडवा ६ माशे, निर्विसी ६ माशे इन सब को पानी मे पीस कर गरम करके लगावै और अरण्ड के पत्ते बांधै और जो घाव लाल होजाय तो वह मरहम लगावै जिस में नानपाव का गूदा है और जो वह फूटजाय तो देखें कि घावके नीचे सखतीहै वा नरमी जो नरमी होतो नश्तरदेवै और वहमरहम लगावै जिस में वर्षा का जल लिखाहै । ये तसवीर पिंडलीके फोडेकी है देखलो

दूसरी सूरत इस फोडेकी यह दिखलाई है कि पाहिले एक छालासा होता है और उस घावसे २ अंगुल नीचे मवाद होता है जब वह छाला फूट जावै और मवाद निकले वा दवाने से निकलता है तो नश्तर देवे उसपर नीम के पत्ते और नमक बांधे फिर यह नीचे लिखी मरहम लगावै ।

❋ नुसखा ❋

पांहिले काले तिलो का तेल पाव सेर लेकर गरम करै फिर

सफेद शलगम २ तोले मिलोये गुजराती नग २ नीमके पत्तों की टिक्किया २ तोला उसमें जलाकर फेंकदे और सिंदूर मिलाकर मंदी २ आगपर औटावे परन्तु सिंदूर पांच तोला डाले जब चाशनी होजाय जाय तब ठंडा करके लगावे ।

॥ पिंडलीके दूसरे फोडेका यत्न ॥

एक फोडा पिंडली से छः अंगुल नीचे होताहै और वह बहुत कालमे पकता है एक वर्ष वा दो वर्षके पीछे फूटता है तो उसमे से पानी निकलताहै और कभी कभी रुधिर भी निकला करताहै ॥ उसपर वह मरहम लगावे जिसमें सफेद जीरा है ॥ अथवा यह मरहम लगावै ॥

। नुसखा मरहम ॥

लाल मैनफल, बबूल का गोंद, लौंग फूलदार साबुन विलायती, भैंसा गूगल, इन सबको बराबर ले जलमे महीन पीसकर एक कपडे पर जमावे और उसको मोम जामा बना रक्खे और समयपर फाया कतरकर लगावे ये लेप बहुत ही उत्तम है । इस फोडेको बीढा कहते है । और जब वह पकजावे तब उसपर वह मरहम लगावे जिसमें साबुन है अथवा यह मरहम लगावै ॥

❀ नुसखा ❀

जंगाल, सुहागा, चौकिया, कच्चा, आमाहल्दी, तीन तीन माशे, बिरोजा पांचतोले, साबुन छ·माशे, इन सबको मिलाकर और पानी से धोकर लगावे ॥

❀ गट्टेकेफोडे का यत्न ❀

एक फोडा पांवके गट्टेपर होता है जो वह शीघ्र अच्छा हो जाय तो उत्तम है नहीं तो उसमे से हड्डियां निकला करती हैं

और हमने अपनी आंखों से भी देखा है कि ऐसा फोडा वर्षा मेंही अच्छा होता है और इस फोडेकी वही चिकित्सा करे जो अभी वर्णन की है ॥

❀ पांवके तलुएकेफोडे का यत्न ❀

एक फोडा पांवके तलुएमें होता है इस्की भी यही चिकित्सा है जो अभी ऊपर वर्णन की है ॥

❀ पांवकी अंगुलीकेफोडे का यत्न ❀

एक फोडा पांवकी अंगुलियों पर होता है ध्यान करै कि वह उपदंश के कारण करके तो नहीं है जो उस्का यह कारण नहो तो वही चिकित्सा करै जो हाथकी अंगुलियो के फोडेकी है और जो यह फोडा उपदंश के कारण हो तो उस्की यह सूरत होती है कि पांवकी अंगुलियां गलकर गिरपडती हैं और चिकित्सा करने से घाव होजाता है और पांव बेकार होजाता है।

अव जानना चाहिये कि शरीर मे वहुत से फोडे होतेहैं उन सबकी व्यवस्था वर्णन करूं तो वहुत ग्रंथ बढजाता इस लिये दो चार नुसखे मरहम और तेलके लिखेदेता हूं जो सब प्रकार के फोडो को गुणदायक हैं ॥

❀ नुसखा ❀

गुलावकी पत्तियो को गुलावजल में पीसकर गरम करके गाढा गाढा लेपकरै और ऊपर से बंगलापान बांधे तो सब प्रकार के फोडों को तहलील करै और जो मवाद तहलील होनेके योग्य न होगा तो पका देवेगा ॥

अथवा—ववूलका गोंद, कवेला, एकएक तोले इनको पानी में-पीसकर लगावे और उसपर बंगलापान गरम करके बांधे ॥

अथवा—पहिले घृतको गरम करके उसमे चार माशे कालीमिरच और इतनी ही कलोंजी पीसकर डाले इन

सबको मिलाकर पकावे जब दवा जलजावे तब लोहे के घोटे से खूब रगडे जब मरहम के सदृश होजावै तब काममें लावै ॥

अथवा–कडवा तेल पांच ताला, कबेला, काली मिर्च, महदी के पत्ते हरे, नीमके पत्ते सूखे आमले ये सब दवा छः छः माशे नीला थोथा चार माशे इन सबको तेलमें जलाकर लोहेके दस्ते से खूब रगड कर लगावै ॥

॥ दादका यत्न ॥

जो दाद रोग थोडे दिनोंका होयतौ ये दवा लगाना चाहिये।

❋ नुसखा ❋

सूखे आमले. सफेद कत्था. पवांड के बीज इन तीनोंको बराबर लेकर दहीके तोडमें पीसकर महंदी के सदृश लगावै ॥

॥ अथवा ॥

पलास पापडा, नीलाथोथा, सफेद कत्था, इन सबको बराबर ले कागजी नीबूके रसमें पीसकर दादपर लेप करै - और थोडी देर धूपम वैठा रहै सात दिनके लगाने से बिलकुल आराम हो जायगा ॥

❋ अथवा ❋

कपास के बीजोंको कागजी नींबू के रसमें पीसकर रक्खे पहिले दादको कंडेसे खुजाकर फिरइस लेपको लगावे ॥

❋ अथवा ❋

अफीम पमाडके बीज नौसादर खेरसार, इनसब दवाओंको बराबर ले नीबूके रसमें पीसकर दादमें लेप करेतो दाद बहुत जल्द आराम होजायगा ॥

❀ अथवा ❀

राल, माजूफल, नीलाथोथा, इन तीनोंको बराबर ले हुक्केके पानीमें तथा कागजी नीबूके रसमे पीसकर लगावै ॥

❀ अथवा ❀

राई २२॥ माशे कूटछान कर सिर्केमें मिलाकर लेपकरै तो दादजाय ॥ ये दवा उसवक्त करना उचितहै कि जब दाद खाल के नीचे पहुंच गयाहो ॥ और जो खालके नीचे न पहुंचा होतो ये लेप करै ॥

❀ नुसखा ❀

गंदक पीली छः माशे लेकर कूटछान कर उसमें थोडा पारा कपड़े में छानकर गंधक की बराबर ले और गौका घी औरबकरे की चरबी तीनबार जलसे धोई हुई इन दोनोंको साडे सोलह २ माशे ले इन सबको मिलाकर खूब मथे कि पारा मरजावै फिर इसके दोभाग करले और इसका एक भाग धूपमे वा आगके सामने बैठकर मलै फिर एक घडी पीछे गरम जलसे स्नान करे ये दवाई खुजली कोभी दूर करती है ॥ और किसी मनुष्य के दाद बहुत दिनके होगये होतो उसकी ये दवा करे ॥

❀ नुसखा ❀

पंवाडके बीज एक तोले पानी में पीसकर और तीन माशे पारा मिलाकर खूब खरलकरे जब मरहम के सदृश होजावै तो दादको खुजाके इस दवाको लगावै तो निश्चय आराम होय ॥

❀ अथ खुजलीका यत्न ❀

जानना चाहियेकी खुजली रोग दो प्रकारका होताहै एकतो सूखी दूसरी तर अब हम पहिले तर खुजली के यत्न लिखतेहैं ॥

नुसखा

लाल कमेला एक तोले चौकिया सुहागा भुना एक तोले फिटकरी एक तोले इन तीनों को महीन पीसकर दो तोले कडवे तेल में मिलाकर शरीर में मर्दन करै इसी तरह तीन दिन तक करै फिर तीन दिनके बाद लौनी मिट्टी शरीर में मलकर स्नान करडाले तो खुजली जाय ॥

अथवा

कबेला, सफेद कत्था, महदी ये तीनों दवा एक एक तोले भुना सुहागा तीन माशे कालीमिर्च एकमाशे इन सबको महीन पीसकर छानकर गौके धुले हुए घृतमे मिलाकर चार दिन तक मर्दन करे फिर लौनी माटी को शरीर पर मलकर स्नान करे तो खुजली निश्चै जाय ॥

और जो खुजली सूखी होतो हम्माम में स्नान करना गुण करता है ॥ और जुलाब लेना फायदा करता है तथा शातरे का अर्क पीना फायदा करता है और करूत का लेप करना भी लाभ दायक होता है ।

करूत के लेपकी विधि ।

करूत को पीसकर दो घडी तक गरमजल मे भिगोरक्खे फिर इसको खूब मले जब मरहम के सदृश होजाय तब उस में खट्टा दही वा सिरका १२ तोले, और गंधक आमलासार ३॥। तोले कूट छानकर इन सबको २२॥ माशे तिलके तेलमे मिलाकर तीन भाग करे और सबेरे ही एक भाग को शरीर पर मलकर फिर हम्माम मे जाकर गेहूं की भुमी सी और सिरका बदनपर मलकर गरम जलसे स्नान कर डाले तो खुजली निश्चय जाय ये लेप दोनो तरह की खुजली को गुण करता है ॥

❀ अथवा ❀

राल माजूफल, नीलाथोथा, इन तीनोंको बराबर ले हुक्के पानीमें तथा कागजी नीबूके रसमें पीसकर लगावै ॥

❀ अथवा ❀

राई २२॥ माशे कूटछान कर सिर्केमें मिलाकर लेपकरै तो दादजाय ॥ ये दवा उसवक्त करना उचितहै कि जब दाद खाल के नीचे पहुंच गयाहो ॥ और जो खालके नीचे न पहुंचा होतो ये लेप करै ॥

❀ नुसखा ❀

गंदक पीली छः माशे लेकर कूटछान कर उसमें थोडा पारा कपड़े में छानकर गंधक की बराबर ले और गौका घी औरबकरे की चरबी तीनबार जलसे धोई हुई इन दोनोको साडे सोलह २ माशे ले इन सबको मिलाकर खूब मथे कि पारा मरजावै फिर इसके दोभाग करले और इसका एक भाग धूपमें या आगके सामने बैठकर मलै फिर एक घडी पीछे गरम जलसे स्नान करै ये दवाई खुजली कोभी दूर करती है ॥ और किसी मनुष्य के दाद बहुत दिनके होगये होतो उसकी ये दवा करै ॥

❀ नुसखा ❀

पंवाडके बीज एक तोले पानी मे पीसकर और तीन माशे पारा मिलाकर खूब खरलकरे जब मरहम के सदृश होजावै तो दादको खुजाके इस दवाको लगावै तो निश्चय आराम होय ॥

❀ अथ खुजलीका यत्न ❀

जानना चाहियेकी खुजली रोग दो प्रकारका होताहै एकतो सूखी दूसरी तर अब हम पहिले तर खुजली के यत्न लिखतेहैं ॥

नुसखा

लाल कबेला एक तोले, चौकिया सुहागा भुना एक तोले फिटकरी एक तोले इन तीनों को महीन पीसकर दो तोले कडवे तेल में मिलाकर शरीर में मर्दन करे इसी तरह तीन दिन तक करे फिर तीन दिनके बाद लौनी मिट्टी शरीर मे मलकर स्नान करडाले तो खुजली जाय ॥

अथवा

कबेला, सफेद कत्था, महदी ये तीनों दवा एक एक तोले भुना सुहागा तीन माशे कालीमिर्च एकमाशे इन सबको महीन पीसकर छानकर गौके धुले हुए घृतमे मिलाकर चार दिन तक मर्दन करे फिर लौनी माटी को शरीर पर मलकर स्नान करे तो खुजली निश्चै जाय ॥

और जो खुजली सूखी होतो हम्माम मे स्नान करना गुण करता है ॥ और जुलाब लेना फायदा करता है तथा शातरे का अर्क पीना फायदा करता है और करूत का लेप करना भी लाभ दायक होता है ।

करूत के लेपकी विधि ।

करून को पीसकर दो घडी तक गरमजल मे भिगोरक्खे फिर इसको खूब मले जब मरहम के सदृश होजाय तब उस मे खट्टा दही वा सिरका १२ तोले, और गंधक आमलासार ३॥ तोले कूट छानकर इन सबको २२॥ माशे तिलके तेलमे मिलाकर तीन भाग करे और सबेरे ही एक भाग को शरीर पर मलकर फिर हम्माम मे जाकर गेहूं की भुसी सी और सिरका बदनपर मलकर गरम जलमे स्नान कर डाले तो खुजली निश्चय जाय ये लेप दोनो तरह की खुजली को गुण करता है ॥

॥ अथवा ॥

पित्तके उत्पन्न करने वाली वस्तु. पिस्ता मदिरा और शहत नखाय और नित्य हमाममें स्नान करै और जुल्लाब लेवै। और मुंजिश के वाद नित्य रातको नीबूका रसवा अंगूर कारस अथवा सिरका थोडा गुलाबजल और रोगन अथवा मीठे तेलमें मिलाके गुन गुना करके मालिश करै तो सूखी खुजली जाय॥

और जो खुजली थोडे दिनकी होयतो यह दवा लगावै ॥

॥ नुसखा ॥

सिरसों ४ तोला लेकर जलमें महीन पीसकर गुन गुनी करके उवटना करै फिर गरम जलसे स्नान करैतो सूखी खुजली जाय॥

॥ घावोंका यत्न ॥

अब हर प्रकारके घावोंका यत्न लिखते हैं ॥

जानना चाहिये कि मनुष्य के शरीरमें घाव वहुत प्रकार से होताहै । सबोंको यथा क्रमसे नाम लिखूं तो ग्रंथ वहुत वढ जायगा इस सबबसे सूक्ष्म घावों के नाम लिखताहूं ॥

॥ घावोंके नाम ॥

(१) अग्निसे जला (२) तेल घृत आदिसे जला (३) चोट लगनेका (४) लाठी आदिकी चोटका (५) पत्थर ईट की चोटका (६) तलवार का (७) वंदूक की गोलीका (८) तीरका इत्यादि आठ प्रकारके घावहैं और वहुतसे हिन्दुस्तानी ग्रंथोमें घाव और सूजन छः प्रकारका लिखा है वायका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात ४ रुधिरके दुष्टपनका ५ किसी तरहकी लकडी आदिकी चोट लगनेका ६ ॥

॥ अथ वायुके घावका लक्षण ॥

वायुका घाव और सूजन विषम पकताहै पित्तकाव्रणरका-

भी तत्काल पकता है ॥

एक फोडा कंधे पर होता है और यह भी नासूरका स्थान है ॥

सूजन के घाव का लक्षण ।

जिस ब्रणमें घाव गरमी और सूजन थोड़ी होय और कडी होय और उसका त्वचके सदृश वर्ण होय और दर्द कम होतो जान लेना चाहिये कि अभी ब्रण कच्चा है व्रण उसको कहते हैं कि प्रथम शरीर के किसी मुकाम पर सूजन हो और फिर पके फोड़े के सदृश हो जाय फिर फूटकर घाव होजाय ॥

व्रणकीसूजनकेलक्षण ।

जिस मनुष्य की सूजन अग्निकी तरह जले और खारकी तरह पके और चेटी की तरह काटे और ववका होय और हाथ से दावने पर सुई छिदने कीसी पीडा हो और उसमें दाह बहुत होय उसका रंग बदल जाय ॥ और सोने के समय शान्त हो और उसमें बिच्छू के काटने कासा दर्द होय और सूजन गाढी होय और जितने उसके पकने के यत्न करे तौभी पके नही और उस सूजन में तृषा ज्वर अरुचि होय ये लक्षण जिस में होय तो जानिये कि यह सूजन पक गई है ॥ और जो सूजन पक जाती है तो उसकी पहिचान यह है कि उसमें पीड़ा होय नही ललाई थोडी होय बहुत ऊंचा न होय और सूजन में तह पड जाय और पीडा होय खुजाल बहुत चले सब उपद्रव जाते रहें पीछे वह सूजन न जाय खाल फटने लगे और उस मे अं- गुली लगाने से पीडा होय राद निकले इतने लक्षण होंय तो जानिये कि सूजन पक गई है इन कचे पक्के घावो कोजर्राह भली प्रकार से पहचान कर उपाय करे ॥ और जो जर्राह कची सूजन को तथा फोडे को चीरे और पके का ज्ञान न हो ऐसे जर्राह से यत्न नही कराना चाहिये ॥ ये तो ब्रणकी सूजन के

लक्षण कहे बहुत से हिन्दुस्तानी वैद्यों ने घाव ८ प्रकारके लिखे हैं यथा वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, वात पित्तज, वात-कफज, पित्त कफज आगन्तुक अर्थात चोट लगना।

घावों का यत्न।

अब जो हिन्दुस्तानी ग्रंथों को देखताहूँ तो अक्ल बड़ी हैरान होती है क्योंकि जिस २ किताब को देखता हूं उसी उसी किताब में हर किस्म की न्यारी २ बात पाई जाती है इस सवब से मैंने हरएक ग्रंथकार का मत नहीं लिया क्योंकि उनमें क्रम ठीक २ नहीं लिखा इस लिये अपने और अपने उस्ताद के अजमाये हुए नुसखे लिखताहूँ कि जिनके लगाने से हजारों रोगियों को आराम किया है।

अग्नि से जले का इलाज।

(१) जो मनुष्य अग्नि से जलजाय तो उस्को अग्नि से तपावे तो शीघ्र आराम होय॥

(२) अगर आदि गरम वस्तुओंकालेपकरै॥

(३) औषधियों के घृतको अथवा इसी घृतको गरम करै फिर ठंडा करके लेपकरै।

(४) तवासीर वडकी जड रक्त चन्दन, रसोत, गेरू, गिलोय इनको महीन पीसघृतमे मिलाय लेपकरै॥

(५) मोम महुआ राल. लोध मजीठ. रक्तचंदन. मूर्वा. इन सबको बराबर लेकर महीन पीसकर गौके घृतमें पकावे पीछे इस घृत का लेप करै॥

(६) पटोल का पंचांग लेकर उसे पानी में औटावे जब पानी जल कर चौथा हिस्सा रहजावे तब कडवे तेलमें मिलाकर

पकावे जब पानी जल जाय और तेल मात्र रहजाय तब ठंडा करके लगावे ॥

(७) पुराना खाने का गीला चूना लेकर इसीको दही के तोड में मिलाकर लेप करै ॥ और जो तेल से जला होगा तो उसके फफोले दूर हो जांयगे ॥

(८) जौ. को जलाकर इसकी राखको तिलोंके तेलमें मि-ला कर लेप करे ॥

(९) भुने जीरे को महीन पीसकर उसकी बराबर मोम. राल घृत मिलाकर लेप करै ॥

अथ तेल आदि से जलेहुए का उपाय ।

तिलका तेल पावभर. और खाने का चूना गीला पुराना ४ पैसेभर उसको हाथ से तीन घंटे तक मसले जब मरहम के सदृश हो जावे तब रुई के फाये से जले हुए स्थान पर लगावे तो अच्छा होय ॥

तलवार के घावों का यत्न ।

जिस मनुष्य के तलवार आदि शस्त्रों की धार लगने से खाल फट जाय अथवा त्वचा की नाना प्रकार की आकृति होजाय तो जर्राह को उचित है कि ऐसे रोगी को ऐसे मकान में रक्खे जिसमे हवा न लगे फिर पाढ के सूतसे टांके लगावे उन टांको के घाव के स्थान में गेहूं की मैदा मे पानी और घृत मिलाय पकाले जब पानी जल जाय घृतमात्र रह जाय तब उसकी लोई बनाय सुहाना सुहाता सेककरै तो घाव तत्काल अच्छा होजायगा।

अथवा

कुटकी मोम हल्दी मुलेठी कणगच की जड और कणगच के पत्ते और कणगच के फल पटोलपत्र चमेली नीमके पत्ते.

इन सबको बराबर ले के घृतमें पकावे जब सब दवा जल जाय तब इस घृतका सुहाता सुहाता लेप करै ॥

अथवा शस्त्र के लगने से जिस मनुष्य का खून बहुत निकल गया हो और उसके वायुकी पीडा हो आवे उसके दूर करने के वास्ते उस रोगी को घी पिलाना चाहिये और जिस मनुष्य का तलवार आदि से शरीर कटजाय उसके गंगेरन की जडका रस घावमे भरदे तो घाव तत्काल भरजाय ॥ इस घाववाले का शीतल यत्न करना चाहिये ॥

और जो घावका रुधिर पेट में चला जाय तो जुलाब देना चाहिये

बांस की छाल अरंड का बकल. गोखरू. पाषाणभेद इन सबको बराबर कर पानी मे औटावै फिर इसमें भुनी हींग और सेधानमक मिलाकर पिलावे तौ कोठे का रुधिर निकल जाय ॥

॥ अथवा ॥

जव, कुलथी सेंधानोन रूखा अन्न इनको खाना भी बहुत फायदा करताहै ॥

अथवा—चमेली के पत्ते नीमके पत्ते, पटोल कुटकी, दारूहलदी, गौरीसर, मजीठ, हडकी छाल मोम, लीला थोथा सहत कुणगन्न के बीज, ये सब बराबर ले और इन सबके बराबर गौकाघृत ले और इनसे अठगुना पानीले इन सबको इकट्ठा कर मंदी आगसे पकावै जबपानी जलजाय और घृत मात्र रह जावे तब उतार कर ठंडा करेफिर इस घृतकी बत्ती करके लगावै

अथवा— चमेली, नीम, पटोल किरमाला इनचारों के पत्ते, मोम महुआ कूट दारू हलदी पीली हल्दी कुटकी मजीठ हालोंकी छाल लोध तज कमलगट्टे गौरीसर नीलाथोथा. किरमालाकी गिरी ये सब दवा बराबरले [illegible]को पानीमें औटावै. फिर इनके पानी में मीठा तेल मिल[illegible] आगसे पका

वै जब पानी जलजावै और खालिस तेल रहजावे तब इसतेल की बत्ती बनाकर घावपर लगावे तो घाव बहुत जल्द अच्छा होजायगा ॥

अथवा—चीता लहसन. हीग. सरपुंखा और कलिहारी की जड सिंदूर आतीस. कूट इन औषधियों को पानी मे औटावै. जब चौथाई पानी रहजावै तब उसपानी में कडवा तेल मिलाकर मंदी आंचसे पकावे जब पानी जलजाय और खालिस तेल रहजाय तब इस तेलको रुई तथा कपडे की बत्ती आदि किसी तरह से घावपर लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होजायगा ॥

अथवा—गिलोय पटोल की जड त्रिफला. वायविडंग इन सबको बराबर ले महीन पीसके इन सबकी बराबर गूगल मिलाकर धररक्खे. फिरइसमेसे एक तोला पानीके साथ नित्य खायतो घाव निश्चयभर आवेगा ॥

अबयेतो हमने शस्त्रादिकका मिलाहुआ यत्न लिखा इसमें कुछ स्थान भेद नहीं लिखा चाहे सब शरीरमें किसी जगह शस्त्र लगाहोतो इन्ही दवाओ से यत्न करना चाहिये. अब हम स्थान २ के घावोंको यथाक्रम यत्न लिखतेहैं ॥

जो किसी मनुष्य के सिरमे तलवार लगीहो और घाव गहरा होगयाहो. और हड्डी तक उतरगई हो और चोट से कई टूक होगये होतों सब टुकडोको असल के अनुसार मिलावे ॥ और जो चूराहोतो निकालडाले और उस घावपर गौकारस लगावै फिर घावमें टांके भरदेवै फिर इस दवाईसे सेकै ॥

॥ सेककी दवा ॥

आमां हल्दी मेदा लकडी कालेतिल. सफेदबूरा गेहूंकीमेदा घी इन सबका हलुआ बनाकर सेके और उसीको बांधे ॥

और जो तलवार आडीपडी हो और सिरकी खोपडी जुदी

होजावे तो इसकी चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि प्रथम दानोंको मिलाकर बांधे और पूर्वोक्तरीति से सेकके यह मरहम लगावे ॥

❋ मरहमकी विधि ❋

सफेदा कासगरी, मुर्दासंग, रसकपूर,अकरकरा, गुजराती माजू, ये सब दवा एक एक तोले सिंगरफ चार माशे. इन सबको पीसकर चारतोले घृतमें मिलाकर नदीके जलसे धोकर घावपर लगाया करे और ध्यान रक्खें कि घावमें स्याही न आने पावे ॥

और जो किसी के गलेपर तलवार लगे और उसके लगने से घाव बहुत होजावै तो जर्राहको उचित है कि पहिले रुधिर से घावको शुद्ध करे फिर टांके लगादे और केवल आंबाहल्दी से अथवा हलुए से सेककर वो मरहम लगावे जिसमें चौकिया सुहागा लिखा है। जब पीब गाढी और सफेद निकले और पीलापन लिये हो तो वह मरहम लगावे जो अभी ऊपर वर्णन कर चुके हैं।

और जो तलवार कांधे पर पडे और हाथ कटक जाय तो उसको मिलाकर टांके भरदेवे और उसमें भी यही मरहम लगावे जो अभी ऊपर कह आये हैं। और एक सांचा लकडी का बना कर कांधे पर बाधे तो आराम होजागा।

और जो किसी मनुष्य के गले से लेकर कटि तक तलवार लगे और घाव चार अंगुल गहरा हो तो डरना न चाहिये और उस रोगी की मन लगाकर चिकित्सा करे जो टुकडे होगये होंय तो देखे कि रोगी में सांस है वा नहीं जो सांस होतो चिकित्सा करे और जो सांस बलके साथ आता होतो और घायलकी बुद्धि और औसान ठीक होतो समझनाचाहिये कि येही

रोगीकी केवल धीरताहै और कोईपलका महमान अर्थात जीवन है ॥ परन्तु यहां मेरी बुद्धि यह कहती है कि जो हृदय मे. गुर्दे में. और कलेजे मे घाव न आया हो निःसंदेह टांके लगा कर चिकित्सा करै जो परमेश्वर अनुग्रह करेगा तो घायल मृत्यु से बचजायगा. और जो हृदय.गुर्दे और कलेजे में घाव होगया होतो उस घायल की चिकित्सा न करै और जो इनमें घाव न होतो चिकित्सा करे और उक्त मरहम को बनाकर लगावै. अथवा जैसा समय पर उचित जाने वैसा करै अथवा यहतेल बनाकर लगावे ॥

❀ तेलकी विधि ❀

दारूहल्दी,आंवांहल्दी. भडभूजे की छानसका धूम ये तीनों दोदो तोले इन सबको जौकुट करके नदीके जलमें अथवा वर्षा के जलमें भिगोदे और सवेरेही काले तिलोंका तेल पावसेर मिलाकर मंदमंद आगपर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र-रहजाय तौ छानकर धररक्खै ॥

और उस्में पुराना कतानका कपड़ा भिगोकर घावपर रक्खे और जो यहां पर वस्त्र प्राप्त नहो सकैतौ विलायती सूत काममे लावे और खूबबांधे और मकोयका अर्क पिलावे वा गोमाका साग पकाकर कभी २ खिलाया करे और यथोचित्त पथ्य करावै और घावपर ध्यान रक्खे कि पीव पीवही के सदृश हो और स्याही नहो और ऐसे घायलको ऐसे एकांत स्थानमें रक्खे कि जहां किसीका शब्द भी पहुंचने न पावे ॥ और जो किसी मनुष्य के हाथपर तलवार लगी हो और दो घडी व्यतीत होय तो वो घायल अच्छा न होगा और जो काल दोघडीसे कम होसक्ता है और जो हड्डी बराबर कटगई होतो उसी समय चि-कित्सा करैतौ आराम होजायगा ॥ और जो कुछ भी विलंब हो

जायगा तो आराम होगा न किस वास्ते कि जब तक कटा हुआ हाथ गरम है तब तक साध्य और ठंडा होगया तो असाध्य है और जो तलवार से अंगुलियां कटे जावें और गिर न पडे तो अच्छी हो सकती है और किसी के चूतड पर तलवार लगे तो उसकी चिकित्सा जर्राह की सम्मति पर है क्योंकि यह स्थान बहुत भयानक नहीं है और किसी के अंडकोशों पर ऐसी तलवार लगे कि अंडेतक कटजावें तो जर्राह को उचित है कि भीतर दोनों टुकडे मिलाकर ऊपर से शीघ्र टांके लगा देवै और इस प्रकार से बांधे कि भीतर से अंडे मिलेरहै और उसपर वह मरहम लगावै जो अंग्रेजों के यहां लडाई पर लगाते हैं॥ और जो समय पर वह प्राप्त नहोसके तो देवदारू का तेल वाछियूटा का तेल लगावै औरजो चूतड से पांव के नख तक घावहोतो उसकी चिकित्सा उसके अनुसार करनी चाहिये और जो सिरसे पांव तक कोई घाव बहुत कठिन होतो उसकी वह चिकित्सा करै जो कमर और हाथके घावकी वर्णन की गईहै और इन स्थानो के सिवाय शरीरमें किसी जगह तलवार के लगनेसे घावहोंतो सब जगहकी चिकित्सा इसी तरह इन्हीं औषधियों से करनी चाहिये और तलवार सेल. फरसा चक्र इतने शस्त्रों के घावोंका इलाज इन्ही दवाओं से होताहै ॥

॥ अथतीर लगने के घाव का यत्न ॥

जो किसी मनुष्य के बदन में तीर लगा हो और घाव के भीतर अटक रहा होतो घावको चारो ओर से दवाकर निकाले और घावको चौडा करै कि हाथ से तीर निकलसके और भीतर के तीर की परीक्षा यह है कि वह घाव दूसरे तीसरे दिन रुधिर दिया करता है और तीर जोड की जगह जाता है

और जो मांस में लगता है तो पार होजाता है उसके घाव

पर दोनों ओर मरहम लगावै और बीचमें एक गद्दी बांधै इस प्रकार की चिकित्सा में परमेश्वर अपने अनुग्रह से आराम कर देता है ॥

अथवा

किसी की छाती वा नाभिमें तीर लगे और पार होजावे वा भीतर अटक रहे जो तीर लगकर अलग निकल जावे तो पूर्वोक्तानुसार चिकित्सा करै और जो भीतर अटक रहैतो औजार से निकाल कर यह रोगन भरे ॥

॥ नुसखा रोगन ॥

भांगरे कारस, गौमाका रस, नीमके पत्तोंका रस, छिंयूंटाका रस, ये चारों रस दो दो तोला, गेरू, अफीम एक २ तोले, सब को पावभर मीठे तेलमे मिलाकर चालीस दिवस तक धूपमें रक्खे और समय पर काममें लावै ॥ ये तेल सब प्रकार के घावो को फायदा करताहै ॥

अथवा—किसीके पेट में तीर लगाहो तो बहुत बुद्धिमानी से चिकित्सा करै क्योंकि यह स्थान बहुत कोमल है जो इसस्थानमे तीर लगकर निकल गयाहो तो उत्तम है और जो रहगया होतो कठिनतासे निकलताहै क्योंकि यह स्थान न तो घाव चीरनेकाहै और न तेजाब लगाने काहै बसजो वहां मकनातीस पत्थरको पहुंचावेतो उत्तमहै ॥ क्योंकि लोहा मकनातीसका अनुरक्त है और जो तीर निकलगया होतो वह चिकित्सा करै जो ऊपर वर्णन की गईहै और घावमे वह तेल भरे जिसमें भांगरे का रस लिखाहै ॥

अथवा—किसीकी जंघाके तीर लगेतो वह स्थान भी तीर के-भीतर रहजाने काहै क्योंकि मांस और हड्डी यहां की गहरी हैं॥ उचितहै कि घावको चीरकर तीरको निकालै इसमें कुछ डरनहींहै

परन्तु डर यहहै कि जो घाव रहजाय तो बहुत कालमे अच्छा होताहै और जोडोंकी व्याख्या ऊपर वर्णन हो चुकी है इसलिये घावको चौडाकरके ८ तीर निकाले तो हड्डी का हाल जानाजावै कि हड्डी में कुछ हानि पहुंची वा नहीं जो हडी पर हानि पहुंची हो तो हड्डी की किरचें निकालकर चिकित्सा करै ॥

॥ अथवा ॥

किसीके घुटने मे तीर लगेतो उसकी भी यही व्याख्या है जो जंघाके घावमें वर्णन कीगई है ॥ और मैनें तीरके घाव घुटनेसे पांवतक में देखे यदि दैव योग से तीर लगभी जाय तो उसी प्रकार से चिकित्सा करै जैसाकि ऊपरसे वर्णन करते चले आये हैं ॥

॥ घावकी परीक्षा ॥

जिस घावमें तीर आदि शस्त्रकी नोक रहजाय उसकी पहंचान यह है कि घाव काला और सूजन से युक्तहो फुंसियो के लियेहो और उस घावका मांस बुद बुद समान ऊंचाहोय और उसमे पीडा होयतो उसघावको शस्त्र समेत जानिये ॥

॥ कोठेकी परीक्षा ॥

जिस मनुष्य के कोष्टमें तीर रह गयाहो उसकी पहंचान यहहै कि शरीर की सातों त्वचा और शरीर की नसोंको नांघ कर पीछे उन नसोंको चीर कर और कोष्टके भीतर रहा हुआ वह शस्त्र अफरा करैं और घावके मुखमें अन्न और मलमूत्र को ले आवे तब जानले कि इसके कोष्टमें शस्त्र रहाहै ॥

अथ गोली के घावका यत्न ।

जो किसी मनुष्य के सिरपर गोली लगती हुई चलीगई होय और दूसरा यह कि गोली दूरसे लगी हो ऐसी गोली सिरकी

त्वचा मे रहजाती है इस कारण करके सिरमें सूजन आजाती है और मूर्ख लोग कहते हैं कि गोली सिरके भीतर से निकाल लावे परन्तु ठीक व्यवस्था तो यह है कि जो गोली पाससे लगी हो तो दोनों ओर की हड्डी को तोडकर निकल जाती है और जो कुछ दूरसे लगी होतो भेजे के भीतर रहजाती है और निकालने के समय रोगी के बलको देखना चाहिये कि गोली निकालने में वह मर न जाय और जो उसका मरजाना संभव होतो चिकित्सा न करै और जो देखे कि रोगी इस कष्टको सहसक्ता है और उसके बंधु लोग प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देते हैं तो निःसंदेह भेजे में से गोली को निकाले और सिरके घाव को कम सेकते है ॥ और चिकित्सा के समय पहले यह मरहम लगावे जिससे जला मांस निकल जावे ॥

मरहम की विधि ।

जंगाल हरा निखालिस शहत एक एक तोले, सिरका दो तोले इन सबको मिलाकर कलछी मे पकावे जब चासनी होने पर आवे तब ठंडा करके लगावे ॥

अथवा

मुर्गी के अंडे की सफेदी, दो आतशी शराब चार तोले दोनों को मिलाकर लगावे ॥

अथवा—जो गोली गले में लगी हो तो उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करै जैसा कि ऊपर वर्णन की गई है ॥

अथवा—जो गोली किसी की छाती में लगी हो तो उसकी व्यवस्था यह है कि जिस ओर को मनुष्य फिरता है तो गोली भी उसी ओर को फिरजाती है यदि कोई बलवान होगा तो गोली निकल जायगी ॥ और निर्बल होगा तो रह जायगी इस

पर खूब ध्यान रखना चाहिये क्योंकि उसका घाव टेढा होता है और छाती की बरावर में दिल यानी हृदय उपस्थित है उसका ध्यान भी अवश्य रखना चाहिये और बाजी गोली कपडे से लिपटी हुई होती हैं तौ वह गोली निकल जाती है और कपडा रहजाता है और जिस ओर को गोली निकल जाती है उस ओर का घाव चौडा हो जाता है उचित है कि घावको चीरकर वा पकाकर पहिले कपडे को निकाल लेवै और कपडे रहजाने की यह पहिचान है कि घावमे से पतली और स्याह पीव निकला करती है पहिले घावको शुद्ध करले क्योंकि जब घाव शुद्ध हो जायगा और जला हुआ मांस निकल जाता है तौ घाव शीघ्र अच्छा हो जाता है और धीरज से उसकी चिकित्सा कर घबराहट को काममें न लावे ॥

अथवा

किसीकी छाती से पेडूतक गोली लगी हो तौ उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करनी चाहिये जैसी कि ऊपर वर्णन कीगई है ॥

अथवा

किसीके अंडकोषो में वा जंघासे पिंडली तक कहीं गोली लगी हो तौ चिकित्सा के समय देखे कि गोली निकलगई वा नहीं, निकलगई होतौ उत्तम है और जो रहगई होतौ गोली को निकालकर घावको देखे कि हड्डी तो नही टूटी यदि हड्डी टूटगई हो तौ छोटे टुकडोंको जमादे और उसपर विलायती रसौत मलदे और स्टिकिन एक अंग्रेजी दवा है उसका फाया लगादेवै और खूब कसकर बांधे और तीनदिन के पीछे खोलकर देखे कि हड्डी जमी वा नही जो जमगई होतौ उसको

भी निकालडाले अथवा समय पर जैसी स माति हो वैसा करै और देखता रहै कि घावमें सफेदी और उसके आसपास स्याही तो नहींहुई और घावमें से दुर्गंधि तौ नहीं आती ,और पीवतो नहीं निकलता क्योंकि यह लक्षण बहुत बुरे होते हैं ॥ और गोलीके हरएक घावमें वह दवाई लगावे जो ,सिरके घावमे वर्णन कीहै अथवा उस दवाईको लगावे जिसमें अंडेकी स-फेदी है उस दवाईमें रूईको भिगोकर घावपर रखना चाहिये और सब शरीरमें किसी मुकामपर गोली लगीहो उन सब गहरे घावोंका इलाज इन्हीं औषधियों से होता है ॥

अथवा

किसीके बिषकी बुझी तलवार, तीर, बरछा, कटार,फरसा, चक्र. आदिशस्त्र लगेहों तो उस्की यह परीक्षा है किघाव तो ऊपर दबता जाता है. और मांस गलता जाता है और दुर्गंध आतीहै और प्रतिदिन घावका रंग बुरा होता जाताहै और वहांका मांस तथा रुधिर स्याह पडजाता है बस उचित है कि पहिले सब स्याह मांसको काट डाले जो रुधिर जारी होजाय तो रुधिर बंद करनेवाली दवाई करे और दूसरे दिन गेरू नमक फिटकरी गुनगुनी करके बांधे और यह मरहम लगावे ।

मरहमकी विधि ।

पहिले गौका घी आधपाव लेकर गरम करै फिर उसमें एक तोला मोम डालकर पिघलावै पीछे कवेला १ तोले रालसफेद १ तोले रतनजोत १ तोले इन तीनोंको भी पीसकर उसमें मिलादे फिर थोडासा औटावै फिर ठंडा करके एक फाया घाव के अनुसार बनाकर उसपर इस मरहमको लगाकर घावपर रक्खे और जो कोईकहै कि यह जहरबाद है तो उत्तर देवेकि यह सत्यहै परंतु उसमे मैला मैला पानी निकलता है जो डाली

लियेहुए है जिस्को कचलोहू कहते हैं और जहरबादका घाव शीघ्र-बढता है- और यह घाव देरमे बढता है और जहरबाद शीघ्र गलताहै और यह देरमें जहरबाद के घावमें मनुष्य शीघ्र मरजाता है और इस्में देरमे मरता है और जहरबाद के रोगी को किसी समय कल नहीं पडती और ऐसे घायलको जितनी पीडा होतीहै उससे न्यूनाधिक नहीं हो सक्ती ॥ उचितहै कि चिकित्सा बुद्धिमानोंसे करै और जो सूखजाने के पीछे कोई किर्च हड्डीकी फिर दीखपडे तो फिर तेजाब लगावै कि घाव चौडा होजावै तब हड्डीको निकाल डाले ॥

तेजाब की विधि ।

लहसन का रस. कागजी नीबूका रस चार चार तोले सुहागा चौकिया एक तोला इन दोनोंको महीन पीसकर पहले दोनों अर्कोमे मिलाकर चारदिवस पर्यंत धूपमे रक्खे और एक बूंद घाव पर लगावै ॥ फिर किसी मरहम का फाया रक्खै ॥

अथ हाड टूटने का यत्न ।

जानना चाहिये कि टूटी हड्डियों के बारह भेदहैं सो यथा क्रम लिखते हैं तो ग्रंथ बहुत बढजाता है और कुछ मतलब हासिल नहीं होता है इस वास्ते बहुतसा बखेडा नहीं लिखा केवल जो जो मतलब की बात हैं सोई लिखते हैं ॥

अथहाड टूटने की पहिचान ।

अंगशिथिल होजाय और उसजगह हाथलगाना न सुहावै और वहां शरीर फडके और शरीरमे पीडा और शूल होय रात दिन कभीभी चैन नहीं पडे ये लक्षण होंय तब जानिये कि इस मनुष्य की किसी प्रकारसे हाडटूटी है ॥

जिस मनुष्यकी अग्नि मंद होजाय औरकुपथ्य कियाकरै वायु-का शरीर होय और जिस्मे ज्वर अतीसार दिकभी होय ऐसे ऐसे लक्षणों वाला रोगी कष्टसे बचताहै ॥ और जिस मनुष्य का मस्तक फटगया हो कमर टूटगई होय और संधि खुलजाय और जांघ पिसजाय ललाटका चूर्णहोजाय हृदय- गुदा -कनपटी- माथा फटजाय जिसरोगीके ये लक्षण होय वह असाध्य है. और डाढको अच्छे प्रकार बाधे. पीछे कडाबांधे. और वह बुरी तरह बंधजाय और उस्मे चोट आजाय मैथुनादिक करतारहे तो उस रोगीका टूटाहाडभी असाध्य होजाताहै ॥ अवशरीरके स्थान २ के हाडोमें चोट लगीहो उनके लक्षण कंठ तालू, कनपटी, कंधा सिरपैर कपाल, नाक, आंख, इन स्थानोमें किसी तरह की चोट लगजावेतो. उस जगहके हाडनवजायऔर पहुंचा, पीठ आदि के सीधे हाड़हैं सोटेढे होजांय, कपालको आदिले जो गोलहाड है सो फटिजाय और दांत वगैरह जो छोटे हाड़ हे सो टूटजाय इन सब हाडो का यत्न लिखताहूं जो किसी मनुष्यके चोट आदिकिसी तरहसे हाड और संध टूट जावैतो चतुर जर्राह को चाहिये कि उसी समय उस जगह चोटपर शीतल पानीडाले पीछे उसके औषधियों का सेककरे ॥

अथवा पट्टी बाधे और उस जगह जो लेप करै सो शीतल इलाज करै और बुद्धिमान जर्राहको चाहिये कि उस मुकाम पर जो पट्टी बांधे तो ढीली न बाधे और बहुत कडीभी न बाधे अच्छी तरह साधारण बांधे क्योंकि जो पट्टी ढीली बंधेगी तो हाड जमैगा नहीं और बहुत कडा बांधने से शरीरकी खाल मे सूजन होजावेगी और पीडा होगी और चमड़ी पकजायगी इसी कारण पट्टी स धारण बाधनी अच्छी होती है बस जिस मनुष्यके चोट लगी हो उसके यह लेप लगावै ॥

लेप की विधि ।

मेदा लकड़ी. आंवले आंवाहल्दी. पंवार के बीज साबुन. पुरानी ईंट ये सब बराबर लेके महीन पीसकर और इसमें थोड़ा काले तिलोका तेल मिलाकर आगपर रखकर गरम गरम लेप करै

अथवा–मुगास गेरू. खतमी के बीज. उरद एलुआ. ये सब दवा एक एक तोले लेकर और हल्दी छः माशे सोया छः माशे. लोबान छः माशे. इन सबको पीसकर लेप करै ॥ २ ॥

अथवा–गेरू. ६ माशे झाऊ के पत्ता नौ माशे. गुलाब के पत्ता नौ माशे बेरके पत्ता नौ माशे इनको महीन पीसकर लेप करने से लाठी आदि की चोट गिरपडने की चोट और पत्थर आदि से कुचल जाने की चोट को आराम करता है ॥ ३ ॥

अथवा–हल्दी. हरीमकोय के पत्ते. गेरू. ये तीनों दवा एक २ तोले. खिली सरसों दो तोले इनको महीन पीसकर लेप करने स सब प्रकार की सूजन को दूर करता है ॥ ४ ॥

अथवा–गेरू. कालेतिल आंवाहल्दी हालों के बीज ये सब बराबर लेकर थोडी अलसी का तेल मिलाके लेप करने से सब प्रकार की चोट अच्छी होती है ॥

अथवा–मटर का चून चना का चून छे डाली. अलसी के बीज ये सब दवा नौ नौ माशे ले. लालचून छे माशे कालीमिरच तीन माशे इन सबको पीसकर थोडे सिरके में मिलाकर लेपकरै ॥

अथवा–गेरू एक तोले सुपारी एक तोले, सफेद चन्दन एक तोले, रसोत छ माशे. मुर्दासंग छ माशे. एलुआ छः माशे. इन सबको हरीमकोय के रसमें पीसकर लगावें तो सब प्रकार की चोट जाय ॥

अथवा–एलुआ तीन माशे खतमी के बीज छः माशे. बनफ्सा के पत्ते छः माशे. दोनों चन्दन बारह माशे. भठवास छः माशे

नाखूना छः माशे. इन सबका चूरण करके मुर्गी के अंडे की सफेदी में मिलाके गुन गुना कर के लगावै ॥

अथवा–खिले कालेतिल. खिली सरसों. गेरू एक एक तोले. संभालू के पत्ते डेढतोला, मकोयके पत्ते,डेढतोले, इन सबको पानी में महीन पीसकर गरम २ लेप करैतो सब प्रकारकी चोट अच्छी होजाती है ॥

❀ अथवा ❀

बारह सींगे के सींग की भस्म तीन माशे. लोवान तीन माशे भटवांस का चूनें दोमाशे. नौसादर छः माशे वाकलाका चून दो माशे. बबूलका गोंद छः माशे कडवे बादामकी मिंगी एक तोला, इन सबको पानीमें पीसकर लगावे तो सब प्रकार की चोट दूर होजातीहै ॥

❀ अथवा ❀

कडवे बादाम की मींगी, पुरानी हडडी एक २तोले सीपकी भस्म, समुद्र फेन, पीली फिटकरी छः छः माशे इन सबको पानी में पीसकर लगावे, तोसब प्रकार की चोटको फायदा होताहै ॥

❀ अथ टूटीहुई हड्डी का यत्न ❀

इस हड्डी टूटजाने की चिकित्सा इस रीतिसे करै जैसाकि पट्टी वगैरह पहले लिखआये हैं सोकरै औरचोटकी जगह गीली प्याज लगावै तो टूटा हुआ हाड अच्छा होजाताहै ॥

❀ अथवा ❀

मजीठ, महुआ, इनदोनों को ठंडेपानीमें पीसकर टूटे हुऐ हाड पर लेपकरै तो अच्छा होय ॥

❀ अथवा ❀

बेर, पीपल की लाख, गेंहूं काहू वृक्षका बक्कल इन सबको

महीन पीस घृतमें मिलाय १॥ तोले नित्य खाकर ऊपरसे दूधपीवै तो टूटा हुआ हाड अच्छा होजाताहै ॥

❋ अथवा ❋

लाख, काहूका वक्कल, असगंध, खैरेटी, गूगल ये सब बराबर ले इन सबको कूटपीस कर एक जीव कर १॥ डेढ तोला दूधके साथ नित्य खायतो टूटाहाड अच्छा हो जायगा ॥

❋ अथवा ❋

गेहूंको ठीकरे में धरकर अधजले करले पीछे इन्हें महीनपीस तीन तोले लेकर उसमें छः तोला शहत मिलाकर सातदिन तक नित्य चाटे तो टूटेहाड निश्चय अच्छे होंय ॥

❋ अथवा ❋

मेदा लकडी आमला तिल इन सबको बराबर ले ठंडे पानीमें महीन पीस उस जगह लेपकरै और इसमें घृतभी मिलावै तो टूटा हुआ हाड और टूटी संधी येदोनों अच्छे होजाते हैं ॥

❋ अथवा ❋

मनुष्यके मांसकी चरबी मिमाई अनुमान माफिकले और शहत मिलाकर उसे चटावै तो टूटा हाड अच्छाहोय ॥

❋ अथवा ❋

चोटवाले मनुष्य को मांसका शोरवा दूध घृत. पुष्टाई की औषधि देना अच्छाहै ॥ और चोट वाले मनुष्यको इतनी चीजों से परहेज कराना चाहिये सो लिखतेहैं ॥

नमक कडवी वस्तु, खार, खटाई. मैथुन, धूपमें बैठना रूखे अन्न का खाना इन चीजों से परहेज जरूर करना चाहिये ॥ बालक और तरुण पुरुष के लगी हुई चोट जल्दी अच्छी होजाती

है और वृद्ध रोगी तथा क्षीण मनुष्य की चोट जल्दी अच्छी नहीं होती ॥

अथवा—लाख १॥ तोले लेकर महीन पीस गौके दूधके साथ पंद्रह दिन पीवै तौ टूटा हाड अच्छा होजाता है ॥

अथवा—पीली कौडियों का चूना २ तथा तीन रत्ती औटाकर दूधमें पिये तौ टूटा हाड जुड जाता है ॥

अथवा—बेरका बकल, त्रिफला, सोंठ मिरच, पीपल इन सबको बराबर ले और इन सबकी बराबर गूगल डाल सबको एक जीव कर १ तोले १५ दिन तक दूधके साथ ले तौ शरीर वज्र के समान होजायगा और शरीर की सब वेदना जाती रहेगी ॥

अथवा—बेरका बकल १ तोले महीन पीस शहत मे मिलाय एक महीने तक चाटे तो शरीर की सब प्रकार की चोट और टूटी हड्डी अच्छी हो जायगी और शरीर वज्रके समान होजायगा

और जो किसी मनुष्य के मुगदर आदि किसी तरह की चोट लगी होय उसके वास्ते यह दवा बहुत फायदा करती है ।

नुसखा

मेथी, मैदा लकडी, सोंठ, आंवला, इन सबको महीन पीस गौ मूत्रमें मिलाय जहां चोट लगी होय वहां लेप करै तो चोट अच्छी होय ॥ और जो किसी मनुष्य को पशुने मारा हो तथा किसी ऊंचे मकान से गिरा हो तथा भीत आदि के नीचे दब-जाय और इस कारण से घायल होगया होतो उसपर यह लेप लगाना चाहिये ॥

लेपकी विधि ।

पुराना खोपडा, आंवाहल्दी, मैदालकडी, कालेतिल, सफेद

मोम, ये सब दवा एक २ तोले पीसकर चोट पर लेप करे और जो उसपर घाव आगया होतो पहिले कहे हुए मरहमो का फाया बनाकर लगावै ॥

अथवा- प्याज एक तोले, गेहूं की मेदा २ तोले. प्रथम प्याज को छील उसकी गीगी निकाल कर तेलमें छोंकले. फिर उसमें मैदा को डाल थोडा पानी मिलाकर लूपरी बनावे और चोट को सेके फिर इसी को बांधे तो चोट अच्छी होय ॥

और जाडेके दिनों में शीतकाल में घी बासन में जम जाता है उसके निकालने से हाथ के नखों में घी की फांस लगजाती है और हाथ पकजाता है तो उस की चिकित्सा यह है कि पहले हाथको आग पर सेकै फिर यह दवाई लगावे ॥

अथवा--अजवायन खुरासानी, भैंसागूगल, बिलायती साबुन, सेधानमक, गुड ये सब बराबर ले पानी में महीन पीसे. जब मरहम के सदृश होजावै तब उस घावपर लगावें और इससे आराम न होतो यह मरहम लगावे ॥

नुसखा ।

साबुन, गुड, गेंहू की मेदा, एक २ तोले पानीमें पीस इसका फाया बनाकर लगावे और इसके ऊपर एक पान गरम करके बांधे और सेकै और जो घाव सब अच्छा हो और पानी निकलना बंद न होताहो तो नीचे लिखा तेजाब लगाकर घाव को चौडा करे ॥

नुसखा तेजाब ।

गंधक दो तोले, नीलाथोथा दो तोले, फिटकरी सफेद दो तोले, नौसादर दो तोले. इन सबको महीन पीसकर आधपाव दही में मिलाकर एक हांडी में भरकर चोये के सदृश तेजाब

खेंचे और एक बूंद घावपर लगावे तो घाव गहरा होजायगा पीछे इसपर वही मरहम लगावे जो तेजाब के नुसखे स पहले लिखी है ॥

यहां तक सब घावों का इलाज ता लिखा जा चुका है परंतु अब दो चार नुसखे मरहम के यहां इकट्ठे लिखे जाते है ये मरहम सब प्रकार के घावोंको फायदा करती है ॥

मरहम १

राळ एक पैसेभर. सफेदमोम दो पैसेभर, मुर्दासन एक पैसे भर. इन सबको महीन पीसकर रक्खे प्रथम गौका घृत छःपैसेभर लेकर गरमकरै फिर उसमें मोमडाले जब मोम पिघळ जाय तब सब दवाईयों को मिलावे फिर इसको कांसी की थालीमें डालकर १०८ वार पानी से धोवै पीछे इसको घावपर लगावे तोसब प्रकार के घाव अच्छे होंय इसको सफेद मरहम कहतेहैं ॥

मरहम २

शोधाहुआ पारा १ तोले, आंवलासार गंधक एकतोले, मुर्दासंग दोतोले, कवेला चारतोले, नीलाथोथा ४ माशे, गौका घृत पावभर और नीमके पत्तों का रस अनुमान माफिक डाळ कर इन सबको मिलाकर दो दिन तक खूब पीसे जब मरहम के सदृश होजाय तब घावपर लगावे तो सब प्रकार के घाव अच्छे होय ॥

मरहम ३

सफेद मोम, मस्तंगी, गोंद, मेंढल, नीलाथोथा, सुहागा; सज्जी, सिंदूर, कवेला, मुरदासंग, गूगल, कालीमिर्च, सोन गेरू, इलायची, वेर, सफेदा, सिंगरफ, शोधी गंधक ये सब दवा बराबर ले और मोम को छोडकर सब दवाओं को न्यारी न्यारी

महीन पीसकर रक्खे प्रथम घृतको गरमकर उसमें मोम पिघलावे फिर सब औषधियों को मिलाय खरल में गेर दोदिनतक खूब घोटे जब एक जीव होजाय तब धररक्खे और घावोंपर लगावें ये मरहम चोटके घाव, शस्त्रादिक के घाव फोडेआदि के घाव, और सब प्रकार के घावोंको फायदा करता है ॥

❀ मरहम ❀

नीलाथोथा, मुरदासंग, सफेदा, खैरसार. सिंगरफ, मोम, केशर, गौकाघृत ये सब बराबर ले फिर घृतको गरमकर. नीचे उतार. इसमें पहिले नीलाथोथा पीसकर डाले. पीछे उसी समय उसमें मोम डालकर पिघलायले फिर इसमें सब औषधि महीन पीसकर डाले इन सबको एकजीव कर कांसेकी थालीमें डाले और उसमें ज्यादापानी डालकर एक दिनभर हथेली से रगडे. फिर इसको घावोंपर लगावे तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय ॥

❀ मरहम ❀

सिंगरफ तीन पैसेभर, सफेदमोम, तीनपैसे भर, नीमके पत्ते की टिकिया तीनपैसे भर, मुर्दासंग १ पैसेभर प्रथम घृतको औटाय उसमें नीमकी टिकिया पकाकर उन टिकियों का जलाकर फेंकदे फिर उस घृतमें मोमको पिघलावे फिर सब औषधियों को महीन पीसकर मिलावै जब मरहम के सदृश होजावे तब लगावे तो घावमात्र अच्छे होय ॥

❀ मरहम ❀

जिस मनुष्य के हाथपांवो में बिवाई फटी हो उसके वास्ते ये मरहम अच्छा है ॥

राल एकपैसे भर, कत्था १ पैसेभर, चमेलीका तेल चारपैसे

भर, कालीमिर्च १ पैसेभर, गौका घृत दापस भर, इन सबका महीन पीसकर लोहेके करछलेमें मरहम बनावै पीछे इ को लगावे तो हाथपांवों की बिवाई अच्छी होय ॥

❀ मरहम ❀

नीमके पत्तोंका रस एकसेर ले और गौका घृत पावसेर ले प्रथम घृतको लोहेके बरतन में गरमकर उसमें नीमके पत्तोंका रस मिलावे जब ये दोनों खूब गरम होजाय तब उसमें राल चारपैसे भर डालकर पिघलावे जब वह पत्तोका रस जलजाय और गाढा होजाय तब कत्था एकपैसे भर, नीलाथोथा एक पैसेभर, मुरदासंग एकपैसे भर इन सबको महीन पीसकर उसमें डाल एक जीवकर, पीछे कपडे में लगाय घावके ऊपर लगावै तौ घाव निश्चय अच्छा होय ॥

❀ मरहम ❀

रांगकी भस्म छ' माशे, सफेदमोम, एकतोले, गुलरोगन दो तोले, इन सबको पीसकर गुलरोगन में मरहम बनावै, और घावपर लगावै तो घावको बहुत जल्दी सुखा देती है ॥

मरहम ९

जिस घावमें से पानी निकला करता है उसके लिये यह मरहम लगाना अच्छा है ॥

गूगल चार माशे, रसौत १ माशे, इन दोनों को पानी में खूब घोटे पीछे चार माशे पीला मोम मिलाके घोटके मरहम बनावे और घावपर लगावे तो घावसे पानी निकलना बद होय

मरहम १०

उसुक पावभर, गूगल पांच माशे, इन दोनों को चार तोले सरसो के तेलमे घोटकर एक तोले पीला मोम मिलाके आग-

महीन पीसकर रक्खे प्रथम घृतको गरमकर उसमें मोम पिघलावे फिर सब औषधियों को मिलाय खरल में गेर दोदिनतक खूब घोटे जब एक जीव होजाय तब धररक्खे और घावोंपर लगावे ये मरहम चोटके घाव, शस्त्रादिक के घाव फोडेआदि के घाव, और सब प्रकार के घावोंको फायदा करता है ॥

❀ मरहम ❀

नीलाथोथा, मुरदासंग, सफेदा, खैरसार. सिंगरफ, मोम, केशर, गौकाघृत ये सब बराबर ले फिर घृतको गरमकर. नीचे उतार. इसमें पहिले. नीलाथोथा पीसकर डाले. पीछे उसी समय उसमें मोम डालकर पिघलायले फिर इसमें सब औषधि महीन पीसकर डाले इन सबको एकजीव कर कांसेकी थालीमे डाले और उसमें ज्यादापानी डालकर एक दिनभर हथेली से रगडे. फिर इसको घावोंपर लगावे तो सब प्रकार के घाव अच्छे होंय ॥

❀ मरहम ❀

सिंगरफ तीन पैसेभर, सफेदमोम, तीनपैसे भर, नीमके पत्ते की टिकिया तीनपैसे भर, मुर्दासंग १ पैसेभर प्रथम घृतको औटाय उसमें नीमकी टिकिया पकाकर उन टिकियों को जलाकर फेंकदे फिर उस घृतमें मोमको पिघलावे फिर सब औषधियों को महीन पीसकर मिलावे जब मरहम के सदृश होजावे तब लगावें तो घावमात्र अच्छे होय ॥

❀ मरहम ❀

जिस मनुष्य के हाथपांवों में बिवाई फटी हो उसके वास्ते ये मरहम अच्छा है ॥

राल एकपैसे भर, कत्था १ पैसेभर, चमेलीका तेल चारपैसे

भर, कालीमिर्च १ पैसेभर, गौका घृत दापस भर, इन सबका महीन पीसकर लोहेके करछलेमे मरहम बनावै पीछे इ को लगावे तो हाथपांवों की बिवाई अच्छी होय ॥

❀ मरहम ❀

नीमके पत्तोंका रस एकसेर ले और गौका घृत पावसेर ले प्रथम घृतको लोहेके बरतन में गरमकर उसमें नीमके पत्तोंका रस मिलावे जब ये दोनों खूब गरम होजाय तब उसमें राल चारपैसे भर डालकर पिघलावे जब वह पत्तोका रस जलजाय और गाढा होजाय तब कत्था एकपैसे भर, नीलाथोथा एक पैसेभर, मुरदासंग एकपैसे भर इन सबको महीन पीसकर उसमें डाल एक जीवकर, पीछे कपडे में लगाय घावके ऊपर लगावै तो घाव निश्चय अच्छा होय ॥

❀ मरहम ❀

रांगकी भस्म छः माशे, सफेदमोम, एकतोले, गुलरोगन दो तोले, इन सबको पीसकर गुलरोगन में मरहम बनावै, और घावपर लगावै तो घावको बहुत जल्दी सुखा देती है ॥

मरहम ९

जिस घावमें से पानी निकला करता है उसके लिये यह मरहम लगाना अच्छा है ॥

गूगल चार माशे, रसौत १ माशे, इन दोनों को पानी मे खूब घोटे पीछे चार माशे पीला मोम मिलाके घोटके मरहम बनावै और घावपर लगावे तो घावसे पानी निकलना बंद होय

मरहम १०

उसुक पावभर, गूगल पांच माशे, इन दोनों को चार तोले सरसो के तेलमे घोटकर एक तोले पीला मोम मिलाके आग-

पर धरै. और राई समुद्रफेन जरावंद तबील, गंधक आंवला-सार, पांच पांच माशे चूरन करके मिलावै और जिस स्थानपर फोडे को शीघ्र पकाया चाहे वहां पर इसी मरहम में गुलखतमी और उसके पत्ते दो दो तोले लेकर महीन पीसकर मिलावै और गुन गुना करके फोडेपर लगावे तो फोडे को बहुत जल्दी पका कर फोडदेगा ॥

॥ मरहम ११ ॥

मीठातेल. और कूएका पानी पांच पांच तोले मिलाकर कांसीके पात्रमें हाथ से खूब घोटे कि महीके तुल्य होजावै पीछे फिटकरी, लीलाथोथा, लालकत्था. सफेद राल. सवा २ तोले महीन पीसकर उसमें मिलावे और हथेली से खूब रगडे जब मरहम के सदृश होजाय तो चीनीके बर्तन में रखदेवे और जब इस मरहम को काममें लावे तब नमक की पोटली से घाव को सेकाकरे यह मरहम बंदूक की गोली के घावको नासूर के घाव को और बुरे २ बादी आदिके घावों को अच्छा करताहै ॥

मरहम १२

आधपाव कडवे तेलमें पांच तोले पीला मोम पिघला के उसमें एक तोले बिरोजा मिलाके पीछे दो तोले सफेद राल फिटकरी भुनी छ' माशे, मस्तंगी छः माशे इनको भी चूरन कर के मिलावे और खूब घोटके मरहम के सदृश बनाकर घावोंपर लगावे तो सब प्रकार के घाव अच्छे होय ॥

अंडकोषों के छिटक जाने का यत्न ।

जानना चाहिये कि फतक रोग अंडे कोषों के बढजाने को कहते हैं और यह रोग अंडकोषो में तीन प्रकारसे होताहै ॥

एकतो यहीकि किसी कारण चोट लग जाने से भीतर अंडाबढ जाताहै ॥ उसकी चिकित्सामें बहुतमे लेप और बफारे काममें आते हैं और यह रोग इस दवाई से बहुत जल्दी आराम हो जाताहै ॥

नुसखा

हरीसोंफ, सूखीमकोय, खुरासानी अजमायन, बाबूने के फूल, मूरिद के बीज, गेरू ये सब दवा एक २ तोले ले इन सब को पानी में पीसकर रक्खै और इसके पहिले अंडकोषों पर सोये के सागका बफारा दे कर यह लेप जो बना रक्खा है लगाबै और फिर ऊपरसे वही साग बांधे जिसका बफारा दिया गयाहै ॥ इसपर पानी न लगने दे ॥

एक कारण इसरोग के होनेका यहहै कि पहिले किसी की प्रकृति में तरी और सरदी की बिशेषता होतीहै। इससे हरएक जोडमे वादी उत्पन्न होजाती है और पेटके सब अवयवों को वादी भरपूर कर भीतर से अंडेको बढा देतीहै ॥ तो अज्ञान लोग उसकी चिकित्सा पूछते फिरतेहैं ॥ और किसी जर्राह से नहीं पूछते कि वह फस्त वा जुल्लाब बतलावे वा कोई लेपतथा बफारा बतावे ॥ बहुतसे मूर्ख लोग उसके तमाकू के पत्ता,तथा टेसूके फूल बतला देतेहै उन दवाईयों के करनेसे रोग औरभी बढजाता है उचितहै कि हकीमहो या जर्राहहो रोगी की प्रकृति के अनुसार इलाज करै और पहिले फस्त खुलवावे अथवा जुल्लाब देवै और यह लेप करै ॥

॥ नुमखा ॥

नाखूना सूखी मकोय, कछुएके अंडेकी जर्दी ४ नग, हरी

सोफ, मूसेकी मेगनी. एकतोले. इन सबको पानीमें पीसकर गरम करके लगावै और जो जर्राहकी सम्मति होतो पहिले बफारा देवै और बफारेकी यह दवाहै ॥

॥ नुसखा ॥

सोयेके बीज, सोयेके पत्ते. चमेलीके पत्ते, इमलीके पत्ते. हरी मकोय. पित पापडा ये सब दवा दोदो तोले ले कर पानीमें औटाकर भफारादेवै, इसीका, फोकबांधे जो कुछ आराम दीख पडेतो यही करता रहे और जो इससे आराम नहोतो यही बफारा देवै ॥

॥ नुसखा ॥

संभालूके पत्ते. सूखे महुवे. दोदो तोला इन दोनों वस्तुओंको जलमें औटाकर बफारा देवै ॥ और ऊपरसे इसीका फोक बांधदेवै ॥

तीसरा कारण इस रोगका यहहै कि बहुतसे मनुष्य जलपीकर दौडतेहैं और यह नही जानते कि इसमे क्या हानि होगी यह काम बहुतही बुराहै और इसके सिवाय एक बात यहहै किकिसी प्रकृति में रतूबत अर्थात् तरी अधिक होतीहै और ज्वरकीविशेष तामें बाजे मनुष्य पानी रुककर पीतेहैं और कोई कोई बहुत जल पीतेहैं इस बहुत जलपीनेसे दोवातीन रोग उत्पन्न होतेहैं एक तो यहीके नले बढजाते है और दूसरा यहीके अंडकोषों मे पानी उतर आताहै तीसरा यह कि तिल्ली फूल जातीहै ऐसा करने से कभी २ अंडकोष बढजाताहै इसकी चिकित्सा हकीमोंने बहुत पुस्तकोमे लिखीहै और हमारे मित्र डाकटर साहबने इसकी चिकित्सा इस प्रकारसे लिखाहै कि पहिले इसमें नश्तर देवै और उसका सब पानी निकाल कर घाव में कोई ऐसी वस्तु लगावे

कि घाव बहता रहे और सात आठ दिनके बाद अच्छा होनेकी मरहम लगावे और यह दवाई खिलावे क्योंकि भीतरसे पानीका बिकार दूरहोवे तौ घाव सूखकर जल्दी अच्छा होजाताहै ॥ और फिर कभी रोग उभरने नहीं पाता और बहखानेकी दवाई यहहै॥

❀ नुसखा ❀

कुदरूगोंद, बंसलोचन, लीला जहर मोहरा, खताई केशर. रीठा. मुलैठी. ये सब दवा एक २ तोले, अलसी छः माशे, खतमी के बीज छः माशे. इन सबको पीसकर चार माशे सबेरे खिलावै और ऊपर से एक तोला शहत और चार तोले पानी मिलाकर नित्य पिये ॥ यह रोग इस कारण से भी होता है कि किसी मनुष्य के सोजाक होती है इससे उसकी लिंगेन्द्रिय में पिचकारी लगानी पडती है तौ अंडकोषो मे पानी उतर आता है और वह पानी अंडकोषो के भीतर तेजाब के समान मांस को काटता है जब वह मनुष्य सीधा सोता है तो पानी पेड्ढ की ओर ठहरता है तौ इस से भीतर का मांस कट जाने से आंते उतर आती हैं फिर यह रोग असाध्य होजाता है ॥

यह रोग इस कारण से भी होता है कि कोई मनुष्य भोजन करके और जल पीकर बल करै वा किसी से कुश्ती लडे अथवा दीवाल पर चढे और कूदपडे इनके सिवाय और भी कितने ही कारण हैं कि जिनसे आंतें उतर आती हैं पहिले पेडूपर एक गुठली सी होती है फिर मनुष्य के चलने फिरने से कुछ दिनो के पीछे वह आंत अंडकोषों में रहती है जब वह मनुष्य सोता है तो वही आंतें पेटमें चली जाती हैं और उठते लोटने तथा बैठते समय उसका शब्द होता है उस रोग की चिकित्सा यह है कि एक लंगोट वा अंग्रेजी कपडा बांधा करे

सोंफ, मूसेकी मेंगनी. एकतोले. इन सबको पानीमें पीसकर गरम करके लगावै और जो जर्राहकी सम्मति होतो पहिले बफारा देवै और बफारेकी यह दवाहै ॥

॥ नुसखा ॥

सोयेके बीज, सोयेके पत्ते. चमेलीके पत्ते, इमलीके पत्ते हरी मकोय. पित पापडा. ये सब दवा दोदो तोले ले कर पानीमे औटाकर भफारादेवै, इसीका, फोकबांधे जो कुछ आराम दीख पडेतो यही करता रहे और जो इससे आराम नहोतो यही बफारा देवै ॥

॥ नुसखा ॥

संभालूके पत्ते सूखे महुवे. दोदो तोला इन दोनों वस्तुओंको जलमें औटाकर बफारा देवै ॥ और ऊपरसे इसीका फोक बांधदेवे ॥

तीसरा कारण इसरोगका यहहै कि बहुतसे मनुष्य जलपीकर दौडतेहैं और यह नहीं जानते कि इसमें क्या हानि होगी यह काम बहुतही बुराहै और इसके सिवाय एक बात यहहै किकिसी प्रकृति में रतूबत अर्थात् तरी अधिक होतीहै और ज्वरकीविशेष तामे बाजे मनुष्य पानी रुककर पीतेहैं और कोई कोई बहुत जल पीतेहैं इस बहुत जलपीनेसे दोवातीन रोग उत्पन्न होतेहैं एक तो यहीके नले बढजाते है और दूसरा यहीके अंडकोषो में पानी उतर आताहै तीसरा यह कि तिल्ली फूल जातीहै ऐसा करने से कभी २ अंडकोष बढजाताहै इसकी चिकित्सा हकीमोने बहुत पुस्तकोमे लिखीहै और हमारे मित्र डाकटर साहबने इसकी चि- कित्सा इस प्रकारसे लिखाहै कि पहिले इसमे नश्तर देवै और उसका सब पानी निकाल कर घाव में कोई ऐसी वस्तु लगावे

बेकली नहीं होती ॥ ३० ॥ तीसों तारीख में फस्त खुलवाने का यह भी शुभ फल कहा ये तारीख मुसलमानी जाननी चाहिये।

अथवार फलानि

शनि वारको फस्त खुलवाना जनून आदि रोगों को दूर करता है रविवार को फस्त खुलवाना सब प्रकार के रोगों को दूर करता है।

सोमवार को फस्त खुलवाना रुधिर विकार को शांत करता है

बुद्धवार को निषेध कहा है ॥

वृहस्पतिवार को फस्त खुलवाना खफकान रोग को उत्पन्न करता है और शरीर में बादी को बढाता है ॥

शुक्रवार को फस्त खुलवाना भी जनून रोगको उत्पन्न करता है ॥ इति बार फलम्

फस्त नामानि ।

और जिन नसों की फस्त खोली जाती है उन प्रसिद्ध नसों के नाम लिखते हैं ॥

कीफाल.१ बासलीक.२ अकहल.३ हबलुल जरा ४ असीलम ५ साफन ६ अर्कुन्निसा.७ ये सात हैं ॥

प्रगटहो कि जो लोग प्रतिवर्ष फस्त खुलवाते वा जुल्लाब लेतेहैं तो उनको अभ्यास वैसाही पडजाता है और यह अभ्यास अच्छा नहीं और फस्त का न खुलवाना उत्तम है क्योंकि वर्षकी असल ऋतु तीन है और रुधिर भी तीन प्रकार पर होता है ॥ जो फस्त खुलवाने की आवश्यक्ता होतो शीतकाल में मध्यान्हके समय खुलवावे कि उस ऋतुमें रुधिर उसीसमय चक्कर में होताहै फिर ठहर जाताहै और कोई २ हकीम

पांचमी तारीख को फस्त खुलवाने से मनुष्य प्रसन्नरहताहै
छटी तारीखको मुखकी जोति तेज होतीहै ॥ ६ ॥
सांतवीं तारीख को शरीर मोटा होताहै ॥ ७ ॥
आठवीं तारीख को शरीरमें निर्वलता उत्पन्न होतीहै ॥ ८ ॥
नवीं तारीख को शरीरमें खुजली हो जाती है ॥ ९
दसमीं तारीख में बल होता है ॥ १० ॥
ग्यारहवी तारीख में कंपन वायु दूर होती है ॥ ११ ॥
बारहवीं तारीख को फस्त खुलवाना निषेध है ॥ १२ ॥
तेरहवी तारीख को शरीर में पीडा उत्पन्न होती है ॥ १३ ॥
चौदहवीं तारीख को नींद नष्ट हो जाती है ॥ १४ ॥
पन्द्रहवीं तारीख को बीमारी नहीं होती ॥ १५ ॥
सोलहवीं को बाल सफेद नहीं होता ॥ १६ ॥
सत्रहवीं को मन अप्रसन्न नहीं होता ॥ १७ ॥
अठारहवीं को हृदय बलवान नहीं होता ॥ १८ ॥
उन्नीसवीं को मस्तक प्रवल होता है ॥ १९ ॥
बीसवीं को सब प्रकार के रोग दूर होते हैं ॥ २० ॥
इक्कीसवी को प्रसन्नता प्राप्त होती है ॥ २१ ॥
बाईसवीं को कंठ पीडा और दंत पीडा दूर होती है ॥ २२ ॥
तेईसवीं को निरबलता अधिक होती है ॥ २३ ॥
चौबीसवी को शोक नहीं होता है ॥ २४ ॥
पचीसवीं को खपकान रोग दूर होता है ॥ २५ ॥
छब्बीसवी को गुस्से की तथा पसली की पीडा दूर होती है २६
सत्ताईसवी को बवासीर जाती है ॥ २७ ॥
अट्ठाईसवी को सब प्रकार की पीडा नष्ट होती है ॥ २८ ॥
उनतीसवीं को भी शुभ जानों ॥ २९ ॥
और तीसवी तारीख को फस्त खुलवाने से मनको भ्रम और

बेकली नहीं होती ॥ ३० ॥ तीसों तारीख में फस्त खुलवाने का यह भी शुभ फल कहा ये तारीख मुसलमानी जाननी चाहिये।

अथवार फलानि

शनि वारको फस्त खुलवाना जनून आदि रोगों को दूर करता है रविवार को फस्त खुलवाना सब प्रकार के रोगों को दूर करता है।

सोमवार को फस्त खुलवाना रुधिर विकार को शांत करता है

बुद्धवार को निषेध कहा है ॥

बृहस्पतिवार को फस्त खुलवाना खपकान रोग को उत्पन्न करता है और शरीर मे वादी को बढाता है ॥

शुक्रवार को फस्त खुलवाना भी जनून रोगको उत्पन्न करता है ॥ इति वार फलम्

फस्त नामानि ।

और जिन नसों की फस्त खोली जाती है उन प्रसिद्ध नसों के नाम लिखते हैं ॥

कीफाल.१ बासलीक २ अकहल.३ हबलुल जरा ४ असीलम ५ साफन ६ अर्कुन्निसा ७ ये सात हैं ॥

प्रगटहो कि जो लोग प्रतिवर्ष फस्त खुलवाते वा जुल्लाब लेतेहैं तो उनको अभ्यास वैसाही पडजाता है और यह अभ्यास अच्छा नहीं और फस्त का न खुलवाना उत्तम है. क्योंकि वर्षकी असल ऋतु तीन है और रुधिर भी तीन प्रकार पर होता है ॥ जो फस्त खुलवाने की आवश्यका होतो शीतकाल में मध्यान्हके समय खुलवावे कि उस ऋतुमें रुधिर उसीसमय चक्कर में होताहै फिर ठहर जाताहै और कोई २ हकीम

पांचमी तारीख को फस्त खुलवाने से मनुष्य प्रसन्न रहताहै
छटी तारीखको मुखकी जोति तेज होतीहै ॥ ६ ॥
सांतवीं तारीख को शरीर मोटा होताहै ॥ ७ ॥
आठवी तारीख को शरीरमें निर्वलता उत्पन्न होतीहै ॥ ८ ॥
नवीं तारीख को शरीरमें खुजली हो जाती है ॥ ९
दसमीं तारीख में बल होता है ॥ १० ॥
ग्यारहवी तारीख में कंपन वायु दूर होती है ॥ ११ ॥
बारहवीं तारीख को फस्त खुलवाना निषेध है ॥ १२ ॥
तेरहवीं तारीख को शरीर में पीडा उत्पन्न होती है ॥ १३ ॥
चौदहवीं तारीख को नींद नष्ट हो जाती है ॥ १४ ॥
पन्द्रहवीं तारीख को बीमारी नहीं होती ॥ १५ ॥
सोलहवीं को बाल सफेद नहीं होता ॥ १६ ॥
सत्रहवीं को मन अप्रसन्न नहीं होता ॥ १७ ॥
अठारहवीं को हृदय बलवान नहीं होता ॥ १८ ॥
उन्नीसवी को मस्तक प्रबल होता है ॥ १९ ॥
बीसवीं को सब प्रकार के रोग दूर होते हैं ॥ २० ॥
इक्कीसवी को प्रसन्नता प्राप्त होती है ॥ २१ ॥
बाईसवीं को कंठ पीडा और दंत पीडा दूर होती है ॥ २२ ॥
तेईसवीं को निरबलता अधिक होती है ॥ २३ ॥
चौबीसवी को शोक नहीं होता है ॥ २४ ॥
पच्चीसवीं को खपकान रोग दूर होता है ॥ २५ ॥
छव्वीसवी को गुरदे की तथा पसली की पीडा दूर होती है २६
सत्ताईसवी को बवासीर जाती है ॥ २७ ॥
अट्ठाईसवी को सब प्रकार की पीडा नष्ट होती है ॥ २८ ॥
उनतीसवीं को भी शुभ जानों ॥ २९ ॥
और तीसवी तारीख को फस्त खुलवाने से मनको भ्रम और

बेकली नहीं होती ॥ ३० ॥ तीसों तारीख में फस्त खुलवाने का यह भी शुभ फल कहा ये तारीख मुसलमानी जाननी चाहिये।

अथवार फलानि

शनि वारको फस्त खुलवाना जनून आदि रोगों को दूर करता है रविवार को फस्त खुलवाना सब प्रकार के रोगों को दूर करता है।

सोमवार को फस्त खुलवाना रुधिर विकार को शांत करता है

बुद्धवार को निषेध कहा है ॥

बृहस्पतिवार को फस्त खुलवाना खपकान रोग को उत्पन्न करता है और शरीर मे वादी को बढाता है ॥

शुक्रवार को फस्त खुलवाना भी जनून रोगको उत्पन्न करता है ॥ इति बार फलम्

फस्त नामानि ।

और जिन नसों की फस्त खोली जाती है उन प्रसिद्ध नसों के नाम लिखते हैं ॥

कीफाल.१ बासलीक २ अकहल.३ हबलुल जरा ४ असीलम ५ साफन ६ अर्कुन्निसा ७ ये सात हैं ॥

प्रगटहो कि जो लोग प्रतिवर्ष फस्त खुलवाते वा जुल्लाब लेतेहैं तो उनको अभ्यास वैसाही पडजाता है और यह अभ्यास अच्छा नहीं और फस्त का न खुलवाना उत्तम है क्योंकि वर्षकी असल ऋतु तीन हैं और रुधिर भी तीन प्रकार पर होता है ॥ जो फस्त खुलवाने की आवश्यका होतो शीतकाल मे मध्यान्हके समय खुलवावे कि उस ऋतुमे रुधिर उसीसमय चक्कर में होताहै फिर ठहर जाताहै और कोई २ हकीम

योंभी कहतेहैं किरुधिर जमजाता है ॥ सो बात झूठहै क्योंकि जो मनुष्य के शरीरमें रुधिर जमजावे तो मनुष्य जीवे नहीं किन्तु भीतर गरमी होतीहै और रुधिर निकलनेमें यह परीक्षा नहीं होती कि रुधिर अच्छा है वा बुरा और उस समय में फस्त खुलवाने से मनुष्य दुर्बल होजाता है क्योंकि बुरे रुधिर के साथ अच्छा रुधिर भी निकलता है और ग्रीष्म कालमें रुधिर पृथक् २ होता है इस ऋतुमें संध्याके समय फस्त खुलवाना उचित है और सवेरे खुलवाने से रुधिर कम होजाता है किंतु खुशकी भी अधिकहोती है जिन मनुष्योंको फस्तका अभ्यास पडजाता है और फिर फस्त न खुलवावें तो उनको एक न एक रोग सताता रहता है और वर्षाकाल में रुधिर माद्दिल होजाता है उस ऋतुमें फस्त खुलवाना योग्य नहीं और जो हकीमकी सम्मति होतो खुलवालेवे और जिन दिनोंमें रुधिर कम होताहै तव खुश्कीके कारण से कईरोग होजाते हैं और पीडा भी हरएक प्रकार की होतीहै और जब फस्त खुलवाने की आवश्यक्ता होतो उसवक्त दिन तारीख ऋतु और समय का कुछ विचार नहीं किया जाता ।

इति प्रथमभाग ।

॥ श्री ॥

जर्राहीप्रकाश

दूसरा भाग

यंत्रो का स्पष्ट विवरण।

अनेक प्रकार के शल्य कांटा, पत्थर, वांस आदि जोशरीरके भिन्न भिन्न स्थानो में घुसजाते हैं उनको खींचकर निकालने के लिये यथा उनको देखने के लिये जो उपाय है यत्र कहलाता है। तथा अर्श, भगंदर, नाडी व्रणादि में शस्त्र, क्षार और अग्निकर्मादि के प्रयोग करने पर उनके पास वाले अगो की रक्षा करने के निमित्त तथा वस्ति और नस्यादि कर्म के निमित्त जो उपाय किये जाते हैं वे यंत्र कहलाते हैं तथा घटिका अलाबु, शृंग, (सींगी) जांववोष्टआदि को भी यंत्र कहते हैं।

यंत्रों के रूप और कार्य।

यंत्रों की सूरत और उनके कार्य अनेक प्रकार केहैं, इसलियेअपनी बुद्धि से विचार विचार कर जैसा काम पडे उसी के अनुसार यंत्र निर्माण करै। इस जगह हम स्थूल स्थूल यंत्रो का वर्णन करते हैं। समझदार वैद्य इनके नमूने के अनुसार अन्यान्य यंत्रो को भी बना सकता है।

स्वस्तिक यंत्र।
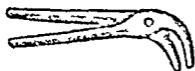
यन्त्रों के मुख कंक, सिंह, उलूक काकादि पशुपक्षियों के मुखके सदृश बनाये
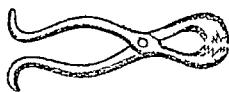
जातेहै तथा इन यंत्रोंके नामभी आ कृति के अनुसार ही रक्खे जाते हैं, जैसे कंकमुखयत्र, सिंहास्य यंत्रआ इनकी लंबाई प्रायः अठारह अंगुल की होती है और बहुत करके ये लोहे के बनाये जाते हैं (कहीं कहीं हाथीदांत केभी देखेजाते हैं) इनके कंठ में मसूर की दाल के आकारवाली लोहे की कील जडी जाती है। इस के पकडने का स्थान अंकुश की समान टेढा होता है इन्हें स्वनिक यंत्र कहते है। इनके द्वारा अस्थिमें लगे हुए शल्य निकाले जाते हैं।
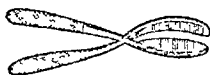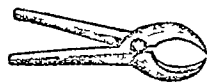
संदंश यत्र।

संदंश यंत्र सोलह अंगुल लंबे होते हैं, ये दो प्रकार के होते हैं एक तो ऐसे होते हैं जिनके अग्रभाग में कील लगी होती है, दूसरी तरह के मुक्ताग्र अर्थात् खुलेहुए मुखवाले होते हैं। इस संदंश शब्द का अपभ्रंश संडासी मालूम होता है संदंश यंत्रों द्वारा त्वचा, शिरा, स्नायु, और मांस में घुसा हुआ शल्य निकाला जाता है। दूसरी प्रकारका संदंश छ' अंगुल लंबा होताहै इसको चिमटी कहना बहुत संभवमालूम होता है और यही मुक्ताग्र है, यह छोटे २ शल्य और नाकके बाल, और आंखके पलकों के परवाल खींचने के काम में आता है।
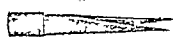
सुचुडीयंत्र तालयंत्र ।

मुचुंडी नाम एक प्रकार का यन्त्र होता है, इस में छोटे छोटे दांत होते हैं। सीधा होता है और पकड़ने की जगह पर अंगुली यक रूप होता है। यह गहरे घावों मे मांस तथा बंधेहुए चर्मको निकालने में काम आता है।

तालयंत्र दो प्रकार का होता है, एक द्विनालक, जिस के दोनों ओर मछली के ताल के सदृश और एकताल इसके एक ओर मछली के तालके आकार का होता है। इस की लंबाई बारह अंगुल की होती है। यह यन्त्र कान, नाक और नाड़ीव्रण से शल्यों के निकालने में काम आता है।
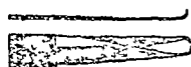
नाडीयंत्र ।

वस्ति नेत्र के सदृश नाडी यंत्र सछिद्र होतेहै इनमे प्रयोजनानुसार एकवा अनेक मुख होते हैं। ये कंठादि स्रोतों में प्रविष्ट हुए शल्योंके निकालने तथा उन्हीं स्थानो मे होनेवाले रोगो के देखने में काम आते है। तथा शस्त्रकर्म, क्षारकर्म और अग्निकर्म किये हुए स्थानों की औषध वा प्रक्षालन के निमित्त सुगमता करतेहैं तथा विषदग्ध अंगोंका विष चूसने में उपयोगी होते हैं। इन नाडीयन्त्रों की लंबाई, चौडाई, मोटाई, शरीर के स्रोतों के अनुसार कल्पना की जाती है।
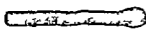
अन्ननाडीयंत्र ।

कंठ के भीतर लगे हुए शल्य को देखने के निमित्त दस

अंगुल लम्बा और पांच पांच अगुल परिधिवाली नाडीयंत्र उप. योगी होता है ॥

चार कर्णयुक्त वारंग के संग्रहार्थ पंचमुख छिद्राअर दो कर्णो से युक्त वारंग के समूहार्थ त्रिमुखछिद्रा नाडी यंत्र उपयोगी होता है। वारंग के प्रमाण के अनुसार नाडी यंत्रका प्रमाण होताहै । शरादि दंडके प्रवेश योग्य शिखाके आकार के सदश कीलक को वारग कहते हैं।

शल्यनिर्घातनी नाडी

सिरसे ऊपर वाले भागमे जिनका आकार कमल की कर्णि. का के समान है और बारह अगुल लम्बी और तीन अंगुल के छिद्रवाली नाडी शल्य निर्घातनी कहलातीहै।

शल्यदर्शनार्थ अन्यनाडी
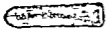
वारंगकर्ण के सस्थान आनाह ओर लंबाई के अनुरोध से और नाडी यत्र भी शरीरके भीतर प्रविष्ट हुये शल्यों के देखने के लिये बनवाने चाहिये।

अर्शोयंत्राणि।

अर्शोयंत्र (ववासीर का यत्र) गौके स्तनो के सदश चार अंगुल लंबा और पाच अंगुल गोलाई मे होती है, स्त्रियों के लिये इसी यंत्र की गोलाई छःअगुलकी होती है क्योंकि उनकी गुदा स्वाभाविक ही बडी होती है। व्याधिके देखने के लिये दो नों ओर दो छिद्रवाला यंत्र होता है तथा शस्त्र और क्षारादि प्रयो ग के निमित्त एक छिद्रवाला यंत्र होता है। इस यंत्रके बीचमें तीन अंगुलका और परिधि अगूठे केसमा न होताहै। इस यत्रके ऊपर आध अगु-

ल ऊची एक कर्णिका होती है जिससे यंत्र बहुत गहराई में नही जा सकता है ।

अर्शके पीडनके निमित्त एक और प्रकारका यंत्र होताहै उसे शमी कहतेहैं यहभी ऐसा ही होता है, इसमे छिद्र नही होते हैं ।

॥ भगंदर यंत्र ॥
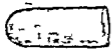
भगंदर यंत्रभी अर्शोयंत्र के सदृश होता है । इसकी कर्णिका छिद्रसे ऊपर दूर करदी जाती है कोई कोईकहते है कि कर्णिका हीन अर्शोयंत्रको ही भगंदर यंत्र कहते है ॥

॥ नासायंत्र ॥

नासिका के अर्बुद और अर्शकी चिकित्सा के निमित्त नासायंत्र उपयोग मे आता है । इसमें एक छिद्र होता है । छिद्र की लंबाई दो अंगुल और परिधि तर्जनी उंगली के समानहोती है । नासायंत्र भंगदर यंत्रके तुल्य होता है ।

अंगुलित्राणक यंत्र ।

अंगुलित्राणक यंत्र हाथीदांत वा काष्ठ का बनाया जाता हैं, इसका प्रमाण चार अंगुल होता है । यह अर्शयंत्र के सदृश गौके स्तनके आकार वाला दो छिद्रो से युक्त होता है, इससे मुख सहजमें खुल जाता है । इस यंत्रसे अंगुलियों की रक्षा दांतों से होजाती है । इसी से इसका नाम अंगुलित्राणक है ।

योनिव्रणेक्षण यंत्र ।
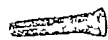
यह यंत्र योनिके व्रणोंके देखनेमें काम आताहै, इससे इसेयोनिव्रणेक्षण यंत्र कहते है । इस यंत्रके मध्यभागमे छिद्र होते है, इस की लंबाई सोलह अंगुल होती है तथा मुद्रिका से बद्ध होता है,

इसमें चार पत्ते होते हैं इसका आकार कमलके कुसुम के सदृश होता है, इन चारों को मिलादेने से यह नाडी यत्र के तुल्य होजाताहै। मूल देशमे चतुर्थ शलाका के लगाने से यंत्रका अग्रभाग खुल जाता है।

षडंगुल यंत्र।

नाडी व्रण के भरने और धोने के लिये छः अंगुल लंबा तथा वस्तियंत्र के सदृश गोल गौकी पूछके आकार वाला दो प्रकार का यंत्र काममें लाया जाता है। इसके मूलभागमें अंगूठे के तुल्य और मुख भागमे मटर के तुल्य छेद होता है, इसके मूलमें कोमल चमडेकी पट्टी लगी होतीहै। वस्ति यत्रमें और इसमें इतना ही अंतरहै कि वस्ति के अग्रभाग में कर्णिका होती है। इस में नही होती

उदकोदर मे नालिका यंत्र॥

दकोदर में से जल निकाल ने के लिये दो मुखवाली नली का वा मोरकी पुछकी नाल काममें लाई जाती है। इस का नाम दकोदर यत्र है॥

शृंगीयंत्र।

तीन अंगुल के मुखवाली यह शृंगी यंत्र दूषित वात, विष, रक्त, जल, बिगडा हुआ दूध आदिके खीचने मे काम आता है इसकी लंबाई अठारह अंगुल की होती है इसके अग्रभाग में सरसों के समान छेद होताहै। इसका अग्रभाग स्त्री के स्तनो के अग्रभाग के सदृश होता है।

तुंबीयत्र।

तुंबी यत्र १२ अंगुल मोटा होता है, इसका मुख गोलाकार

तीन वा चार अंगुल चोडा होता है । इसके बीच में जलती हुई वत्ती रखकर रोगकी जगह लगा देने से दूषित श्लेष्मा और रक्त खिच आता है ॥

घटीयंत्र ॥

यह घटी यंत्र गुल्म के घटाने बढाने में काम आता है । अलाबु यंत्र के सदृश ही इसमे भी जलती हुई वत्ती रक्खी जातीहै
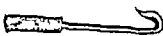
शलाका यंत्र ।

शलाका यंत्र अनेक प्रकार के होते हैं, इनकी आकृति भी कार्य के अनुसार भिन्न २ प्रकार की होती है । इन में से गिडोये के तुल्य मुखवाली दो प्रकार की सलाई नाडी व्रणके अन्वेषणमे काम आती है । औरदो प्रकार की शलाका आठ और नौ अंगुल लंबी मसूर के दलके समान मुखवाली होती हैं ये स्रोतों मार्ग म प्रविष्ट शल्यों के निकालने में काम आती है ॥
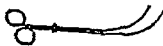
॥ शंकुयंत्र ॥-

शकुयंत्र छः प्रकार के होते हैं । इनमे से दो सर्प के फणं के आकार वाले सोलह वा बारह अंगुल लंबे होतेहैं, ये व्यूहन अर्थात् शल्य निकालने के काममें आते है । दो शरपुंख (बाज) के मुख वाले दस और बारह अंगुल लंबे चालन कार्य के निमित्त व्यवहार में आते हैं शेष दो बडिशका आकृतिवाले आहरणार्थ (शल्य के निकालने में) काम आते हैं ।

गर्भशंकु ।

आठ अंगुल लंबे अंकुश के समान टेढे मुखवाला स्त्रियोंके

मूढ गर्भ को निकालने में काम आता है। इसे गर्भशंकु-यंत्र कहते हैं ॥

सर्पफण यंत्र।

अग्रभाग में सर्प के फण के समान यंत्र से पथरी निकाली जाती है, इसे सर्प फणास्य यंत्र कहते हैं ॥
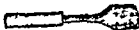
शरपुखयंत्र।

यह बाजपक्षी के सदृश मुखवाला चार अंगुल लंबा होता है, इससे कीडोके खाये हुए वा हिलते हुए दांत निकाले जातेहै।

छः प्रकारकी शलाका

क्षार और क्लेदादि को दूर करने के लिये छः प्रकार की शलाका काम में आती हैं इनका अग्रभाग कपासकी पगडी के सद्रश होता है। पास और दूरके अनुसार गुह्यदेशमें दस और बारह अंगुल लंबी दो प्रकारकी शलाका काम आती है छः और सात अंगुल लंबी दो शलाका नासिकाके लिये तथा आठ और नौअगुल लंबी दो प्रकारकी शलाका कानके लिये होती है। कानका शोधन करने में मुख सुवाके सद्रश होता है

क्षाराग्नि कर्मोपयोगी शलाका

शलाका और जांबवोष्ट यंत्रों में मोटे, पतले और लंबे तीन प्रकारके शलाका और जांबवोष्ट यंत्र होते हैं। ये क्षारकर्म और अग्नि कर्म में काम आते हैं। अंत्र-

वृद्धिमें जो शलाका काम आती है

उमका बेंटा बीच से ऊपर तक गोल और तले में अर्द्धचन्द्रा कार होता है। नासार्श और नासार्बुद को दग्ध करनेके लिये बेरकी गुठली के मुख वाली सलाई काम आती है।
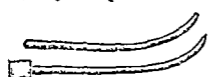
क्षारकर्ममें शलाका।

क्षार औषध लगाने के लिये तीन प्रकार की सलाई होती है। इनका मुख नीचे को झुका होता है। ये आठ अंगुललंबी और कनिष्ठका,मध्यमा तथा अनामिका के नखके समान परिमाणयुक्त होती है।

मेढ्रशोधन शलाका।

मेढ्र शोधन और अंजनादि में उपयोगी शलाकाओं का वर्णन अपने अपने प्रकरण में कर दिया है।

उन्नीस प्रकारके अनुयंत्र।

अयस्कांत(चुंवक पत्थर),रज्जु वस्त्र,पत्थर,रेशम,आंत,जिह्वा, वाल, शाखा, नख, मुख, दांत, काल, पाक, हाथ, पांव, भय, और हर्ष ये १९ प्रकार के अनुयन्त्र हैं। निपुण वैद्य अपनी बुद्धि से विवेचना करके इनसे भी काम ले सकता है।

यंत्रोंका कर्म।

निर्घातन (ताडना और परिपातन), उन्मथन (उखाडना) पूरण, मार्गशोधन, सव्यूहन (निकालना) आहरण, वन्धन, पीडन, आचूषण'उन्नमन (उठाना), नामन, चालन, भंग, व्यावर्तन और ऋजुकरण (सीधा करना) ये यंत्रो के कर्म हैं।

कंकमुखयंत्रो को प्रधानता।

कंकमुखयंत्र सुखपूर्वक निर्वर्तित होता है, शरीरमें प्रवेश कर जाता है। ग्रहणयोग्य शल्यादि को खींचकर निकाल लाता है,

तथा शरीरके सब अवयवों में उपयोगी होता है । ऐसे निवर्तनादि चौदह कारणों से कंकमुखयत्र सब यन्त्रों मे श्रेष्ठ है ।

शस्त्रों का वर्णन ।

शस्त्र बहुतायत से छः अंगुल लंबे होते हैं तथा बीस प्रकार के होते हैं । ये शस्त्र बहुत निपुण कारीगर से बनवाये जाते हैं, ये बहुत सूक्ष्म, पैने और ऐसे बनवाने चाहियें जो लगाने वा निकालने में टूट न जावें । इनकी सूरत बहुत सुन्दर, धार पैनी, रोगों के दूर करने में समर्थ अकराल(भयंकर नहो), सुग्रह(सुखपूर्वक पकडीजाय), हो तथा शस्त्र का मुख बहुत ही सावधानी से बनाया जाय । सब शस्त्र नील कमल की कान्ति के समान चमकीले और नामानुसार आकृतिवाले हो, इनको सदा पास रक्खे, शस्त्रों के फल कुल लंबाई से अष्टभाग होने चाहिये । इन शस्त्रो मे से स्थान विशेष में एक एक करके दो वा तीन भी उपयोग में आते हैं ।

मंडलाग्र शस्त्र ।

मंडलाग्र शस्त्र के फल की आकृति तर्जनी के अन्तर्नख के समान होती है । यह शस्त्र पोथकी, शुंडका और वर्त्मरोगादि में लेखन छेदन मे काम आता है ।

वृद्धिपत्रादि शस्त्र ।

वृद्धिपत्र शस्त्र का आकार छुरे के समान होता है यह छेदन, भेदन और उत्पाटन में काम आता है। सीधे अग्रभागवाला, वृद्धिपत्र ऊंची सूजन में काम मे लाया जाता है । गंभीर सूजन में वह वृद्धिपत्र काम में आता है जिसका अग्रभाग पीठ की तरफ झुका होता है । उत्पलपत्र लंबे मुखका और अध्यर्धधार शस्त्र

छोटेमुखका होताहै । ये दोनो छेदन और भेदनमें काम आतेहैं ।

सर्पास्य शस्त्र ।

सर्प के मुख के सदृश सर्पास्यशस्त्र नाक और कान के अर्श को छेदन के काम में आता है. फलकी ओर इसका परिमाण आधे अंगुल होता है

एषण्यादि शस्त्र ।

नाडीव्रण की सूजन का अन्वेषण करने के लिये एषणीशस्त्र उपयोगी होता है यह छूने में कोमल और गिडोये के मुखकी आकृतिवाला होता है ।

नाडीव्रण की गति का भेदन करने के लिये एक प्रकार का दूसरा एषणीशस्त्र होताहै इसका मुख सूची के सदृश और मूल सछिद्र होता है ।
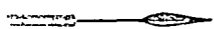
वेतसयंत्रनामक एषणी वेधने के काम में आताहै तथा शरारीमुख और त्रिकूर्चक नामक दो प्रकार के एषणी स्रावकार्यमें काम आते हैं। शरारी एक प्रकारका पक्षी होता है।
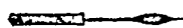
कुशपत्रादि ।

कुशपत्र और आटीमुख नाम के दो शस्त्र स्राव के निमित्त काम में आते हैं। इन के फलका परिमाण दो अंगुल होता है ।

कुशपत्र और आटीमुख के समान अन्तर्मुख नामक शस्त्र स्राव के निमित्त उपयोगमें लाया जाता है. इसका फल डेढ अं

तथा शरीरके सब अवयवों में उपयोगी होता है । ऐसे निवर्तनादि चौदह कारणों से कंकमुखयत्र सब यत्रो में श्रेष्ठ है ।

शस्त्रों का वर्णन ।

शस्त्र बहुतायत से छः अंगुल लंबे होते हैं तथा बीस प्रकार के होते हैं । ये शस्त्र बहुत निपुण कारीगर से बनवाये जाते हैं, ये बहुत सूक्ष्म, पैने और ऐसे बनवाने चाहियें जो लगाने वा निकालने में टूट न जावें । इनकी सूरत बहुत सुन्दर, धार पैनी, रोगों के दूर करने में समर्थ अकराल(भयंकर नहो),सुग्रह(सुखपूर्वक पकडीजाय), हो तथा शस्त्र का मुख बहुत ही सावधानी से बनाया जाय । सब शस्त्र नील कमल की कान्ति के समान चमकीले और नामानुसार आकृतिवाले हो, इनको सदा पास रक्खे, शस्त्रों के फल कुल लंबाई से अष्टभाग होने चाहिये । इन शस्त्रों में से स्थान विशेष में एक एक करके दो वा तीन भी उपयोग में आते हैं ।

मंडलाग्र शस्त्र ।

मंडलाग्र शस्त्र के फल की आकृति तर्जनी के अन्तर्नख के समान होती है । यह शस्त्र पोथकी, शुडका और वर्त्मरोगादि में लेखन छेदन मे काम आता है ।

वृद्धिपत्रादि शस्त्र ।

वृद्धिपत्र शस्त्र का आकार छुरे के समान होता है यह छेदन, भेदन और उत्पाटन में काम आता है। सीधे अग्रभागवाला, वृद्धिपत्र ऊंची सूजन में काम मे लाया जाता है । गंभीर सूजन में वह वृद्धिपत्र काम में आता है जिसका अग्रभाग पीठ की तरफ झुका होता है । उत्पलात्र लंबे मुखका और अध्यर्धधार शस्त्र

छोटेसुखका होताहै ।,ये दोनों छेदन और भेदनमे काम आतेहैं ।

सर्पास्य शस्त्र ।

सर्प के मुख के सदृश सर्पास्यशस्त्र नाक और कान के अर्श को छेदन के काम में आता है. फलकी ओर इसका परिमाण आधे अंगुल होता है

एषण्यादि शस्त्र ।

नाडीव्रण की सूजन का अन्वेषण करने के लिये एषणीशस्त्र उपयोगी होता है यह छूने मे कोमल और गिडोये के मुखकी आकृतिवाला होता है ।

नाडीव्रण की गति का भेदन करने के लिये एक प्रकार का दूसरा एषणीशस्त्र होताहै इसका मुख सूची के सदृश और मूल सछिद्र होता है ।

वेतसयंत्रनामक एषणी वेधने के काम में आताहै तथा शरारी मुख और त्रिकूर्चक नामक दो प्रकार के एषणी स्रावकार्यमें काम आते हैं। शरारी एक प्रकारका पक्षी होता है।

कुशपत्रादि ।

कुशपत्र और आटीमुख नाम के दो शस्त्र स्राव के निमित्त काम में आते हैं। इन के फलका परिमाण दो अंगुल होता है ।

कुशपत्र और आटीमुख के समान अन्तर्मुख नामक शस्त्र स्राव के निमित्त उपयोगमे लाया जाता है. इसका फल डेढ अं

गुल होता है। कुशादा के सदश ही एक अर्द्धचन्द्रानन शस्त्र होता है यह भी स्राव के निमित्त काम आता है। एक व्रीहिमुखनामक शस्त्र होता है यह भी शिराव्यध और उदरव्यध में काम आता है. इसके फलका प्रमाण भी डेढ अगुल है।

कुठारी शस्त्र।

कुठारी नामक शस्त्र का दंड विस्तीर्ण होता है, इसकामुख गौ के दांतके समान और आधा अंगुल लंबा होता है। इससे अस्थिके ऊपर लगी हुई शिरा बेधी जाती है।

शलाका शस्त्र।

शलाकाशस्त्र तांबेका बनाया जाताहै- इसके मुखकी आकृति कुरुवक के फूल के मुकुल के समान होती है, इससे लिंगनाश कफैस उत्पन्न हुए पटल नामक अर्थात् नेत्र रोग कावेधन किया जाता है।

अंगुलि शस्त्र।

एक प्रकार का शस्त्र अंगुलिनामक होता है। इसका मुख मुद्रिका के सदृश निकला हुआ होता है, इसके फलका विस्तार आधा अगुलहै।यह वृद्धिपत्र वा मंडलाग्रके समान होता है। इसका परिमाण वैद्यकी तर्जनी अगुली के अगले पोरुए के बराबर रक्खा जाता है, इसको प्रयोग के समय डोरे से बांधकर मणिबंध (पहुंचा वा कलाई) से बाध लेना चाहिये। यह कंठ के स्रोतों मे उत्पन्न हुए रोगों के छेदन और भेदन में काम आता है।

वडिश शस्त्र ।

वडिश नामक शस्त्रका मुख अंकुश के समान अच्छी तरह टेढा होता है । यह शुंडिका,अर्म और प्रतिजिहूवादि रोगों को ग्रहण करने में काम आता है ।

करपत्र शस्त्र ।

करपत्र इसे करौत वा आरीभी कहते है, यह दस अंगुल लंबी और दो अंगुल चौडी होती है। इसमे छोटे छोटे दांत होते है जिनकी धार वडी पैनी होती है। इसका मुष्टिस्थान सुंदररूप से बद्ध होता है, यह अस्थियों के काटनेके काम मे आता है ।
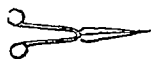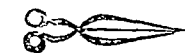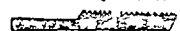
कर्तरी शस्त्र ।

कर्तरीको कैंचीभी कहते है । यह नस, सूत्र और केशोंके काटने में काम आता है ।

नखशस्त्र ।

नखशस्त्र इसे नहरनी भी कहते है । यह दो प्रकार की होती है, एककी धार टेढी और दूसरी की सीधी होती है। यह नौ अंगुललंबी होती है । इससे कांटे आदि छोटे छोटे शल्य निकालेजातेहै । नख काटे जातेहै । भेदन भी कियाजाताहै ।
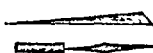
दंतलेखन शस्त्र ।

दंतलेखन शस्त्रमें एक ओर धार होती है और दूसरी ओर प्रबद्ध आकृति होती है । इसमें चार कोन होते है, इससे दांतोकी शर्करा निकाली जाती है ।

सूचीशस्त्र ।

सीवन अर्थात् सीनेके लिये तीन प्रकार की सुई बनाई जाती हैं, ये सुइयां गोल, पाशमे गूढ और दृढ होती है। जहां मांस मोटा होता है वहां त्रिकोण मुख वाली तीन अंगुलकंबी सुई उपयोगमें आती हैं, जहा मांस कम होता है, तथा अस्थि और संधिमें स्थित् व्रणोंके सीनेके लिये दो अंगुललंबी सुई काममें लाई जाती है, और तीसरी प्रकार की सुई जो ढाई अंगुल लंबी धनुष के समान टेढी, और व्रीहिके समान मुखवाली पक्वाशय, आमाशय और मर्मस्थान के व्रणों के सीने में काम आती है ॥

कूर्चशस्त्र ।

ये सुइयां जो चारों ओरसे गोल, और लंबाई मे चार अंगुल होती है। तथा सात वा आठ एक काष्ठमें दृढरूप से लगी, हुई सूची कूर्च कहलाती हैं। ये नीलिका व्यंग और केश बातादिरोगों मे कुट्टन के लिये प्रयुक्त की जाती है।

आधे आधे अंगुलवाले गोलाकार आठ कंटकों से युक्त शस्त्र को खज कहते हैं। इसको हाथ से बिलोडित करके नासिका से रक्तस्राव किया जाता है।

कर्णव्यधशस्त्र ।

कान की पालियों के वेधने के निमित्त मुकुल के आकार वाला यूथिका नामक शस्त्र काममें लाया जाता है।

आराशस्त्र ।

यह आरा नामक शस्त्र अर्धांगुल गोल मुखवाला, तथा उस गोलाकार के ऊपर का भाग अर्धांगुल युक्त चतुष्कोण होता है।

पक्क और अपक्क का संदेह हो ऐसे स्थान में इस आरा शस्त्र द्वारा ही सूजन का बेध किया जाता है। अत्यन्त मांसयुक्त कर्णपाली बेधन मे यही शस्त्र काम आता है।

कर्णवेधनी सूची।

चार प्रकार की और सुइयां होती हैं जो कर्णवेधमें काम आती हैं, ये तीन अंगुल लंबी होती हैऔर इनके तीन भाग छिद्रों से युक्त होते हैं यह बहुत मांसवाली कर्णपाली के बेधमें काम आती है।

अलौह शस्त्र

यहां तक प्रधान लौह निर्मित यन्त्र और शस्त्रों का वर्णन हो चुका है, वैद्यको उचित है कि बुद्धिसे योग्य और अयोग्य को विचार करके इन शस्त्रो को काम मे लावे। अब लोह वर्जित शस्त्रोंका वर्णन करते हैं जोक, क्षार अग्नि, केश, प्रस्तर (पत्थर), नखादि अलौह शस्त्रों द्वारा तथा अन्यान्य यंत्रों द्वारा भी शस्त्र कर्म किया जाता है, इसी से इन्हें अनुशस्त्र कहते हैं।

शस्त्रों का कार्य।

उत्पाटन में ऊर्धनयन यत्र, पाटन में वृद्धि पत्रादि, सेवन मे सूची, लेखन मे मण्डलाग्रादि, भेदन में एषणी व्यधन मे वेतसादि, मथन में खज, ग्रहण मे संदंश और दाह में शलाकादि शास्त्रों का प्रयोग होता है।

शस्त्रों का दोष।

भोंतरापन, टूटापन, बहुत पतलापन, बहुत मोटापन, बहुत छोटापन, बहुत लम्बापन, टेढापन, बहु पैनापन य आठ दोष शस्त्रो में होते हैं।

शस्त्रों के पकडने की विधि

छेदन, भेदन और लेखन कर्म के लिये बेंटे और फल के लिये बीच मे तर्जनी, मध्यमा और अँगूठे इन तीन उँगलियों से शस्त्र को पकडना चाहिये, परन्तु शस्त्र कर्म करने के समय सब ओर से ध्यान खींचकर इसी में लगा देना चाहिये। विस्रावण के लिये शरारी मुखादि शस्त्रो को बेंटके अग्रभाग में तर्जनी और अँगूठा इन २ उँगलियो से पकडे । व्रीहिमुख शस्त्र के बेंटके अग्रभाग को हथेली मे छिपाकर उसको मुख के पास पकडकर काम में लावे । सब प्रकार के आहरण यंत्र मूल मे पकडकर उपयोग मे लाये जाते हैं, इसी तरह अन्य शस्त्रों को भी प्रयोजन के अनुसार यथोपयुक्त स्थानों मे पकडकर काम में लाना चाहिये ।

शस्त्रकोश।

शस्त्रोंके रखनेके लिये नौ अंगुल चौडा और बारह अंगुल लंबा कोश रेशमी वस्त्र,पत्ता,ऊन कौषेय या कोमल चमडेका बनवाना चाहिये कोशके भीतर शस्त्रोंके रखने के लिये जुदे जुदे सुन्दर शस्त्रानुरूप घर (खाने) बनवाने चाहियें जिनमें ऊन आदि वस्त्र बिछादिये गये हों इनमे सब प्रकार के शस्त्रोंका सचय होना चाहिये।

रुधिर निकालने के उपाय ।

रुधिर निकालने के तीन उपाय हैं, जोंक, सींगी या नश्तर इनमेंसे सींगी लगाना बहुत लाभ कारक है क्योंकि इससे जितना रुधिर निकालना हो,उतना ही निकलता है, जिसस्थानसे निकालनाहो वहीं से निकलता है और रोगी भी निर्बल नहीं होने पाता है।

जोक द्वारा रुधिरनिकालनेमें कर्तव्य ।

जोकों के गिरपडने के पीछे रुधिर कोजारी रखने का यह उपाय है कि प्रथमही जमे हुए रुधिर को स्पंज से साफ करे फिर रोटी और पानी की पुलटिस बनाकर गरम गरम बांधदेवे और जब तक रुधिर के निकालने की आवश्यकता हो तब तक आधेआधे घंटे में पुलटिस बदलतारहै ।

अगर जोक के डंक से देर तक रुधिर जारी रहै और साधारण उपायों से बन्द नहो तो डंक लगने की जगह के एक ओर खालमें एक बारीक सुई घुसाकर दूसरी ओर से निकाल ले और एक पक्का डोरा वा रेशम सुई के दोनों सिरों के नीचे बांधदे वा लपेट दे । ऐसा करने से रुधिर बंद होजायगा । फिर तीन चार दिन पीछे डोरे को काट डाले और सुई को सावधानी से निकालले ।

इस उपायसे भी यदि बंद नहो तो लोहे के एक बारीक तार को इतना गरम करोकि वह सफेद हो जाय फिर इस तार को उसमे घुसा दिया जाय इस उपायसे रुधिर निकलना बहुत जल्द बंद हो जाता है ।

सींगी का वर्णन

सींगी लगाने के मामूली अस्त्र मौजूद नहोने पर एक छोटासा आबखोरा या प्याला चाहका, एक टुकड़ा जलते हुए कागज वा सन का और एक पैना उस्तरा वा चाकू काम मे लावे । इसकी यह तरकीब है कि जलते हुए सन वा कागजको उक्त प्याले में रखदे और जिस समय वह वर्तन गरम हो जावे और उसके भीतर की वायु पतली हो जावे तब उस वर्तन को उस स्थान

पर उलट कर लगादे जहा से रुधिर निकालना है, जिस समय उस बरतन के भीतर की खाल रुधिर के मुंजमिद होनेसे लाल रंग की होजाय तब बरतन को हटाकर उस्तरे वा छुरी से खाल में शिगाफ़ (चीरा) लगादे और उक्त बरतनको पहिले की तरह फिर उसके ऊपर ढकदे । इसी तरह बार बार करता रहे जब तक कि उतना रुधिर न निकल चुके जितने की निकाल ने की आवश्यकता है ।

फस्द का वर्णन ।

फस्द खोलने की जगह कोहनी के खम पर से और पंजे के पांवके ऊपर ऊपर से होती है परंतु यह डर अवश्य रहता है कि नश्तर लगाने के समय कहीं किसी रग पर घाव न हो जाय ।

रगों की स्थिति ।

बांह के ऊपर से नीचे तक और बांह की तरफ एक बड़ी रग अंगूठे की जड से कंधे तक है और बांह के भीतर की तरफ एक और रग एक उतनी ही बडी रग उंगली से कोहनी तक है और एक तीसरी रग अंदाजन उतनी ही बडी अगले हाथ के ऊपर कोहनी के नीचे ही दिखाई देती है वहां से आगे उसकी दो शाखा हो गई है, एक शाखा तो भीतर की रगकी तरफ और दूसरी बाहर की रगकी तरफ उस जगहपर है जहां जोड होता है । बीच वाली रग के बाहर की शाखामे फस्द खोलना चाहिये ।

उक्त रग के खोलने की विधि ।

अपनी उंगली के किनारे को उस रग पर रक्खै अगर उस रग के नीचे कोई नस हो जो फडक ने से मालूम हो सकती है और कोई दूसरी रग भी होतो बहुत सावधानी से उस रग की फस्द

खोले । और बीच की रगके भीतर वाली शाखामें इस लिये फस्द नही खोलते कि बांह की वडी शिरियान ऊपर से नीचे तक उस रग के पीछे होती है ॥

बांह से रुधिर निकालने के तरकीब ।

बांह में जिस जगह रुधिर हो वहां से कुछ ऊपर चौडी निवाड़ या फीता बांधे और एक हाथ के फासले पर ऊपर की तरफ नीचे को दो फेर देकर बांध दिया जाय इस मे डेढ गांठ लगानी चाहिये जिससे खोलने में सुगमता रहै । इससे तीन लाभ है एक तो रुधिर उलटा नहीं गिर सकता है, दूसरे रग फूल ने नहीं पाती, तीसरे रुधिर अच्छी तरह निकल जाता है ।

जब रुधिर आवश्यकतानुसार निकल जाय तब लगे हुए रुधिर को स्पंज से साफ करे और एक कपडे की चार तह करके गद्दी बना कर एक पट्टी से आठ [8] की तरह बांधदे पर बहुत खीच कर न बाधे । कस कर बांधने मे यह हानि है कि रुधिर उन्ही रगो में उतर जाती है जिनमें चीरा नही लगाया गया है, तथा रगें फूल जाती है और इस कारण से वह रग फिर फट जाती है जो बांध दी गई है ।

पांव में फस्द खोलने के लिये टांग के नीचे एक पट्टी खेंच कर टांग में बाधदे और रगों के फूलने पर सब से वडी रग में जो पांवके ऊपर हो उसमें लंबाई की तरफ नश्तर लगाया जावे । आवश्यकतानुसार रुधिर निकलने के पीछे उस पट्टी को खोल कर रोगी को पाव फैला कर लिटादे और घावको लिंट की गद्दी और स्टिकिंग प्लास्टर का फाया लगा कर बाध दिया जाय ।

चोट का वर्णन ।

देह के किसी अवयव पर भारी बोझके [illegible] अथवा अकस्मात किसी ऊंची जगह से गिर पड़ने से हो जिस जगह चोट आती है [illegible] फिर उसका रंग [illegible] है कि चोट के लगने से मांस के भीतर की छोटी [illegible] फट जाती है और उनमें से रुधिर निकल कर खाल के भीतर दौडता है फिर दो दिन पीछे उसका रंग स्याही लिये हुए हरा हो जाता है और यदि रुधिर बाहर निकलने लगे जाता है तो घाव हो जाता है।

चोट पर लगाने की सर्वोत्तम औषध।

गरम तर पुलटिस वा भीगी हुई फलालेन प्रति दिन बांधी जावे। अगर चोट अधिक लगी हो और किसी जोड के पास हो और वह मनुष्य युवा हो तो दर्द कम करने के लिये बारह जोक लगावे और उसके पीछे गरम तर पुलटिस वा फलालेन बांध दे।

नकसीर का वर्णन।

नाक से यदि अपने आप रुधिर निकलने लगे तो उसके बंद करने का यह उपाय है कि रोगी को सीधा बैठा कर उस की नाक को ठंडे पानी से वा सिरका और पानी मिला कर ठंडा करे वा नथनों के द्वारा सुंघावे वा कुटा हुआ बर्फ लगावे। यदि इस उपाय से नकसीर बंद न हो तो २० ग्रेन फिटकरी को मेज के दो ग्लास भर पानी को बर्फ मे मिला कर पिचकारी से नाक मे डाले। इसमें यह भी उचित है कि गर्दन का कपड़ा ढीला कर दे और ठंडे पानी का तरेरा सिर और

नाक पर डाले। जो मनुष्य लेट रहा हो उसे एक करवट कर देना चाहिये यदि इससे भी रुधिर बंद न हो तो नाक पकड कर हाथ से दाब देनी चाहिये यदि रुधिर बंद न हों तो साफ रुई वा कपडा नाक में भर कर हाथ से दवाना चाहिये। यदि किसी तरह भी रुधिर बंद न हो डाक्टर को दिखाना उचित है।

मोचका वर्णन।

मोचको अंग्रेजी में स्प्रेन (Sprain) कहते है, यह चोट बहुधा चलाते चलाते पावके ऊंची नीची जगह में पडने से, या यकायक मुडजाने से हाथ की कलाई में झटका लग जाने से हुआ करती है, प्रायः पांवके टकने (Ankle Joint) और पहुंचे या कलाई (Wrist Joint) के जोडों में आया करती है। इसके आजा ने से दर्द बहुत होने लगता है धरती पर पांव नहीं टेका जाता है सूजन भी पैदा हो जाती है।

मोच का उपाय।

मोच अजाने पर उस देहको अवयवके हिलने झुलने नदे और रोगी को चार पाई पर लिटा दे तथा गरम और तर फलालेन बार बार कई घंटो तक उस पर बांधता रहै और गरम रोटी और पानी की पुलटिस सोते समय बांधदे और कई दिन तक उससे काम न ले। जो दर्द की अधिकता हो तो दो एक दिन ऊपर लिखे उपाय को काम में लाता रहै। दर्द मे कमी होने पर सिरके की पुलटिस या बाश गोल्ड एक्सट्रैक्ट लगावै। जब दर्द बिलकुल जाता रहै तबभी चलने फिर की जल्दी न करे क्यों कि अकसर ऐसा होताहै कि मोच आनेके कुछ समय पीछे सूजन आ जाती है उस समय बहुत सावधानीसे सूप प्लास्टर की पट्टी लपेट कर लिनिन का रोलर बांध दिया जावै॥

यदि हाथ में मोच आई हो तो गले में रूमाल बांधकर उस हाथ को लटका दो ॥

हड्डी टूटने का कारण ।

हड्डी अधिक चोट लगने से टूटा करती जैसे लाठी की चोटमे, किसी छत वृक्ष या ऊंची जगह पर से गिरने से, गाडी के नीचे दब जानेसे, ऊपर से कोई भारी पत्थर आदि देहपर गिरनेसे तथा ऐसे ही और और कारणो से हड्डी टूट जाया करती है इसे अंगरेजी मे फ्रैकचर ऑफ बोन्स कहते है ।

रोगी को ले जाने की बिधि ।

यदि जांघ वा टांग की हड्डी टूट गई हो तो एक डोला लाकर रोगी के पास रखदे और रोगी को अधर उठकर उसमें लिटा दे इस काम के लिये बहुत आदमी दरकार होते हैं क्योंकि जितने आदमी अधिकहोंगे उतनाही रोगी आसानीसेबिनाहिलाये चलाये उठाया जायगा यदि डोली न मिलसके तो चार डंडों को इधर उधर बांधकर बीच में कंबल फैलाकर कंबल के किनारे उन डंडों से बांधकर चारपाई के सदृश करले उसपर रोगी को ले जाते समय अच्छी टांगको टूटी हुई टांग से मिलाकर रूमालों से बांध देवे ऐसा करने से टूटे हुए अवयवको बहुत सहारा हो जाता हैं।

हड्डी टूटने के भेद ।

हड्डी टूटने के दो भेद हे एक साधारण अर्थात् सिम्पिल फ्रैकचर (SIMPLF FRACTURE) दूसरा [illegible] अर्थात COM POUAND FRACTUPE] कम्पाउन्ड [illegible]

साधारण उसे कहते [illegible] कि [illegible] दे [illegible] चोट मे हड्डी तो टूट गई हो [illegible] ।

घावयुक्त वह है जिसमें से रुधिर निकलने लगताहै और हड्डी का मुंह खुलकर घाव होजाताहै इस दूसरी प्रकारमें मवाद बहुत जल्द पड जाताहै हड्डी के जुडने मे भी देर लगती है दर्द सूजन ज्वर उत्पन्न हो जाते है यहां तक कि रोगी मर भी जाता है।

बालकों की टूटी हुई हड्डियां शीघ्र जुड जाती हैं वृद्ध मनुष्य की हाड्डियों के जुडने में देर लगती है।

पसलियों का वर्णन ।

जिस आदमी की हड्डी टूट जाती है उसको सांस लेने में छाती के पहलूमें कसक मालूम होती है । और स्थान पर हाथ रखकर रोगीके श्वास खीचने के लिये कहा जावें तो पसली के टूटे हुए सिरे इधर उधर को हिलते हुए मालूम होते हैं।

पसली टूटने का इलाज ।

जो एक ओर की एक से अधिक पसलियां टूट जावें तो फलालेन वा लिनिन का रोलर छः गज लंबा और चार इंच चोड़ा छाती के ओर पास खेंचकर बाधदे जिससे सास खीचने समय पसलियां हिलने न पावे और रोलर के दोनों सिरे सी देना चाहिये अगर हर लपेटा सीं दिया जाय तो बहुत अच्छा है, यह रोलर गाहिने मे दो बार खोलना उचित है। और जब तक रोगी को दर्द की शिकायत हो तब तक जुलाब करना चाहिये जुलाव देकर आतो को खूब साफ कर देना चाहिये। तथा एंटीमोनियम वाइन की बीस बूंद और लाइनमर्क दस बूंद एक ग्लास पानी में मिलाकर दिन भर मे चार बार पिलावै।

हंसली की हड्डी के टूटने का वर्णन ॥

हंसली की टूटी हुई हड्डीका मावत हड्डीके साथ मिलान क्रिया

जाय तो उस पर एक गुमटी सी मालूम होती है, और उस टूटी हुई हड्डी पर हाथ रखने से एक भिन्न प्रकार की हरकत मालूम होती है। पीछे को कंधा झुकाने से रोगी का मुख बद सूरत हो जाता है, इसी तरह ढीला छोड ने पर भी बद शकली दिखाई देती है। इन लक्षणो से हंसली की हड्डी टूटने का अनुमान होता है।

हंसली टूटने का इलाज।

हंसली के टूटने पर बगल के भीतर ऊंचेकी ओर दो मुट्ठी मोटी और चार मुट्ठी चौडी एक गद्दी दोनो तरफ बांधदी जावै और एक फीता दोनो सिरों पर बांध कर एक सिरे को पीठ पर निकालकर दूसरे सिरे को छाती के साम्हने लाकर उसगद्दी पर बांधाजावै कि जिससे गर्दनके साम्हन की ओर कुछ तकलीफ नहो, फिर एक पट्टी के एक वा दो लपेट देकर कोहनी के कुछ ऊपर बाह में बांध देवे और उस पट्टी के दो सिरों म से एक सिरा छाती के आगे से और दूसरा पीछे लेजाकर वाधादिये जावें और कोहनी तक हाथ गलेम रूमाल बाधकर रक्खे जिससे कंधा उठा रहे। यह पट्टी एक महिने में खोलनी चाहिये।

कोहनी से ऊपर की हड्डी का वर्णन।

बांह की हड्डी के टूटनेकी यह पहचानहै कि उस टूटे हुए स्थान मे विपरीत हर कत होने लगती है और रोगी कोहनी और अगले हाथ को उठा भी नहीं सकता है।

टूटी बांह का इलाज।

बाह के लिये गद्दी और तीन तीन अंगुल चौडे स्प्लिन्ट (Splint) लेकर एक तो कंधे के कोहनी की झुकावतक, एक कधेके पीछे

से कोहनी के किनारे तक, एक बगल से कोहनी की भीतर वा ली नोक तक और एक कंधे से कोहनी की बाहर वाली नोक तक बांधी जावे गद्दियां स्लिपन्टसे दो इंच अधिक लंबी होनी चाहिये, जिससे उनको उलट कर स्लिपन्ट के किन रे सी दिये जावे, जिससे स्प्लिन्ट फिसलने न पावे। इसका विशेष वर्णन अन्य ग्रथों में लिखा है। लकडी का स्प्लिन्ट न मिले तो कागज की कापियां, मोटा बोर्ड, बासका पंखा, चिक और गेहू की नाली आदि काम मे लाये जाते है ॥

कोहनी से नीचे की हड्डी का टूटना ।

कोहनी से नीचे दो हड्डी हैं इनमे से अगर एक टूट जायतो यह अनसमझ आदमी को मालूम भी नहीं देती है क्योंकि दूसरी साबत हड्डी स्प्लिन्टकी तरह काम देती है और उस टूटी हुई हड्डी को अपनी असली सूरत पर स्थित रखती है अगर दोनो हड्डियां टूट जांय तो स्पष्ट मालूम हो ने लगता है। इस दशामें गद्दी लगे हुए दो स्प्लिन्ट ऐसे लंबे लावे कि उंगली की नोक से कोहनी के झुकाव तक साम्हने की ओर कोहनी की नोक तक पीछे की ओर पहुंच जावे अगले हायको झुकाकर एक स्प्लिन्ट आगे और एक पीछे लगाया जावे और उंगली से कोहनी के झुकाव तक रोलर से कसकर बांधदिया जावे ।

उंगलियों के टूटने का वर्णन ।

जो उंगली टूटगई हो तो पतली लकडी का एक टुकडा, या कडा टुकडा कागज के पठ्ठे का उंगली के बराबर ले वे और सीधी तरफ उंगली पर रखकर एक इंच चौडे रोलरसेएक सिरेसे दूसरे

सिर तक बांध देवै, हाथ एक महिने तक गलेमें लटका रहने दे और उस हाथ से काम न लेना चाहिये।

उंगली को बहुत दिन तक सीधी रखने से जो उसमें से चलने फिरने की शक्ति जाती रहती है उसका यह उपाय करे कि प्रति दिन हाथ को गरम पानी में रखकर उंगलियो को धीरे धीरे आगे पीछे को मोडता रहे जिस से वह अच्छी तरह मुडने लगे।

जांघ की हड्डी का वर्णन।

अगर जांघ कूल्हे वा घुटने से कुछ दूर पर टूट जाय तो उसका मालूम हो जाना सुगम है क्योंकि टूटी हुई जगह टेढी पड जाती है और रोगी भी टांग को उठा नहीं सकता है, हड्डी के मांस में घुसजाने से वहां दर्द भी होने लगता है और रोगी अपनी टांग को हिलाना नहीं चाहता।

अगर स्प्लिन्ट मिल जाय तो वह जांघ में बांध दी जाय, अगर न मिले तो रोगी को एक तख्त पर लिटा दिया जाय और दो मोटी गद्दी ऐसी लंबी चौडी बनवाई जावें कि एक तो अच्छे घुटने के भीतर और दूसरी उसी के टखने के नीचे अच्छी तरह से आजावें और देह की तरह दोनो अवयव सीधे पास पास रक्खे जावें और दोनों जांघे उन गद्दियों पर अच्छी तरह फैली रहें। एक आदमी दोनों कूल्हों को ऐसी रीति से पकड ले कि हिलने न पावें, दूसरा आदमी टूटी जांघको दोनों हाथोंसे तख्त पर पकडे रहे और धीरे धीरे उसको नीचे उतारे पर वह जांघ टेढी न होने पावे। इस तरह दोनों जांघों को मिलाकर तीन गज लंबा रोलर धीरे धीरे लपेट दिया जावे।

पावकी उंगली का वर्णन ।

पांवकी उंगली के टूट जाने पर कागजका एक मोटा पट्ठा उंगली के भीतर की ओर कम चौडे रोलर से बांध दिया जावे और रोगी को चार पाई पर लिटाकर उसको हिलने चलने नदे।

उतरे हुए पांवके अंगूठे का चढाना ।

जो अंगूठा उतर गया होतो एक नरम चमडा अंगूठे की गांठ पर लपेट दे और उसके ऊपर एक मजबूत निवाड के टुकडे की डेढ गांठ लगादे अथवा अगूठे और उंगलियों के बीच मे से खें-चा जावे, जब अंगूठा चढ जाय तब गद्दी बना कर बधेज बांध दिया जाय ।

जहरीले कीड़ों के काटने का इलाज

मच्छर मक्खी आदि के काटने से एक वहुत छोटी गुमटी सी हो जाती है और उसमे ऐसी जलन होती है कि जोर से खुजाना पडताहै ।

मच्छरो के काटने से मैलेरिया फीवर अर्थात्—जूडी तिजारी एकांतरा आदि ज्वर पैदा हो जाते है।

इसमें काटे हुए स्थान को पकड कर मसल डालना चाहिये जिससे उसका डंक निकाल जाय । अथवा एक कपडे को नमक और पानी में भिगोकर उसजगह पर रखदो । जो दर्द की अधिकता हो तो आधी मटर की बराबर पारे की मरहम उंगली पर लगाकर काटे हुए स्थान पर रिगडदे ।

बर्र और शहद की मक्खी ।

इनके काटने से सूजन पैदा हो जाती है और जलन भी बहुत ही होती है । इस पर हिरन का सींग घिसकर तेलमें मि-

लाकर लगाना चाहिये अथवा पिसा हुआ ऐपीकाक्यूऐना और पानी के साथ पुलटिसबना कर काटने की जगह पर रखदेने से सूजन मिट जाती है।

इस पर लिक्र एमोनिया (Liquor Amonia) का मलना भी गुणदायकहै। पर इस दवा से आंख और होटों को बचाना चाहिये, क्योंकि इन स्थानों के ओर पास इसके लगनेसे बडी जलन पैदा होजाती है। काटनेकी जगह प्याज काटकर मल देने से भी दर्द मिट जाता है।

बिच्छू का इलाज।

जब बिच्छू काटता है तब अपनी दुमकी नौक मारता है, इसमें बडी जलन होने लगती है और रोगी हाय हाय पुकारने लगता है। अगर कास्टिक मौजूद होतो डंककी जगह को इससे जला देना चाहिये। अथवा ऐपीकाक्यूएना की जडको पीसकर लिक्र ऐमोनिया में मिलाकर गाढा गाढा लेप करदेना चाहिये। इस पर एक या दो गलास शराब या ब्राडी के जलमें मिलाकर पिलाने चाहिये।

पागल कुत्तो का इलाज।

कुत्ते वा शृगाल बहुधा जूनके महिने में पागल हो जायाकरते हैं। पागल कुत्तों की गर्दन झुकजाती है, मुहं से राल टपकने लगती है और आंखें भयावनी हो जाती है, यह शराबी की तरह गिरता पडता चलता है इमसे जहां तक हो बचना चाहिये, जब पागल कुत्ता काट खाय तब यातो काटी हुई जगह के ओर पास तेज छुरीसे छील डालना चाहिये अथवा तेज कास्टिक(तेजाब) से उस जगह को जलादेना चाहिये अथवा लोहे

की पत्ती लाल गरम करके घावको जला देना भी उत्तमहै। फिर ऊपर कही हुई रीति से एक या दो ग्लास ब्रांडी और पानी मिलाकर पिलाना लाभकारकहै।

साप के काटने का इलाज।

सांप के काटते ही एक दम विष सब शरीर में फैल जाता है घाव की जगह दर्द अधिकता से होता है। प्रथम ही कठोर और जर्द रंग की सूजन होती है। फिर ललाई नीलापन और सडाहट मालूम होने लगता है नाडी की गति बहुत मंदी हो जाती है। ठंडा पसीना, दृष्टिकाकम होजाना, बेहोशी हाथ पांवका ठंडा और कडा होना मुहं का रग बदलना ॥ जीभ मे सूजन जावडे और गले मे ऐठन ये सब लक्षण मृत्युसूचक होते है।

जिस जगह सांपने काटाहो उसके थोडी ऊपर कसकर बंदबांध देना चाहिये जिससे विषका ऊपर चढना रुकजाय और फिर उस जगह को पैनी छुरी से छीलकर घावकर देना चाहिये और गरम पानी से धोना चाहिये जिसमे रुधिर का बहना जारी रहे। इस में बहता हुआ रुधिर रोका नही जाता है। एक यह भी तदबीर है कि घाव की जगह मुहं से रुधिर चूस चूसकर थूक दिया जाय परन्तु इस कामको वही मनुष्य करै जिसके मुहमे घाव या छाला आदि कुछ न हो॥

नाइट्रिक एसिडसे और लोहे की गरम शलाकासे भी घावका जलाना अच्छा होता है।

रोगी को उठा कर लिटा देना चाहिये और कभी कभी थोडी शराब गरम कर के देवै अगर सडने का डर हो तो शराबमें किनाइन मिलाकर अधिक प्रमाणसे पिलाना उचित है।

एक अंग्रेजी दवा पटोसियम परमेगनेट होती है इसको सर्प

के काटते ही तत्काल घाव का मुंह कुछ चौडा कर भर देना चाहिये।

पट्टी बांधना।

पट्टी बांधने को अंग्रेजी में बैन्डेजिंग (Bandaging) कहते हैं जो लोग जर्राही का काम सीखना चाहते हैं उनको पट्टी बांधने की विद्या सीखना सबसे पहिला काम है।

पट्टियां गजी वा मलमल की होती हैं जैसा अकसर शिफाखानों में देखने में आता है कभी कभी फलालैन की पट्टी भी उपयोग मे लाते हैं।

पट्टी बांधने के लाभ स्थान विशेष और रोगी विशेष के अनुसार बहुत होते हैं॥ जैसे देह के किसी अवयव पर बाहरी सदमा पहुंचने से उसे सरदी गरमी से बचाती है। मरहम और पुलटिस ठीक जगह पर रहने देतीहै, संधियोंका हटजाना हड्डियों का टूटना आदि पर लाभ पहुंचाती है छोटी रग नस और घाव से बहते हुए रुधिर को रोकने में लाभ पहुंचाती है।

पट्टियां तीन प्रकार की होती हैं सिंपिल शाल और कम्पाउण्ड।

सिम्पिल अर्थात् सादा पट्टी – यह शरीर के अवयव और आवश्यकता के अनुसार अलग अलग लंबाई चौडाई की होतीहै जैसे उंगली के लिये तिहाई वा चौथाई इंच चौडी और गजवा डेढ गज लंबी होती है। ऊपर के भाग और सिर के लिये दो से लेकर ढाई इंच तक चौडी और तीन से पांच छःगज लंबी और टांग आदि नीचे के हिस्से तथा धड के लिये ढाई से छःइंचतक चौडी और चार छ गज लंबी होती है।

शाल बैंडेन्ज-यह चौकोन रूमाल होता है, इसे कोनों की तरफ से दुहेरा करके त्रिभुजाकार बना लिया करते हैं।

कम्पाउन्ड बैन्डेज—यह पट्टी कई कपडों से मिलाकर बनाई जाती है, जैसे मेनीटेल्ड बैन्डेज अर्थात् कई सिरेवाली पट्टी ।

पट्टी बनाने की तरकीब—आवश्यकता के अनुसार लंबी चौडी पट्टियां कपडे में से फाडकर चौडाई की तरफ से लपेट कर गोला बना लेते हैं, इमीको रौलर कहते हैं । जो पट्टी एक सिरे से लपेट कर दूसरे सिरे पर खतम कर दीजाय तो एक रौलर यानी गोला बन जाता है, इसे सिंगिल हेडेड कहते हैं, जैसे हाथ पाव की पट्टी। जब दोनो सिरों से लपेटना आरंभ करके बीच में खतम करते हैं तो उसे डबल हेडेड बैंडेज कहते हैं जैसा सिरके लिये । पट्टी बांधने के समय बांधने वालेको जिस अंग पर बांधना है उसी के अनुसार जुदी जुदी ओर को खडा होना चाहिये । जैसे हाथ पांव और धड पर बांधने के लिये साम्हने, सिर पर बांधने के लिये पीछे और कनपटी पर बांधने के लिये बगल की तरफ खडा होना उचित है ।

इस बात पर सदा ध्यान रखना चाहिये कि पट्टी के जो लपेट लगाये जाय उनकी नोक बाहर की ओर तथा समान दूरी पर होनी चाहिये इसको इस्पाइरैलबैंडेज कहते हैं। (इन सबके चित्र पुस्तक के आदिमें दिये गये है वहा हाथ और पांव दोनों लपेट देखो)

इस्पाइरैल बैंडेज वहहै कि जिसमें पट्टी तिरछी चक्कर खाती हुई नीचे से ऊपर को जाती है ।

फिगर आफ एट वह है कि जब पट्टी जोडों पर लपेटी जाती है तो उसकी सूरत अंग्रजी के शक आठ (8) कीसी हो जाती है । पर मोडकी तरफ रक्खी जाती है,

जैसे कोहनी पर सामने और घुटने पर पीछे । करैन्ट बैंडज उसेकहते हैं कि पट्टी बीचमें से शुरू होकर दोनों तरफ चक्कर खाती है जैसा कि कीपबैन्डेज होता है ।

लूप यानी फंदादार बैन्डेज वह है जो कि टूटी हुई हड्डियों के स्पिलन्ट को ठीक जगह पर रखता है अर्थात् एक गज लंबी पट्टी लेकर दुहेरी करे, परत दोनों सिरे एक से न हों, फिर रोगी नीचे लेजा कर बडे सिरे को साम्हने वाले फंदे मे पिरोकर दोनों में डेढ गांठ लगा देते हैं ।

शौल बैन्डेज ।

यह पट्टी एक गज या सवा गज वर्गाकार मारकीन वा मलमल की बनाई जाती है क्यों कि इसका आधार स्थिर रखने और नौक सहारा देने मे काम आती है। और यह जिस जिस मुकाम पर काम आती है उसी के नाम से बोली जाती है । जैसे रोगवाले अंगको झूलता रखना होतो सिंगिल यानी हिमायल अंड कोष और स्तन के सहारे के लिये ससपैन्सरी और सिर पर सिम्पिल के बदले काम में आने से शाल बैन्डेज कहते हैं ।

कम्पाउन्ड बैन्डेज ।

यह पट्टी कई टुकडो से बनाई जाती है आर नामभी जुदे जुदे हैं जैसे चार दुम वाली होने से फोर टेल्ड बहुत सी दुम होने से मैनी टेल्ड टी की सी सूरत हो ने से टी बैन्डेज और डबल टी की सी सूरत होने पर नोज बैन्डेज कहते हैं । इन पट्टियों के चित्र इस पुस्तक के आदि में दिये गये हैं उनको देख लीजिये । इनमेंसे हर एक पट्टी का विस्तार पूर्वक वर्णन एक स्वतंत्र ग्रंथमें दिया जायगा ।

इति द्वितीय भाग ।

ओ३म्

परमात्मनेनमः ।

जर्राही प्रकाश ।

तीसरा भाग

उपदंशरोग का वर्णन ।

गुह्येन्द्रिय पर हाथकी चोट लग जाने से वा अनुराग से स्त्री द्वारा नखविद्ध होने वा दांत लगने से वा धोने से अथवा अत्यन्त स्त्रीसंसर्ग करने से, अथवा गरम जलसे धोने से, किसी उपदंश रोगवाली स्त्री के साथ संभोग करने में पेढू, गुह्येन्द्रिय वा अंडकोश पर एकपीली फुंसी पैदा होजाती है, उसमें खुजली के साथ जलन होती है, ज्यों ज्यों खुजाया जाता है त्यो त्यों घाव बढता चला जाता है। रोगी लज्जा के कारण इस रोग को छिपाता है और यह दिन दूना रात चौगुना बढता चला जाता है। मूर्ख लोगों के कहने से सेलखडी वा पत्थर पीसकर लगा देता है. जब घाव बहुत बढ जाता है तब इधर उधर कहने लगता है, कोई नीम हकीम हुक्के मे पीनेकी दवाई दे देते है उससे मुंह आजाता है वा वमन अथवा दस्त होने लगते हैं। कोई पीने के लिये दूध भी बता देते हैं। इन इलाजों से कुछ आराम तो होजाता है पर रोगकी जड नहीं जाती है।

यह रोग बडा भयकर होता है इसमे जुदी जुदी भाषाओं मे जुदे जुदे नाम हैं जैसे संस्कृत में उपदंश, देश भाषा में गरमी फारसी में आतशक और अगरेजी में इसे सिफालिस कहते हैं।

रोगकी उत्पत्ति में आयुर्वेदिक मत ।

आयुर्वेदिक विद्वानो ने इस रोग को पांच प्रकार का लिखा

है यथा वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज और रक्तज।

वातज उपदश के लक्षण।

वात से उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग में लिङ्गनालके अग्र भाग में, लिंगमणि के ऊपर वा लिंगमणि का वेष्टन करनेवाले चर्म के अग्रभाग में वा नीचे को अनेक प्रकारकी वेदनासे युक्त अनेक प्रकारकी फुंसियां पैदा होजाती हैं। इस वातज उपदंश में लिंगनाल में कंपन होता है।

पित्तज उपदंश के लक्षण।

पित्तके उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग म लिंगनाल के अग्रभाग के पूर्वोक्त स्थान मे क्लेदतायुक्त और पीले रंग वाली फुंसिया पैदा हो जाती हैं, इन फुंसियों में जलन होने लगतीहै इन लक्षणो से युक्त उपदंश को पित्तज उपदंश कहते हैं।

कफज उपदश के लक्षण।

कफसे उत्पन्न होने वाले उपदंश रोग में लिंगनाल के अग्रभाग के पूर्वोक्त स्थान म जो फुंसियां पैदा होजाती हैं उनमें से गाढा गाढा मवाद झरने लगताहै, मणिस्थान अत्यन्त फूल जाता है इस रोग में पेशाब के साथ वीर्य आने लगता है। इन लक्षणोंसे युक्त रोगको कफज उपदश कहते हैं।

त्रिदोपज उपदश के लक्षण।

त्रिदोप अर्थात् कफवात पित्त के उत्पन्न होने वाले उपदंशमें लिंगनाली के अग्रभाग के चमडे के नीचे एक मासके पिंड और फोडे आदि होजाते हैं। इसमें कफज वातज और पित्तज तीनों प्रका र के उपदशो के कहे हुए लक्षण [illegible] होते [illegible] प्रकार से उपदश को त्रिदोपज वा सा[illegible] कहते हैं।

रक्तज उ[illegible]ण।

जो उपदंश रुधिर से होते [illegible]

ढकने वाले चमड के नीचे अथवा ऊपर माम के रंग से युक्त अथवा काले रंग की फुंसी पैदा हो जाती है इनमे से रक्तस्राव होने लगता है तथा पित्तज उपदश के जो जो लक्षण कहे गये हैं वे भी सब इसमें होते हैं इन लक्षणो से युक्त रोग को रक्तज उपदंश कहते हैं।

असाध्य उपदंश के लक्षण।

जिस उपदश में सपूर्ण लिंग नाल को कीडे खा जाते है केवल अडकोप मात्र शेप रह जाते हैं वह किसी प्रकार से अच्छा नहीं होता है इस लिये उसकी चिकित्सा करना वृथा है।

मृत्यु लक्षण।

जो मनुष्य उपदंश रोग के होते ही चिकित्सा न करके स्त्री ससर्ग मे रत रहता है तो कुछ दिनमें उसके लिंग मे सूजन और ज्वाला होने लगती है लिंगनाल के अग्रभाग के घूंवट के चमड के नीचे जो फुसी होती हैं वे पककर घाव बन जाती हैं। इस घाव में कीडे पडकर लिंगनाल को खाते रहते हैं और धीरे धीरे रोगी के जीवन तक को नष्ट कर देते हैं॥

लिंगवर्ती के लक्षण।

अंकुर की तरह कुछ ऊचा ऊपर ऊपर और गिलगिला माम का जाल लिंग नाल में उत्पन्न होकर धीरे धीरे मुर्गे की चोटी के सदृश होकर अंडकोप के भीतर वाली रग मे प्रवेश होता है इन लक्षणो से युक्त रोग को लिंगवर्ती वा लिंगार्श कहते हैं।

गर्मी अर्थात् उपदंश की चिकित्सा।

(१)पर्वल,नीमकी छाल,गिलोय,आमला,हरड, और बहेड़ा इनसब को दो दो तोले लेकर आधसेर जलमें औटावे जब आध पाव रहजाय तब छान कर पीले इस क्वाथके पानेसे सब प्रकारका उपदंश जाता रहता है (२)पापडी खेर और साल इन वृक्षों की छाल दो दो तोले लेकर ऊपर कही हुईरीतिसे औटाले। इस क्वाथ को गूगलके साथ पीनेसे उपदश जाता रहता है। अथवा

इसी क्वाथ मे त्रिफला का चूर्ण मिलाकर लेपकर ने से भी अनेक प्रकार के उपदंश जाते रहते हैं ॥

[३]त्रिफला के क्वाथ अथवा भांगरेके रससे उपदंशके घावों को धोने से भी कभी कभी उपदंश जाता रहता है।

(४) हरड बहेडा और आमला इन तीनों को समान भाग लेकर काली मधु के साथ लोहे की कढाई में डालकर खूब घोटे। इस लेप के लगाने से एक ही दिन में उपदंश के घावों में आराम होजाता है।

(५) रसौत को पीसकर सिरसके बीजों के साथ, अथवा हरड के साथ अथवा शहत के साथ पीसकर लेप करे तो पुरुष गुह्येन्द्रिय संबंधी सब रोगो को आराम होजाता है।

(६) सुपारी अथवा कचनार की जड को पानीमें पीसकर उपदंश की जगह लेपकरे, तथा प्रतिदिन जौ की रोटी आदि खाकर कूए का जल पीता रहे। इससे अनेक प्रकार के उपदंश जाते रहते हैं।

(७) उपदश में पसीने देकर लिगकी बीचवाली सिरा का वेधन करके जोक द्वारा रुधिर निकालडालना विशेष उपयोगी है। इस रोग में वमन और विरेचन कराने वाली औषधें देकर देहको शुद्ध कर लेना उचित है। इन सब क्रियाओं द्वारा दोषों का हलकापन होनेमे सूजन और वेदना कम होजाती हैं पक जाने पर लिंग का नाश हो जाता है, इसलिये उन उपायों को करना चाहिये जिससे लिग पकने न पावे।

(८) सूखे हुए अनार का छिलका अथवा मनुष्य की हड्डी का चूरा उपदश के घाव पर लगानेसे बहुत जल्दी उपदंश के घावो मे आराम हो जाता है।

(९) चिरायता, नीमके पत्ते त्रिफला, पर्वल, पमेटी के

पत्ते, कचनार के वीज खैर और शाल वृक्ष की छाल इन मे से हर एक द्रव्य को एक एक सेर लेकर ६४ सेर पानी मे औटावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले। ऊपर लिखी हुई सब दवाओंको चार चार तोले लेकर पीसकर लुगदी काले फिर ऊपर लिखे क्काथमें यह लुगदी और गौका घी चार सेर डालकर यथोक्त रीति से पाक करे। इस घी का दोषानुसार सेवन करने से उपदंश रोग बहुत शीघ्रजाता रहता है।

(१०) समान भाग त्रिफला को शहत के साथ पकाकर लेप की रीति से लगाने पर उपदंश में बिशेष गुणकारी होता है।

११सिरस, आम और शहत इन तीनों मे से किसी एक के साथ रसौत मिलाकर उपदंशयुक्त लिंग पर लेप करने से उपदंश रोग तथा अन्यान्य लिंग रोग जाते रहते हैं।

(१२) पारा दो रत्ती, अफीम बारह रत्ती इन दोनों को लोहे के पात्र मे तुलसी के रस के साथ नीमकी घोटेसे घोटकर दो रत्ती सिंगरफ मिलाकर फिर तुलसी कारस डालकरघोटे पीछे जावित्री, जायफल, खुरासानी अजवायन और अकरकराप्रत्येक बत्तीस रत्ती, इनसबसे दूना खैरसार मिलाकर फिर तुलसी के रसमें घोटकर चने की बराबर गोलियां बना लेवे इनमें से दो दो गोली प्रतिदिन सायकाल के समय सेवन करे इस से उपदंशादि अनेक प्रकार के घाव वाले रोग दूरहो जाते हैं। यह एक प्रसिद्ध औषध है।

उपदंश रोग पर पथ्य।

वमनकारक द्रव्यों का आहार वा पान द्वारा सेवन, विरेचक औषधियों का आहार वा पान द्वारा सेवन, शिश्नमें सिरावेधन,जोक लगाना परिछेदन, प्रलेप, जौ, शालीधान्य, धन्वदेशज पशुपक्षियों का मास, मूंग का यूप और घृत,। ये सब द्रव्य उपदंश रोग में विशेष हितकर जानने चाहियें।

पुनर्नवा, सहंजना, पर्वल, कच्चीमूली, सब प्रकार के तिक्त द्रव्य, सब प्रकार के कषाय द्रव्य, मधु, कूए का जल, किसी प्रकारका तेल। ये सब द्रव्य उपदंश को शांत करने वालेहैं इस लिये इनको विशेप पथ्य रूप समझना चाहिये।

उपदंश पर कुपथ्य।

दिन मे सोना मूत्रके वेग को रोकना, भारी पदार्थों का सेवन, स्त्रीसंग, गुड खाना, कसरतकुश्ती करना, खट्टी वस्तुओंका खाना पीना, मठा पीना ये सब द्रव्य उपदंश रोगको बढानेवाले है इस लिये इनका सर्वथा त्याग कर देना चाहिये.

हकीमी मतसे (उपदंशकी चिकित्सा) में

जुल्लाव की गोली

जमालगोटेकी मिगी, चौकियासुहागा, मुनक्का, इन सब को समान भागले कर महीन पीस एक एक माशे की गोलियां बनावे परतु इस गोली के खानेसे पहिले नीचे लिखी हुई दवा पिलाना चाहिये।

नुसखा मुंजिज

गुलाबके फूल तीन माशे, मुनक्का सात नग, सौंफ छ माशे, सूखी मकोय छ माशे सनाय मक्की दोमाशे, इन सब को पावभर जलमे औटावे जब एक उफान आजाय तब उतार कर छानले फिर इसमे एक तोले गुलकंद मिला कर पिलावे पश्चात खिचडी भोजन करावे फिर चौथे दिन ऊपर लिखी हुई गोली के दो टुकडे करके खिलावे ऊपर से गरम जल पिलावे और जब प्यास लगे तब गरमही जल पिलावे और सायंकाल के समय नून डाल कर खिचडी दही के संग भोजन करावे फिर तीन दिन तक नीचे लिखी हुई दवा पिलावे।

ठंडाई का नुसखा

विहीदाना दो माशे, रेशाखतमी ४ माशे, मिश्री एक तोले

इन सब का लुआब निकाल कर उसमे मिश्री मिलावे पहिले छः माशे ईसबगोलको फांक कर ऊपर से उस लुआब को पीवे इसी तरह तीन दिन तक करता रहे तदनंतर नीचे लिखी गोली देना उचित है ॥

भिलावेकी गोली

खुरासानी अजयायन, देशी अजवायन, अककराा गुजराती, छोटी इलायची प्रत्येक नौ २ माशे, भिलाये सातमाशे, काले तिले दो तोले, पारा छः माशे, पुरानागुड एक तोले इन सबको मिला कर तीन दिन खूब घोटे और माशे माशे भर की गोली बना कर प्रति दिन एक गोळी सेवन करावै और नीचे लिखी हुई मरहम घाव पर लगावे ॥

मरहमकी बिधि

प्रथम गौका घृत एक तोल लेकर खूब धोवे फिर सिंगरफ एक माशे, रसकपूर तीन माशे, मुरदासिंग तीन माशे, रसौत तीन माशे गुजराती अकरकरादो माशे, सफेदा कासगरी तीनमाशे इन सबको महीन पीस कर धुले हुए घीमे मिला कर लगावे और देखे कि जुलाब देनेसे रोगीकी क्या दशा है ॥ जो रोग कमहो तौ मरहम लगाना बंद करदे और ऊपर लिखी हुई भिलावेकी गोलियां सात दिन तक खिलावे नहींतो औषधी को ऐसीरीति से बदल देवे कि रोगी को मालूम न होसके ॥

दूसरी गोली

रसकपूर नौ मासा, लौंग फूलदार, २१ नग, कालीमिरच २१ नग, अजवायन खुरासानी एक माशे इन सबको महीन पीस सलाई में मिलाकर नौ गोली बनावे इनमेसे प्रति दिन एक गोली सेवन करै और खट्टी तथा बादी करनेवाली वस्तुओं से बचना चाहिये ॥

घावका अन्यकारण ।

कभी कभी ऐसा भी होता ह कि यह रोग तो होने वालाहो और बाल साफ करते समय अचानक उस्तरा लगकर घाव हो जाय और उसको उस्तरे का घाव समझ कर औषधियां कीजांय जब इस तरह आराम नहो तो मूर्खोंसे पूछकर धोया हुआ घृत आदि सुनी सुनाई दवाई लगा देनेसे अधिक हानि होजाती है फिर उसकी दवाई चतुर जर्राह से करावे और जर्राह को भी चाहिये कि प्रथम रोगी के घावको देखे कि किनारे उस घावके मोटे हैं और घावके भीतर दाने हैं वा नहीं और घाव कितना चौडा है और रोगीकी प्रकृति को देखे जो वह विरेचन अर्थात् जुलाव के योग्य हो तो जुलाव देवे नही तो नीचे लिखी हुई औषध देवे ॥

गोली

नीलाथोथा ढाई माशे, कालीहर्ड २॥ माशे, सफेद कत्था २ तोले, सुपारी ७ माश इन सबको महीन पीस कर दोसेर नीबू के रसमें खरल करे फिर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और दोनों समय एक एक गोली खिलावे खट्टी और वादी करनेवाली वस्तुओं से परहेज करे ॥

दूसरा नुसखा ।

अजवायन खुरासानी सातमाशे काली मिरच सवामाशे । कालेतिल छः माशे । जमाल गोटा तीन माशे पुराना गुड १॥ तोले, इन सबको तीन दिन तक घोटकर जंगली बेर के प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली दहीकी मलाई में लपेटकर खिलादे और मूगकी दाल और मीठा कद्दू न खिलावे इस औषधके खाने से एक दो दस्त हुआ करेंगे और जो वमन भी होजाय तो कुछ डर नहीं है क्योंकि ये रोग विना मवाद निकले

नहीं दूर होसक्ता प्रायः देखा है कि इस रोग मे सिरसे पांव तक घाव होजाते हैं बस उचित है कि प्रति दिन मरहम लगाया जावे जो एक दिनभी न लगाया जावेगा तो खुरंड जम जावेगा और जहां यह रोगी बैठता है कीच होजाती है और सफेद सा पानी निकलता है अथवा सुरखी और जरदी लिये दुर्गंध होतीहै और हाथ पांवकी अंगुलियो में भी घाव होजाते हैं इन सब शरीरके घावोंके वास्ते यह औषधि करना चाहिये ।

मरहम ।

माखन आधपाव, नीला थोथा सफेद छः माशेः मुर्दासन छः माशे, इन दोनो दवाओं को पीसकर घृतमें मिलाकर घावों पर लगावै और खानेको यह दवा देवे ।

गोली ।

छोटी ईलायची, सफेदकत्था,तुलसीके पत्ते हरे एक एक तोले मुर्दासन छः माशे, पुराना गुड १॥ तोले इन सबको कूट पीस कर गोलियां बनावै और नित्य प्रति सवेरे ही एक गोली खिलावें खटाई और बादी से परहेज करै और किसी वस्तु से परहेज नही है और यह रोग शीघ्र अच्छा नही होता दवाको सात दिन खिलाकर देखे जो कुछ आराम होतो इसी दवाको खिलाते रहै और जो इससे आराम न होतो ये गोली खिलावे

अन्य गोली

सिलाजीत कालीमिरच,काबली हर्ड,सूखे आमले,रस कपूर, सफेद चिरगिठी,गुल बनफशा सफेद कत्था येदवा चार २ माशे ले इनसब को कूटपीस कर रोगनगुल में खरल करे फिर इस की चने की बराबर गोली बनावे और एक २ गोली आमके अचार में लपेट के प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल के समय

घावका अन्यकारण ।

कभी कभी ऐसा भी होता ह कि यह रोग तो होने वालाहो और वाल साफ करते समय अचानक उस्तरा लगकर घाव हो जाय और उसको उस्तरे का घाव समझ कर औषधियां कीजांय जब इस तरह आराम नहो तो मूर्खोंसे पूछकर धोया हुआ घृत आदि सुनी सुनाई दवाई लगा देनेसे अधिक हानि होजाती है फिर उसकी दवाई चतुर जर्राह से करावे और जर्राह को भी चाहिये कि प्रथम रोगी के घावको देखे कि किनारे उस घावके मोटे है और घावके भीतर दाने हैं वा नहीं और घाव कितना चौडा है और रोगीकी प्रकृति को देखे जो वह विरेचन अर्थात् जुलाव के योग्य हो तो जुलाव देवे नही तो नीचे लिखी हुई औषध देवे ॥

गोली

नीलाथोथा ढाई माशे, कालीहर्ड २॥ माशे, सफेद कत्था २ तोले, सुपारी ७ माशे इन सबको महीन पीस कर दोहर नीबू के रसमें खरल करे फिर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और दोनों समय एक एक गोली खिलावे खट्टी और वादी करनेवाली वस्तुओं से परहेज करे ॥

दूसरा नुसखा ।

अजवायन खुरासानी सातमाशे काली मिरच सवामाशे । काकेतिल छः माशे । जमाल गोटा तीन माशे पुराना गुड १॥ तोले, इन सबको तीन दिन तक घोटकर जंगली बेर के प्रमाण गोलियां बनावें और एक गोली दहीकी मलाई में लपटकर खिलादे और मूंगकी दाल और मीठा कद्दू न खिलावे इस औषधके खाने से एक दो दस्त हुआ करेंगे और जो वमन भी होजाय तो कुछ डर नहीं है क्योंकि ये रोग विना मवाद निकले

नहीं दूर होसक्ता प्रायः देखा है कि इस रोग मे सिरसे पांव तक घाव होजाते हैं बस उचित है कि प्रति दिन मरहम लगाया जावे जो एक दिनभी न लगाया जावेगा तो खुरंड जम जावेगा और जहां यह रोगी वैठता है कीच होजाती है और सफेद सा पानी निकलता है अथवा सुरखी और जरदी लिये दुर्गंध होतीहै और हाथ पांवकी अंगुलियो में भी घाव होजाते हैं इन सब शरीरके घावोंके वास्ते यह औषधि करना चाहिये ।

मरहम ।

माखन आधपाव, नीला थोथा सफेद छः माशेः मुर्दासन छः माशे, इन दोनो दवाओं को पीसकर घृतमें मिलाकर घावो पर लगावै और खानेको यह दवा देवे ।

गोली ।

छोटी ईलायची, सफेदकत्था, तुलसीके पत्ते हरे एक एक तोले मुर्दासन छः माशे, पुराना गुड १॥ तोले इन सबको कूट पीस कर गोलियां बनावै और नित्य प्रति सबेरे ही एक गोली खिलावैं खटाई और वादी से परहेज करे और किसी वस्तु से परहेज नही है और यह रोग शीघ्र अच्छा नही होता दवाको सात दिन खिलाकर देखे जो कुछ आराम होतो इसी दवाको खिलाते रहे और जो इससे आराम न होतो ये गोली खिलावे

अन्य गोली

सिलाजीत कालीमिरच, काबली हडे, सूखे आमले, रस कपुर, सफेद चिरमिठी, गुल बनफशा सफेद कत्था येदवा चार २ माशे ले इनसब को कूटपीस कर रोगनगुल में खरल करे फिर इस की चने की बराबर गोली बनावे और एक २ गोली आमके अचार में लपेट के प्रतिदिन प्रातःकाल और सांयकाल के समय

खिलावैमसूर की दाल और लाल मिरच से परहेज करे इस दवाई से सबशरीर अच्छाहो जायगा परंतु अंगुली अच्छी न होगी जो यह औषधि प्रकृतिके अनुसार हो जाय तो अगुली भी सीधी होजावगी बहुधा देखनेमें आया है कि इस रोग वाले मनुष्य बहुत भले चंगे देखे परन्तु किसी न किसी जगह शरीर में शोध रहही जाताहै बहुत से उपद्रव उत्पन्न होते हैं एक यह कि मनुष्य कोढी होजाते हैं दूसरे यह कि सब शरीर पर सफेद दाग होजाते हैं तीसरे नाक गल कर गिरजाती है चौथे गाठियां होजाती है एक कारण यह है कि यह रोग महा गरम है ठंडी दवाइयों से अच्छा नहीं होता।

इस में एक डाक्टर की राय है कि यह रोग कफ से होता है क्योंकि प्रत्यक्ष है कि रोगीके शरीर में छोटी २ फुंसिया रतूबत दार जर्दी लिये होती है। बहुत से मनुष्यो का यह रोग औषधियों के सेवन से जाता रहा और दोचार वर्ष के पीछे शरीर के निर्बल होजाने पर फिर होगया और घावभी फिर हरे हो गये जब दवाई करी तो फिर जाता रहा इसरोग के वास्ते यह दवाई बहुत उत्तमहै ।

अन्य गोली

भुना नीलाथोथा, मुरदासंग, सफेदा कासकारी । सफेद कत्था, ये सब चार चार माशे ले इनसबको नीबूके रसमें खरल करके लोहे की कढाई में डालकर नीम के सोटेसे घोटे और चने की बराबर गोलियां बनाकर दोनों समय एकएक गोली खिलावे खटाई और बादी की चीजों से परहेज कराना चाहिये और जो इससे भी आराम नहो तो ऐसी औषध देवे कि जिससे थोडा सा मुख आजावे जिससे सब शरीर के जोडों की पीडा दूर होजावे और इससे भी आराम न होतो अधिक मुंह आनेकी औषधिदे और नीचे लिखी औषधियो से घावको बफारा देवे ।

नुसखा बफारेका

नरसल की जड, रामसर, सोये के बीज, खुरासानी अजवायन साबन, नरमाके पत्ते, शहतूत के पत्ते, इनसबको बराबर ले पानी मे औटाकर घावों को बफारादे और रातको तेलका मर्दन करे॥ अथवा भेडका दूध और गौका दूध चार चार तोले, शोरंजान कडवा तीन माशे, रोगन गुल आधपाव इन सबको मिलाकर गरम कर मर्दन करै।

दूसरा बफारा।

जो पुरुषकी गुह्येन्द्रिय घावो के जोर से अथवा पट्टी बांधने से सूज जाय तो उसपर यह बफारा दे। त्रिफला छ माशे पानी मे औटा कर इन्द्री को बफारा दे। और इसी तरह दिनभर तीन दफे बफारा दे तो एक हीदिन मे सब सूजन दूर होकर पाहिले की तुल्यहो जाता है। जो मुख आजाय तो उसको अच्छा करने के लिये यह दवा करे॥

नुसखा कुल्लोंका

कचनार की छाल, महुए की छाल, गोंदनी की छाल सब एक एक छटाक, चमेली के पत्त एक तोले, सफेद कत्था एक माशे इन सबको पानी मे औटाके कुल्ला करै

दूसरा प्रयोग॥

चमेली के पत्ते छटाक भर, कचनार की छाल छटाकभर, इन दोनो को पानी मे औटा कर दोनो समय कुल्ले करै॥

तीसरा प्रयोग॥

अकरकरा, माजूफल, सिंगरफ। सुहागा कच्चा ये चारों दवा पांच पांच माशे ले इनसबको कूट कर पानीमे मिलाकर चार टिक्के करे फिर रात भर एक एक पहर के पीछे हुक्के में रखकर तमाखू- की तरह पीवे और रात भर जागता रहे फिर सवेरे ही ठंडे पानी से स्नान करे और खानेके लिये मुसल्मान को तो मुर्गेका शोर-

वा अर्थात् कुक्कुट के मांसका यूष और गेहूं की रोटी और हिन्दू को मूंगकी दाल रोटी खिलाना चाहिये भोजन कराके रोगी को सुलादे इस इलाजके करने से गर्मी बहुत मालूम होती है और दस्त और बमन भी होती है परंतु एकही बार में घाव तक सूख जाते है ॥

चौथा प्रयोग ॥

सिंगरफ। माजूफल। अकर करा। नागौरी असगध। काली मूसली, सफेद मूसली। गोखरू छोटे। इन सब का चूर्ण करके जंगली बेरके कोयले पर डाल कर सब देह को धूनी दे इसी तरह सात दिन करने से यह रोग जड से जाता रहता है ॥

पांचवां प्रयोग ॥

भुना हुआ नीला थोथा, बडी हर्डका वक्कल, छोटी हर्डये स बदवा एक एक भाग, पीली कौडी चार भाग इन सबको पीस छानकर नीबू के रस में तीन दिन घोटे फिर इसकी चने की बराबर गोली बनावे फिर एक एक गोली, नित्य खाय, इसके ऊपर, किसी चीजका परहेज नहींहै ।

छटा प्रयोग ।

रसकपूर, चोबचीनी। बावची ये तीनों छः छः माशे, तिब रसा गुड दो तोले इन सबको दही के तोड में खरलकरे और झाडी बेर के बराबर गोली बनाकर रोगीको दोनों समय एक एक गोली दही के संग लेपट कर खिलावै और खाने को दोनों समय मूंग की दाल रोटी देवै ।

सातवां प्रयोग

कत्था सफेद, सम्भल खार, इलायची के बीज, खटिया मिट्टी ये सब समान भाग लेकर गुलाब जल में पीस कर उसके गा-

बर गोला बनावे और एक गोली नित्य बारह दिन तक खाय और जो अजीरण होय तो एक गोली बीचमें देकर खाय और मूंग की दाल गेहूं की रोटी खाय परंतु घी का अधिक सेवन करै

उपदंश रोगी के दर्द का इलाज ।

जो उपदंश वाले की अस्थिसंधियों मे दरद होता हो तो पारा, खुरासानी अजवायन, भिलावे की मिगी, अजमोद, असगंद येसब दवा तीन तीन माशे, गुड २८ माशे सबको कूट पीस कर झाडी बेर के बराबर गोली बनाकर एक एक गोली दोनो समय खाय और इस गोली को पानी से निगल जाय दांत न लगने दे, खानेको लालमिरच, खटाई, बादी करनेवाली वस्तु न खाय ॥

अन्य प्रयोग ।

पारा, अजवायन, कालीमूसली ये दवा छःमाशे, भिलाये तीन माशे, गुड चार तोला इन सबको कूट पीस कर ११ गोली बनावे और एक गोली नित्य दही के साथ खाय तो ग्यारह दिन में सबरोग जाय और दूध चांवल खाने को दे तो ईश्वर की कृपासे बहुत शीघ्र आराम होजायगा ।

अन्य प्रयोग

मंदारकी लकडीका कोयला पीसकर साडेतीनमाशे और कच्ची खाड साडे तीन माशे, इन दोनोंको मिलाकर चौदह माशे घी में सानकर सात दिन सेवन करने से सातही दिनमे आराम होजाताहै इस दवा पर मांस का पथ्य होता है ॥

अन्य प्रयोग

बडी हर्ड की छाल, तूतिया, पीली कौडी की राख ये सब बराबरले नीबूका रस डालकर कढाई में सोलह पहर तक घोटे फिर इसकी काली मिरचके बराब गोली बनावे और एक गोली नित्य १५ दिनखाय और थोडीसी गोली घिस कर कागज पर लगा

य घावोंपर लगावे और जो मुख आजायतो कचनारके काढेसे कुल्ले करे

अन्यप्रयोग

तुलसी के हरेपत्ते एक तोले, तूतिया हरा १४ माशे इन को पीसकर चनेकी बराबर गोली बनाकर एक गोली गरम पानी के संग नित्यखाय मूंगकी दालकी खिचडी बिना घी डाले खाना इस दवा पर उचितहै ।

अन्यप्रयोग

कचनार की छाल आधपाव,इन्द्रायन की जड आधपाव बबूल की फली आधपाव, छोटी कटाई जड पत्ते समेत, आधपाव, पुराना गुड आधपाव इन सब का तीनसेर पानी में काढा करै जब चौथाई जल रहै तब छानकर बोतल मे भर के फिर इसमेंसे मात्रानुसार सात दिन पीवै तो निश्चय आराम होय इसमें परहेज कुछ नहीं है ॥

अन्य प्रयोग ।

सिरसकी छाल, बबूलकी छाल, नीमकी छाल प्रत्येक सवा सेर इन सबको सात गुने पानी में काढा करे जब सवासेर जल बाकी रह जाय तब छानकर शीशी मे भरले फिर इसमें से आध पाव रोज पीवै और खाने को चनाकी रोटी खाय तो पुरानी आतशक भी जाती रहती है ।

अन्य प्रयोग ।

जिस कपडे को रजस्वला स्त्री योनी में [illegible] उस कपडे को रुधिर समेत जलाकर [illegible] रखले [illegible] बराबर गुड मिलाकर बेर के बरा[illegible] [illegible]नाकर [illegible] खाय और बिना नमक भो[illegible] न क[illegible]

अन्य प्रयोग।

सिंगरफ, अकरकरा, नीम का गोंद, माजूफल, सुहागा प्रत्येक १४ माशे इनको पीस सात पुडिया बनाले एक पुडिया चिलम मे रख बेरी की आग से पिये तो आराम होय और इस से वमन होयतो कुछ डर नहीं। दिनभर में तीन बार पीवै और इसके गुलको पीसकर घावों पर बुरके। खाने को मोहन-भोग मीठा खाय और जो मुह आजाय तो चमेली के पत्तों का काढा करके कुल्ल करै॥

अन्य प्रयोग।

सिंगरफ दोमाशे, अफीम दोमाशे, पारा दो माशे. अजवायन पांच माशे, भिलाये सात माशे,पुराना गुड पांच माशे पहिले पारे और सिंगरफ को अदरख के रस में दो दिन खरल करे फिर सब दवा बारीक पीसकर उसमें मिलावे॥ और भिलावकी टोपी दूर करके उन सब दवाओं के साथ घोटडाले फिर बेर के बराबर गोली बनावे और सात दिन एक गोली नित्य खाय और गुड शक्कर तेल लाल मिरच खटाई वादी करने वाली चीज का सेवन न करै॥

यदि ऊपर लिखे हुए किसी उपाय से रोगी अच्छा न हो तो उसे असाध्य समझ कर त्याग देना चाहिये॥

फुंसियोके दूर करनेकी दवा।

इस रोग मे सब शरीर में छोटी २ फुंसिया सीतला के सदृश हो जाती हैं उनके वास्ते यह दवा करनी चाहिये सिंगरफ तीन माशे, रसकपूर छ माशे, अकरकरा एक तोला, कत्थाएकतोला, छोटी इलायची एक तोला इन सबको पानके रसमें मिलाकर चने के बराबर गोलियां बनावे। और सवेरे ही एक गोली नित्य खाया करे और चनेकीरोटी घी और दही

भोजन करे। इक्कीस दिनके सेवन करने से सब रोग निश्चय जाता रहेगा ॥

दूसरी दवा।

रसकपूर, सिंगरफ, लौंग सुहागा ये सब एक एक तोला इन सबको महीन कर सात पुडिया बनावे। फिर सबेरे ही एक पुडिया दही की मलाई म लपेटकर खिलावे दूध चांवल भोजन करावै और सब चीजों का परहेज है।

विरेचनकर्त्ता औषध।

जो किसी मनुष्य के शरीरमें काले वा नीले दाग पड गये हों तो पहिले तीन दिन खिचडी खिलाकर फिर यह जुल्लाब देना चाहिये। काला दाना नौ माशे, आधा भुना और आधा कच्चा कूटकर बराबरकी सकर मिलाकर तीन पुडिया बनावे और सबेरेही एक पुडिया गरम जल के सग खिलावे और प्यास लगे जब गरम जलपान करावे।

यदि कंठ का काक जिसे कौआ वा काकलक भी कहते हैं बैठ गया होय तो यह विरेचन देवे पिस्तेकी मिंगी बादामकी मिंगी, चिलगोजेकी मिंगी पुरानादाख,जमालगोटाकीमिंगी इन सबके बराबर ले जलमें पीसकर जंगली बेरके बराबर गोली बनावे और गोली देनेसे पहिले तीनदिन तक अरहरकी दाल और चांवलों की खिचडी खिलावे फिर चौथे दिन दो गोली मलाई में लपेट कर खवादे और ऊपरसे गरमजल पिलावे ॥ फिर दूसरे दिन यह औषधि पिलावे ॥ बीदाना दो माशे रेशा खतमीछ मा शे। ईसब गोल छ:माशे मिश्री एक तोला इन सबको रात में भिगोदे और फिर प्रा : काल मल छान कर पिलावे।

विरेचन के पीछे की गोली ।

मुर्दा संग एक तोले, गेरूडेढ तोले,सात वर्ष का पुराना गुड इन सबको पीस कर जंगली बेरके बराबर गोली बना कर एक गोली मलाई में लपेट कर सवेरेही खाय खटाई और बादी से परहेज करे ।

सिंगरफके उपद्रवों का उपाय ।

आतशक वाले रोगी को यदि किसीने सिंगरफ बहुत खिलाया होय और इस कारण से उस का शरीर बिगड गया होयतो यह दवा देने योग्य है छुटकी कडवी एक तोला, आमकी बिजली दो तोला, जमाल गोटा तीन तोला, सबको महीन पीस छान कर पुराने गुड मे मिला कर बारह पहर कूटे फिर जंगली बेरके बराबर गोली बनाकर खवावे और ऊपर से ताजा पानी पिलावें जो दस्तहोजाय तो उत्तमहै नही तो पहिले तीनदिन यह मुंजिस पिलावे ॥

मुंजिस का नुसखा ।

हरी सौंफ एक तोले,गेरूऔर मकोय एक तोले, मुनक्का१५ नग, खतमी एक तोला,खब्बाजी के बीज १ तोला,गुल कद दो तोला इन औषधियों को रात को जल में भिगोदे सवेरेही औटा कर पिलावे और खिचडी खाय फिर चौथे दिन यह जुलाब देवे

जुलाब का नुसखा ।

गुलाब के फूल दो तोले,खतमी के बीज एक तोले । गारीकून छः माशे,सफेद निसोत छः माशे, अरंड के बीज तीन तोले पलुआ एक तोले,सोंठ छः माशे, कातम के बीज दो तोले, एकमुनिया छः माशे,सूखे आमले एक तोले,सनाय मकी दो तोले, बिसफायज अर्थात् कंकाली एक तोले,काबली हरड एक तोले इन सब को पीस छान कर पानी के साथ घोट कर जगली बेरके समान गोली बनावे इन में से एक गोली सवेरेही खावे ॥ फि

भोजन करे। इक्कीस दिनके सेवन करने से सब रोग निश्चय जाता रहेगा ॥

दूसरी दवा।

रसकपूर, सिंगरफ, लौंग सुहागा ये सब एक एक तोला इन सबको महीन कर सात पुडिया बनावे। फिर सवेरे ही एक पुडिया दही की मलाई म लपेटकर खिलावे दूध चांवल भोजन करावै और सब चीजों का परहेज है।

विरेचनकर्त्ता औषध।

जो किसी मनुष्य के शरीरमें काले वा नीले दाग पड गये होंतो पहिले तीन दिन खिचडी खिलाकर फिर यह जुलाब देना चाहिये। काला दाना नौ माशे, आधा भुना और आधा कच्चा कूटकर बराबरकी सक्कर मिलाकर तीन पुडिया बनावे और सवेरेही एक पुडिया गरम जल के सग खिलावे और प्यास लगे जब गरम जलपान करावै।

यदि कंठ का काक जिसे कौआ वा काकलक भी कहते हैं बैठ गया होय तो यह विरेचन देवै पिस्तेकी मिंगी बादामकी मिंगी, चिलगोजेकी मिंगी पुरानादाख,जमालगोटाकीमिंगी इन सबके बराबर ले जलमें पीसकर जंगली बेरके बराबर गोली बनावे और गोली देनेसे पहिले तीनदिन तक अरहरकी दाल और चावलों की खिचडी खिलावे फिर चौथे दिन दो गोली मलाई में लपेट कर खवादे और ऊपरसे गरमजल पिलावें ॥ फिर दूसरे दिन यह औषधि पिलावे ॥ बीदाना दो माशे रेशा खतमीछ माशे। ईसब गोल छ माशे मिश्री एक तोला इन सबको रात में भिगोदे और फिर प्रा : काल मल छान कर पिलावे।

विरेचन के पीछे की गोली ।

मुर्दा संग एक तोले, गेरूडेढ तोले, सात वर्ष का पुराना गुड इन सबको पीस कर जंगली बेरके बराबर गोली बना कर एक गोली मलाई मे लपेट कर सवेरेही खाय खटाई और वादी से परहेज करे ।

सिंगरफके उपद्रवों का उपाय ।

आतशक वाले रोगी को यदि किसीने सिगरफ बहुत खिलाया होय और इस कारण से उस का शरीर बिगड गया होयतो यह दवा देने योग्य है कुटकी कडवी एक तोला, आमकी बिजली दो तोला, जमाल गोटा तीन तोला, सबको महीन पीस छान कर पुराने गुड मे मिला कर बारह पहर कूटे फिर जंगली बेरके बराबर गोली बनाकर खवावे और ऊपर से ताजा पानी पिलावें जो दस्तहोजाय तो उत्तमहै नही तो पहिले तीनदिन यह मुंजिस पिलावे ॥

मुंजिस का नुसखा ।

हरी सोफ एक तोले, गेरूऔर मकोय एक तोले, मुनक्का १५ नग, खतमी एक तोला, खब्बाजी के बीज १ तोला, गुल कंद दो तोला इन औषधियों को रात को जल में भिगोदे सवेरेही औटा कर पिलावे और खिचडी खाय फिर चौथे दिन यह जुलाव देवे

जुलाव का नुसखा ।

गुलाव के फूल दो तोले, खतमी के बीज एक तोले । गारीकून छः माशे, सफेद निसोत छः माशे, अरंड के बीज तीन तोले एलुआ एक तोले, सोठ छः माशे, करतम के बीज दो तोले, सकमुनिया छः माशे, सूखे आमले एक तोले, सनाय मकी दो तोले, बिसफायज अर्थात् कंकाली एक तोले, काबली हरड एक तोले इन सब को पीस छान कर पानी के साथ घोट कर जंगली बेरके समान गोली बनावे इन में से एक गोली सवेरेही खवावे ॥ फिर

दोपहर पीछे मूग का घाट पिलावे और सायंकाल को मूंगकी दाल की खिचडी खवावे इसी प्रकार से तीन जुलाव देवे जो इसी जुलाव के देनेसे आराम होजायतौ उत्तम है नहींतो नीचे लिखा अर्क तैयार करके पिलावे ।

अर्क की विधि ।

सोंफ पावसेर। सूखी मकोय पावसेर, कावली हरड, छोटी हरड, ग्रनाय मकई, वर्यारा, वायविडंग, पित पापडा, चिरायता, सिरफोंका, जीरा, ब्रह्म दंडी, नकछिकनी ये सब पाव पाव सेर, पुरानी सुपारी, सूखे आमले, बकायनकेवीज, बबूल की फली। सुंडी, कचनार की छाल ये सब आध आध सेर अमल तासकी फली का छिलका, महंदी के पत्ते, लाल चंदन, झाऊ के पत्ते ये सब पाव पाव सेर इनसब को जौकुट करके नदी के जल में बारह पहर तक भिगोवे फिर इसका आसव खीचे फिर पाव तोले अर्क में एक तोले शहत मिलाकर पीवे चालीस दिवस के सेवन करनेसे चार वर्षका विगडा हुआ शरीर भी अच्छा हो जायगा और जो इससे भी आराम न होतो एक वडे मेंढे और बकरे का मांस दोनो को साथ पका कर खिलावे ।

स्त्रीका इलाज ।

जो किसी स्त्रीको यहरोग होकर जाता रहाहो और उसे गर्भ रह गयाहो और उस कालमें रोग फिर उखड आवे और ऐसी चिकित्सा करनीहो कि गर्भ भी न गिरने पावे और रोग भी जाता रहै तो तो इस औषधिको देना चाहिये मुर्दा संग, गेरू और चने एक एक तोले, जस्त दो तोले इनको महीन पीसकर चार बरप के पुराने गुडमें गोली बनावे और एक गोली मलाई में लपेट कर नित्य खवावे ॥ तो सात दिन में रोग जाता रहेगा और जो इस गोलीसे आराम नहोतो यह औषधि करनी चाहिये ॥

दूसरा उपाय।

ऊंघीके पत्ते दसतोले। सिंगरफ तीनमाशे इनदोनों को महीन पीस कर तीन माशे की गोली बना वे फिर एकगोली चिलम में रख कर मिट्टी के हुक्के को ताजा करके पिलावै फिर दूसरे दिन हुक्के को ताजा न करे पहिले दिनका ही पानी रहने दे केवल नेचेको ही भिगो ले इसी तरह सात दिन करने से रोग जाता रहेगा इस पर परहेज कुछ नही है। बालक पैदा हो जाने के पीछे वे सब उपाय काम में लाने चाहिये जो उपदंश रोगियो के लिये लिखे गये हैं। वालकभी पेट में से उपदंश रोग युक्त आयाहोतौ वह भी अपनी माताके दूधपीनेसे अच्छाहो जायगा क्यों कि जो औषधि उसकी माता को दी जायगी उसका असर दूधके द्वारा वालक में भी प्राप्त होगा और जो दैवयोगसे आराम न होतो यह औषधि करे॥

वालक के उपदंश का उपाय।

कटेरी दोमाशे,वायविडंग दोमाशे। दाखतीनमाशे इनतीनों को पीस कर आधसेर जलमें औटावे जव दो तोले राहिजाय तव किसी काच के वरतन मे रख छोडे और इसमें एक रत्ती लेकर गौ के दूध में मिला कर पिलावे॥

डाक्टरो की सम्मति।

डाक्टरों की सम्मति है कि उपदंश दो प्रकार का होता है एक पैत्रिक, दूसरा शारीरक।

यह रोग प्रथम व्यभिचारिणी स्त्रियों के हुआ करता है फिर उस स्त्री के साथ संगम करने से एक महीने के भीतर ही पुरुषकी जननेंद्रिय पर एक समान लाल फुंसी पैदा होजाती है फिर यह फुसी धीरे धीरे बडी होकर बीच में से फट जाती है और उसमें एक छोटासा घाव हो जाता है, इस घाव के किनारे

कठोर होते हैं, फिर धीरे धीरे इस घाव में से पीव बहने लगता है। इस दशा में रोगी स्वस्थ रहता है। यह इस, रोगकी प्रथमावस्था है।

फिर छः सप्ताह से १२ सप्ताह के बीच में हाथ आदि स्थानो में तांबे के रंग के घाव दिखलाई देने लगते हैं। ये व्रण अनेक प्रकार के होते हैं और कोई कोई भ्रम से इसे बसत रोग भी बतला देते हैं। कभी कभी दादकी तरह भी हो जाते हैं। बगल, कपोलकोण, गुदा और पांवकी उंगलियो में गोल गोल दाग पैदा हो जाते हैं, कभी नखों में भी पीडा होने लगती है इस काल में थोडा वा बहुत ज्वर हो जाता है, यहज्वर एथ ज्वर अथवा सर्दी लगकरभी होता है। इस समय मुख, ओष्ट, जिह्वा और गलेके भीतर घाव हो जाता है, नेत्रों में भी भयानक रोग हो जाते हैं, कानों में दर्द होने लगता है, यह इस रोगकी द्वितीय अवस्था है।

तीन चार वर्ष में वा इससे भी अधिक काल मे पेशी, अस्थि और चर्म भी भेद को प्राप्त हो जाते हैं। यह शारीरक उपदश की अवस्था है।

पैत्रिक में संतान अपने माता पिता के ससर्ग से इस रोगकी अधिकारी हो जाती है॥

पैत्रिक रोग में शारीरक उपदंश के और सब लक्षण तो दिखाई देते हैं परन्तु जननेंद्रिय पर पूर्वोक्त घाव नहीं होता है

जन्म समय में इस रोगके होने से बालक के हाथ पावों में किसी प्रकार का विकार हो जाता है; अथवा दुबला पतला बुरी दशा में होता है। ऐसे बालक के ऊपर नीचे के होठों में घाव; ओष्ट कोण में गड्ढा तथा तापतिल्ली और यकृत बढे हुए होते हैं

इस रोगी को आराम होने पर भी लगातार दो वर्ष तक चिकित्सक के मतानुसार औषधादि सेवन करना चाहिये, नहीं

तो यह रोग फिर बढ जाता है और वंशपरंपरागत हो जाता है। इस रोग की मुख्य दो ही औषध हैं। एक मर्केरी, दूसरी आयोडाइड आव पुटेसियम। प्रायः येदोनों औषध एकत्र व्यवहार में लाई जाती हैं।

सुजाक का वर्णन।

स्त्रीसंगम के थोडी देर पीछे ही या देर में यह रोग होता है। रोग के आरंभ मे वडा कष्ट होता है और स्त्रीसंगम के कुछ घटे पीछे रोगी की गुह्योन्द्रिय के मुंह पर एक प्रकार की चिमचिमाहट सी होती है, फिर जलन के साथ दर्द होता है, फिर पतली धात निकल जाती है। इस दशा में पेशाब की हाजत थोडी थोडी देर ठहर कर होती है, पेशाब करने में वडा दर्द होता है और सीवन के ओर पास एक प्रकार की खुजली दिल बिगाडने वाली होती है। पेशाब करने के पीछे सपूर्ण सूत्रमार्ग मे नीचेसे ऊपर तक धमक मारती है। चहूंहों और सीवन आदि पर हाथ लगाने से कष्ट प्रतीत होता है।

ऐसी अवस्था में गुह्योन्द्रिय वहुत सूज जाती है। रात के समय गुह्योन्द्रिय खडी रहती है और उसमें झुकाव रहता है, इस दशा में दरद की अधिकता रहती है इस दशाको अंग्रेजी में कौरडी कहते हैं। रोगी वहुधा इस दशा को कम करने के लिये वा पेशाब करने को बिस्तर से उठता है, इस समय मवाद वडी अधिक्ता से निकलता है, यह मवाद गाढा और हरापन लिये होता है। यह इस रोग की प्रथमावस्था है इसमें इलाज के लिये शीघ्रता करना उचित है। इलाज न कराने से ऊपर लिखेहुए लक्षण दस बारह दिन तक जारी रहते है फिर पेशाब करने की इच्छा और जलन कम होने लगती है, गुह्योन्द्रिय की सूजन दर्द और खडापन कम होजाता है, मवाद का रग सफेद और

वह अधिक गाढा होकर अधिकता से निकलने लगता है। यह दशा थोडे दिन तक रहती है और फिर लक्षणों में अंतर पडने लगता है, यहां तक कि जलन और कडापन जाता रहताहै, मवाद साफ हो जाता है और रोगी पेशाब की हाजत को इतनी देर तक नहीं रोक सकता है जितना भला चंगा रोक सकताथा।

डाक्टरी इलाज।

रोगी की प्रथमावस्थामें सीवन के इधर उधर जोकें लगानी चाहिये। फिर सेकना कूल्हे तक गरम पानी तक बैठना और कम खाना उचित है और लुआवदार शोर्वे आदि देना चाहिये तथा मिक्सचर आफ लेकवार पुटेसी भी दिया जाय। सोने से पहिले उचित है कि मखमल के एक टुकडे से गुह्येन्द्रिय की सीवन पर बांधदेना चाहिये कि जिससे खड़ापन और दरद रुकजाय। और निद्रा लाने वाली एक दवा हाई अस्साइ ऐमस और आधा ग्रेन एक्सट्रेकट आफ बिला डोना के सदृश मूत्रनाली के छिद्र में रखी जावे। कोई कोई कहते हैं कि तीन ग्रेन कपूर, चालीस बूंद लाडनम और एक औन्स पानी सोते समय पीना चाहिये। रोगी की दूसरी अवस्थामें अर्थात् जब जलन कम होने लगती है पिसी हुई कैन्यूबिस एक ड्राम बालसम कोपेवे के साथ खूब मिला कर एक औन्स लुआवदार समग अरबी के साथ देवे।

प्रथमही एक दिनमें दोबार फिर तीन, चार और पांचबार देवे, परन्तु शर्त यह है कि आमाशय इसको ग्रहण करे। यह दवा थोडे ही दिन में इस बीमारी को रोक देती है। उचित है कि इस दवा को बहुत दिनतक सेवन कराता रहे, लेकिन इस की मात्रा ये कम करदी जांय। इस रोग में तेज दवाओं का देना वर्जित है।

सुजाक की चिकित्सा।

यह रोग चार प्रकार से होता है एक तो आतशक से, दूसरा

स्वप्न में वीर्य के स्खलित होनेसे, तीसरा वेश्या सगमसे और चौथा रजस्वला स्त्री के साथ संभोग से।इस रोग के पैदा होते ही आठ दिन तो बहुतही दुख होता है फिर दर्द कम होजाता है।

उपदंशजन्य सुजाक ।

जिस मनुष्य के उपदंश रोग के कारण लिंगनाल पर घाव हो गयेहों और वह तेल मिरच खटाई आदि का सेवन करता रहा हो उसके गरमी के कारण लिंगनाल के भीतर मूत्रमार्ग में घाव होजाता है ऐसा होने पर पेशाव करते समय बडा कष्ट होता हैं इसीको सुजाक कहते हैं ।

स्वप्नमें वीर्य निकलने से उत्पन्न सुजाक का यत्न

जिस मनुष्य का स्वप्नमें स्त्रीसमागमसे वीर्य स्खलित होते होते निद्रा भंग हो जाय तो वीर्य निकलने से रुक जाता है और सुजाक रोग को उत्पन्न करता है जिस मनुष्य को इस प्रकार से सुजाक हुआ होतो यह दवा देना चाहिये ।

दोतोले अलसी को रात में आधसेर जल में भिगोवे और सवेरेही उसका लुआब उठाकर छान कर एक तोला कच्ची खांड मिला कर पीवे इस में खटाई और लाल मिर्च का खाना वर्जित हैं ।

दूसरी दवा ।

ग्वारपाठे के दो तोले गूदे में एक तोला भुना हुआ शोरा मिला कर प्रति दिन प्रात:काल खाय तो तीन दिन के खाने से पुरानी सुजाक भी जाती रहती है यह दवा सब तरह की सोजाक को फायदा करती है परंतु खाने में लालमिर्च नमक उरद की दाल से बचना चाहिये ।

तीसरी दवा ।

त्रिफला डेढ तोले लेकर रात को सेर भर पानी में जो कु-

वह अधिक गाढा होकर अधिकता से निकलने लगता है। यह दशा थोडे दिन तक रहती है और फिर लक्षणों में अंतर पडने लगता है, यहां तक कि जलन और कडापन जाता रहता है, मवाद साफ हो जाता है और रोगी पेशाब की हाजत को इतनी देर तक नहीं रोक सकता है जितना भला चंगा रोक सकता था।

डाक्टरी इलाज।

रोगी की प्रथमावस्थामें सीवन के इधर उधर जोकें लगानी चाहिये। फिर सेकना कूल्हे तक गरम पानी तक बैठना और कम खाना उचित है और लुआवदार शोर्वे आदि देना चाहिये तथा मिक्सचर आफ लैकवार पुटेसी भी दिया जाय। सोने से पहिले उचित है कि मलमल के एक टुकडे से गुह्येन्द्रिय की सीवन पर बांधदेना चाहिये कि जिससे खडापन और दरद रुकजाय। और निद्रा लाने वाली एक दवा हाई अरसाइ ऐमस और आधा ग्रेन एकसट्रेकट आफ बिला डोना के सदृश मूत्रनाली के छिद्र में रखी जावे। कोई कोई कहते हैं कि तीन ग्रेन कपूर, चालीस बूंद लाडनम और एक औन्स पानी सोते समय पीना चाहिये। रोगी की दूसरी अवस्थामें अर्थात् जब जलन कम होने लगती है पिसी हुई कैन्यूबिस एक ड्राम बालसम कोपेवे के साथ खूब मिला कर एक औन्स लुआवदार समग अरबी के साथ देवे।

प्रथमही एक दिनमें दोबार फिर तीन, चार और पांचबार देवे,परन्तु शर्त यह है कि आमाशय इसको ग्रहण करे। यह दवा थोडे ही दिन में इस बीमारी को रोक देती है। उचित है कि इस दवा को बहुत दिनतक सेवन कराता रहे, लेकिन इसकी मात्रा ये कम करदी जांय। इस रोग में तेज दवाओं का देना वर्जित है।

सुजाक की चिकित्सा।

यह रोग चार प्रकार से होता है एक तो आतशक से,दूसरा

स्वप्न में वीर्य के स्खलित होनेसे, तीसरा वेश्या संगमसे और चौथा रजस्वला स्त्री के साथ संभोग सेः इस रोग के पैदा होते ही आठ दिन तो बहुतही दुख होता है फिर दर्द कम होजाता है।

उपदंशजन्य सुजाक ।

जिस मनुष्य के उपदंश रोग के कारण लिंगनाल पर घाव हो गयेहों और वह तेल मिरच खटाई आदि का सेवन करता रहा हो उसके गरमी के कारण लिंगनाल के भीतर मूत्रमार्ग में घाव होजाता है ऐसा होने पर पेशाव करते समय बडा कष्ट होता हैं इसीको सुजाक कहते हैं ।

स्वप्नमे वीर्य निकलने से उत्पन्न सुजाक का यत्न

जिस मनुष्य का स्वप्नमें स्त्रीसमागमसे वीर्य स्खलित होते होते निद्रा भंग हो जाय तो वीर्य निकलने से रुक जाता है और सुजाक रोग को उत्पन्न करता है जिस मनुष्य को इस प्रकार से सुजाक हुआ होतो यह दवा देना चाहिये ।

दोतोले अलसी को रात में आधसेर जल में भिगोवे और सवेरेही उसका लुआब उठाकर छान कर एक तोला कच्ची खाँड मिला कर पीवे इस में खटाई और लाल मिर्च का खाना वर्जित हैं ।

दूसरी दवा ।

ग्वारपाठे के दो तोले गूदे में एक तोला भुना हुआ शोरा मिला कर प्रति दिन प्रातःकाल खाय तो तीन दिन के खाने से पुरानी सुजाक भी जाती रहती है यह दवा सब तरह की सोजाक को फायदा करती है परंतु खाने में लालमिर्च नमक उरद की दाल से बचना चाहिये ।

तीसरी दवा ।

त्रिफला डेढ तोले लेकर रात को सेर भर पानी में जो कु-

ट कर भिगोदे फिर दूसरे दिन प्रातःकाल छान कर इस में नीलाथोथा तीन माशे महीन पीस कर मिलावे फिर इस की तीन दिन तक दिन में तीन तीन बार पिचकारी लगावे तो बहुत जल्दी फायद होगा।

अथवा।

काहू के बीज, गोखरू के बीज, खीराके बीज प्रत्येक एक तोले सौंफ छः माशे इन सब को पानी में पीस दो सेर जल में छानले और जब प्यास लगे इसेही पीवे इस तरह सात दिन सेवन करे तो सुजाक आदि सब लिंगेन्द्रियजन्य रोग जाते रहते हैं नमक मिर्च खटाई का परहेज करे।

वेश्या प्रसंगोत्पन्न सुजाक।

यह सुजाक इस प्रकार से होती है कि दैवात् किसी सोजाक वाली वेश्या के साथ सहवास का प्रसंग हो जाय तो प्रथम ही मूत्रमें झुलसने की सी जलन मालूम होती है यदि उसी समय उससे अलग होजायतो उत्तमहै नहीं तो दो तीन दिन के पीछे मूत्र नहीं उतरता है और बडी कठिनता तथा पीडा से बूंद बूंद आताहै फिर पीव निकलने लगताहै जो पींव की रंगत सपेद जरदी मिली होतो नीचे लिखी दवा देनी चाहिये॥

उक्त सुजाककी दवा।

सिरस के बीज बिनोलेकी मिंगी बकायन के बीजकी मिंगी हरएक एक एक तोले लेकर बारीक पीसे और बरगद के दूध में मिलाकर जंगली बेर के बराबर गोली बनावे और एक गोली नित्य प्रातः समय खाकर ऊपर से गो का दूध पावसेर पीवे सर्द और बातल वस्तुओं से परहेज करना चाहिये॥

अन्य दवा।

यदि पीवकी रंगत सुरखी लिये होय तो यह औषधि दे॥

कबावचीनी । दालचीनी । गुलाब के फूल । सफेद मूसली । असगंध नागौरी, । सेलखडी ये दवा, छःछःमाशे इनसबको महीन पीसकर एक तोले की मात्रा पावभर गौ के दूधके साथ खाय और खटाई बातकारक द्रव्य और लाल मिरच इनका परहेज करे ॥ इक्कीस दिन तक इस दवा का सेवन करै तौ यह रोग अवश्य जाता रहेगा। ॥

सुजाक का अन्य कारण ।

एक सुजाक इस प्रकारसे भी होती है कि थोडी थोडी देरमें मनुष्य स्त्री से तीनचार बार संभोग करै और हर बार मूत्र करि सोरहे और व्यर्थ स्त्री से लिपटा रहे उस समय वीर्य की, थोडीसी बूंद लिंग के छिद्र में जम जाती हैं और उसमें मदिराके सदृशगुणहै कि सवेरे तक घाव करदेती है यह अवस्था तो बुद्धिमानों की है और कोई२ऐसे मूर्ख होते है कि थोडे काल में स्त्री से चार पांच बार संभोग करकेभी मूत्र नहीं करते और चिपटेही जाते हैं ऐसे लोगों के सुजाक अवश्य हो जाता है उनके पिचकारी लगाना चाहिये

पिचकारी की विधि ।

नीलाथोथा, पीली कौडी । विलायती नील ये सब दो दो तोले के । इनको महीन पीस कर इस में से दो माशे आधसेर जल में मिला कर खूब हिला वे । फिर लिंग के छिद्र में यथा विधि पिचकारी देवै परंतु जहां तक होसके पिचकारी देना योग्य नहीं है ॥ क्यों कि इस से कई एक हानि होती हैं एक तो यह कि अंडकोषों मे जल उतर आता है ॥ दूसरे यह कि लिंग का छिद्र चौडा होजाता है इस सबब से जहां तक होसके पिचकारी नदे ॥

अन्य दवा।

कतीरा एक तोला, ताल मखाने एक तोले, इन दोनों को बारीक पीस कर इस में बराबर का बूरा मिला कर चार माशे तथा छः माशे की फक्की ले ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे ॥ जो मनुष्य वेश्या के पास इसरीत से रहै कि संभोग से पहिले आलिंगन करे और पहिले मूत्र करिके उस से सभोग करे तो उस मनुष्य के कभी यह सुजाक का रोग नहीं होगा और जो दैवयोग से हो भी जाय तो जानले कि इस वेश्या के ही सुजाक था ऐसे सोजाक वाले को यह दवा दे।

दवा इन्द्री जुलावकी।

शीतल चीनी, कलमी शोरा, सफेद जीरा, छोटी इलायची, ये सब दवा एक एक तोल इन सब को पीस छान कर रक्खे और इस मे से छः माशे प्रातः काल खाकर ऊपर से सेर भर गौ का दूध पीवै तो दिन भर मूत्र आवैगा और जब प्यास लगे तब दूध की लस्सी पीवे और सायंकाल के समय धोवा मूंग की दाल और चांवल भोजन करे और दूसरेदिन यह दवा खाने कोदेवे ॥

दूसरी दवा।

खारखस्क, खीरा के बीज, सुंडी, ये दवा छ छः माशे लेकर रात्रि के समय पानी में भिगादे, फिर प्रात' काल मल छान कर पीवे और दही भात का भोजन करे और जो इस दवा से आराम नहोय तो फिर ये दवा देवे।

तीसरी दवा।

कतीरा, गेरू, सेल खड़ी, शीतल चीनी, ये सब दवा छ छः माशे ले और मिश्री सफेद दो तोले ले इस सब को कूट छान कर छ'माशे की मात्रा गौ के पाव भर दूध के संग खावने फायदा बहुत जल्दी होगा और यहरोग रजस्वला स्त्री में सम्भोग

करने से भी होजाता है तो ऐसे रोगी को यह दवा देवे ।

रजस्वला से उत्पन्न सुजाक की दवा ।

बीह दाना तीन माशे लेकर रात को जल में भिगो दे फिर प्रातः काल उसका लुआब निकाल कर उस में सवा सेर दूध मिला कर फिर सेलखडी और ईसब गोल की भुसी छः छः माशे लेकर पहिले फांके फिर ऊपर उस लुआब को पीले और खाने को मूंगकी दाल रोटी खाले और एक सोजाक इस प्रकार से भी होता है कि मनुष्य उस वेश्या से सगत करे कि जिसने बालक जना हो उसमे दो कारण है एक तो यह कि उन दिनों में वह गरम वस्तु बहुत खाती है और दूसरा यह कि वह बालक को दूध नही पिलाती है दाई पिलाती हैं उस समय दूध की गर्मी और गरम वस्तुओं की गर्मी और शरीर का बुखार ये उस मनुष्य को हानि पहुंचा कर सोजाक रोग को पैदा करते है इस रोग वाले को यह दवा देनी चाहिये ॥

दवा ।

बालंगू के बीज, बीहदाना, खीराककडी के बीज, कुलफा के बीज, कासनी के बीज, हरी सोफ, सफेद मिश्री ये सब दवा छः छः माशे ले सबको पीस छान कर चार माशे नित्य खाया करे और इस के ऊपर यथोचित गौ का दूध पीवे और जो इस औषधि से आराम न होय तो यह औषधि देनी चहिये ।

दूसरी दवा ।

गौ के बछडे का सीग, पुरानी रुईमें लपेट कर बत्ती बनावै और कोरे दीपकमें रखकर उसमें अरंडी का तेल भरदेवे फिर उसे जलादे और उस के ऊपर एक कच्ची मिट्टी का पात्र रखकर काजल पाडले फिर उस काजल को दोनों वक्त आ

सों में लगाया करे खटाई और बादी से परहेज करे ।

सब प्रकार की सुजाक की दवा ।

कुलफा के बीज, पोस्त के बीज, सफेद ककड़ी के बीजों की मिगी, तरबूजके बीजोंकीमिंगी, ये सब पन्द्रह पन्द्रह माशे और छोटा गोखरू, बबूल का गोंद, कतीरा, ये छः छः माशे ले इन सब को ईसबगोल के रसमें पीस कर तीन माशे की गोली बनाले फिर एक गोली नित्य ग्यारह दिन तक सेवन करे तो सब प्रकार की सुजाक जाय ।

पीयाबांसे के छोटे पेडको जला कर उसकी राखमें कतारी का पानी मिलाकर चने के बराबर गोली बनाले । और गुल खेरा को रात को भिगोदे सवेरेही मलकर छानले फिर पहिले उसगोली को खाकर ऊपरसे इस रसको पीवे तो सब प्रकारकी सोजक जाती रहती है ॥

अथवा ।

हल्दी और आमले दोनों बराबर ले चूर्ण करे इसकी बराबर खांड मिलाकर एक तोला नित्य पानी के साथ फांके तो आठ दिनमें सुजाक जाय ॥

अथवा ।

सफेद राल को पीसकर उसमें बराबर की मिश्री मिलाकर नौमाशे नित्य खाय तो सुजाक जाय और पीबका निकलना बंद होय ॥

अथवा ।

ढाक की कोंपल । सूखे ढाक का गोंद। ढाक की छाल । ढाक के फूल । इन सबको कूट छान कर बराबर की खांड मिला कर इसमें से पोने चार माशे बचे दूध के साथ खायतो सबप्रकार की

सुजाक और पीव का निकलना वंद होय ॥

अथवा ॥

महंदी के पत्ते । आंवले । जीरा सफेद । धनियां, गोखरू ये सब औषधि एक एक तोले लेकर जौ कुटकर फिर इसमेंसे एक एक तोले रात को पानीमें भिगोदें । प्रातःकाल मल छान ले और तीन माशे कतीरा पीस कर पीछे इसमें एकतोला खांड मिलाकर सात दिन पीने से सुजाक जाता रहता है ॥

अथवा ॥

शंखा हूली का काढा करके पीने से भी सुजाक जाता रहता है

अथवा ॥

कुलंगा के वीज ९ माशे लेकर आध सेर दूधमें भिगोके रात को ओसमें धरदे फिर प्रातःकाल छानकर उसमें थोडी खांड मिला कर पिये परंतु कुलंग के वीजों को पीसकर भिगोवे तो सव प्रकार का सोजाक जाता रहता है ।

अथवा ॥

ववूल की कोपल, गोखरू एक एक तोला लेकर इनका रस निकाल कर थोडा बूरा मिलाकर पीवेतो सवप्रकार का सोजाक जाता रहता है ।

प्रमेह रोग का वर्णन ।

इस रोग को हकीम लोग जिरियान कहते हैं ।

आयुर्वेद के जानने वालों ने इसे वीस प्रकार का लिखा है. जैसे—कफ से होने वाला दस प्रकार का । पित्त से होने वाला छः प्रकार का । और वात से होने वाला चार प्रकार का । इनके अलग अलग नाम ये हैं जैसे--इक्षुमेह, सुरामेह पिष्टमेह, लालामेह, सान्द्रमेह, उदकमेह, सिकतामेह, शनैर्मेह, शुक्र मेह और शीतमेह । ये दस प्रकार के प्रमेह कफकी अधि

कता से होते हैं । क्षारमेह , कालमेह, नीलमेह, हरिद्रामेह, मंजिष्ठा मेह, और रक्तमेह , ये छः प्रकार के प्रमेह पित्त की अधिकता से होते हैं । वसामेह, मज्जामेह, क्षौद्रमेह और हस्तिमेह, ये चार प्रकार के प्रमेह वात की अधिकता से होते हैं।

प्रमेह रोग का कारण ।

अधिक दही खाने से ' अधिक स्त्रीसंग करने से, कुए वा नदी का नया जल पीनेसे, जल के पासवाले पशु पक्षी अथवा और जानवर के मांस का यूष (शोर्वा) खाने से, अधिक दूध पीनेसे, नये चांवलों का भात खाने से, चीनी आदि किसी मिष्ट रससे युक्त आहार का सेवन करने से, अथवा कफको बढाने वाले किसी पदार्थ को खाने पीनेसे, प्रमेह रोग उत्पन्न होता है। वात पित्त और कफ तीनो दोष, मेद रक्त, मांस, स्नेह, मांसजल मज्जारस और धातु आदि शरीरस्थ दोषःपूर्वोक्त दही आदि के सेवन से दूषित होकर ऊपर कहे हुए बीस प्रकार के उत्कट और कष्टदायक प्रमेह रोगों को उत्पन्न करते हैं।

इक्षुमेह के लक्षण ।

इक्षुमेह नामवाले प्रमेह रोग में रोगी का पेशाब ईखके रस के समान अत्यन्त मीठे रस से युक्त होता है।

सुरामेह के लक्षण ।

इस रोग में मद्यकी गंधके समान उग्र गंधवाला पेशाब होता है इस पेशाब का ऊपर का भाग पतला और नीचे का भाग गाढा होता है।

पिष्टमेह के लक्षण ।

इस रोगमें पेशाब पानी में घुली हुई पिट्ठी के समान होता

है, पेशाव सादा होता है, जिस समय रोगी पेशाव करता है उस समय सब देह के रोमांच खडे होजाते हैं ।

लालामेह के लक्षण ।

इस रोग मे पेशाव की धार के साथ ऐसे सूत से निकलते हैं जैसे मकडी का जाला होता है। अथवा जैसे बालक के मुख से राल टपकती है वैसीही राल टपकती है इसी को लालामेह कहते है ।

सान्द्रमेह के लक्षण ।

इस रोग में पेशाब बासी फेनके सदृश गाढा होता है, इसी को सान्द्रमेह कहते हैं ।

उदकमेह के लक्षण ।

उदकमेह में पेशाब गाढा और साधारण रंग से युक्त होता है पेशाब में किसी प्रकारकी गध नहीं आती है, जलके समान शब्द करता हुआ पेशाब निकलता है ।

सिकतामेह के लक्षण

इस रोग में पेशाब को रोकने की सामर्थ जाती रहती है, पानी का रंग मैला होता है और उसके साथ बालू रेत के से कण निकलते है, इन चिन्हो से युक्त पेशाब होने से उसे सिकता मेह कहते हैं ।

शनैर्मेह के लक्षण ।

जो पेशाब थोडा थोडा होता है और धीरे धीरे निकलता है ऐसे रोगको शनैर्मेह कहते हैं ।

शुक्रमेह के लक्षण ।

ऐसे रोगी का पेशाब वीर्य के समान होता है अथवा वीर्य भी मिला रहता है । वीर्यसा मालूम होने के कारण इस रोगको

शुक्रमेह कहते हैं ।

शीतमेह के लक्षण ।

इस रोग में पेशाब अत्यन्त मधुररस युक्त और अत्यन्त ठंडा होता है । ऐसा पेशाब होने से इस रोग को शीतमेह कहते हैं ।

क्षारमेह के लक्षण ।

इस रोग में पेशाब गंध वर्ण, रस और स्पर्श में सर्वथा क्षार जल के समान होता है । इन लक्षणों से युक्त होने पर इसे क्षार मेह कहते हैं ।

नीलमेह के लक्षण ।

इस रोग में पेशाब में नीली झलक मारती है, नीलकांति युक्त होने ही से इस रोगको नीलमेह कहते हैं ।

कालमेह के लक्षण ।

जो पेशाब कालीके समान काला होता है उसे कालमेह कहते हैं ।

हरिद्रामेह के लक्षण ।

जो पेशाब हलदी के रंग के समान होता है और जिसमें पेशाब करते समय जलन बहुत होती है, इन लक्षणों से युक्त रोग को हरिद्रामेह कहते हैं ।

मंजिष्ठामेह के लक्षण ।

जिस रोग में पेशाब मजीठ के रंग के समान लाल होता है और कच्चे मांस के समान गंध युक्त धातु निकलती है इसी को मंजिष्ठामेह कहते हैं ।

रक्तमेह के लक्षण ।

इस रोग में पेशाब लाल रंग का होता है गरम होता है ण से निकलता है । इसी को रक्तमेह कहते हैं ।

और उसमें कच्चे मांसकीसी गधं आने लगती है। इसी को रक्तमेह कहते हैं।

बसामेहके लक्षण।

इस रोग में पेशाब चर्बी के रंग के सदृश होता है, इसमे चर्बीभी मिली होती है और पेशाब अधिक निकलता है।

मज्जामेह के लक्षण।

जिस रोग में मज्जाकी आभा के समान अथवा मज्जा से मिला हुआ पेशाब बार बार होता है, उसे मज्जामेह रोग कहते हैं।

क्षौद्रमेह के लक्षण।

इसी का दूसरा नाम मधुमेह है। इसमें रूक्षगुणयुक्त पेशाब होताहै और मूत्र कषायरस युक्त अथवा मिष्टरस युक्त निकलता है इसी को मधुमेह वा क्षौद्रमेह कहते हैं।

हस्तिमेह के लक्षण।

जो मनुष्य मतवाले हाथी के मूत्र के समान झागदार पेशाब करता है और उसमें ललाई भी हो और बार बार अधिक परिमाण में पेशाब करे। इसको हस्तिमेह कहते हैं॥

साध्यमेह के पूर्व लक्षण।

मधुमेह रोगी का पेशाव जिस समय निर्मलहो रंग में साधारणता हो अथवा कटुतिक्त किसी रससे युक्त हो उस समय मधुमेही निरोग हो जाता है॥

मेह को साध्यासाध्य और याप्यत्व।

मेह, कफ और मासादि की एक सी ही चिकित्सा होती है इस लिये कफमे उत्पन्न [illegible] के प्रमेह रोग साध्य होते हैं अर्थात् सुचिकित्सा से आराम हो जाता है। [illegible] पित्त तथा मेद मांसादि

की चिकित्सा विषम अर्थात् विपरीत होती है इसलिये पित्त से पैदा हुआ छःप्रकार का प्रमेह याप्य होता है अर्थात् आराम हो हो कर रोग फिर हो जाता है। मज्जादि गंभीर धातुओं में पहुंच जानेसे वातज चार प्रकार के प्रमेह असाध्य होते हैं अर्थात् रोगी को आराम नहीं होता है ॥

असाध्य प्रमेह के लक्षण ॥

पूर्वोक्त अजीर्णआदि तथा अन्यान्य अशुभ उपद्रवें से युक्त होने पर अधिकतर धातु और मूत्र का स्राव होनेसे तथा प्रमेह रोग बहुत दिन का हो जाने से यह रोग असाध्य होता है। जब प्रमेह बहुत दिन का हो जाता है और उसकी किसी प्रकार की चिकित्सा नहीं की जाती है तो समय पाकर यह रोग मधुमेह में परिणत हो जाता है मधुमेह को किसी प्रकार से भी आराम नहीं होता है यह निश्चय जान लेना चाहिये जिस को यह रोग पिता माता के बीजके दोष से पैदा हुआहै जो बाल्यावस्था हो से हुआ है वह मेह रोग किसी प्रकार से भी अच्छा नहीं होता है। कुलपरंपरागत अथवा इस प्रकार की फुंसियों से युक्त प्रमेह रोग ग्रस्त मनुष्य का जीवन इस रोग से नष्ट हो जाता है ॥

प्रमेह रोग का इलाज।

(१) बबूल गोंद, कबाबचीनी और मिसरी, हर एक आधा आधा तोला लेकर एक छटांक जल में रात के समय भिगोदे। प्रात काल छानकर इस जल का सेवन करे तो अत्यन्त फायदा-यक सब प्रकार का प्रमेह जाता रहता है।

(२)आमले का रस आधी छटांक लेकर [illegible]
धा तोला शहद मिलाकर पीनेसे [illegible] रोग का होता है [illegible]

(३) आमले [illegible] इसी को प्रमाप्रेह कहते [illegible]

सेवन करने से भी प्रमेह रोग जाता रहता है ।

(४) मूत्रेन्द्रिय के छिद्रमें कपूर रखनेसे पेशाव होकर दर्द कम होजाता है ।

(५) पके हुए पेठे का जल आधपाव, जवाखार दो आना भर, विशुद्ध चीनी दोआना भर इन सबको मिलाकर सेवन करने से मूत्रबद्ध रोग में पेशाव होकर रोगो की वेदना कम होजाती है।

(६)मिसरी के पाव भर शर्बत में एक छटांक कमला नीबू, का रस मिलावे और इसमेसे धीरे धीरे पान करावे, तो पेशावों के होने से रोगी की वेदना कम होजाती है ।

[७] विशुद्ध चीनी मे आरने उपलों की राख का पाद-भर जल मिलाकर पीने से रोगी रोगमुक्त होजाता है ।

(८) आमले का गूदा आधे तोला, बकरी का दूध छटाक भर इन दोनों को मिलाकर सेवन करने से मूत्रकृछ्र जाता रहता है।

[९] जवाखार और विशुद्ध चीनी प्रत्येक दो आना भर मिलाकर शहत के साथ तीन चार दिन तक सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र दूर होकर धारागति से पेशाव होने लगता है ।

[१०] गोखरू के वीज, असगंध, गिलोय,आमला और मोथा हर एक एक आना भर लेकर चुर्ण बनाकर शहत के साथ सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र रोग जाता रहता है।

(११) मूंगे की भस्म एक रत्ती लेकर शहत के साथ मिलाकर सेवन करनेसे कफजन्य मूत्रकृच्छ्र रोग दूर होजाता है ।

[१२] बरना की दो तोले छाल लेकर आधसेर जलमें औटावे, जब चौथाई शेष रहे तब उतार कर छानले, फिर इसमें

परिष्कृत शोरा छ रत्ती मिलाकर इस जल को दो बार पीवे, इससे पेशाब साफ होकर मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है ।

(१३) लोहेकी भस्म दो रत्ती शहतमें मिलाकर चाटनेमें मूत्रकृच्छ्र का कष्ट जाता रहता है । पेशाव साफ होजाता है और रोगी बलिष्ठ होता चला आता है ।

(१४) पंचतृण में से हरएक को दो आने भर लेकर जौ कुट करके आधसेर जलमें औटाकर चौथाई शेष रहने पर उतारले, ठंडा होने पर छानकर इसमें चार चार आना भर शहत और चीनी मिलाकर पान करे । इससे मूत्रकृच्छ्र का पेशाब साफ हो जाता है । और किसी तरहकी वेदना हो रही हो तो उसके भी शीघ्र शांत होने की संभावना है । यह दवा बहुत उत्तम है ।

(१५) कालेगन्नेकी जड, कुशाकी जड, भूमिकुष्मांड, और सोंफ प्रत्येक आधा आधा तोला लेकर आधा सेर जल में औटावे, जब चौथाई शेष रहे तब उतारले, और ठंडा होने पर छानकर इस क्वाथ को पीवे । इससे प्रमेह से उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र जाता रहता है ।

(१६) एक तोले कटेरी के रस में तीन माशे शहत मिला कर पीने से भी प्रमेह से पैदा हुए मूत्रकृच्छ्र में आराम होने की विशेष संभावना है ।

(१७) गोखरू के एक छटांक क्वाथ में जवाखार दो या तीन रत्ती मिलाकर पीने से निश्चयही पेशाब साफ हो जाता है और सुजाक का दरदभी कम हो जाता है ।

(१८) गोखरू और कटेरी प्रत्येक एक तोला लेकर आध सेर जलमें औटावे चौथाई शेष रहनेपर उतारकर छानले, ठंडा होने पर इसमें [illegible] डालकर पान करावे इससे कष्ट जनित सुजाक जाता रहता है ।

(१९) पंचतृणकी जड सब मिलाकर दो तोला, बकरी का दूध एक छटांक, जल एक सेर इन सबको मिलाकर औटावे जब दूध शेष रहजाय तब उतार कर छानले, इसके पीने से लिंग के छिद्र में होकर रुधिर आता हो वा रुधिर का पेशाव होता हो तो शीघ्र आराम हो जाता है।

(२०) आधा तोला बीदाना अनार के रस के साथ मोती की भस्म चार रत्ती मिलाकर सेवन करने से निश्चयही पेशाब कम हो जाते हैं और दरदभी घट जाता है ।

(२१) बडी इलायची के बीजों का चूर्ण दो आना भर, सुठीचूर्ण दो आना भर इनको एक छटांक अनार के रसमें मिलाकर सेवन करने से निश्चयही पेशाब कम हो जाते है, और कफ प्रधान बहुमूत्र रोग में इस दवा से विशेष उपकार होता है।

(२२) शुद्धकी हुई वंगभस्म दो रत्ती, मधु तीन माशे इनको मिलाकर चाटने से बहुमूत्र रोग में पेशाब कम हो ही जाते हैं ।

(२३) दो तोले आमले के रस में शहत मिलाकर दिन में दो तीन बार सेवन करने से बहुमूत्र रोग में पेशाब कम हो जाताहै

हकीमी चिकित्सा ।

किसी को आतशक के कारण से प्रमेह रोग होजाता है । इसमें चिकित्सा करने से कुछ आराम होजाता है परन्तु जडसे नहीं जाता है ।

सुजाक से उत्पन्न प्रमेहकी चिकित्सा ।

सुजाक से उत्पन्न हुए प्रमेह का यह लक्षण है कि मूत्रनाली के छिद्रमें होकर पीव निकला करता है इसरोग पर यह दवा उत्तम है ।

खरबूजेकी मिंगी तीन तोले , खीरे के बीजों की मिंगी

डेढ तोले, घीया के बीजों की मिंगी, अजवायन खुरासानी, वंश लोचन, इसबंद के बीज, कुलफे के बीज, गेहूं का मग्ज, बादाम की मिंगी, कतीरा, मुलहटी का सत्त, पोस्तके दाने, गेरू, अजमोद ये सब दवा सात सात माशे ले महीन पीस कर छान ले फिर बीह दाना सात माशे लेकर उसका लुआव निकाल कर उस पिसीहुई दवा में मिलाकर जंगली बेरके बराबर गोली बनावे और गोखरू तथा सूखा धनियां छः छः माशे कूटकर पावसेर जलमें रातको भिगोदे और प्रातःकाल इस गोली को खाकर ऊपर से इस नितरे हुए जलको पीवे परन्तु गोली को दांत न लगावे। साबतही निगल जावे तो प्रमेह जाय इस दवा पर खटाई तथा लाल मिर्चों से परहेज करना चाहिये।

दूसरा उपाय।

अलसी पावसेर, वंशलोचन चार तोले, ईसबगोल, सेटसढी। इन सबको महीन पीसकर बराबर की खांड मिलाकर एक हथेली भर नित्य सवेरेही खाकर ऊपर से पावभर गौका दूध पीवे तो प्रमेह जाय परन्तु गुड, खटाई तेल, इस पर कुपथ्य है।

अन्य प्रमेह।

प्रमेह मे वीर्य बहुत पतला होकर बहा करताहै और यह प्रमेह तीन प्रकार से होता है एकतो यह कि सर्दी पाकर वीर्य पानीके समान होकर बहा करता है इस प्रमेह वाले को यह दवा देनी चाहिये॥

पतले वीर्य का उपाय।

बर्गदकी डाढी पावसेर लेकर इसको बर्गदही के पावसेर दूध में भिगोकर छाया में सुखाले और बबूल का गोंद, मालव-मिसरी, मकाफूर ये सब दो दो तोले ले और मूसली सफेद और मूसली स्याह यह दोनों पांच पांच तोले ले कूट छानकर बराबर

की कच्ची खांड मिलाकर इसमें से एक तोले नित्य सवेरे ही खाकर ऊपर से पावभर गौका दूध पीवे और खट्टी तथा वातल वस्तुओं का सेवन नें करे तो सात दिन में निश्चय आराम हो जाता है

दुसरी प्रकार का प्रमेह ।

दूसरा प्रमेहं यह है कि गर्मी पाकर वीर्य पिघल कर पीला-पन लिये हुए बहता है इस रोगवाले को यह दवा उचित है ।

गर्मीके कारण पतले वीर्यका उपाय ।

बबुलकी कच्ची फली, सेमर के कच्चे फूल, ढाककी कोंपल, नया पैदा हुआ कच्चा छोटा आम. मुंडी, कच्चे अजीर, अनारकी मुह मुदी कली, जावित्री कच्ची ये सब औषधि एक एक तोले ले इन सबको महीन पीसकर सबसे आधी कच्ची खांड मिलाकर एक तोले प्रतिदिन प्रातःकाल गौके दूधके संग सेवन करने से प्रमेह जाता रहता है ।

तीसरी प्रकारका प्रमेह ।

तीसरे बात पित्त के विकार से प्रमेह हो जाता है इसको लिये यह दवा दे ॥

उक्त प्रमेहकी दवा ।

उर्द का आटा आध सेर, इमली के बीजोका चूर्ण आधसेर सेलखडी तीन तोले इन सबको पीस छानकर इसमें तीनपाव कच्ची खांड मिलाकर इसमें से पांच तोले नित्य प्रातःकाल के समय खाकर गौका दूध पावसेर पीवै तो सात दिन मे प्रमेह जाता रहता है । और कभी कभी रुधिर विकार से भी प्रमेह हो जाता है इसमें बासलीककी फस्द खोले और इन्द्रिय जुलाबदेकर यह औषधि देनी चाहिये ॥

रक्तज प्रमेह की चिकित्सा ।

भुने चने का चून पावसेर, सीतलचीनी एकतोले, सफेदजीरा

छःमाशे शकरतीगाल छःमाशे इन सबको कूट छान कर इसमें तीनतोले कच्ची खांड मिला कर सवेरेही चारतोले फांके ऊपर से,गौका पावभर दूध पीवे और यथोचित पाहेज करे बिंदुकुशाद की चिकित्सा जब आदमी के सोजाक पैदाहोताहै उस वक्त बहुत से मनुष्य औषधियों की बत्ती बनाकर जननेन्द्रिय के छिद्र में चला देते हैं इस लिये लिंग का छिद्र चौड़ा होजाता है इस को बिन्द कुशाद कहतेहैं इस रोगवाले मनुष्य को यह औषधि देनी चाहिये ॥

गौ का घृत दो तोले, रसकपूर, सफेदा काशगरी सेलखड़ी ये दवा एक एक माशे, नीला थोथा एक रत्ती पहिले घृत को खूब धोवे फिर सब औषधियोंको पीस छानकर घृतमें मिलाकर मरहम बनाले और रुईकी महीन बत्ती पर इस मरहमको लपेट कर लिंग के छिद्रमें रक्खे तो आराम होय ।

उपदशके मेहकी चिकित्सा ।

जो आतशकके कारण से प्रमेह होतो उसकी यह परीक्षा है कि इन्द्री के मुखपर एक छोटासा घाव होता है और वीर्य भी पतला सुर्खी लिये हुए बहता है क्योंकि एक तो प्रकृति की गर्मी, दूसरे आतशक की गर्मी,तीसरे उन दवाईयों की गर्मी जो आतशक में दीनी गई इतने दोषों के मिलने से यह प्रमेह रोग होता है इसके वास्ते यह दवा देनी चाहिये ॥

(दवा)

अकरकरा, सुपारीके फूल । मूसली सफेद । सींफकच्ची । सोंठ इन्द्रजौ । गोखरूबड़े । गिलोय सत । कौंचके बीज,उटंगनके बीज, तजवालनके बीज अजमोद । शीतल चीनी । कुलीजन । गोंदा न पीठा । नारियल दिखांगिकाफूल मिश्री । लाहौरी । मायाफल । समाहित । बड़ी इलायची के बीज । [illegible] तालमखाने । केशर दवा

एक एक तोले ले सबको कूट छानकर सात तोले बूरा मिलाकर एक तोले नित्य प्रातःसमय खाय ऊपरसे पावभर गौका दूध पीवे तो ग्यारह दिनमे प्रमेहको निश्चय जडमूलसे नाश कर देती है ॥

और जो वीर्य स्याही लिये हुए वहताहो उस्के वास्ते ऐसी दवा देनी चाहिये जो प्रमेह और आतशक को गुणदायक हो ॥

नुसखा प्रमेह ।

अकरकरा गुजराती । हुलहुलके वीज । गोखरू छोटे, गोखरू वडे, सुपारीकेफूल। स्याह मूसली । सफेद मूसली। सेमर का मूशला मीठे इन्द्रजौ, गिलोयसत। लिसौडे व कोंचकेवीज।उटंगन केवीज तालमखाने । शीतल चीनी । मीठा सोरंजान ये सब दवा एक २ तोले। तज, कलमी विजोरे का सत, पठानी लोध ये नौ नौ माशे इन सबको कूट छानकर सबसे आधा बूरा मिला कर एक तोले नित्य गौके दूधके संग प्रातःसमय खायतौ प्रमेह जाए और खटाई आदिसे परहेज करे ॥

जो प्रमेह लाल मिर्च और खटाई तथा गरम आहारके अधिक खानेसे उत्पन्न होतीहै उस्के वास्ते ये दवा देनी योग्यहै ॥

दवा

दोनों मूसली पांचतोले, कलौंजी स्याह पांच तोले सब को कूट छानकर वरावर का बूरा मिलाकर एक तोले पावभर गौके दूध के संग प्रातःकाल खाया करै तो प्रमेह जाता रहताहै॥

अथवा ॥

कुदरू गोंद पन्द्रह तोले लेकर पीस छानकर इसमेंदश तोले कच्ची खाड मिलाकर नित्य सवेरेही एकतोले गौके दूधके संग खायतो यह प्रमेह रोगजाता रहता है ।

छःमाशे शकरतीगाक छःमासे इन सबको कूट छान कर इसमें तीनतोले कच्ची खांड़ मिला कर सवेरेही चारतोले फांके ऊपर से गौका पावभर दूध पीवे और यथोचित परहेज करे बिन्दु-कुशाद की चिकित्सा जब आदमी के सोजाक पैदाहोताहै उस वक्त बहुत से मनुष्य औषधियों की बत्ती बनाकर जननेन्द्रिय के छिद्र में चला देते हैं इस लिये लिंग का छिद्र चौड़ा होजाता है इस को बिन्द कुशाद कहतेहैं इस रोगवाले मनुष्य को यह औषधि देनी चाहिये ॥

गौ का घृत दो तोले, रसकपूर, सफेदा काशगरी सेलखड़ी ये दवा एक एक माशे, नीला थोथा एक रत्ती पहिले घृत को खूब धोवे फिर सब औषधियोंको पीस छानकर घृतमें मिलाकर मरहम बनाले और रुईकी महीन बत्ती पर इस मरहमको लपेट कर लिंग के छिद्रमें रक्खे तो आराम होय ।

उपदंशके मेहकी चिकित्सा ।

जो आतशकके कारण से प्रमेह होतो उसकी यह परीक्षा है कि इन्द्री के सुपारी एक छोटासा घाव होता है और वीर्य भी पतला सुर्खी लिये हुए बहता है क्योंकि एक तो प्रकृति की गर्मी, दूसरे आतशक की गर्मी, तीसरे उन दवाईयों की गर्मी जो आतशक में दीनी गई इतने दोषों के मिलने से यह प्रमेह रोग होता है इसके वास्ते यह दवा देनी चाहिये ॥

(दवा)

अकरकरा, सुपारीके फूल । मूसली सफेद । मोचरस । मोठ इन्द्रजौ । गोखरूबड़े । गिलोय सत । कौंचके बीज. उटंगनके बीज, अजवायनके बीज अजमोद । शीतल चीनी । कुलींजन । गोजा न पीठा । बाला मिश्री । फूल मिश्री । अकमी । मसाइर । तबाशीर । गरी इन्द्रायनी के बीज । दरुल समन्दर । समन्द सूखा

एक एक तोले ले सबको कूट छानकर सात तोले बूरा मिलाकर एक तोले नित्य प्रातःसमय खाय ऊपरसे पावभर गौका दूध पीवेतो ग्यारह दिनमें प्रमेहको निश्चय जडमूलसे नाश कर देती है ॥

और जो वीर्य स्याही लिये हुए वहताहो उस्के वास्ते ऐसी दवा देनी चाहिये जो प्रमेह और आतशक को गुणदायक हो ॥

नुसखा प्रमेह ।

अकरकरा गुजराती । हुलहुलके बीज । गोखरू छोटे, गोखरू वडे, सुपारी केफूल स्याह मूसली । सफेद मूसली सेमर का मूशला मीठे इन्द्रजौ, गिलोयसत लिसौडे व कौंचकेबीज उटंगन केबीज तालमखाने । शीतल चीनी । मीठा सोरंजान ये सब दवा एक २ तोले । तज, कलमी बिजोरे का सत, पठानी लोध ये नौ नौ माशे इन सबको कूट छानकर सबसे आधा बूरा मिला कर एक तोले नित्य गौके दूधके संग प्रातःसमय खायतौ प्रमेह जाए और खटाई आदिसे परहेज करे ॥

जो प्रमेह लाल मिर्च और खटाई तथा गरम आहार के अधिक खानेसे उत्पन्न होतीहै उस्के वास्ते ये दवा देनी योग्यहै ॥

दवा

दोनों मूसली पांचतोले, कलौंजी स्याह पांच तोले सब को कूट छानकर बराबर का बूरा मिलाकर एक तोले पावभर गौके दूध के संग प्रातःकाल खाया करै तो प्रमेह जाता रहताहै॥

अथवा ॥

कुदरू गोंद पन्द्रह तोले लेकर पीस छानकर इसमें दश तोले कच्ची खांड मिलाकर नित्य सवेरेही एकतोले गौके दूधके संग खायतो यह प्रमेह रोगजाता रहता है ।

वीर्य के पतलेपनकी दवा ।

मूसली सफेद, खरबूजेकी गिरी, पांच पांच तोले, पेठा आधसेर, घीग्वार का गूदा आधपाव, कबाबचीनी छ. मासे इन सबको पीसकर एक सेर कदकी चाशनी करके इसमें सब दवा मिलाकर माजून बनाले इसमें से एक तोला नित्य सेवन करने से वीर्य पैदा होता है और गाढाभी हो जाता है ।

दूसरी दवा ।

एक सेर गाजरोंको छीलकर घी में भूनले फिर आधसेर कंद मिलाकर हलुआ बनाले इसमें से पांच तोले प्रतिदिन सेवन करने से वीर्य गाढा होता है और ताकतभी अधिक बढती है ।

तीसरी दवा ।

पावसेर छुहारे गौ के दूध में पकाकर पीसले और पावसेर गेहूं का निशास्ता और पाव सेर चने का बेसन इनको भूनले फिर तीन पाव खांड और आधसेर घी डालकर सबका हलुआ बनावे फिर इसमें बादाम पावसेर. पिस्ता पावसेर.चिलगोजा पाव सेर, अखरोट की गिरी आधपाव सबको बारीक करके हलुआ में मिलादे फिर इसमें से चार तोले प्रतिदिन सेवन करे तो वीर्य गाढा हो जाता है और शक्तिभी बहुत बढ जाती है ।

चौथी दवा ।

मीठे आम का रस तीनसेर, खांड सफेद एक सेर, गौ का घी आधसेर, गौ का दूध एक सेर, शहद पावसेर लाकर रखछोड़े तथा बहमन सफेद, बहमन सुर्ख; सोंठ, सेमल का मूसला. प्रत्येक एक तोला. बादामकी गिरी चारतोले, पीपल छ॰ मासे मालव मिश्री चार तोले, सिंघाड़ा चार तोले. खोलंजान छ. मासे पिस्ता चार तोले इन सब को अलग अलग पीसकर सबसे पहिले बादाम, पिस्ता और सिंघाड़े मिलाकर घी में भूनले फिर [illegible]

खांड शहत और दुध इनको कलईके बरतनमें मंदी आगपर पकावै फिर सब चीजें डालकर हलुआ की रीतिसे भूनले फिर इस्में से दो तोले सेवन करने से वीर्य अधिक पैदा होता है पतला हो तो गाढा हो जाता है ।

पांचवीं दवा ।

बबूलकी छाल, फली, गोंद और कोंपल इन सबको बरावर ले कूट छानकर सबकी बराबर खांड मिलाकर एक तोले प्रतिदिन सेवन करने से पतला वीर्य गाढा हो जाता है ॥

छटी दवा ।

बरगद के फलको सुखाकर पीसले प्रमाण के अनुमार गौके पावभर दुध के साथ फाके तो वीर्य गाढ़ा हो जाता है ।

सातवी दवा ।

-सालम मिश्री, दोनो मूसली, सेमर का मूसला, घाडकी सोंठ यह सब डेढ डेढ तोले, सलजम के वीज, सोयाके बीज, गाजर के बीज प्याज के बीज, मिर्च, पीपल यह सब आठ आठ माशे, शहत पावसेर, लाल बूरा, पावसेर प्रथमही शहत और बूरेकी चाशनी कर उसमे ऊपर लिखी हुई सब दवाओं को मिलाकर माजून बनाले फिर इसमे से एक तोले नित्य सेवन करने से जननेन्द्रिय प्रबल होजाती है बिगड़ा हुआ वीर्य सुधर जाता है । इस दवा के सेवन काल में खटाई वर्जित है ॥

आठवी दवा ।

सालव मिश्री पांच तोले । शका कुल मिश्री तीनतोले, अकर करा । कुलीजन । समन्दर सोख । भिलायकी मिगी । असगंध एक २ तोले पीपल मस्तगी हालमके बीज, जायफल सोठ दोनों वहमन । दोनों तोदरी । छ २ माशे । छिलेहुए सफेद तिल, कौंचकेबीजोंकी मिगी । गाजरके बीज एक माशे जवत्री, केशर तीन

तीन माशे सबकी बराबर सफेद कंद ले और तिगुने शहत में सब मिलाकर माजून बनावे फिर छःमाशे नित्यखाय तोवीर्य गाढाहो जाताहै ॥

नवीं दवा ॥

रेग माही, इन्द्रजो, सफेद पोस्त के दानै, नर कचूर, सफेदचन्दन, नारियल की गिरी बादाम की मींगी अखरोट की मींगी, मुनक्का, काले तिल छिलेहुए ये सब दवा दो दो तोले प्याज के बीज, सलजम के बीज, कोंचके बीज की मींगी हालमके बीज माई असवंद के बीज, गाजर, मस्तगी, नागर मोथा अगर, तेजपात, बिजौरे की छिल्का चीता, सोया के बीज, मूली के बीज, दोनों तोदरी, दोनों मूशली; येसब दवा एक एक तोले सिलाजीत, अकरकरा, लौंग, जावत्री, जायफल, कालीमिर्च, दालचीनी' सब दवा नौ नौ माशे शहत और सफेद बूरा सबसे दूना लेकर पाकबनावे फिर इसमेंसे एक तोले नित्य सेवनकरे इसमाजून के समान गुह्येन्द्रिय को बलवान करने और वीर्य को गाढा करने मे दूसरी कोई दवा नहीं है ॥

ध्वजभंग का वर्णन ।

जिस मनुष्य में स्त्रीगमन की शक्ति नहीं होती है उसे क्लीववा नपुंसक कहते हैं। इस शक्ति के सर्वथा अभाव का नाम क्लैव्य वा नपुंसकता है ।

नपुंसक के भेद

नपुंसक सात प्रकार का होता है यथा-भय, शोक अथवा मन के अनुसार कार्य न होने से प्रथम प्रकार का नपुंसक होता है। मनके मारे जाने से दूसरी प्रकार का नपुंसक होता है। पित्त के प्रकोपसे तीसरा । अत्यन्त स्त्रीसंसर्ग से चौथा । कोई भया

नक लिंगरोग होने अथवा ब्रह्मचर्यादि व्रत के कारण वीर्य के स्तंभित हो जाने से छटा। और जन्मसे नपुंसक होना सातवां प्रकार नपुंसकता का है।

प्रथम प्रकार के लक्षण।

भय और शोक ये दो ऐसे कारण हैं जिससे देह भीतर ही भीतर घुन के खाये हुए काष्ठ की तरह होजाता है, और कभी स्त्रीसमागमकी इच्छा ही नहीं होती है। तथा मनके अनुकूल स्त्री न होने से कामोत्पत्ति होने पर रमणोत्सुक मनुष्य का मन मर जाता है कुछ दिन तक ऐसे कारणो के होने से क्रमसे उस मनुष्य की शिश्नेन्द्रिय पतित होजाती है। फिर सुन्दरी और मनोनुकूल स्त्री के प्राप्त होने पर भी रमण शक्ति का नाम मात्र भी नहीं रहता। इन सब कारणो से प्रथम प्रकार की नपुंसकता पैदा होती है।

दूसरे प्रकार के लक्षण।

दैवात् मनोऽनुकूल स्त्री न मिले, और जिसको मन न चाहता हो ऐसी स्त्री से संगम करना पडे तो दूसरी प्रकार की नपुंसकता होती है, इसी को मानसिक [मनसेसंबध रखने वाली] अथवा मनोभिघातज [मनके मारेजाने से उत्पन्न] नपुंसकता कहते हैं।

तीसरी प्रकार के लक्षण।

प्रमाण से अधिक क्षोल आदि तथा नमकीन रसों के सेवनसे, किसी प्रकार के उष्णवीर्यवाले और गरम पदार्थो के सेवनसे, पित्त अत्यन्त बढ जाता है इससे वीर्य की अत्यन्त क्षीगता हो जाती है, इसी हेतु से नपुंसकता पैदा हो जाती है, इसको पित्त से उत्पन्न हुई नपुंसकता कहते है।

तीन माशे सबकी बराबर सफेद कंद ले और तिगुने शहत में सब मिलाकर माजून बनावै फिर छःमाशे नित्यखाय तोवीर्य गाढाहो जाताहै ॥

नवीं दवा ॥

रेग माही, इन्द्रजौ, सफेद पोस्त के दानै, नर कचूर, सफेदचन्दन, नारियल की गिरि बादाम की मींगी अखरोट की मींगी। मुनक्का। काले तिल छिलेहुए ये सब दवा दो दो तोले प्याज के बीज, सलजम के बीज, कौंचके बीज की मींगी हालमके बीज, माई असवंद के बीज, गाजर, मस्तगी, नागर मोथा अगर, तेजपात, बिजौरे की छिलका चाता, सोया के बीज, मूली के बीज, दोनों तोदरी, दोनों मूशली, येसब दवा एक एक तोले सिलाजीत, अकरकरा, लोग, जावत्री, जायफल, कालीमिर्च, दालचीनी' सब दवा नौ नौ माशे शहत और सफेद बूरा सबसे दूना लेकर पाकबनावे फिर इसमेंसे एक तोले नित्य सेवनकरे इसमाजून के समान गुह्येन्द्रिय को बलवान करने और वीर्य को गाढा करने मे दूसरी कोई दवा नहीं है ॥

ध्वजभंग का वर्णन ।

जिस मनुष्य में स्त्रीगमन की शक्ति नहीं होती है उसे क्लीववा नपुंसक कहते हैं। इस शक्ति के सर्वथा अभाव क नाम क्लैब्य वा नपुंसकता है ।

नपुंसक के भेद

नपुंसक सात प्रकार का होता है यथा—भय, शोक अथवा मन के अनुसार कार्य न होने से प्रथम प्रकार का नपुंसक होता है। मनके मारे जाने से दूसरी प्रकार का नपुंसक होता है। पित्त के प्रकोपसे तीसरा। अत्यन्त स्त्रीसंसर्ग से चौथा। कोई भया·

नक लिंगरोग होने अथवा ब्रह्मचर्यादि व्रत के कारण वीर्य केस्तंभित हो जाने से छटा। और जन्मसे नपुंसक होना सातवां प्रकार नपुंसकता का है।

प्रथम प्रकार के लक्षण।

भय और शोक ये दो ऐसे कारण हैं जिससे देह भीतर ही भीतर घुन के खाये हुए काष्ठ की तरह होजाता है, और कभी स्त्रीसमागमकी इच्छा ही नहीं होती है। तथा मनके अनुकूल स्त्री न होने से कामोत्पत्ति होने पर रमणोत्सुक मनुष्य का मन मर जाता है कुछ दिन तक ऐसे कारणों के होने से क्रमसे उस मनुष्य की शिश्नेन्द्रिय पतित होजाती है। फिर सुन्दरी और मनोनुकूल स्त्री के प्राप्त होने पर भी रमण शक्ति का नाम मात्र भी नहीं रहता। इन सब कारणो से प्रथम प्रकार की नपुंसकता पैदा होती है।

दूसरे प्रकार के लक्षण।

दैवात् मनोऽनुकूल स्त्री न मिले, और जिसको मन न चाहता हो ऐसी स्त्री से संगम करना पडे तो दूसरी प्रकार की नपुसकता होती है, इसी को मानसिक [मनसेसंबध रखने वाली] अथवा मनोभिघातज [मनके मारेजाने से उत्पन्न] नपुसकता कहते हैं।

तीसरी प्रकार के लक्षण।

प्रमाण से अधिक क्षोल आदि तथा नमकीन रसों के सेवनसे, किसी प्रकार के उष्णवीर्यवाले और गरम पदार्थों के सेवनसे, पित्त अत्यन्त बढ जाता है इससे वीर्य की अत्यन्त क्षीणता हो जाती है, इसी हेतु से नपुंसकता पैदा हो जाती है, इसको पित्त से उत्पन्न हुई नपुंसकता कहते है।

चौथे प्रकार के लक्षण ।

जोमनुष्य रतिक्रिया की अत्यन्त सामर्थ्य रखता हो, और इस कारण से अतिशय स्त्रीससर्ग करता रहै और किसी प्रकार का कोई बलकारक आहार वा औषध सेवन न करे तो उसका भी शुक्र अत्यन्त क्षीण हो जाता है और धीरे धीरे ध्वजभंग रोगपैदा हो जाता है, यह चौथी प्रकार की नपुंसकता है।

पांचवीं प्रकार के लक्षण ।

कोई भयानक जननेन्द्रिय रोग के होने से वीर्यवाहिनी शिरा छिन्न हो जाती है,इस से छटी प्रकार की नपुसकता होती है ।

छटी प्रकार के लक्षण ।

जो मनुष्य अत्यन्त बलवान होने पर भी ब्रह्मचर्य व्रत के धारण का अभ्यास कर रहा हो, उस समय काम की उत्पत्ति होने पर भी उसको रोकले और स्त्रीसंसर्ग मे प्रवृत्त नहो। इस तरह काम शक्ति को रोकते रोकने वीर्य स्तंभित होजाता है, यह छटी प्रकार की नपुंसकता होती है ।

सातवी प्रकार के लक्षण ।

जो जन्म काल से ही नपुंसक होता है, उस के रोग की सातवीं प्रकार की नपुसकता होती है।

साध्यासाध्य निर्णय ।

किसी विशेष कारण से किसी व्यक्तिकीवीर्यवाहिनी शिरा छिन्न होकर नपुंसकता उत्पन्न हो, अथवा जो जन्म से ही नं पुंसक हो, ये दोनों प्रकार के नपुंसक किसी प्रकार की औषधा दिसे अच्छे नहीं हो सकते है, इसलिये ये असाध्य होते हैं। इन के सिवाय अन्य प्रकार के नपुंसक अच्छी चिकित्सा से आरो ग्य हो जाते हैं, इस लिये ये साध्य होते हैं। जिन जिन कारणो

से इन को नपुंसकता हुई है, उन कारणों के विपरीत चिकित्सा करना उचित है ।

ध्वजभंग की चिकित्सा ।

(१) गौ के पाव भर दूध में तीन छुहारे औटा कर प्रतिदिन सेवन करने से रतिशक्ति बढ जाती है और ध्वजभंग को भी आराम होजाता है ।

(२) नागकेसर के फूल का अतर एक रत्ती प्रतिदिन सायंकाल के समय पान मे रखकर खाय और इतनाही उपस्थ पर मर्दन करे और ऊपर पान बांध दे तो रतिशक्ति की वृद्धि होती है और अनेक प्रकार का ध्वज भंग जाता रहता है ।

(३) वायु वा पित्त की अधिकता के कारण रतिशक्ति कम होगई होतो पाव सेर गौ के दुग्ध के साथ एक तोला ईसब गोल पीस कर प्रतिदिन पान करे तो चार पांच दिन में हीं उक्त रोग को आराम होजाता है ।

(४) परिष्कृत सुरा (Rectified Spirit) एक तोला लेकर उस में आधे कुचले को चन्दन की तरह घिस कर गरम कर के उपस्थ के ऊपर लेप की तरह लगावे । ऊपर से पान बांध कर कपड़े की पट्टी बांध दे । इस तरह रात भर रहने दे । तीन चार दिन इसतरह करने से ध्वज भंग रोग को आराम हो जाता है ।

(५) गोखरू के बीज, कमाच के बीज, तालमखाने, असगंध, मितावर, खरैटी, मुलहटी, इन सबको समान भाग लेकर चूर्णकरले,इनसबकेसमान गौके घीमें इनको भूनले। फिर सब चूर्ण से आठ गुना गौका दूध तथा दुगनी साफ चीनी का रस करके चासनी करले, इसमे उक्त चूर्ण को डालकर मिलाले फिर झाडी वेरकी बराबर गोली बनावे । तदनंतर रोगी की आयु तथा बलकी विवेचना करके एक, दो अथवा तीनचार

तक इन गोलियों को ठंडे जलके साथ सेवन करावै । इस औषध के सेवन करने से अत्यन्त बलकी वृद्धि होती है तथा अनेक प्रकार के ध्वजभंग भी जाते रहते हैं ।

(६) विदारीकंद को विदारीकंद के रसकी सात भावना देकर मटर के बराबर गोली बनावे । इसमें से प्रतिदिन एक गोली प्रातःकाल के समय ठंडे जलके साथ सेवन करे तो ध्वजभंगरोग जाता रहता है ।

(७) सफेद सांठ की जड १६ तोले लेकर सेगर की जड के रसमें तीन भावनां देवे । फिर मोचरस का चूर्ण सोलह तोले शुधी हुई गंधक ३२ तोले, मिलाकर खूब पीसकर चूर्ण बनावें । फिर घी और शहत के साथ छःछः माशे की गोलिया बनावेइन मे से प्रतिदिन प्रातःकाल के समय एक गोली घी और शहत के साथ सेवन करे। औषध सेवन के पीछे गौका थोडासा दूध पिलिया करे। इससे शरीर बलवान होजाता है और ध्वजभंगरोग भी जाता रहता है ।

(८) दही चार सेर, परिष्कृत चीनी एक सेर, शहत चार तोला, गौका घी पावसेर, सोंठका चूर्ण तीन माशे, बडी इलायचीका चूर्ण तीन माशे, कालीमिरच का चूर्ण एक तोला, लौंगका चूर्ण एकतोला इन सब दवाओंको आपसमें अच्छीतरह मिलाके और एक साफ मोटे कपडे मे इसे छानकर रखले। फिर एक मिट्टी का घडा ले उस में कस्तूरी चन्दन और अगर की धूनी दे और कपुर की गध से सुवासित करे । फिर इस पात्र में उक्त दवा को भर कर अच्छी तरह ढक दे। इस को रसाल कहते है । इस का मात्रानुसार सेवन करने से शरीर बलिष्ठ और कामोद्दीपन होता है । तथा अनेक प्रकार का ध्वजभग भी जाता रहता है ।

(९) मुलहटी, लोध, प्रियंगु प्रत्येक डेढ माशे लेकर इस में आधा सेर सिरस का तेल मिलावे। फिर इस तेल से उपस्थ में पसीने देवे। इस से अनेक प्रकार के ध्वजभंग को शीघ्र ही आराम होजाता है।

हमीकी मतसे नपुंसक होने का निदान।

मनुष्य के नपुंसक होने के कई कारण है एक तो यह कि वहहथरस(हाथसे जननेन्द्रियका मर्दन करके वीर्य निकालना)करके नपुंसक बन बैठनाहै।इसके भी दो भेद है एक तो यह कि जाडे के दिनो में सोते समय रात्रि को यह काम करता है यह तो साध्य है इस की चिकित्सा जल्दी हो सकती है और दूसरा यह कि कोई कोई पाखाने में या किसी मैदान में हथरस करते हैं एक हथरस करना ही बुरा है दूसरे ये मूर्ख इस काम को कर के उसी वक्त पानी से धोडालते हैं गरम नसो पर ठंडा पानी पडा और ऊपर से हवा लगी इस सबब से नसे नष्ट हो जाती हैं कोई कोई मूर्ख नित्य नियम बाध कर ऐसा करते रहते हैं और कोई दस पाच दिन के अंतर से करते हैं जब तक दो चार वर्ष तरुणाई रहती है तब तक कुछ मालूम नहीं होता अंत में रोते पीटते दवा पूछते फिरते हैं।

उक्त नपुंसक की दवा।

हाथी दांत का चूरा एक तोला, मछली के दांत का चूरा एक तोला, लौंग आठ माशे, जायफल गुजराती एक, नरगिस की जड एक नग, इन सब को महीन पीस कर दो पोटली बनावे और आध पाव भेड का दूध हांडी में भर कर औटावे जब उसमें से भाप उठने लगे तब उस भाप पर उन पोटलियो को गरम करके पेडू आदि और जननेन्द्रिय को सेके फिर बंगला पान

बाध देवे और पानी न लगने देऔर नीचे लिखी दवा खाने कोदे ।

खाने की दवा ।

चिलगोजे की मिंगी, सफेद पोस्त के दाने,काली मूसली कुलीजन, लौंग फूलदार, सालव मिश्री, जावित्री, विदारी ताल मखाने, बीजबंद, सितावर ब्रह्मदंडी और तज, ये दवा चार चार तोले,पिटकव्वा नौ माशे। इन सब को पीस कर घी में सानकर आध सेर शहत की चाशनी लावे और इस में से दो दो माशे दोनों समय खाया करे चालीस दिन में आराम होजायगा ॥

दूसरा लेप ।

सफेद कनेर की जड, गुजराती जायफल, अफीम,छोटी इलायची, संबुल की जड, पीपलामूल प्रत्येक छः छ माशे इन सब को महीन पीस कर एक तोले मीठे तेल में मिलाकर खरल करे जब मरहम के सदृश हो जाय तब उपस्थ पर लगा कर ऊपर से बंगला पान गरम कर के बांधे और जो इस के कारण से प्रमेह हो जाय तो नीचे लिखी दवा खाने को देवे ।

खाने की दवा।

काली मूसली, नागोरी असगंध, धाय के फूल,भुने चने मोंठ, उटगन के बीज, पिस्ते के फूल, तालमखाने, ये सब एक एक तोले इन सब को महीन करिके बराबरका बूरा मिलाकर इस में से एक तोले नित्य सेवन करे ऊपर से गौ का पाव भर दूध पीवे खटाई और बादी से बचता रहे ।

यदि करमर्दन से जननेन्द्रिय टेढी हो गई हो तो उस की दवा यह है ।

अफीम तीन माशे, जायफल, अकरकरा, दालचीनी

ये सब दवा पांच पांच माशे,प्याज,और नरगिस एक एक तोले, सफेद कनेर की जड का छिलका १॥ तोले, इन सब को दो पहर तक शराब मे घोट कर जननेन्द्रिय पर लगावे अथवा इस की गोली बनाकर रखले।लगाते समय शराब मे घिसकर लगावे तो जननेन्द्रिय का टेढापन दूर हो जाता है।

नपुंसक होने का दूसरा कारण ।

कोई कोई लडकों के साथ कुमार्गगामी होने से नपुंसक हो जाते हैं और और वे स्त्रीसंगम के काम के नहीं रहते उन की चिकित्सा नीचे लिखी रीति से करनी चाहिये ।

उक्त नपुंसक का इलाज ।

संखिया, जमालगोटा, काले तिल, आक का दूध ये सब एक एक माशे लेकर महीन पीस थोडे से पानी में मिलाकर जननेन्द्रिय पर लेप करे और ऊपर से बंगला पान गरम करके बाध देवे जब छाला पडजाय तब धुला हुआ घी चुपड दे अथवा नीचे लिखा हुआ तेल लगावे ।

बीरबहुट्टी, अकरकरा, सूखे केंचुए, घोडे का नख,कुलीजन ये सब एक एक तोले लेकर सबको जौकुट करके आतशी शीशी मे भर पाताल यंत्र द्वारा खीच करे एक बूंद जननेन्द्रिय पर मल कर ऊपर से बंगला पान बाध देवे तो चालीस दिन में आराम हो जायगा।।

दूसरा लेप ।

जायफल, जावत्री, छरीला, मनुष्य के कान का मैल,प्रत्येक छ छ माशे, गधेकेअंड कोशों का रुधिर चार तोले। इन सब को दुआतशी शराब मे इतनी देर तक घोटना चाहिये कि पाव भर शराब को सोखले फिर इसकी जननेन्द्रिय पर मालिश करे।

तीसरा लेप ।

कडवे घीया की मिगी दो तोले, सफेद चिरमिठी, अकरकरा छः छः माशे, तेजबल, और पीपलामूल प्रत्येक तीन माशे, इन सब को गौके घृत में तीन दिन तक घोटे, फिर इसको जननेन्द्रिय पर लगाकर पान बांध दे इससे नपुंसकता दूर हो जाती है ।

चौथा लेप ।

जमाल गोटे को गधे की लीद के रस में औटाकर सफेद चिरमिठी, कुचला जलाहुआ, अकरकरा, सफेद कनेर की जड का छिलका प्रत्येक दोदो तोले, इन सब को पीस कर गौके दूध में इतना घोटे जो तीन सेर दूध सूख जावे । फिर यंत्रद्वारा खींच कर इस का लेप लिंगमणि को बचाकर जननेन्द्रिय पर करे ऊपर से पान बांधदे ॥ इस तरह करते रहनेसे नपुंसकता जाती रहती है ।

पांचवां लेप ॥

सफेद कनेर कीजड, लाल कनेरकी जड, इनदोनोंका छिलका डेढ डेढ तोले, बडा जायफल एक, अफीम नौ माशे, इन सबका चूर्ण करके बडे गोहकी चर्बी दो तोले मिलाकर एक दिन घोट कर गोली बनाले और शराब दु आतशीमें घिसके लिंगमणिको छोडकर संपूर्ण उपस्थ पर लगावे और ऊपरसे पान बांधे ॥

छटा लेप ॥

सफेद कनेरका छिलका आधपाव, सफेद चिरमिठी आधपाव, कडवा कूट २ तोले, जमालगोटा २ तोले, इन सबको चूर्ण कर १५ सेर गौकेदूधमें मिलाकर पकावे।फिर इसका दही जमावे फिर प्रातःकाल ४ सेर पानी मिला कर इसको रई से बिलो कर

माखन निकाले और इसके मठे को पृथ्वी मे गाढदेना चाहिये क्यो कियह बिष के समानहै और माखनको तपाकर रखले फिर इसमे गुह्येन्द्रिय पर लेपकरे ऊपरसे पान बांधे और एक रत्ती के प्रमाण पानमे धरके खाय तो पन्द्रह दिनमें आराम होजायगा ॥

यदि किसी मनुष्यने बालकपनमें विलोममार्गगमन कराया होय और जननेन्द्रिय परभी मर्दन कराया हो और सी कारण से नपुंसक हुआहो तो उसकी चिकित्सा नहीं होसक्ती और जो केवल विलोमार्गगमन कराया होतो इसकी दवाई इस रीतसे करे कि पहिले उस नुसखेसे सेक करै जिसमें हाथीदांत का चूरा लिखाहै ।

उक्त रोग की दवा।

गेंहूंकामेदा ५ तोला, वेसन ७ तोले पहिले इनको ५ तोले घीमें भूनले पीछै बादामकी मिगी, पिस्ता की मिंगी, चिलगोजे की मिंगी, नारियल की गिरी, खूबानी छःछःमाशे सालव मिश्री १ तोले, लाल बहमन, सफेद बहमन तीन तीन माशे, सकाकुल छःमाशे, अम्बर असहब, कलमी दालचीनी प्रत्येक तीन माशे इनसबको कूटपीस कर वेसन वा मेदा में मिलावे और दस तोले मिश्री तथा पांच तोल शहत इनको दस तोले गुलाव जल मे चाशनी करके उसमे सब दवा मिलाकर माजून बनाले फिर इसमे से दो तोले प्रतिदिन सेवन करे और खटाई और बादीकी चीजो से परहेज करै ॥

नपुंसक होने का अन्य कारण ॥

नपुंसक होने का एक यहभी कारण है कि बहुतसे मनुष्य युवावस्थामें स्त्री से समोग करते समय किसी के भय से समागम का परित्याग कर उठ खडे होतेहैं। इस दशा में यदि वीर्य स्खलित

न हुआ हो और फिर थाडी देर पीछे स्त्रीसे सहवास हो तो इस तरह हवा लगने से जननेंद्रिय की नसें ढीली हो जाती हैं ।

उक्त नपुंसक का इलाज ।

ग्वारपाठे का रस १० तोले,मूंग का आटा १० तोले, इन दोनों को पृथक् २ घृत में भूने फिर छोटे बडे गोखरू, पिस्ता, तालमखाने, बादामकी मिंगी, ये सब दो दो तोले कूट छानकर मिलावे, और पावभर कंदकी चाशनी मे सबको मिलाकर माजून बनाले और इसमें से दो तोले प्रतिदिन सेवन करे और इन्द्री पर यह दवा लगा ॥

लेपकी विधि ।

अक करा,सफेदकनेरकीजड,मालकांगनी.सोनामाखी,काले तिल, सिंगरफ, हरताल तबकिया, सफेद चिरमिठी, मूली के बीज, शलगम के बीज, बीर बहुटी, शीतलचीनी, सिंहकी चरबी यह सब दवा एकतोले लेकर सबको जौकुटकरके आतशी शीशी में भरकर पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाले और रातको सोते समय एक बूंद जननेंद्रिय पर मलकर ऊपर पान गरम कर के बांध देवै तो २१ दिन मे नपुसकता जाती रहेगी ॥

अन्य विधि ।

अकरकरा, लौंग, केंचुए, आसगंध, यह सब एक एकतोले वीरबहुट्टी ४ माशे, मुर्दासंग ४ माशे, रोहूमछली का पित्ता ४ नग, सिंगरफ ४ माशे, जमालगोटा ४ माशे, साहेकी चर्बी तीन तोले, मोम दो तोले, पारा एक तोले, इन सबको मिलाके खूब रगडे, जब मरहम के सदृश होजाय तो रातको गरम करके जननेंद्रिय पर लेप करै और पान गरम करके बाध देवे इस पर पानी न लगने दे ॥

अन्य विधि ।

धतूरेकी जडका छिलका । सफेद कनेरकी जडका छिलका आककी जडकी छाल, अकरकरा गुजराती, वीरवहुटी; गौ का दूध यह सव एक एक तोले लेकर पीसे और दो तोले तिलके तेल मे पकावे जव औषधि, जलजाय तव तेलको छानले फिर जननेन्द्रिय पर मर्दन करै ऊपर पान गरम करके वाधे और पानी न लगने दे ।

नपुंसक होने का अन्य कारण ।

नपुंसक होने का एक यहभी कारण होता है कि वहुत से मनुष्य स्त्री को जननेद्रिय पर विठाके खडे हो जाते हैं और वहुत से मनुष्य विपरीत रति मे प्रवृत होते हैं इस प्रकार के संभोग करने से भी नपुंसक होजाते हैं क्योकि उपस्थ में हड्डी नही होती नजाने मनुष्य क्या ज.नकर ऐसा अयोग्य काम करते हैं ।

उक्त नपुंसक का इलाज ।

वादामकी मिंगी ११ नग, ताजे पानी में पीसकर दो तोले शहत मिलाकर ग्यारह दिन तक पीवे तो नपुंसकता जाती रहतीहै

अन्य उपाय ।

सफेद कनेरकी जड का छिलका दो माशे मालकांगनी दोमाशे कोंच के वीज, सफेद प्याज के वीज, अकरकरा, असवंद यह सव चौदह २ माशे, इन सवको जौ कुट करके दस तोले तिल के तेल मे मिलाकर औटावे, जव दवाई जलने लगे तव छान कर रख छोडे फिर इसमें थोडासा रात्रि के समय जननेंद्रिय पर मलकर ऊपर पान गरम करके वाधे ॥

नपुंसक होने का अन्य कारण ॥

एकनपुंसक जन्मसेही होता है उसे संस्कृतमे सहज नपुंसक

न हुआ हो और फिर थाडी देर पीछे स्त्रीसे सहवास हो तो इस तरह हवा लगने से जननेंद्रिय की नसें ढीली हो जाती हैं।

उक्त नपुंसक का इलाज।

ग्वारपाठे का रस १० तोले, मूंग का आटा १० तोले, इन दोनों को पृथक् २ घृत में भूने फिर छोटे बड़े गोखरू, पिस्ता, तालमखाने, बादामकी मिंगी, ये सब दो दो तोले कूट छानकर मिलावे, और पावभर कंदकी चाशनी में सबको मिलाकर माजून बनाले और इसमें से दो तोले प्रतिदिन सेवन करै और इन्द्री पर यह दवा लगा ॥

लेपकी विधि।

अक करा, सफेदकनेरकीजड, मालकांगनी सौनामाखी, काले तिल, सिंगरफ, हरताल तबकिया, सफेद चिरमिठी, मूली के बीज, शलगम के बीज, बीर बहुटी, शीतलचीनी, सिंहकी चरबी यह सब दवा एकतोले लेकर सबको जौकुटकरके आतशी शीशी में भरकर पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाले और रातको सोते समय एक बूंद जननेंद्रिय पर मलकर ऊपर पान गरम कर के बांध देवे तो २१ दिन मे नपुसकता जाती रहेगी ॥

अन्य विधि।

अकरकरा, लौंग, केंचुए, आमबच, यह सब एक एकतोले बीरबहुट्टी ४ माशे, मुर्दासंग ४ माशे, रोहूमछली का पित्ता ४ नग, सिंगरफ ४ माशे, जमालगोटा ४ माशे, साहेकी चर्बी तीन तोले, मोम दो तोले, पारा एक तोले, इन सबको मिलाकर खूब रगडे, जब मरहम के सदृश होजाय तो रातको गरम करके जननेंद्रिय पर लेप करै और पान गरम करके बांध देवे इस पर पानी न लगने दे ॥

अन्य विधि ।

धतूरेकी जडका छिलका । सफेद कनेरकी जडका छिलका· आककी जडकी छाल, अकरकरा गुजराती, बीरबहुटी; गौ का दूध यह सब एक एक तोले लेकर पीसे और दो तोले तिलके तेल मे पकावे जब औषधि, जलजाय तब तेलको छानले फिर जननेंन्द्रिय पर मर्दन करै ऊपर पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दे ।

नपुंसक होने का अन्य कारण ।

नपुंसक होने का एक यहभी कारण होता है कि बहुत से मनुष्य स्त्री को जननेंद्रिय पर बिठाके खडे हो जाते हैं और बहुत से मनुष्य विपरीत राति मे प्रवृत होते हैं इस प्रकार के संभाग करने से भी नपुंसक होजाते हैं क्योंकि उपस्थ में हड्डी नही होती नजाने मनुष्य क्या ज.नकर ऐसा अयोग्य काम करते हैं ।

उक्त नपुंसक का इलाज ।

बादामकी मिंगी ११ नग, ताजे पानी में पीसकर दो तोले शहत मिलाकर ग्यारह दिन तक पीवे तो नपुंसकता जाती रहतीहै

अन्य उपाय ।

सफेद कनेरकी जड का छिलका दो माशे मालकांगनी दोमाशे कोंच के बीज, सफेद प्याज के बीज, अकरकरा, असवद यह सब चौदह २ माशे, इन सबको जौ कुट करके दस तोले तिल के तेल मे मिलाकर औटावे, जब दवाई जलने लगे तब छान कर रख छोडे फिर इसमें थोडासा रात्रि के समय जननेंद्रिय पर मलकर ऊपर पान गरम करके बाधे ॥

नपुंसक होने का अन्य कारण ॥

एकनपुंसक जन्मसेही होता है उसे संस्कृतमे सहज नपूंसक

कहते है उसके कई भेद है एकतो यह कि मनुष्य माता के गर्भ से जब उत्पन्न होताहै तो उसकी इन्द्रियस्थान पर किसी प्रकार का कुछभी चिन्ह नहीं होता उसको संदली ख्वाजेसरा कहते हैं और दूसरे यह कि कुछ कुछ चिन्ह होता है और उसको संभोग की इच्छाभी होती है और उसके संतान होती है ॥

तीसरे यह कि चिन्ह तो पूरा होता है परंतु उसमें प्रबलता नहीं होती बस इन तीनो की कोई चिकित्सा नहीं ॥ चौथे यह कि मूतने के समय जननेंद्रिय में प्रबलता हो और मूत्र करके पीछे कुछ नहीं ऐसे नपुंसक की यह चिकित्सा करे।

– दवा सेक।

बीर बहूटी, सूखे केंचुए, नागौरी असगंध, हल्दी,आमा हल्दी, भुने चने ये सब छ. छः माशे ले इन सब को महीन पीस-कर रोगन गुलमे चिकना करदो पोटली बनावे और किसी पात्र को आग पर रख कर उसपर पोटली गरम कर जांघ पेट और उपस्थ को खूब सेकै और फिर पोटली की दवा जननेन्द्रिय पर बांधदे।

दूसरी दवा।

अकरकरा दो माशे, बीरबहूटी दो माशे, लौंग बीस, बकरे की गर्दन का मास दस तोले इन सबको कूट पीसकर जननेंद्रियकी बराबर गोली बनावे, और उसको भूनकर इन्द्रिय के चारों ओर चढावै और पानी न लगने दे ॥

तीसरी दवा।

सिंहकी चरबी, मालकांगनी, अकरकरा, सोंठ, जावित्री कुचला, तज, लोहबान कौडिया, लौंग, मीठातेलिया, हरताल तबकिया, जमालगोटा, पारा, हाथी दांतका चूरा, गंधक आ

मलासार, कटेरी सफेद, चिरमिठी, सुखे केचूह, जायफल गुजराती, सफेद कनेरकी जड, अजवायन खुरासानी प्याज के वीज, असपंद, सफेद संखिया, अंडी के वीजोंकी मिंगी काली जीरी ये सव एक एक तोले मुर्गी के अडोंकी जर्दी पांच नग इस सबको कूट कर आतशी शीशीमें भर कर पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाल ले फिर इस में से एक बूंद तेल नित्य जननेन्द्रिय पर मर्दन करे और ऊपर से पान गरम कर के बाधे और पानी न लगने दे और खटाई तथा वादी करने वाली वस्तुओं का सेवन त्याग दे चालीस दिन तक इसी तरह करने से इस प्रकारकी नपुंसकता जाती रहती है ।

खाने की दवा ।

ग्वार पाठे का रस, गेहूंकी मैदा, विनोलेकी मिंगी घृत, कंद ये सब सेर सेर भरले पहिले तीनों वस्तुओं को पृथक् २ घृत में भून कर कंदकी चाशनी करके गोखरू, एक छटांक, जायफल, पिस्ता, खोपरा, चिलगोजाकीमिंगी, अखरोटकी मिंगी, यह सब दवा पावसेर, इन सबको कूटकर उसमें मिलाकर हलुआ बना रक्खे फिर इसमें से पांच तोले प्रतिदिन सेवन करने से नपुंसकता जाती रहती है ।

नपुंसकताका अन्य कारण ।

अत्यन्त स्त्री संभोग वा वेश्यागमन से भी नपुंसकता हो जाती है उसके लिये नीचे लिखी हुई दवा देनी चाहिये ।

कुलीजन दो तोले, सोंठ दो तोले, जायफल, रूमीमस्तंगी दालचीनी, लोंग नागरमोथा, अगर, यह सब दवा एक २ तोले इन सबको पीस छानकर तिगुने वूरेकी चाशनी में मिला कर माजुन बनाले फिर इसमें से छः माशे प्रतिदिन सेवन करने से स्त्रीगमनकी विशेष इच्छा होगी । यदि वीर्य के पतला पड जाने

के कारण से कामोद्दीपन न होता हो तो उसको यह दवा दे।

वीर्य को गाढा करनेवाली दवा।

तालमखाने आधपाव, ईसबगोल आधपाव इनको बरगद के दूध मे भिगोकर छाया में सुखाले फिर चालीस छुहारों की गुठलें निकाल कर उसमें ऊपर लिखी दवा भरकर गौ के सेर भर दूध में औटावे जब खोये के सदृश गाढा हो जाय तब उतार कर किसी घी के पात्र में रख छोडे फिर एक छुहारा नित्य ४० दिन तक खाय और दूध रोटी भोजन करे।

लेपकी दवा।

दक्षिणी अकरकरा, लोंग फूलदार, बीरबहुटी, निर्बिसी। सूखे केचुए। सब एक २ तोले ले इन सबको पावसेर मीठे तेल में मिलाकर मिट्टीकी हांडी मे भरकर उसका मुंह बंद कर चूल्हे में गढा खोदकर उसमें इस हांडी को दाबकर ऊपर से सात दिनतक बराबर रात दिन आग जलावे फिर आठवें दिन निकाले। और इसमें से एक बूंद जननेंद्रिय पर मलकर ऊपरसे पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दे।

अथ वाजीकरण।

नुसखा।

सिंगरफ १ तोले। सुहागा १ तोले। पारा छः माशे। इन चारों को महीन पीसके मुर्गीके अंडेकी सफेदी में रक्खे, फिर ढाई सेर ढाककी राख लेकर एक मिट्टी की हांडी में आधी राख भरकर उस अंडे को उस राख पर रखकर आधी राखको ऊपर से रखकर हांडी का मुख बंदकर मुल्तानी मिट्टी में कपरछन कर लपेटकर सुखादे जब सूखजाय तब चूल्हे पर रखकर ढाककी लकडीकी चार पहर आग उसके नीचे जलावे फिर सीतल हो जाय तब सिंगरफ को निकाल ले फिर इस में से एक रत्ती पान में रखकर सेवन

करने से कामोद्दीपन होता है इस दवा को जाडे के दिनों में सेवन करना उचित हैं ।

दूसरा प्रयोग ।

सिंगरफ, कपूर, लौंग, अफीम, उटंगन के वीज, इन को महीन पीस कर कागजी नींबूके रसमें घोट कर मूंगके बरावर गोली वनाले फिर एक गोली खाकर ऊपर से पावभर गौ का दूध पीकर रमण करने से स्तभन होता है ।

तीसरा प्रयोग ।

सूखा तमाखू, और लौंग, दोनों वरावर के महीन पीसके शहत मे मिलाकर उर्दके बराबर गोलियां बनाले इनमें से एक गोली खाकर सभोग मे प्रवृत होना चाहिये ।

चौथा प्रयोग ।

पोस्तके डोरे एक तोले पानीमें भिगोदे जब भीगजांय तब उसके नितरे जलमें गेहूं का आटा माढ कर उसका एक गोला बनाकर गरम चूल्हे में दवादे जब सिककर लाल होजावे तव निकाल कर कूटले फिर थोडा घी बुरा मिलाकर मलीदा वनाले जव एक पहर दिन वाकी रहे तव उसे खाय यह अत्यन्त पौष्टिक और वलकारक है ।

पांचवां प्रयोग ।

थूहर का दूध और गौ का दूध इन दोनों को बराबर लेके मिलाकर चार पहर धूप में सुखावे फिर पावके तलओंमें लेपकर स्त्री प्रसंग करे पांवको धरती में न धरे ।

छटा प्रयोग ।

कौंचकी जड एक पोरएके बरावर लेंके मुखमे रक्खे जव तक मुखमें रहेगी तव तक वीर्य स्खलित नहोगा ।

सातवां प्रयोग ।

घचूंदर का अंडा चमडे के यत्र में धर कमरमें बांधकर स्त्री संगम करे जब तक यंत्र कमर से न खुलेगा तब तक वीर्य स्खलित न होगा ।

आठवां प्रयोग ।

सिंगरफ, मोचरस, अफीम, ये दो दो माशे, सुहागा एकमाशे इन सब को पीस कर काली मिर्च के बराबर गोली बनावे फिर एक गोली खाकर स्त्री सेवन करने से स्तंभन होता है ।

नवां प्रयोग ।

अजवायन, पांच माशे, घीया के बीजों की मिंगी छः माशे इसपंद नौमाशे, भांग के बीज आठ माशे, चनाखिल्ला सात माशे पोस्त की बोंडी दो नग इस सबको पीस छान कर पोस्त की बोंडी के रस में बेर के बराबर गोली बांधे फिर एक गोली खाकर एक घंटे पीछे स्त्री सेवन करने से स्तंभन होता है ।

दसवां प्रयोग ।

खरगोश के पित्ते का रस जननेन्द्रिय पर मर्दन करना भी स्त्री को दासी बनालेता है ।

ग्यारहवां प्रयोग ।

सिंहकी चरबी को तिल के तेल में मिलाकर इन्द्री पर मर्दन करके स्त्रीसंगम करे तो कामोद्दीपन बहुत होता है ।

बारहवां प्रयोग ।

ऊंटके दोनों नेत्रों को भुजा पर बांधकर संभोगकरने से वीर्य स्तंभन होता है ।

तेरहवां प्रयोग ।

ककोंदेकीजडऔर कंघी इन दोनों को बराबर जलमें पीसे इसका गुह्येन्द्रिय पर लेप करके संगम करने से स्त्री फिर दूसरे पुरुष की चाह न करेगी ।

वाजीकरण का प्रयोग।

वाजि घोडे को कहते, हैं। जिन प्रयोग और उपायों के द्वारा पुरुप बलवान् और अमोघ सामर्थ्यवाला होकर घोडेकी तरह स्त्री संगम में समर्थ होताहै, जिन वस्तुओंके सेवनसे कामिनीगणोंका प्रियपात्र हो जाता है और जिनसे शरीरकी वृद्धि होती है, उसी को वाजीकरण कहते हैं बाजीकरण औषधों के सेवनसे देह बडी कांतिमान् हो जाती है।

ब्रह्मचर्य्य को श्रेष्ठता।

ब्रह्मचर्य्य सेवन से धर्म, यश और आयु बढती है, इस लोक और परलोक दोनों में ब्रह्मचर्य्यव्रत रसायनरूप और सर्वथा निर्मलहै।अपनी स्त्रीके साथसंतानोत्पत्तिके निमित्त सगमन निर्मल ब्रह्मचर्य्य कहलाता है।

जो अल्पसत्ववाले है, जो सांसारिक क्लेशों से पीडित है, और जो कामी हैं,उनकी शरीररक्षा के निमित्त वाजीकरण करना चाहिये।

व्यवायकाल।

जो समर्थ, युवावस्था में भरपूर, और निरंतर वाजीकरण औषधों का सेवन करता रहता है उसको सव ऋतुओमें अहर्निश स्त्रीसंगमका निषेध नही है।

स्निग्धको निरूहणादि।

जिसको वाजीकरण करना हो स्निग्ध और विशुद्ध करके प्रथम घी, तेल, मांसरस, दूध शर्करा और मधुसंयुक्त निरूहण और अनुवासन देना चाहिये। और दूध तथा मांसरसका पथ्य देवै। तत्पश्चात् योगवित् वैद्य शुक्र और अपत्यवर्द्धक सन वाजीकरण योगों का प्रयोग करे।

अपत्यहीन की निंदा ।

जो मनुष्य संतानरहित होता है वह छायाहीन, फलपुष्प रहित और एक शाखा वाले वृक्ष की तरह निंदित होता है ।

अपत्यलाभ का महत्त्व ।

संतान चलने में बार बार गिर पड़ने वाली, तोतली वाणी वाली, धूल में लिपटे हुए अंग वाली तथा मुख में लार आदि टपकने वाली इन गुणों से युक्त होने पर भी हृदय में अल्हादोत्पादक होती हैं । ऐसी सतान के संसार मे दर्शन स्पर्शनादि विषयों में किस पदार्थ की तुलना हो सक्ती है अर्थात् उक्त गुणविशिष्ट सतान भी सांसारिक सब पदार्थों से तुलनीय नहीं हो सकती है जिसके द्वारा यश धर्म, मान, श्री और कुल की वृद्धि होती है । उसके साथ समानता करने के योग्य संसार में कौनसा पदार्थ है ।

वाजीकरण के योग्य देह ।

शरीर को संशोधित कर के जठराग्नि के बलके अनुसार आगे आने वाले संपूर्ण वृष्ययोगों का प्रयोग करना चाहिये ।

वाजीकरण प्रयोग ।

सर, ईख, कुश, काश, विदारी, और वीरण (खस)इनकी जड, कटेलीकी जड, जीवक, ऋषभक, खरैटी, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, सितावर, असगंध, अतिबला, कोंच, सांठ, भूम्यामलक, दुग्धिका, जीवंती, ऋद्धि, रास्ना, गोखरू, मुलहटी और शालपर्णी, प्रत्येक तीन पल, इनको एक आढक, इन सबको दो द्रोण जल में पकावे, एक आढक शेष रहने पर उतार ले, इस क्वाथ में एक आढक घी, विदारीकन्द का रस एक आढक, अमाले का रस एक आढक, ईखका रस एक आढक, दूध चार आढक, तथा भूम्यामलक, कोंच, काकोली क्षीरकाकोली, मुलहटी, काकोडुम्बर पीपल, दाख, भूमिकूष्माण्ड,

खिजूर, महुआ, सितावर, इनको पीसकर छानकर सात्र एकप्रस्थ मिला देवे' और पाकविधानोक्त रीति से पकावे, पाक हो जाने पर घी को छानकर उसमें शर्करा एक प्रस्थ, वंशलोचन एक प्रथ, पीपल एक कुडव कालीमिरच एक पल, दालचीनी इलायची और नागकेसर प्रत्येक आधा पल और शहत दो कुडव इन कोमिलादेवै, इस घृतमें से प्रतिदिन एक पल सेवन करे और मांसरस तथा दूध का अनुपान करे। इस घृत का सेवन करने से घोडे और चिरोंटे के सदृश स्त्रीसंगम में प्रवृत्त हो सकता है ।

अन्य चूर्ण ।

विदारीकन्द, पीपल शालीचांवल चिरोंजी, तालमखाना और केंचकी जड, प्रत्येक एक कुडव, शहत एक कुडव, शर्करा आधा तुला, ताजा घी आधा प्रस्थ, इन द्रव्यों'को मिलाकर प्रति दिन दो तोले सेवन करने से सौ स्त्रियों के साथ सभोग की शक्ति हो जाती है ।

अन्य प्रयोग ।

जो मनुष्य गेंहू और केंचके बीजों को दूधमें पकाकर ठंडा करके खाय, अथवा उरद घी और शहत मिलाकर खाय,। ऊपर से पहिले व्याही हुई गौ का दूध पान करे, ऐसा करने से वह मनुष्य रात्रि भर स्वयं खेद को अप्राप्त हुए स्त्रियो को खेदित करता हुआ रति मे प्रवृत्त रहता है ।

अन्य प्रयोग ।

बकरे के अंडों के साथ दूध को पकाकर उस दुध की काले तिलों में वार वार भावना दवे । इन तिलोके खाने से मनुष्य गधे की तरह मैथुनोन्मत्त हो जाता है ।

शर्करा के साथ सेवन करता है उस में शत स्त्री संभोग की शक्ति चढजाती है, और वह प्रथम समागम कासा सुख अनुभव करता है ।

अन्य प्रयोग ।

विदारीकंद के चूर्णको विदारीकंद के रससे ही बहुत बार भावना देकर उस चूर्णको घी और शहत के साथ चाटने से शत स्त्रीगमन की सामर्थ्य होजाती है ।

अन्य चूर्ण ।

पीपल और आमले का चूर्ण करके उसमें आमले के रसकी भावना दे और इसको शर्करा, मधु और घी क साथ चाटकर ऊपर से दूधका अनुपान करे तो अस्सी वर्षका वृद्ध भी तरुण की तरह स्त्री संगम में समर्थ होजाता है ।

अन्य प्रयोग ।

मुलहटी काचूर्ण एक कर्ष लेकर उसमें घी और शहतमि-लाकर चाटे ऊपर से दूधका अनुपान करे, उस मनुष्य का मैथुनवेग कभी मनष्ट नहीं होती है ।

अन्य प्रयोग

काकडासिंगी के कल्क को दूध में मिलाकर पान करे और शर्करा घृत और दूध के साथ अन्नका भोजन करे, इससे मै-थुनकी अत्यन्त सामर्थ बढ जाती है ।

अन्य प्रयोग ।

जो मनुष्य दूधके साथ क्षीरकाकोली को पकाकर घी और शहत के साथ पान करे ऊपर से बहुत दिनकी व्याही हुई गौका दूध पीवे तो उसका शुक्र क्षीण नहीं होने पाता है ।

अन्य प्रयोग ॥

उक्त रीतिसे भूम्यामलक और शतावरी के चूर्णका प्रयोग करने से भी उक्त फल होता है ।

दही की मलाई का प्रयोग ।

चन्द्रमाके समान सफेद वस्त्रमार्जित दहीकी मलाई के साथ शर्करा मिलाहुआ शाली चांवलों का भात खानेसे वृद्ध भी तरुण के सामन आचरण करने लगता है ।

अन्य प्रयोग ॥

गोखरू, तालमखाना, उरद, कौंच के बीज, सितावर इस चूर्णको दूधके साथ सेवन करने से वृद्ध भी शतस्त्री संभोग की सामर्थ्य प्राप्त करलेता है ।

पौष्टिक प्रयोग ॥

जो जो पदार्थ मधुर, स्निग्ध, बृंहण, बलवर्द्धक औरमनमें हर्षोत्पादक है वे सबही वृष्य होते हैं ।

संभोग विधि ।

ऊपर कहे हुए पौष्टिक द्रव्यों के सेवन से दर्पित होकर आत्मवेग से उदीर्ण और स्त्रियों के गुणोसे प्रहर्षित होकर स्त्री संगम में प्रवृत होना चाहिये ।

गठिया का इलाज ॥

यह रोग उपदंश और सोजाक और ज्वरकेअंतमें हो जाया करता है उपदंश रोगमें पारा मिलाये सिंगरफ आदि के खाने से और शरीर को धूनी देनेसे अथवा सोजाक में शीतल औषधियों के सेवन करनेसे गठिया हो जाती है और ज्वरमें पासोया किया जावे और उस में वायु लगजाय तो सब रगोंमें जोडोंमेंपीडा होजाती है अर्थात् दर्द हुआ करता है ऐसा होनेसे वहुधा तेल का मर्दन करते हैं परन्तु ज्वरमें तेल मलनेसे सूजन

होती है इस लिये गठिया का इलाज उस समय करना चाहिये जब देह में कोई दूसरा रोग मालूम नहो इस की चिकित्सा इस रीति से करनी चाहिये ।

गठिया की दवा ।

मुर्गी के चालीस अंडोको औटा कर उनकी सफेदी दूर करके जर्दी को निकाल कर रखले फिर अकरकरा, दालचीनी, कायफल, लोंग, येसब दवा एक एक तोले समुद्र खार एक माशे इन सबको महीन पीस कर उक्त जर्दी में मिलाके एक हांडी में भरकर ऊपर से दो तोले मीठा तेल छिडक देवे और उस हांडी के पेंदे में एक छिद्र करके एक गढा खोद कर उसके ऊपर हांडी को रखे और उस हांडी के नीचे उस गढे में एक प्याला चीनी का रक्खे और हांडी के चारों ओर उपले लगा कर आग लगा देवे इस तरह से थोडी देर में उस छिद्र द्वारा तेल टपकटपक कर प्याले में आजावेगा फिर इस तेल को जोडों पर मर्दन करै और वायु न लगने दे इससे एक हफ्ते भरमें बिलकुल दर्द जाता रहेगा यह दवा कितनी ही बार परीक्षा की हुई है ।

दूसरा प्रयोग ।

बबूल, अमलतास,और सहजना इन तीनोंके सूखे हुए पत्ते दो दो तोले और सोये,के बीज खुरासानी अजवायन, सोरंजान कडवा, गेरू,सेंधा नमक ये सब छः छः माशे इन सब को पीस कर छानले और जोडों पर मालिश करावे ॥

गठिया का अन्य कारण ।

गठिया रोग इस रीति से भी हो जाता है कि मनुष्य मार्ग में चलते चलते प्यास लगने पर पहिले हाथ पांव धोकर फिर छानकर पीता है और कभी कभी गरमी से व्याकुल होकर मार्ग के नदी नालों में खडा हो जाता है और सिरपर पानी डालता है

इस दशा में जिस की प्रकृति निर्बल होती है तो उसी समय बीमार हो जाता है और अंत मे उसको गठिया की बीमारी होजाती है फिर घोडे पर चढ कर चलने से हाथ पांवों पर सूजन हो आती है ऐसी बीमारी में नीचे लिखी हुई औषध देना चहिये।

गठिया पर बफारा।

वेद अंजीर के पत्ते, खुरासानी अजवायन, सोये के बीज, टेसू के फूल, वायविडंग, ये सब दवा एक एक तोले सेंधा नमक, खारी नमक ये दोनो छः छः माशे इन सबको पानी में औटा कर बफारादे और जो जोडों पर सूजन भी होतो बफारे के पीछे से यह औषधि मलनी चाहिये।

गठिया पर मर्दन।

भुने मूंगों का चून, छोटी माई, बडी माई दो दो तोले, कालि जीरि, भांग, सोंठ, कायफल, अजवायन देशी, ये सब एक एक तोले इन सबको महीन पीस कर मले जो मनुष्य गरम जल से स्नान करते है उनको यह रोग कम होता है।

गठिया का अन्य कारण।

दो चार वर्ष पहिले कोई मनुष्य मकान की छत वृक्ष पहाड आदि ऊंची जगह से नीचे गिरपडा हो और समय पाकर सर्दी मे या पूर्वी वायु के लगनेसे चोट की जगह फिर दरद होने लग जाता है और रोग बढकर गठिया होजाती है।

उक्त रोग की दवा।

आंडका एक बीज नित्यप्रति खिलाकर नीचे लिखे तेल की मालिश करे।

तेल की विधि।

मालकांगनी दो तोले, कायफल, बकायन, सोंठ, जायफल, अकरकरा, लोंग, आंबाहल्दी, समुद्रखार, दारुहल्दी कु-

चला, बादाम की मिंगी, कंजा के बीज, कुलीजन; सिरगोर, काले धतूरे का रसः आकका दूध, सहजने की छाल; गोमाका अर्क, हरी मकोय का अर्क, इमली की छाल, भांगरे का रस ये सब दवा एक एक तोले, कडवा तेल, पन्द्रह तोले अंडीका तेल पांच तोले इन सबको मिला कर औटावे जब तेल मात्र रहजाय तब छात कर शीशी में भर रक्खे फिर सइ तेल की मालिश करे तो दर्द बिलकुल जातारहेगा।

दूसरा प्रयोग।

तिलका तेल पावसेर गरम करके उस में सफेद मोम एक तोले, बतख की चरबी एक तोले, माल कांगनी दो तोले, सफेद संखिया छ माशे इन सबको तेल में डाल कर औटावे और खूब रगडे फिर छानकर संधियों और जोडोंपर मर्दन करे और खानेको मूंगकी धोवा दाल रोटी वा मांस देना चाहिये।

उपदंश की गठिया का इलाज।

जो गठिया आतशक के कारण होगई होतो पहिले विरेचन देकर नीचे लिखी हुई दवा देवे।

गठिया पर गोली।

मुरदासंग दो माशे, कंजा की मिंगी सात माशे, घी दो माशे, सफेद चूना छः रत्ती, इन सबको महीन पीस कर गुड में मिलाकर तीन गोलियां बनाले पहिले दिन एक गोली दे और भुनेगेहूं का पथ्य देवे दूसरे दिन दो गोली खिलावे और गेहूं की रोटी और मूंग की दाल भोजन करावे इसके सिवाय कुछ न देवे जो इस दवा से आराम होजाय तो और कोई पुष्टीकारक माजून बनाकर खिलावे और नीचे लिखे तेलका मर्दन करता रहै॥

नुसखा तेलका ।

मिलाये, सोंठ,सारंजान कड़वा ये तीनों दवा दोदो माशे इन सवको आधपाव (तेल)मीठे में मिलाकर जलावे जब ये सब दवा जलजांय तव तेलको छानकर काच की शीशी में धररक्खे फिर इसतेल का रात के समय मर्दन करावे ऊपर से धतूरे के पत्ते गरम करके बांधदेवे इसी रीति से सात दिन तक करने सेवेजोडा का दर्द जाता रहता है ।

जांघ और पीठ की पीडा का इलाज ।

बूंजीदा,चीता और सोंठ प्रत्येक पांच माशे शोरंजान, अजखरकी जड, अजमोद की जडका छिलका; सोंफकी जड की छाल प्रत्येक चारमाशे मुनक्का और मेथी दश दश माशे इनसव को औटाकर इसमे नौ माशे अंडीकातेल मिलाकर पीने से दस्त होगें और दर्द भी बहुत जल्दी जाता रहैगा ॥

अन्य दवा ।

सोरंजान, सोंफ, सोंफकी जडका छिलका, अजमोद, अनेसू ये सव दवा पांच पांच माशे हंसराज, गावजवां और विल्लीलोटन प्रत्येक चार माशे, गुलावके फूल सात माशे बडीहडे छः माशे, सनाय मक्की सातमाशे,गुलावका गुलकंद डेढतोले इन सबको औटावे फिर इसको छानकर इसमें १ तोले तुरंजवीन घोटकर मिलाकर पीवे तो दस्त होंगे इस दवा के करने से दर्द बहुत जल्दी दूर हो जाता है ।

कूल्हेके दरदका इलाज ।

मस्तंगी और अनेसू पांच पांच माशे, सोंठ और अजखर की जड, तीन तीन माशे, मजीठ चीता अजमोद मेथी चार २ माशे और सोंफ मुनक्का १५ दाने इन सबको औटाकर उसमें १ एक तोले अंडी का तेल मिलाकर प्रातःकाल पीवे इसके पीने से भी दस्त होंगे इसमें वैद्यके वताये हुए पथ्य से रहना उचितहै

सर्वांग वातज दरदका इलाज।

महुआ तीन भाग, खाने का तमाखू १ भाग इन दोनों को पीसकर गरम करके जहां शरीरमेंदर्द होता हो वहां बांधदेंयहदर्द गठिया का नहीं होता है इसको साधारण बादीका दर्द जानना चाहिये।

अन्य प्रयोग।

गठिया पर योगराज गूगल और माजून चोवचीनी भी बहुत गुणदायक है इनके सेवनकी यह विधि है कि जो गठिया थोडे दिन की हो तो केवल योगराज गूगल के सेवन से आराम हो जाता है और जो बहुत दिनका रोग हो तो उस रोगीको एक वक्त गूगल और दूसरे वक्त माजुन चोवचीनी का सेवन करावे इस प्रकार के इलाज करने से बहुत दिनकी गठिया को भी बहुत शीघ्र आराम हो जाता है बहुत से मूर्ख जर्राह और हकीम भिलाये आदि की गोली खिला देते है जिससे रोगी का मुंह आजाता है उस वक्त रोगी बडा दुख पाता है। इन गोलियों के देने से आराम तो हो जाता है परंतु उस रोगी के दांत किसी काम के नहीं रहते जल्द गिर जाते हैं इससे यह जनमभर दुख पाता है इस लिये जहां तक हो सके मुख आनेकी दवा न देनी चाहिये॥

साधारण दर्द का इलाज।

जो छाती, पीठ, हाथ, पांव आदि में साधारण बादी का दरद हो तो यह काम करे कि बनप्सा का तेल, ५ पांच तोले आगपर धरके उसमें सफेद मोम दो तोले, कतीरा नौ माशे मिलावे और जहां दर्द होता हो वहां मर्दन करे तो इसके लगाने से बहुत जल्दी आराम हो जाता है।

दूसरा उपाय।

बनप्सा, सफेद चंदन, खतमी के बीज, नाखूना, जौ का

चून, गेहूकी भुसी ये सब दवा बराबर लेके कूट छानकर मोम रोगन में और बनप्सा के तेल में तथा गुलरोगन में मिलाकर पकावे जब रोगन मात्र रहजाय तब उतारकर जहां२ दरद होता हो इसका मर्दन करने से बहुत जल्दी आराम होता है ।

तीसरा उपाय ।

खतमी के बीज, अलसी, मकोय के पत्तों का रस, अमलतास का गूदा इन सबको पीसकर छाती पर लेपकरने से छाती का दरद जाता रहता है ।

चौथा उपाय ।

मीठे तेल में थोडा मोम औटाकर लेप करने से भी उक्तगुण करता है ।

पांचवां उपाय ।

बारहसिंगे का सींग, सोंठ और अरंडकी जड, इनको पानी में घिसकर लगानाभी लाभदायक है ॥

छटा उपाय ।

मीठे तेल में अफीम मिलाकर लगानाभी गुणकारक है ॥

सातवां उपाय ।

सोंठ और गेरू को घिसकर गुनगुना करके लेप करने से भी आराम हो जाता है ।

पथरी रोग का वर्णन ।

पथरी का रोग प्रायः कफके प्रकोप से हुआ करता है ।

पथरी के भेद ।

पथरी रोग चार प्रकार का होता है, यथा—वातज, पित्तज, कफज और शुक्रज ।

पथरी रोगकी उत्पत्ति ।

वस्ति स्थान में रहने वाली वायु शुक्रके साथ मूत्रको अथवा

पित्तके साथ कफको अत्यंत सुखा देती है, तब धीरे २ बालू रेतके से कंकर पैदा हो जाते है इसीको पथरी रोग कहते है ।

पथरी का पूर्वरूप ।

वस्तिस्थान म सूजन, वस्ति के पास वाले स्थानों में वेदना मूत्र में बकरे कीसी गंध, मूत्र का थोडा २ होना, ज्वर और आहार में अरुचि इन लक्षणों के होने से जाना जाता है कि पथरी रोग होने वाला है ॥

पथरी के सामान्य चिन्ह ।

नाभि के आर पास, सीमन तथा नाभि और वस्ति के बीचमें शूलकीसी वेदना होती है । मूत्रकी धार छिन्न भिन्न होकर निकलती है । जब वायु के बेग से पथरी हट जाती है, तब गोमेदक मणिके समान ललाई लिये हुए पेशाब सुखपूर्वक होता है । मूत्र के विपरीत मार्ग में प्रवृत्त होने से मूत्रनाडी में घाव हो जाता है, उस समय पेशाब के साथ रुधिरभी निकलता है । पेशाब करने में घोर कष्ट होता है ।

पथरी के विशेष चिन्ह ।

वीर्य से उत्पन्न हुई पथरी के होतेही लिंगेन्द्रिय और अंडकोष के बीच में जो वेदना होती है उसमे वीर्य की कमी होकर पथरी से शर्करा वा रेत पैदा होजाती है । वायु के कारण इस शर्करा के टुकडे टुकडे होजाते हैं और वायु के अनुलोम में मूत्रके साथ थोडी थोडी बाहर निकलती रहती है और वायु के प्रतिलोममें वही मूत्रमार्ग में रुक कर अनेक प्रकारके भयंकर रोगों को उत्पन्न करती है । जब पथरी रोग के साथ शर्करा और रेत होती है तब शरीर बडा सुस्त और ढीला होजाता है देह दुर्बल और कुक्षिस्थान में शूल कीसी वेदना होती है । प्यास की अधिकता और वमन भी होती है ।

वादी की पथरी के लक्षण ।

जब पथरी वादी के कारण होती है तब अत्यन्त दरदके कारण रोगी दांतों को पीसता हुआ कांपने लगता है। दर्द के मारे रोगी बेचैन रहता है, तथा लिंगेन्द्रिय और नाभिको मलता हुआ हाय हाय करके हकराता है अधोवायु के साथ मूत्र निकल पडता है और बूंद बूंद करके टपकता है ।

पित्तकी अश्मरीके लक्षण ।

पित्तसे उत्पन्न हुए पथरी रोग मे वस्तिस्थान में जलन होती है, पेशाब करते समय ऐसा मालुम होता है कि जैसे कोई क्षार से जलाता है । हाथ लगाने से गरम मालूम होती है, इस का आकार भिलावे की गुठली के समान होता है ।

कफकी पथरी के लक्षण ।

कफकी पथरी में वस्तिस्थान ठंडा और भारी होता है और इसमें सुई चुभने की सी वेदना होती है ।

वालकोंकी पथरी के लक्षण ।

वालकों के ऊपर लिखे हुए तीनो दोषों से ही पथरी हो जाया करती है बालकों का वस्तिस्थान छोटा होता है, इस लिये वालकोंकी पथरी औजारों से पकडकर सहज में निकाली जा सकती है ।

वीर्यकी पथरी के लक्षण ।

वीर्य से जो पथरी रोग होता है, वह प्रायः वडी उमर वाले आदमियो के ही हुआ करता है, वालकों के नही होता, क्यों कि उस अवस्था मे उनके वीर्य पैदाही नहीं होता है । स्त्रीसंगमकी इच्छा होने पर जब वीर्य अपने स्थानको छोडकर चल देता है, और स्त्रीसंगम नहीं होने पाता तब वीर्य वाहर तो निकलने नही पाता, उस समय वायु वीर्यको चारों ओर से खींचकर जननेंद्रिय ओर अंडकोषों के बीच में इकट्टा करके

सुखा देती है । इसी को वीर्यकी पथरी कहते हैं इसके होने से वस्ति में सुई चुभने की सी वेदना, मूत्रका थोडा थोडा होना, और अंडकोषों में सूजन यह उपद्रव होते हैं ।

वादी की पथरी की दवा ।

पाखान भेद, शोरा, खारी नमक, अश्मतक, सितावर, ब्राह्मी, अतिवला, श्योनाक, खस, कतक, रक्तचन्दन, भ्रमरबेल, शाकफल, कटेरी, गुठतृण, गोखरू, जौ, कुलथी, बेर, वरना और निर्मली इन सब का काढा करके इसमें क्षारमूत्रिका सेंधानमक, शिलाजीत, दोनों प्रकार का कसीस, हींग और तूतिया । इनका चूर्ण मिलाकर पीने से वादीकी पथरी जाती रहती है ।

दूसरी दवा ।

अरंड, दोनों कटेरी, गोखरू, कालाईख, इनकी जडको पीसकर मीठे दही के साथ पीने से पथरी टुकडे टुकडे होकर निकल जाती है ।

पित्त की पथरी का उपाय ।

कुश, कास, खर, गुंठतृण, इत्कट, मोरट; पाखानभेद, दाभ, विदारीकंद, वाराहीकंद, चौलाई की जड, गोखरू, श्योनाक, पाठा, रक्तचंदन, कुरंटक, और सोंठ इन के काढे में खीरा, ककडी, कसूम, नीलकमल, इन सब के बीज, मुलहटी और शिलाजीत का कल्क डालकर घी पकावे, इस घी के सेवन से पित्त की पथरी खंड खंड होकर निकल जाती है ।

कफ की पथरी का उपाय ।

जवाखार तीन माशे, नारियल [illegible] फल तीन माशे, इन दोनों को जल के साथ पीस कर [illegible] एक सप्ताहमें उत्कट पथरी रोग जाता [illegible]

पथरी के अन्य उपाय ।

बरना की छाल, गोखरू के बीज, और सोंठ इन तीनों दवाओं को समान भाग मिलाकर दो तोले लेकर आध सेर जलमें औटावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, ठंडा होने पर दो माशे जवाखार और दो माशे पुराना गुड मिला-कर पीनेसे वादी की पथरी में विशेष उपकार होता है।

अन्य उपाय ।

दो तोले बरना की छाल को आधसेर जलमें औटाकर चौथाई शेष रहने पर उतार कर ठंडा होने पर इसमें आधा तोला चीनी मिलाकर पीनेसे पथरी रोग मे विशेष उपकार होता है ।

अन्य उपाय ।

सहजने की जड़ की छाल आधा तोला लेकर आधासेर जल मे औटावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, ठंडा होने पर इसको पीनेसे पथरी रोग में आराम होजाता है ।

अन्य प्रयोग ।

गोखरू के बीज दो आने भर लेकर पीसले, इसको शहत और बकरी के दूधमे मिलाकर पीनेसे पथरी रोग जाता र-हता है ।

पथरी रोग पर पथ्य ।

वमन विरेचनादि औषधियों का सेवन, उपवास,टबमें बैठ-कर स्नान करना, और कुल्थी, पुराना शालीधान्य, पुरानमद्य, धन्वज देशके पशुपक्षियों के मासकायूष, पुराना कुम्हडा, कुम्ह डा के डठल, गोखरू, अदरख, पाखानभेद, जवाखार, बाम का फूल, ये सब पथरी रोग पर पथ्य हैं ।

सुखा देती है । इसी को वीर्यकी पथरी कहते हैं इसके होने से वस्ति में सुई चुभने की सी वेदना, मूत्रका थोडा थोडा होना, और अंडकोषों में सूजन यह उपद्रव होते हैं ।

बादी की पथरी की दवा ।

पाखान भेद, शोरा, खारी नमक अश्मतरु, सितावर, ब्राह्मी, अतिबला, श्योनाक, खस, कतक, रक्तचन्दन, अमर-बेल, शाकफल, कटेरी, गुठतृण, गोखरू, जौ, कुलथी, बेर, बरना और निर्मली इन सब का काढा करके इसमें क्षारमृत्तिका सेंधानमक, शिलाजीत, दोनों प्रकार का कसीस, हींग और तूतिया । इनका चूर्ण मिलाकर पीने से बादीकी पथरी जाती रहती है ।

दूसरी दवा ।

अरंड, दोनों कटेरी, गोखरू, कालाईख, इनकी जडको पीसकर मीठे दही के साथ पीने से पथरी टुकडे टुकडे होकर निकल जाती है ।

पित्त की पथरी का उपाय ।

कुश, काश; खर, गुंठतृण, इत्कट, मोरट, पाखानभेद, दाभ, विदारीकंद, बाराहीकंद, चौलाई की जड, गोखरू, श्योनाक, पाठा, रक्तचंदन, कुरंटक, और सोंठ इन के काढे में खीरा, कक-डी, कसुम, नीलकमल, इन सब के बीज, मुलहटी और शिला-जीत का कल्क डालकर घी पकावे, इस घी के सेवन से पित्त की पथरी खंड खंड होकर निकल जाती है ।

कफ की पथरी का उपाय ।

जवाखार तीन माशे, नारियल का फूल तीन माशे, इन दोनों को जल के साथ पीस कर सेवन करने से एक सप्ताहमें उत्कट पथरी रोग जाता रहता है ।

पथरी के अन्य उपाय।

बरना की छाल, गोखरू के बीज, और सोंठ इन तीनों दवाओं को समान भाग मिलाकर दो तोले लेकर आध सेर जलमें औटावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, ठंडा होने पर दो माशे जवाखार और दो माशे पुराना गुड मिलाकर पीनेसे वादी की पथरी में विशेष उपकार होता है।

अन्य उपाय।

दो तोले बरना की छाल को आधसेर जलमें औटाकर चौथाई शेष रहने पर उतार कर ठंडा होने पर इसमें आधा तोला चीनी मिलाकर पीनेसे पथरी रोग मे विशेष उपकार होता है।

अन्य उपाय।

सहजने की जड़ की छाल आधा तोला लेकर आधासेर जल में औटावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, ठंडा होने पर इसको पीनेसे पथरी रोग में आराम होजाता है।

अन्य प्रयोग।

गोखरू के बीज दो आने भर लेकर पीसले, इसको शहत और बकरी के दूधमे मिलाकर पीनेसे पथरी रोग जाता रहता है।

पथरी रोग पर पथ्य।

वमन विरेचनादि औषधियों का सेवन, उपवास,टबमें बैठकर स्नान करना, और कुल्थी, पुराना शालीधान्य, पुरानमद्य, जन्गल देशके पशुपक्षियों के मांसकायूष, पुराना कुम्हडा, कुम्हडा के डठल, गोखरू, अदरख, पाखानभेद, जवाखार, बांस का फूल, ये सब पथरी रोग पर पथ्य हैं।

पथरी पर कुपथ्य ।

मूत्र और शुक्र के वेग को रोकना, खटाई का सेवन अफरा करने वाले भोजन पान, रूक्षगुणवाले खाने पीने के पदार्थ, पेट को भारी करने वाले आहार, विरुद्ध द्रव्य जैसे दूध और मछली मिलाकर खाना, इन सब को पथरी रोग मे सर्वथा त्याग देना चाहिये ।

तीसरा भाग समाप्त ।

ओ३म् ।

परमात्मने नमः ।

जर्राहीप्रकाश ।

चौथाभाग ।

दांत के रोगों का इलाज ।

जो दांतों की जड में गरमी मालूम हो, और मुखमें ठंडा पानी भरने से रोगी को चैन पडे, तथा मसूडे लाल हो जांय और उनमें सूजन न होतो सिरका और गुलाब मुखमें रखना चाहिये, यदि दर्दकी अधिकता हो तो सिरके और गुलाब मे कपूर भी मिला लेना चाहिये, इस रोगमें मुखमें गुलरोगन रखना भी लाभदायक है, जो दर्द बहुत ही होता हो तो गुलरोगनमे अफीम मिलाकर लगाना उचित है ।

कफमे उत्पन्न दांत के दर्द का इलाज ।

जो दर्द कफके कारण से होता है, उसके यह लक्षण हैं कि सरदी के भीतरी वा बाहरी प्रयोग से दर्द बढ जाता है और गरमी से घट जाता है । इसमे पारा वा एलवा की गोली देकर कफ को दूर करना चाहिये, तथा पोदीना, सातर और अकरकरा इन तीनों को सिरके में औटाकर कुल्ले करना उचित है, अकरकरा, पापडीनोन, सोंठ,चैना और पीपल इनको महीन पीसकर मसूडों पर मलै, अथवा तिरियाक अरबा, वा तिरियाकुल अस्नान फलूनियां दांतों की जड पर लगावै, तथा नमक और बाजरा गरम करके जावडों को सेकना भी गुणकारकहै, तिरियाकुल अस्नान बनाने की यह रीति है कि जुदबे-

दस्तर,हींग, कालीमिरच, सोंठ; बनफशा की जड, और अफीम इन सब दवाओं को समान भाग लेकर अच्छीतरह कूट छान कर शहद में मिला लेवै ।

बादी के दर्द का इलाज ।

सोंफ, अफीम और जीरा प्रत्येक साडेतीनमाशे लेकर पानी में औटावै और इसको मुखमें दांतों के पास भर भर कर कुल्ले करदे,समगुल बतम (एक प्रकारका गोंद) कालीमिरच,किब्र की जड की छाल, और सोया इनको महीन पीसकर शहत में मिलाकर दांतों पर मले ।

दांतों के कीडों का इलाज ।

गंदना के बीज, खुरासानी अजवायन, और प्याज के बीज इनको महीन पीसकर मोम अथवा बकरी की चर्बी में मिलावै, फिर इसको आग पर रखकर इसके धूंए को एक नली द्वारा दांतों पर पहुंचावै, इस से कीडे मर कर गिर पडते हैं और दरद कम हो जाता है ।

दांतों की रक्षाके दस नियम ।

(१) अजीर्णकारक भोजन, बहुत भोजन, दूध और मछली आदि विपरीत भोजन इत्यादि न करना । (२) वमन कराने वाले द्रव्यों का अधिक सेवन न कर[illegible]
बादाम, अखरोट, आदि कठोर पदा[illegible]
(४) मिठाई आदि अन्य कठोर व[illegible]
को खट्टा करनेवाले पदार्थों का त्याग[illegible]
और ठंडी के पीछे अत्यन्त गरम [illegible]
(७) दांतों की प्रकृति के अनु[illegible]
का त्याग (८) भोजन करने के [illegible]
ना (९) प्रतिदिन प्रातःकाल [illegible]

कडवी लकडीकी दांतन करना और इतना अधिक दांतों को न रिगडना कि जिससे मसूडे छिल जांय वा दांतोंकी चमक जाती रहै (१०) सोते समय दांतों पर तेल लगाना, गरम प्रकृति मे गुलरोगन और ठंडी प्रकृति में बकायन वा मस्तगीका तेल चुपडना।

दांतोंकी खटाई दूर करने का उपाय।

खुर्फाकी पत्ती,टहनी और तुलसी चबाने से दांतोकी खटाई जाती रहती है। अगर खुर्फाकी पत्ती और टहनी न मिले, तो उसके बीजों को कूटकर पानी में भिगोकर काम में लावे। अथवा सातरा, तुलसी, शहत और नमक दांतों पर मलनाभी गुण दायक है।

दांतोंकी चमक का उपाय।

जो दांतोंकी चमक जाती रही हो तो हब्बुलगार,फिटकरी और जराबंद तबील को महीन पीसकर दांतों पर मलै। अथवा गुलरोगन में कपूर और चंदन मिलाकर दांतों पर मलना गुण कारक है।

दांतों की पोलका उपाय।

किसी कारण से दांत पोले होगये हों अथवा उनपर हरापन कालापन वा पीलापन आजाय तो रसोत, नारदेन, नागरमोथा. माजु, और अक्करकरा दांतों पर मलै तथा अधीरा. अनार के फूल, और फिटकरी, इनको सिरके में औटाकर कुल्ले करे।

दांतों के मैल का वर्णन।

जो दांतों को प्रतिदिन नहीं मांजते हैं उनके दांत पीले पड-जाते हैं, इस पीलापन को धीरे धीरे खुरचकर नमक, समुद्रफेन, सीपीकीराख, जला हुआ सीसा, और पहाडी गौ के सींग की राख इन सबका मंजन बनाकर दांतों पर लगाता रहै।

दांतों के रंग बदल जाने का उपाय ।

जो दांतों का रंग पीला होगया होतो हरी मकोय का पानी और सिरका मिलाकर कुल्ला करे । फिर मतूर, जौ, खितमी का आटा सिरके में मिलाकर दांतों पर लगावे । जो दांतों का रंग काला होतो किब्रकी जड, मजरी, मस्तगी, और छीशा, कूट छानकर गुलरोगनमें मिलाकर काममें लावै ॥

दांतों के हिलने का उपाय ।

जो दांत बुढापे के कारण हिलने लगजाय हो तो उनका इलाज कुछ नही हो सकता है । और जो युवावस्था में तरी के नष्ट होने से दांत हिलने लग जाते हैं तो तर और चिकनी चीज दांतो पर मलना रहे और गुलाब के फूल वशलोचन, मसूर कस्तूरी, छोटी माई । इनको महीन पीस कर दांतों की जड में बुरकना चाहिये ॥

बच्चों के दांत निकलने का उपाय ।

जिस बच्चे के दांत निकलने को हों तो मसूडों पर कुतिया का दूध मलने से दांत जल्दी निकल आते हैं । जो दांत निकलने के समय दर्द की अधिकता हो तो हरी मकोय का पानी और गुलरोगन गरम करके उसको उंगली पर लगाकर बालक के मसूड़ों पर मले । और जब दांत निकलने लगें तब फिर गर्दन, कानों, की जड और नीचे के जावडो पर चिकनाई लगाता रहे तथा तेल गुनगुना करके उसकी एक दो बूंद कानमें डाल दिया करे ।

मसूडों की सूजन का उपाय ।

जो मसूडे सूजगये हों तो मसूर, सूखा धनियां, अधीरा, लालचंदन सुपारी और सिमाक को पानीमें औटाकर उस पानीसे कुल्ले कराये । सूजन के कम होजाने पर जो सूजनका असर बाकी रहे तो बादाम का तेल और गुलरोगन गरम पानी में मिला

कर उससे कुल्ले करे। जो पित्त के कारण से सूजन होती है तो उंगली से दबाने पर गढा पड जाता है और उंगली हटाने पर जोकीत्यो हो जाती है । इस में हरड का काढा देकर दस्त करावे। फिर अवीरा और मकोय के दाने सिरके मे औटाकर कुल्ले करे ॥

मसूडों क रुधिर का उपाय ।

मसूडों से रुधिर वहता होतो जली हुई मसूर, वंशलोचन कीकर और माजू इन सब दवाओं को महीन पीसकर दांतों पर रिगडे और जरूर शिबी वा जरूर तरीखी मसूड़ों पर बुरक देना चाहिये। जरूर शिबी के बनानेकी यह रीति है कि फिटकरी को भूनकर सिरके में बुझाले फिर इससे दुगुना नमक और डेढ गुनी लाल फिटकरी पीसकर रखले इसी को जरूर शिबी कहते हैं जरूर तरीख की विधि यह है कि तरीख नामक मछली को आग में डाल दे फिर इसकी राखको सूखे हुए गुलाबके फूलों मे मिला कर पीस ले ॥

मसूडों को दृढ करने वाली दवा ।

गुलावके फूल, जुफ्त, वलूत का छिलका, और हब्बुलास प्रत्येक १४ माशे खर्नब, नप्ली, समाक, अकरकरा प्रत्येक १७ ॥ माशे इन सबको कूट छान कर मसूडों पर लगाने से मसूडे पक्के हो जाते हैं ॥

आंख के रोगों का वर्णन ।

यूनानी हकीमों ने आंखों में सात परदे और तीन रतूबते मानी हैं। इन्ही परदों और रतूबतों में जब कोई भीतरी वा बाहरी विकार पैदा होजाता है, तभी उसको आंख का रोग बोलते है।

परदों के नाम ।

मुलतहिमा, करानियां, इनबिया, इनबबूतिया, शवबिया, मसामियां और सलबिया (कोई कोई मुलतहिमा, शबकिया और अनकबूतिया इन तीनों को पर्दा नहीं मानते हैं, केवल चारही परदे मानते हैं ।

मुलतहिमा परदे के रोग ।

यह परदा उन अजलों से मिला हुआ है जो आंख के ढेले को हिलाते है, तथा सफेद और चिकने मांससे भरा हुआ है, यह करानियां परदे को छोड कर आंख के सब भागों को घेरे हुए है । इस परदे में चौदह रोग होते हैं इन में से पांच अप्रधान और ९ प्रधान रोग हैं । प्रधान रोगों के नाम ये है, जैसे—रमद, तरफा; जफरा, सबल, इन्तफाख, जसा, इक्का, दूका, और तूसा ॥

रमद का वर्णन ।

अरबी भाषा में रमद आंख दूखने को कहते हैं । यह बात याद रखनी चाहिये कि मुलतहिमा परदे पर जब सूजन आ जाती है, तब उसे रमद बोलते हैं इसी का दूसरा नाम "रमद हकीकी" भी है क्योंकि रमद कभी उस ललाई के लिये भी बोला जाता है, जो आख में धूल गिरने, धूंआं लगने वा सूरज की गर्मी के कारण होजाया करती है, परंतु इस में सूजन नहीं होती । रमद पाच प्रकार का होता है, यथा रक्तज, पित्तज, कफज, वातज वा रीह से उत्पन्न ।

रक्तज रमद के लक्षण ।

आंख के इस रोग में सूजन की अधिकता, ललाई, फूलापन और खिचावट होती है, मैल अर्थात गीढ का अधिक आना, रंगों का मवाद से भरना कनपटियों में दर्द और धमक तथा रुधिर की अधिकता, ये सब रक्तज रमदके लक्षण हैं ।

रक्तज रमद का इलाज ।

किसी किसी हकीम का मत है कि जिस तरफ की आंख दुखती हो उस तरफ सरेरू रग की फस्द खोले और जो किसी कारण से फस्द न खोली जा सके तो गुद्दी पर पछने लगवा कर रुधिर निकाल दे,फिर हरड,आलू पित्तपापड़ा और इमली का काढा पिलाकर कोष्ठको नरम करदे । तत्पश्चात् शियाफ अवियज को अंडे की सफेदी वा मैथी के लुआब वा स्त्री के दूध में घिसकर लगावे । रोग के आरंभ में उक्त शियाफ को पानी में घिसकर लगाना वर्जित है, क्योंकि आंख में पानी पहुंचने से मल कच्चा रह जाता है, आंख के परदे मोटे होजाते हैं और परदे को हानि पहुच जाती है ।

शियाफ अवियज के बनाने की विधि ।

जस्ते का सफेदा, समग अर्बी और कतीरा इन तीनोंको कूट छानकर ईसब गोलके लुआव अथवा अंडेकी सफेदीमें मिलाकर शियाफ (बत्ती) बनालेवे । कोई कोई यह कहते हैं कि अफीम और अजरूत भी थोडीसी मिला देनी चाहिये ।

पित्तज रमद का लक्षण ।

इसमें सूजन, फुलावट, खिचाव, लाली, चीपड निकलना, और आंसू बहना रक्तज रमद की अपेक्षा कम होता है, परंतु दर्द जलन चुभन अधिक होती है ।

पित्तज रमद का इलाज ।

इस रोग में रक्तज रमद में लिखा हुआ हरड आदि का काढा पिलाकर दस्त करावै । तथा कासनी के बीज का शीरा, पालक के बीज का शीरा, हरी मकोय, और हरे धनिये की पत्ती पीसकर आंखों पर लगावैं, तथा बिहीदाना, ईसब गोल का लुआब, लडकी वाली स्त्री का दूध और अंडेकी सफेदी आंखमें

डाले, जिस समय दर्द अधिक होता हो उस समय शियाफ काफूरी (कपूर की बत्ती) और अफीम आंख पर लगावे ।

कफज रमद का वर्णन ।

कफज रमद के ये लक्षण हैं कि आंख बहुत फूल जाती है, बोझ अधिक माळूम देता है, गीड और आसू बहुत निकलते हैं, दोनो पलक आपसमें चिपट जाते हैं और लाली कम होती हैं ।

कफज रमद का इलाज ।

मलके दूर करने और रोकने के लिये एलुआ, रसोत, बूल, अक़ाकिया और केसर इनको गुलाब जल मे पीसकर माथे और पलक के ऊपर लेप करना चाहिये ।

मलको पकाने और निकालने के लिये धुली हुई मेथी का लुआब और अलसी का लूआब आंखों में डाले, और दो तीन दिन पीछे जरूर अबियज आंख में लगावे । यह दवा प्रारंभ में लगाना उचित नही है अंत में लगायी जाती है ।

मेथी को धोने की रीति ।

मेथी को मीठे पानी में डालकर दो पहर तक रक्खा रहने दे, फिर उस पानी को निकाल कर मेथी से बीस गुना पानी डालकर औटावै, जब पानी आधा रह जाय तब लुआब बन जाता है ।

जरूर अबियज के बनाने की रीति ।

अंजरूत को पीसकर गधी वा लडकी वाली स्त्रियों के दूध में सानकर झाऊ की लकडियों पर रख कर ऐसे चूल्हे मे रक्खे जो ठंडा होने को हो । सूख जाने पर इसका चौथाई नशास्ता मिलाकर बारीक पीसले और रोगके अनुसार थोडी मिश्री भी डाल लेवे ।

वातज रमद का लक्षण।

इस रोग में आंखोंमें सूखापन, भारीपन और रंग मे काला-पन होता है, आंखों मे चुभन, पलकों मे ललाई, और सिर मे दरद हुआ करता है।

वातज रमद का इलाज।

इस रोग में दिमागमें तरी पहुंचाने वाले उपाय करने चाहियें, बनफशा का तेल और दूध नाक में सूंघै, तथा बिहीदाने का लुआब आंखमें डाले अथवा बाबूना, बनफशा और अलसी का पानी नीलोफरके पानी में मिलाकर आंख पर लेप करे और शियाफ दीनारंगू आंखपर लगावे।

शियाफ दीनारंगू के बनाने की रीति।

सफेदा और चांदी का मैल प्रत्येक ३५ माशे, अफीम आधा माशे, कतीरा छः माशे और नशास्ता साडेतीन माशे इनको कूट पीसकर बत्ती बनालेवे।

रीही रमद का लक्षण।

इसमें आंख खिची रहती है, भारापन और आंसू बिलकुल नहीं होते कभी कभी दरद के कारण लाली भी होजाती है।

रीही रमद का इलाज।

इस रोग में बाबूना, अकलीलुलमलिक और दोना मरुआ को औटाकर इस पानी को आंख पर डाले, और गेंहू की भुसी तथा बाजरे से सिकताव करे।

अब आखों के दूखने पर बहुत से हकीम और वैद्यों के परीक्षा किये हुए प्रयोग लिखे जाते हैं।

आंख पर लेप।

जो यह रोग गरमी से हुआ हो तो रसौत को लडकी की माता के दूध में घिस कर आंखके भीतर और बाहर लगाना

कपड़े की पोटली में बांध आंखों पर फेरता रहे, तो इससे आंखों का दरद जाता रहता है।

पांचवीं पोटली।

इमली की पत्ती, सिरसकी पत्ती, हलदी और फिटकरी, इन चारों को दो दो माशे लेकर महीन पीस कर एक पोटली बना लेवे। इस पोटली को पानी में भिगो भिगो कर बार बार आंखों पर फेरने से आंख दुखने का दरद बंद होजाता है।

छटी पोटली।

पोस्त का डोडा एक, अफीम एक रत्ती लौंग दो, भुनी, हुई येलागीरी चार माशे, चने के बराबर हलदी दो माशे इमली की पत्ती इन सब को कूट पीसकर पोटली बनाकर पानी में भिगो भिगो कर आंखों पर फेरै।

सातवीं पोटली।

कपूर तीन माशे और पठानी लोध एक माशे पीसकर पोटली में बांधकर आधे घंटे तक पानी में भिगो दे, फिर इस को बार बार आंखों पर फेरे और कभी कभी एक बूंद आंखके भीतर भी टपका देवै।

आठवीं पोटली।

पठानी लोध फिटकरी मुरदासंग हलदी और सफेद जीरा प्रत्येक चार चार माशे, एक रत्ती अफीम, काली मिरच चार, नीलाथोथा आधा रत्ती इन सब को कूट पीस पोटली बनाकर पानी में भिगो भिगो कर नेत्रों में फेरना चाहिये।

नवीं पोटली।

बडी हरड का बकल, बहेडे का बकल, आमला, रसौत, गेरू; इमली की पत्ती, अफीम, फूली हुई फिटकरी और सफेद जीरा यह सब समान भाग लेकर पीस कपड़े में पोटली

बांधकर गुलाब जल अथवा पानीमें भिगो भिगोकर नेत्रों पर बार बार फेरने से दरद जाता रहता है।

दसवीं पोटली।

अफीम एक माशे, फूलीहुई फिटकरी दोमाशे,इमलीकीपत्ती एक माशे इन सब को महीन पीसकर कपडे की पोटली में बांध कर आंखो पर फेरने से बहुत गुणकारक है ।

ग्यारहवीं पोटली।

सफेद जीरा, लोध और भुनी हुई फिटकरी इन सबको समान भाग लेकर महीन पीसकर ग्वार पाठे के रसके साथ घोट कर कपडेकी पोटली में बांधे और इस पोटली को पानी में भिगो भिगोकर आंखों पर फेरता रहे तो बहुत लाभदायक है।

बारहवीं पोटली।

फूली हुई फिटकरी एक माशे और अलसी दो माशे इन दोनों को पीस कर कपडे की पोटली में बाध कर जलमे भिगो भिगो कर बार बार आंखों पर फेरने से आखो की पीडा जाती रहती है।

अन्य प्रयोग।

जो गरमी के कारण आंख दुखने आई होतो ईसबगोलका लुआब लगाना भी गुणदायक है।

अन्य उपाय।

जिस दिन आंख दुखनी आवे उसीदिन धतूरे का रस कुछ गुन गुना करके कान में टपकाना चाहिये। यदि बाई आंख दुखती होतो दाहिने कान मे और दाहिनी आख दुखती होतो बांए कान में टपकाना उचित है।

बालका की आंखका इलाज।

जो किसी बालककी आख दुखना आगई हो तो नीम की

कपड़े की पोटली में बांध आंखों पर फेरता रहै, तो इससे आंखों का दरद जाता रहता है ।

पांचवीं पोटली।

इमली की पत्ती, मिरचकी पत्ती, हलदी और फिटकरी, इन चारों को दोदो माशे लेकर महीन पीस कर एक पोटली बना लेवे। इस पोटली को पानी में भिगो भिगो कर बार बार आंखों पर फेरने से आंख दुखने का दरद बंद होजाता है।

छठी पोटली।

पोस्त का डोडा एक, अफीम एक रत्ती लौंग दो, भुनी, हुई येलागीरी चार माशे, चने के बराबर हलदी दो माशे इमली की पत्ती इन सब को कूट पीसकर पोटली बनाकर पानी में भिगो भिगो कर आंखों पर फेरै।

सातवीं पोटली।

कपूर तीन माशे और पठानी लोध एक माशे पीसकर पोटली में बांधकर आधे घंटे तक पानी मे भिगो दे फिर इस को बार बार आंखों पर फेरे और कभी कभी एक बूंद आंखके भीतर भी टपका देवें।

आठवीं पोटली।

पठानी लोध फिटकरी मुरदासंग हलदी और सफेद जीरा प्रत्येक चार चार माशे, एक रत्ती अफीम,काली मिरच चार,नीलाथोथा आधा रत्ती इन सब को कूट पीस पोटली बनाकर पानी में भिगो भिगो कर नेत्रों में फेरना चाहिये।

नवीं पोटली।

बड़ी हरड़ का बक्कल, बहेड़े का बक्कल, आमला, रसौत, गेरू, इमली की पत्ती, अफीम, फूली हुई फिटकरी और सफेद जीरा यह सब समान भाग लेकर कूट पीस कपड़े में पोटली

बांधकर गुलाब जल अथवा पानीमे भिगो भिगोकर नेत्रों पर वार वार फेरने से दरद जाता रहता है ।

दसवी पोटली ।

अफीम एक मासे, फूलीहुई फिटकरी दोमाशे,इमलीकीपत्ती एक माशे इन सब को महीन पीसकर कपडे की पोटली में बांध कर आंखो पर फेरने से बहुत गुणकारक है ।

ग्यारहवीं पोटली ।

सफेद जीरा, लोध और भुनी हुई फिटकरी इन सबको समान भाग लेकर महीन पीसकर ग्वार पाठे के रसके साथ घोट कर कपडेकी पोटली में बांधे और इस पोटली को पानी में भिगो भिगोकर आंखों पर फेरता रहे तो वहुत लाभदायक है ।

बारहवी पोटली।

फूली हुई फिटकरी एक माशे और अलसी दो माशे इन दोनों को पीस कर कपडे की पोटली में बाध कर जलमें भिगो भिगो कर वार वार आंखों पर फेरने से आखो की पीडा जाती रहती है ।

अन्य प्रयोग ।

जो गरमी के कारण आंख दुखने आई होतो ईसबगोलका लुआब लगाना भी गुणदायक है ।

अन्य उपाय।

जिस दिन आंख दुखनी आवे उसीदिन धतूरे का रस कुछ गुन गुना करके कान में टपकाना चाहिये। यदि वाई आंख दुखती होतो दाहिने कान मे और दाहिनी आंख दुखती होतो बाए कान में टपकाना उचित है।

वालको की आंखका इलाज।

जो किसी वालककी आख दुखनी आगई हो तो नीम की

पत्तियों का रस बाईं आंख दुखती हो तो दाहिने कान में और दाहिनी आंख दुखती हो तो बायें कान में टपकावे ।

अन्य लेप ।

लोहे के पात्र में नीबू का रस डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि उसका रंग काला हो जाय, फिर आंखों के आस पास उसका पतला पतला लेप करना चाहिये ।

अन्य उपाय ।

केवल ग्वार पाठे का गूदा निकाल कर उसके रसको सोने के समय कान में टपकानाभी गुणकारक है ।

गर्मी की आंखों का इलाज ।

हलदी को पानी मे पीसकर ऊपर लिखी रीति से दाहिने वा बांये कान में टपकाना चाहिये ।

दूसरा उपाय ।

बिहीदाने का लुआब और धनिये के पत्तों का रस लड़की की मा के दूध में मिलाकर छानले, फिर इसे आंखो में टपकाना उक्त गुण करता है ।

तीसरा उपाय ।

गोंदी की पत्तियों का रस कान में डालने से गरमीके कारण उत्पन्न हुई नेत्र पीड़ा जाती रहती है ।

चौथा उपाय ।

आमला और लोध इन दोनों को गौ के घी में भूनकर ठंडे पानी में पीसले और इसका पतला पतला लेप आंखके आस पास लगावे । इस बातकी सावधानी रखनी चाहिये कि आंख के भीतर न जाने पावे ।

पांचवा उपाय ।

गेरू, रसौत, छोटी हरड़ और बड़ी हरड़ का छिलका इन

को पानी में पीसकर आंखो के ओर पास लेप करना उचितहै।

छटा उपाय।

सूखी इमली के बीजों को पानी में भिगोकर मसल कर छानले फिर इसमें तीन रत्ती अफीम और पाव रत्ती फिटकरी डालकर किसी लोहे के पात्र मे भरकर आग में पकावै। जब रस गाढा हो जाय, तब इसको सीप मे धरकर पतला पतला लेप आंखों पर करै। यदि इमली के बीज न मिले तो पत्तों के रसको ही काम में लाना चाहिये।

सातवा उपाय।

चौसठ तोले पानी मे चार तोले दारु हलदी को डालकर पकावै जब आठवा भाग शेष रहै, तब उतार कर छानले। फिर इस में शहत मिलाकर आखों पर डालने से सब प्रकार के आंख दूखने मे लाभ पहुंचता है।

आठवा उपाय।

केवल सहजने के पत्तों के रस में शहत मिलाकर लगाने से बादी, पित्त, कफ त्रिदोष से आई हुई आख अच्छी हो जाती हैं।

नवां उपाय।

नेत्र बाला तगर, कंजाकी बेल और गूलर इन सबकी छालको बकरीके दूध और जल मे पकावै। इसको पकने पर छानकर आखों में टपकावे, इस से आखों का दरद जाता रहता है।

दसवां उपाय।

मजीठ, हलदी, लाख, किसमिस, दोनों प्रकारकी मुल-हटी और कमल इनके काढे मे चीनी मिलाकर ठंडा करले इस को आंखों म टपकाने से रक्त पित्त के कारण जो आख दुखनी आई हो तो आराम हो जाता है।

ग्यारहवां उपाय ।

कसेरू और मुलहटी को पीसकर एक पतले कपड़े में रख कर पोटली बना लवे । फिर इसको वर्षा के जल में भिगो भिगो कर आंखों में निचोड़ना चाहिये ।

बारहवां उपाय ।

सफेद कमल, मुलहटी और हलदी इनको पीसकर एक पोटली बना लेवे । इसको स्त्री वा बकरी के चीनी डाले हुए दूध में भिगो भिगोकर आंखो मे निचोड़ने से दाह, वेदना, ललाई और आंसुओं का गिरना बंद हो जाता है ।

तेरहवां उपाय ।

सफेद लोध और मुलहटी को घी में भूनकर महीन पीसकर पोटली बना लेवे । इस पोटली को स्त्री के दूध में भिगो भिगो कर आंखों में टपकाने से पित्त रक्त और चोट से उत्पन्न हुए नेत्र रोग में आराम हो जाता है ।

चौदहवां उपाय ।

सोंठ, त्रिफला, नीम, अड़सा और लोध इनका काढ़ा करके जब ठंडा होने से इसमे कुछ गरमाई शेष रहे तब आंखमें टपका- ने से कफ के कारण दुखती हुई आंखमें आराम हो जाता है ।

पन्द्रहवां प्रयोग ।

सोंठ और बबूल का गोंद प्रत्येक साढ़े तीन माशे दोनों को कूट छानकर पानी के साथ पीसकर लेप करना चाहिये ।

सोलहवां प्रयोग ।

अमचूर को लोहे के खरल में डालकर लोहे के दस्ते से थोड़ा थोड़ा पानी डालकर खूब घोटकर इसका पतला पतला लेप आंखोंके ओर पास करना बहुत उपयोगी है ।

सत्रहवां प्रयोग ।

बडके पेडका दूध आंखों में आजना नेत्र रोग में बहुत गुण कारक है ।

अठारहवां उपाय ।

मोंठ और नीम के पत्तो को समान भाग लेकर पानी के साथ पीसकर गोलियां बनाकर रखले । जब दरद होताहो तब पानी में घिसकर लेप कर देना चाहिये ।

उन्नीसवां उपाय ।

काली मिरच और चूल्हे की जली हुई मिट्टी इन दोनों को चीनी के प्याले में घोटे । जब घोटते घोटते काला रंग पडजाय तब काजल की तरह आंखों में आंजे, इससे नेत्रो की ललाई और बगल गंध जाती रहती है ।

बीसवां उपाय ।

अडूसे के पत्तों को पीसकर टिकिया बनाकर आंखों पर बांध ने से तीन दिनमे बगलगंधादिक रोग जाते रहते हैं ।

इक्कीसवां उपाय ।

कपास की पत्तियो को पीसकर दही में मिलाकर आंखों पर लगाने से उक्त गुण होता है ।

बाइसवां उपाय ।

अनार की पत्तियों को पीसकर टिकिया बनाकर सोते समय आंखों पर बाधना भी उक्त गुण कारक है ।

तेईसवां उपाय ।

गोभी के पत्तों की टिकिया भी ऊपर लिखा गुण करती है ।

चौबीसवां उपाय ।

नागर मोथा, मुलहटी, आमला, मकोय, खस, नीलकमल के बीज, प्रत्येक तीन माशे, मिश्री दो तोले इन सबको कूट

छानकर इस में से सात मासे प्रतिदिन सेवन करने से आंख छाती और पेट की जलन जाती रहती है।

पच्चीसवां उपाय।

छुली हुई मेथी का लुआब थोड़े से कतीरे में मिलाकर आंख में टपकाने से पीड़ा शांत होजाती है।

छब्बीसवां उपाय।

कटेरी के पत्ते पीसकर नेत्रों पर बांधने से और आंखों में उसीका रस निचोडनेसे आंखों में उपकार होता है।

सत्ताईसवां प्रयोग।

छिली हुई मुलहटीको कुछ कूट कर थोडे पानीमें पीसकर उसमें रुई भिगो कर नेत्रों पर रखने से नेत्रों की ललाई जाती रहती है

अट्ठाईसवां प्रयोग।

लोध दो भाग बडी हरड का बकल आधा भाग इन दोनों को अनारके पत्तों के रस के साथ पीसकर रुई भिगो कर आंखों पर तीन दिन तक लगाने से सब प्रकार का दर्द जाता रहता है

उन्तीसवां प्रयोग।

कच्ची आमी को कूट कर आंख पर बांधना भी गुण कारक है

तीसवां प्रयोग।

बीस मुंडी निगलजानेसे एक बरस तक और चालीस मुंडी निगलजाने से दो बरस तक आंख दुखनी नहीं आती है।

इकत्तीसवां उपयोग।

जो आंख दुखनी न आई हो और गरमी के कारण सुरखी चलती हो तो त्रिफला को कूटकर रातके समय पानीमें भिगोदे और प्रातःकाल उस पानी को छानकर आंखों पर छींटे मारे।

बत्तीसवां प्रयोग।

सहजने के पत्तों का रस तांबे के पात्र में रखकर तांबे के

मूसले से रिगडे। फिर इसमें घी की धूनी देकर आंख मे लगावे इससे सूजन, घर्ष, आंसू और वेदना दूर हो जाते है।

तेतीसवा प्रयोग।

कांसी के पात्र में तिलके जलके साथ मिट्टी के ठीकरे को घिसकर घृत मे सने हुए नीम के पत्तों की धूनी देकर आंख में लगाने से घर्ष, शूल, आसू और ललाई जाती रहती है।

चौतीसवां प्रयोग।

लोहे के पात्र में दूध के साथ गूलरको घिसकर घृत में सने हुए शमीपत्रकी धूनी देकर आंख में लगावे। इस से दाह, शूल, ललाई, आंसू और हर्ष जाते रहते हैं।

पेतीसवां प्रयोग।

तालीस पत्र, चपला, तगर, लोह चूर्ण, रसौत, चमेली के फूल की कली, हीरा कसीस और सेंधा नमक इन सबको गो मूत्र में पीसकर तावे के पात्र पर पोतकर सात दिन तक रहने दे। सात दिन पीछे इस औषधको तांवे के पात्र से खुरच कर फिर गो मूत्र में पीसकर गोली बनावे। इन गोलियों को छाया में सुखा कर स्त्री के दूध मे घिसकर आंख मे लगावे। इससे घर्ष, आंसु गिरना, सूजन और खुजली जाती रहती हैं।

छत्तीसवां प्रयोग।

कटेरी की छाल, मुलहटी और तावे का चूर्ण इन सबको बकरीके दूधमे घिसकर घीमें सने हुए शमी और आमलेके पत्तों की धूनी देकर आखमे लगाने से सूजन और दर्द जाता रहता है।

रतोंध का वर्णन

आयुर्वैदिक विद्वानों का यह मत है कि सूर्यास्त के समय वातादिक सब दोष जहां के तहा ठहर कर दृष्टि को ढक लेते हैं, इस लिये एक रोग पैदा हो जाता है जिसे रतोंध कहते हैं। और

दिन निकलने के समय वही दोष सूर्य की किरणों के कारण छिन्न भिन्न होकर दृष्टि के मार्ग को छोड कर हट जाते है । इस लिये दिन मे दिखाई देने लगता है ।

हकीम लोग रतोंध रोग का यह कारण बताते हैं कि निकम्मी भाफ के परिमाणु चाहे दिमाग में उत्पन्न हो, चाहे आमाशय से उठकर दिमाग की तरफ चढे, तब रातमें दिखाई देना बंद हो जाता है । जो भाफ के परमाणु दिमाग में ही पैदा होतहैं तो रतोंध एकहीदशा पर स्थित रहती है और जो आमाशय से चढ कर जाते हैं, तो जो आमाशय हलका होगा तो रतोंध कम होगी और जो आमाशय भारी होगा तो रतोंध अधिक होगी । दूसरी बात यह है कि आंखकी रतूबत और तरी रात की ठंडी हवा के कारण गाढी होकर देखने की शक्ति को ढक लेती है और सूर्य के प्रकाश से दिन की हवा के कारण वह रतूबत हलकी होकर दूर होजाती है और दृष्टि साफ हो जाती है ।

रतोंध का इलाज ।

जो भाफके परमाणु और रतूबत इकट्ठे होकर दृष्टिमंडल को रोक लेते हैं उनको साफ करने के लिये काली मिरच, नकछिकनी, जुन्दबेदस्तर और फलथा इनको पीसकर सुंघावे जिससे छींक आकर दिमाग साफ होजाय ।

रतोंध पर बफारा ।

सोंफ, सोया, बाबूना, पैसून, दोना मरुआ, नरमाग और तुलसी इनको पानीमें औटाकर इस पानी का आंखोंको बफारा देवै ।

दूसरा बफारा ।

बकरी की कलेजी, सोंफ और पीपल, इन तीनों को हांडी में भरकर पानी के साथ औटावे और इस पानी का बफारा दे ।

तीसरा बफारा ।

केवल बकरी की कलेजी को आग पर रखकर आंखों को धूंआं देना भी विषेश लाभकारक है ।

भोजनके साथ हींग, पोदीना, राई, सातरा और अंजदान का अधिक सेवन करना भी गुणकारक है ।

आंखो में लगानेकी दवा ।

जंगली बकरी की कलेजी आग पर रखकर काली मिरच और सोंफ कूटकर उस पर डाले, जिससे कलेजी से उठी हुई तरी को यह दवा सोखलें । फिर इन दवाओं को कलेजी पर से उतार कर बारीक पीसकर रखले आवश्यकताके समय सुरमे की तरह आंख मे लगावे ।

अन्य उपाय ।

बकरीकी कलेजी में जंगली बच और पीपल गाढदे और उस कलेजी को आग पर रखदे । ऐसा करने से जो पानी निकले उसको आंख में लगावे यह नुसखा बहुत ही उत्तम है ।

दूसरा उपाय ।

सोंठ, काली मिरच और छोटी हरड इनको समान भाग लेकर गोली बनावे, आवश्यकता के समय पानी में घिसकर आख में आंजे ।

तीसरा उपाय ।

काली मिरच, कबेला और पीपल इनको समान भाग लेकर महीन पीसकर आखों मे आंजे ।

हरतामलक ११ योग ।

[१] प्याज का रस अथवा सिरस के पत्तों का रस आंख में आजे [२] सेवें नमक्की सलाई आंखो मे फेरे। [३] समुद्र फलको गुठली बकरी के मूत्र मे घिसकर आख में फेरे ।

[४] दही के तोड में थूक मिलाकर आंखों में टपकाना हित है [५] पानी के साथ सोंठ घिसकर आंखों में लगाना गुणकारक है [६] थूक में काली मिरच घिसकर लगाना चाहिये । [७] रोहू मछली का पित्ता नेत्रों में लगावै । [८] कसोंदी के फूलों का रस लगानाभी उपकारक है [९] सहजने की नरम डालियो सत एक माशे शहत के साथ मिलाकर आंखों में लगानाभी गुणकारक है (१०) गधे का तत्काल निकला हुआ रुधिर आंख में लगावे [११] हुक्के के नैचेकी काली कीचड लगाना भी गुणकारक है ।

पन्द्रहवां उपाय ।

रसौत, गेरू और तालीसपत्र इनको महीन पीसकर घी शहत और गोबर के रस में मिलाकर रतौंध में आंजना हितकारक है ।

सोलहवां उपाय ।

दही में काली मिरच घिसकर आंखों में आंजने से रतौंध जाती रहती है ।

सत्रहवां उपाय ।

कंजा, कमल, सोनागेरू और कमलकेसर इनको गोबरके रस में पीसकर लम्बी सलाई बना लेवे, इसको आंखों में फेरने से रतौंध जाती रहती है ।

अठारहवां उपाय ।

रेणुका, पीपल, सुरमा और सेंधानमक इनको बकरी के दूध में पीसकर सलाई बनाकर आंखों में फेरने से रतौंध जाती रहती है ।

उन्नीसवां उपाय ।

शोध्य, त्रिकुटा, त्रिफला, हरताल, मैनसिल और समुद्रफेन

इन सबको बकरीके दूध में पीसकर बत्ती बनाकर आंखो में आंजने से रतोंध जाती रहती है ।

बीसवां उपाय ।

बकरी के यकृत अर्थात् कलेजी में पीपलों को रखकर आग पर ऐसी रीति से सेके कि जलने न पावे । फिर उस पीपलको जल में घिसकर आखों में लगावे, इससे रतोंध जाती रहती है ।

इक्कीसवां उपाय ।

भैंसकी तिल्ली और कलेजी घी और तेल के साथ खाना भी हित है ।

दिनोंध का वर्णन ।

जिस रोग में दिन में दीखना बंद हो जाता है और रात में वा बादलवाले दिन दिखाई देने लगता है, उसे दिनोंध कहते हैं । इस रोग का यह कारण है कि गरमीके कारण से देखने वाली शक्ति कम हो जाती है और रात के समय सर्दी के कारण दर्शन शक्ति अपनी जगह पर आजाती है, इस लिये रात में दिखाई देने लगता है और दिनमें दीखना बंद हो जाता है ।

दिनोंध का इलाज ।

लडकी की माता का दूध, बनफसा का तेल, कद्दू का तेल नाक में डाले । रीवास का पानी, शर्बत नीलोफर, और बनफशा का शर्बत, उन्नाब का शर्बत पिलावे । ठंडे पानी में डुबकी लगाकर पानी के भीतर आख खोले ।

आंख में गिरी हुई वस्तु का वर्णन ।

जब हवा के साथ उडकर धूल का कण, रेल का कोयला, तिनु का आदि कोई छोटी चीज आख में गिर पडती है

तब आंख मे कड़का मारने लगता है, आंसू बहने लगते हैं, खुजली चलती है और पलकों के इधर ऊपर चलाने के साथ वह चीज भी आंख में इधर उधर घूमती है, इससे बड़ी बेचैनी होजाती है।

उक्त दशा में कर्तव्य।

जब आंख में कोई वस्तु गिर पडी हो तो उसको हाथ से न मलना चाहिये क्योंकि यदि आंख में कोई कठोर वा नोंकी की वस्तु जैसे कांच का टुकड़ा वा लोहे का टुकड़ा पड़ा हो और हाथ से मली जाय तो ऐसा हो जाता है कि वह चीज आंख में घुसकर घाव पैदा कर देती है तब बड़ा कष्ट होता है।

उक्त दशा में उपाय।

(१) आंख को गरम पानी से धोकर उस में स्त्री का दूध डालना उचित है (२) पलक को उलट कर देखे कि वह वस्तु आंख में कहां पडी है यदि दिखाई देती हो तो धुनी हुई रुई के फाये से, वा रूमाल के सिरेमे जैसे हो तैसे उस वस्तु को उठा लेना चाहिये, झट पट न उठे तो रुई के फाये को थोड़ी देर आंख में रक्खा रहने दे इस तरह करने से वह चीज उस रुई के फाये से चिपट जाती है, तब उसे निकाल ले।

जो वह चीज बहुत भीतर घुस गई हो और इन उपायों से न निकल सके तो निशास्ता महीन पीसकर आंख में भर देवे और थोडी देर तक वहीं रहने दे, थोड़ी देर में वह चीज निशास्ते में लग जायगी तब उसे रुई के फाये से बाहर निकाल ले।

जब जौ वा गेंहू की बाल के ऊपर का तिनका या कागज का टुकड़ा वा और कोई ऐसी [illegible] आंख में गिर पड़ी हो तो उस [illegible] में खींच ले [illegible] चाहिये [illegible] काम [illegible] किया करना पा जाता है।

निकालने के पीछे स्त्री का दूध वा अंडे की सफेदी आंख में डाल देनी चाहिये ।

आंख में जानवर गिरने का उपाय ।

जब आंख में कोई मच्छर वा और कोई उडने वाला छोटा जानावर पड जाता है तब बडा दरद होने लगता है, आंख बंद हो जाती है, आंसू बहने लगते है, आंख मसलने से लाल हो जाती है ।

इस के निकालने की यह रीति है कि मुलतानी मिट्टी बहुत महीन पीसकर आंख में भरदे और एक घंटे तक आंख को बंद रक्खे जिसे से वह जानवर उस में लगजावे, फिर रुई वा कपडे से निकाल लेवै ।

अथवा आंख को कपडा गरम कर करके सेके अथवा कपडे को मुख की भाफ से गरम कर कर के सेके फिर भीतर कपडा फेर कर जानवर को निकाल लेवै ।

आंख पर चोट लगने का वर्णन ।

आंख में किसी प्रकारकी चोट लगने से जो ललाई और सूजन उत्पन्न हो तो फस्द खोलना और हलके हलके जुलाब वा मेवे के पानी देकर कोष्ठ को नरम कर देना उचित है । आवश्यता हो तो गुद्दी पर पछनेभी लगवाना चाहिये । फिर दर्द को रोकने के लिये जर्दी मिली हुई अंडेकी सफेदी गुल-रोगन में मिलाकर आंख पर लगाना चाहिये ।

आंखके नीलापन का उपाय ।

दरद और सूजन तथा ललाई कम हो जाने के पीछे चोट का चिन्ह अर्थात नीलापन बाकी रहे तो धनियां, पोदीना, संगफिलफिल [एक पत्थर का टुकडा जो काली मिरचों में मिला करता है] और हरताल इनको पीसकर लेप करने से नीलापन दूर हो जाता है ।

आंख में पत्थर आदिकी चोटका उपाय ।

जब तलवार वा पत्थर आदिकी चोट लगने से मुलतहिमा नामक पर्दा अपनी जगह से हट जाय, तब फस्द खोलना और दस्त कराना उचित है और जो रुधिर निकल आया हो तो रुधिर को साफ करके धुला हुआ शादनज और कपूर मिलाकर लगा देवे और पट्टी से बांध देवें । और जो रुधिर न निकला हो तो शुद्ध किया हुआ नीलाथोथा उस जगह भर दे और अंडेकी जरदी आंख के पलक के ऊपर लगादे ।

आंख के घाव का वर्णन ।

आंख के सब परदों में घाव हो सकता है परन्तु जो घाव मुलतहिमा, करनियां और इनबिया पर्दों में उत्पन्न होता है वह आंख से दिखलाई देता है तथा अन्य पर्दों के घाव दिखलाई नहीं देते उनमें केवल दर्द ही हुआ करता है । मुलतहिमा पर्दे के घाव का यह चिन्ह है कि आंखकी सफेदी में एक लाल बूंद दिखलाई देने लगती है अगर लाली सब सफेदी में फैल जाती है तो आंख का वह स्थान जहां घाव हुआ है और जगह की अपेक्षा अधिक लाल दिखलाई देता है । दर्दकी अधिकता चपक और धमक ये उसके साथ होते हैं ।

इनबिया पर्दे के घाव का यह चिन्ह है कि आंखकी स्याही के सामने एक लाल बिन्दु होता है ।

करनिया पर्दे के घाव का यह चिन्ह है कि आंखकी काली पुतली में एक सफेद दाग पैदा हो जाता है ।

आंख के घाव का इलाज ।

इस में फस्द खोलना और रोगी के बलके अनुसार रुधिर निकालना उचित है । हरड़, इमली और अमलतासादि रेचक वस्तुओं का काढा देकर कोठ को नरम करे और कई बार जुलाबभी देवे ।

जो यह नाककी तरफ वाले कोए के पास हो तो फिर ऊंचा सोना चाहिये जिस से आंख में से पीव नीचे को बहता रहे। कोए मे इकट्ठा होकर उसे विगाड़ने न पावे। और जो घाव कान के कोए की तरफ हो तो उस तरफ करवट लेकर सोवे, जिस तरफ घाव है और इस कोए को तकिये के ऊपर रक्खे जिससे पीव निकलता रहे। इस रोग में चिल्लाना, चीखना, वमन करना, सिरहाना नीचा रखना और गरिष्ट भोजन खाना हानिकारक है।

अन्य उपाय।

जो घाव गंभीर हो तथा जलन और दर्द भी होता हो तो सियाफ अवियज की अंडेकी वा स्त्रियों के दूध में घिसकर आंख में लगावे अथवा केवल स्त्री का दूध ही आंख में डालना लाभ दायक है।

अगर घाव जल्दी न पके तो धुली हुई मेथी का लुआब या अलसी का लुआब या नाखूने का पानी [अक्लीलुलमलिक] आंख मे डाले। फिर घाव को साफ करने के लिये "शियाफ, अबार" और जरूरअंजरूत' लगाना चाहिये।

जो पीव गाढा हो तो मेथी का लुआब और शहत लगाने से पतला होकर निकल जाता है।

घाव के साफ होने पर, शियाफे कुन्दरू लगाना उत्तम है इससे घाव भर जाता है फिर शियाफ अहमर लय्यन उसके पीछे शियाफ कोहल अगवर लगाना चाहिये। आवश्यकता हो तो सबके पीछे शियाफ अखजर लगाना बहुत लाभदायक है।

जरूरअंजरूतकी विधि।

नशास्ता २१ माशे, गधी के दूध में शुद्ध किया हुआ

अंजरूत ७ माशे, जस्त का सफेदा ७ माशे. इन सब को महीन पीसकर कपडछन कर काम मे लावे ।

शियाफ कुंदरकी विधि ।

कुन्दर ३५ माशे, उश्क और अंजरूत आधा भाग, केसर ७ माशे इन सबको महीन पीसकर मेथी के लुआब मे शियाफ बनाकर आंख में लगावे ।

आंख की सफेदी का वर्णन ।

यह सफेदी आंखकी स्याही के ऊपर हुआ करती है । इस रोग के तीन कारण हैं, उनमें से एक तो यह है कि घाव हो जाने से आंख कुछ समय तक बंद रहे जिससे निकम्मा मवाद आंख पर गिरता रहे और निर्बलताके कारण न निकल सके, इससे काली पुतली पर सफेदी पड जाती है. यह इलाज करने से भी बिलकुल नहीं जाती है, घाव के बराबर रह जाती है । दूसरा कारण यह है कि जब आंख दुखनी आती है तब अच्छा इलाज न होनेके कारण आंख बंद रहती है और गाढा मवादभी तरही भीतर रुक कर सफेदी पैदा कर देता है । तीसरा कारण यह है कि सिर मे अधिक दर्द होने से आंख मे भी दर्द होजाता है, इसमें आंख का बंद रखना अच्छा लगता है इस लिये भीतर का मवाद वा दूषित भाफ बाहर नहीं निकल सकते हैं इससे भी सफेदी हो जाती है

सफेदी का इलाज ।

हलकी सफेदी को काटने के लिये लाले का पानी कस्तूरापून का रस शहत में मिलाकर लगाना चाहिये । जो सफेदी गाढी हो तो जला हुआ तांबा, तार, नोसादर, हिन्दानी नमक, समुद्रफेन, अकरकरा, हजरूलयहूद आदि तेज दवा लगानी चाहिये ।

जरूर सुश्क का नुसखा

कीकड़ा. काचकी चूडी, समुद्रफेन. गोहकी बीट, संगदान जजरीवा, बसरे का नीलाथोथा. शुतरमुर्ग के अंडे का छिलका रांग का सफेदा, तांबेका मैल, आवगीरये सामी. अनबिंधे मोती. जला हुआ अकीक. सिल्ली का पत्थर. पीपली, सिफाछेरगीन, सौने का मैल, तूतियाहिंदी, नीलाथोथा, मूंगेकी जड, खडिया-मिट्टी. जला हुआ तांबा, तूतिया, किरमानी, तूतिया महमूदी, प्रत्येक सात माशे, नमक, बूरए अरमनी प्रत्येक तीन माशे, सोनामक्खी और चमगादडकी बीट प्रत्येक पौने दो माशे, आवगीना सात माशे, और कस्तूरी डेढ माशे इन सब को महीन पीसकर काम में लावे ।

जरूर सुश्कका दूसरा नुसखा ।

गोहकी बीट, अनबिंधे मोती, मूंगेकी जड, पापडीनमक, शुतरमुर्ग के अंडे का जला हुआ छिलका प्रत्येक साढे दस माशे, कंतूरयून साढे सत्रह माशे, नीलाथोथा साढे तीन माशे, हिंदी छरीला पौने दो माशे, कस्तूरी दो रत्ती इनको पीसकर आंखो में बुरकने के लिये काम में लावे ।

परीक्षा की हुई दवा ।

चमगादड की बीट और शहत मिलाकर आंख में लगाना चाहिये । अथवा मुर्गे के अंडे के छिलके की राख और मिश्री दोनो को बराबर पीसकर आंख के भीतर बुरकदे, इससे सफेदी जाती रहती है ।

हजम सगीर की विधि ।

मुर्गी के अंडे के छिलके को मीठे पानी में भिगोकर धूप में रखदे जब उसमें दुर्गंधि उठने लगे तब धीरे धीरे धोकर उस पानी को निकालकर दूसरा पानी डालकर फिर धूप में रखदे इसी

अंजरूत ७ माशे, जस्त का सफेदा ७ माशे; इन सब को महीन पीसकर कपडछन कर काम मे लावे ।

शियाफ कुंदरकी विधि ।

कुन्दर ३५ माशे, उश्क और अंजरूत आधा भाग, केसर ७ माशे इन सबको महीन पीसकर मेथी के लुआब में टिकिया बनाकर आंख में लगावे ।

आंख की सफेदी का वर्णन ।

यह सफेदी आंखकी स्याही के ऊपर हुआ करती है । इस रोग के तीन कारण है, उनमें से एक तो यह है कि घाव हो जाने से आंख कुछ समय तक बंद रहै जिससे निकम्मा मवाद आंख पर गिरता रहे और निर्बलताके कारण न निकल सके, इससे काली पुतली पर सफेदी पड जाती है. यह इलाज करने से भी बिलकुल नहीं जाती है, घाव के बराबर रह जाती है । दूसरा कारण यह है कि जब आंख दुखनी आती है तब अच्छा इलाज न होनेके कारण आंख बंद रहती है और गाढा मवादभी तरही भीतर रुक कर सफेदी पैदा कर देता है । तीसरा कारण यह है कि सिर में अधिक दर्द होने से आंख में भी दर्द होजाता है, इसमें आंख का बंद रखना अच्छा लगता है इस लिये भीतर का मवाद वा दूषित भाफ बाहर नहीं निकल सकते हैं इससे भी सफेदी हो जाती है

सफेदी का इलाज ।

हलकी सफेदी को काटने के लिये खाले का पानी, जैतुनचून का रस शहत में मिलाकर लगाना चाहिये । और सफेदी गाढी हो तो जला हुआ सीसा,सांप,नौसादर, हिन्दी नमक, सुहागा, जरूमुहरा हजरुलयहूद आदि चीजे लगानी चाहिये ।

जरूर सुरक का नुसखा

कीकड़ा. काचकी चूड़ी, समुद्रफेन. गोहकी बीट, संगदान जजरीवा, बसरे का नीलाथोथा. शुतरमुर्ग के अंडे का छिलका रांग का सफेदा,तांबेका मैल,आवगीरये सामी. अनबिधे मोती. जला हुआ अकीक. सिल्ली का पत्थर पीपली, सिफाछेरगीन, सौने का मैल, तूतियाहिंदी, नीलाथोथा, मूंगेकी जड, खडिया-मिट्टी, जला हुआ ताबा, तूतिया, किरमानी, तूतिया महमूदी, प्रत्येक सात माशे, नमक, बूरए अरमनी प्रत्येक तीन माशे, सो नामक्खी और चमगादडकी बीट प्रत्येक पौने दो माशे, आव-गीना सात माशे, और कस्तूरी डेढ माशे इन सब को महीन पीसकर काम में लावे ।

जरूर सुरकका दूसरा नुसखा ।

गोहकी बीट,अनबिधे मोती,मूंगेकी जड,पापडीनमक,शुतर-मुर्ग के अंडे का जला हुआ छिलका प्रत्येक साढे दस माशे, कंतूरयून साढे सत्रह माशे, नीलाथोथा साढे तीन माशे, हिंदी छरीला पौने दो माशे, कस्तूरी दो रत्ती इनको पीसकर आंखो में बुरकने के लिये काम में लावे ।

परीक्षा की हुई दवा ।

चमगादड की बीट और शहत मिलाकर आंख में लगाना चाहिये । अथवा मुर्गे के अंडे के छिलके की राख और मिश्री दोनों को बराबर पीसकर आख के भीतर बुरकदे, इससे सफेदी जाती रहती है ।

हजम सगीर की विधि ।

मुर्गी के अडे के छिलके को मीठे पानी में भिगोकर धूप में रखदे जब उसमें दुर्गंधि उठने लगे तब धीरे धीरे धोकर उस पानी को निकालकर दूसरा पानी डालकर फिर धूप में रखदे इसी

रहे जब तक दुर्गंध उठती रहे तब तब तक इसी तरह करता रहे। फिर छिलकोंको निकालकर सुखाले और महीन पीसकर चीनी मिलाकर काम में लावे।

मोरसर्ज का वर्णन।

जब घाव या फुंसी के कारण करनिया परदा फटकर नीचे से इनबिया परदा निकल आता है उसी को मोरसर्ज कहते हैं।

मोरसर्ज का इलाज।

मोरसर्ज का इलाज करने में इतनी शीघ्रता करनी चाहिये कि करनियां के फटे हुए किनारे मोटे न होने पावें और ऊंचाई के दूर करने का उपाय करै। और आंख का बहना रोकने के लिये वे दवा लगावे जो सरदी न हो। धुला हुआ शादनज चांदी का मैल, जली हुई सीप और जली हुई सांप आदि ऐसी ही दवा उपयोगी होती है। इस रोग में सब से उत्तम दवा कोहले अक्सीरीन है।

कोहले अक्सीरीन की विधि।

सुरमा और शादनज दोनों को समान भाग लेकर बारीक पीसकर आंख में भरदे।

अन्य उपाय।

ऊंचाई को दूर करने का यह उपाय है कि आंख के बराबर एक मोटी गद्दी बनाकर आंख के ऊपर रखकर पट्टी बांध दे। अथवा साढ़े सत्रह वा पचीस माशे का एक टुकड़ा सीसे का लेकर आंख पर रखकर पट्टी बांध दे अथवा एक थैली में सुरमा भर कर रख देना भी अधिक गुणदायक है। इन उपायों के करने से भीतर का परदा बाहर न निकल सकेगा।

मैंडापन का इलाज।

एक वस्तु की दो दिखाई देना मैंडापन होता है। मैंडापन दो प्रकार का होता है, एक तो यह कि जन्म से ही होता है,

इसका इलाजभी नहीं है और दूसरा जन्म लेने के पीछे होता है। जन्म से पीछे होने वाला भेंडापन बहुधा बालकों को हुआ करता है और कभी कभी बडी अवस्था में भी हो जाता है। बालकपन में भेंडापन तीन कारणों से होता है जैसे (१) मृगी रोग से (२) माता वा दूध पिलाने वाली के दोष से और (३) किसी भयंकर शब्दसे। मृगी रोग से होने का यह कारणहै कि आंखके पट्ठे खिंच जाते हैं और एक आख ऊंची और दूसरी नीची हो जाती है। दूध पिलाने वाली के दोष से इस तरह होता है कि वह बच्चे को एक ही करवट लिटाकर दूध पिलाया करती है और बालक अपनी माता के मुखकी ओर वा दूसरे स्तनकी ओर दृष्टि बांधकर बहुत देर तक इक टक देखा करता है इससे नजर तिरछी होकर ठहर जाती है। भयंकर शब्द से इस तरह होता है कि यदि कोई अचानक बालक के पास चिल्लावे वा अन्य कोई बडा शब्द हो और बालक चोंक पडे और उस ओर आख घुमाकर देखे तो इस तरहभी भेंडापन हो जाता है।

वालकों के भेंडपन का इलाज।

इस में वे उपाय करने चाहिये जिस से बालक की आंख जिधर फिर गई है उस से दूसरी तरफ फिर जाय। एक तो यह है कि दूध पिलाने वाली बालक को दूसरी करवट से लिटा कर दूध पिलाने लगे इस से सहज ही में आख फिर जाती है क्यों कि बालक के रग पट्ठे बहुत नरम होते हैं। दूसरा उपाय यहहै कि जिस ओर को आंख फिर गई हो उस से दूसरी ओर एक लाल कपड़ा बांधदे जिस से बालक उस ओर को देखने लगे क्यों कि लाल वस्तु बालक को अधिक प्यारी मालूम होती है। तीसरा उपाय यह है कि बालक के मुख पर एक कपडा ढक कर उस कपडे में पुतली के साम्हने एक छेद करदे, इससे बालक उस छिद्र में होकर दीपकको देखेगा, इस तरह भी आंख सीधी हो

जाती है। जो मृगीरोग से हो तो धाय को वादी की वस्तुओं से बचावे।

युवावस्था का भेंडापन।

युवावस्था में भेंडापन तीन कारणों से हुआ करता है एक तो यह कि आंख को हिलाने वाले पट्ठों के खिच जाने से आंख का ढेला एक ओर को खिच जाय यह बहुधा सरसामादि कठिन बीमारियों के पीछे हुआ करता है, इसमें तरी पहुंचाने वाले तरेडे और तेल काम में लावे। और आंख में लडकी की मा का दूध वा गधी का दूध डाले। दूसरी प्रकार के भेंडेपन के चिन्ह तसन्नुज इम्तलाई के सदृश होते हैं इसमें मल निकालना, छुले कराना, और अच्छे भोजन खाना हितकारक है। तीसरा यह कि गाढी वादी के कारण आंखकी रतूबतें और पर्दे अपनी जगह से हट जांय इसमें आंख फडका करती है और आंसू भी बहने लगते हैं। इस में दिमाग से मवाद को निकालने का उपाय करे, रिहाको निकालने के लिये गरम पानी से सेके। सौंफ के पानी में मामीरा पीस कर लेप करना चाहिये। इस में वमन विरेचन द्वारा आमाशय को साफ करना भी हितकारक है।

पलक के बाल गिर जाने का वर्णन।

पलकों के बाल जब गिर जाते हैं तब सोज नमदी कहते और मस्तक के पिछाडी पछने लगाना इन दोनों कामों को करके नीचे लिखे उपाय काम में लावे।

पहिला उपाय।

आक के दूध में रुई भिगोकर सुखावे और इसकी बत्ती बना कर मीठे तेल में काजल पाडकर आंखों में लगावे।

दूसरा उपाय।

धतूरे और भांगरे की पत्तियों के रस में रुई भिगोकर छाया में सुखाकर इसकी बत्ती से मीठे तेल में काजल पाडकर लगावे।

तीसरा उपाय ।

पुराने ढोलकी खाल को कोयले की आगपर जलाकर राख करले इस राखको रुईके भीतर लपेट कर बत्ती बनाकर सरसों के तेलमे जलाकर काजल पाडकर आंखों में आंजे ।

चौथा उपाय ।

जलाहुआ तांबा, धुला हुआ शादनज, प्रत्येक साडे सत्रह माशे, कालीमिरच, पीपल, केसर, इन्द्रायन, का गूदा प्रत्येक पौने दो माशे, जंगार,एलुआ, बूरए अरमनी प्रत्येक साडे तीन माशे, चांदी का मैल ७ माशे इन सबको पीस छानकर आंखमें लगावे, इससे आंसू नहीं बहते हैं और पलकों की जड दृढ हो जाता है ।

पांचवां उपाय ।

आककी जड की राखको पानी में मिलाकर आंखों के ओर पास पतला पतला लेप करने से खुजली, खुश्की और सूजन जाती रहती है ।

पलकोंके सफेद होजाने का इलाज।

जंगली कालेको जैतूनके तेलमें या बकरीकी चर्बीमें या रीछ की चर्बीमें पीसकर पलकों पर लेप करे अथवा सीप जलाकर बकरी की अथवा रीछकी चर्बीमें मिलाकर लेप करने से पलक काले पड जाते हैं ।

खुजली की दवा ।

दो तोले जस्तको लोहेके पात्रमें पिघलाकर उस पर थोडा २ बथुए का रस टपकाता रहे नीचे आग जला रक्खे । ऐसा करने से सफेद होजाती है, इसको आंखों में लगाने से आसू बहना, आंखकी खुजली, ललाई, बाफनी गलजाना और परबाल रोग जाते रहते हैं ।

अन्य दवा ।

धकचूंदह की आधी कच्ची और आधी पकी बीट लेकर शहत में मिलाकर लेप करने से पलकों का गिरजाना और बाफनी का गलना इनमें गुण करता है ।

अन्य उपाय ।

(१) सफेद बिसखपरा की जडको छाया में सुखाकर पानी में पीसकर लेप करे (२) मक्खी का सूखा हुआ सिर पानी में पीसकर लेपकरे । [३] सांपकी राख पिसी हुई आंखों में आंजे। [४] कटेरीके फलको पानीमें औटाकर उसका बफारा देवे । [५] कबूतर की बीट शहतमें मिलाकर लेप करता रहे । [६] सांपकी कांचली को जलाकर तिलके तेलमें मिलाकर लेप करे ।

अन्य उपाय ।

बबूल की सेरभर पत्ती लेकर पांचसेर पानी में औटावे जब चौथाई शेष रहे तब छानकर इस पानी को दोनों समय पलकों पर लगावे इससे बाफनी का गलना पलकों का गिरपड़ना और आंख के कोयों की ललाई जाती रहती है ।

अन्य उपयोग ।

१ गधे की लीदको सुखाकर उसका पाताल यंत्रद्वारा तेल खींचकर पलकों पर लगावे । [२] घीयाकी रास आंखों में आंजे ३ कपूर लीलाथोथा मिसरी और रसौत इनको समान भागलेकर पानी में घिसकर आंखों पर लगावे ४ छुहारे की गुठली दस माशे माजूफल सात माशे इनको पानी में पीसकर आंखों पर लगाने से पलकोंका झड़ना दूर होजाता है । ५ कदरू गोंदको दीपक में धरकर जलावे और उसका काजल पाड़कर आंखों में लगावे तो आंख पड़ना नेत्रोंके घाव आंखों की बाफनी का गलना,खुजली,धुंध आंखके घाव सब

होजाते हैं ६ कुंदरु गोंद को काजल के समान पीसकर आंखों में लगाने से आंख कीज्योति बढती है।

अन्य उपाय।

पुराना कपड़ा अथवा रुई तीन बार हल्दी में रंगकर सुखाले फिर इसी तरह बिनोलों के गूदे मे तीन बार भिगो कर सुखाले फिर इस की बत्ती बनाकर सरसों के तेल में काजल पाड कर आंखों में लगावे।

तखय्युलात का वर्णन।

इस रोग में हवा के भीतर रंगविरंगी वस्तु दिखलाई देती है यह रोग चार प्रकार से होता है यथा - १ सूक्ष्म और छोटी वस्तुओं का बडा दीखना अर्थात दृष्टिका तीव्र होजाना, [२] आंखके परदे में चेचक आदि कोई रोग होकर बहुत सूक्ष्म चिन्ह पैदा करदे और दृष्टि को ढकदे, इस रोग में चिन्ह के आकार के सदृश ही वस्तुओं के आकार दिखाई देते हैं। (३) आंख की तरी में अंतर पडने से और ४ कोई बाहरी कारण, जैसे हवा में उडती हुई वस्तुओं का दिखाई देकर शीघ्र नष्ट हो जाना, आंख के साम्हने भुनगे से उडते दिखाई देना आदि २।

उक्तरोग में इलाज।

इस रोग में देहके मवाद को वमन विरेचन से निकालना उचित है।

इस रोग के अन्य इलाज दृष्टि की निर्बलता और नजले के प्रकरण में विशेष रूपसे वर्णन किये जावेंगे।

आंखकी खुजली का वर्णन।

खारी रतूवत के आंखपर गिरने से खारी आंसू निकला करते हैं, इससे आखो में खुजली चल चलकर ललाई और जलन पैदा होजाती है, और खुजाने से घाव भी होजाते हैं।

खुजली का इलाज ।

काफनी को कूटकर गुलरोगन में मिलाकर आंख पर लेप करे और इसरमी आंखपर लगावे, जिससे बिगडी हुई तरी निकल जाय । इसपर केवल रोटी, अंजीर और मुनक्का खाना हित है आंखों में तरी पहुंचाना, नदी के किनारों पर भ्रमण करना, तर तेल लगाना, तरी बढानेवाले शर्बत वा भोजनों का सेवन करना उचित है । मवाद निकलकर जब देह हलकी होजाय तब वासलीकून और कौहल अरीजी आंखमें लगावे ।

वासलीकूनके बनाने की रीति ।

चांदी का मैल, समुद्रफेन प्रत्येक साढेबाईस माशे, रांग का सफेदा, तुर्की नमक, कालीमिरच, नौसादर और पीपल प्रत्येक साढेचार माशे, जलाहुआ तांबा साढेइकतीस माशे, लौंग और छारछबीला प्रत्येक पौनेदो माशे, कपूर नौ रत्ती, तेजपात, जुंदबेदस्तर, बालछड, सुरमा, प्रत्येक साढेतीनमाशे । इन सबको पीसकर सुर्मा बनालेवे ।

कौहलअरीजी की विधि ।

सुरमा अस्पहानी जलाहुआ साढेसत्रह माशे, रूमीमस्तगी, सौनामक्खी, शादनज अदसी धुला हुआ, नीलाथोथा, जला हुआ तांबा, प्रत्येक सात माशे, पीली हरडका छिलका, पतंग कालीमिरच, पीपल, नौसादर, एलुआ, रसौत, मामी केसर, दरयाई कोकडा, प्रत्येक साढेतीन माशे, सोंठ पौने दो माशे, कपूर साढे तीन रत्ती, कस्तूरी तीन रत्ती, लौंग एक माशे. इन सब दवाओं को कूट पीसकर बहुत महीन करले ।

अन्य उपाय ।

(१) मायफल और जमालगोटा इन दोनों को पीसकर आंखोंपर लेप करनेसे खुजली जाती रहती है. (२) आमकी के सिरके मारों की राख को महीन पीसकर आंखों में लगावे

से खुजली जाती रहती है। (३) अंडेका छिलका महीन पीसकर आंखोंमें लगानेसे उक्त गुण होताहै। (४) नीम के पत्तों को कपड मिट्टी करके जलाले फिर इसे नीबू के रसमे घोटकर आंखों में लगानेसे खुजली जाती रहती है। (५) सीसेका काजल आंखों में लगावे।

बांसपर सीसे के टुकडे को रिगडने से जो स्याही पैदा होती है उसीको सीसे का काजल कहते हैं।

गुद्दे का वर्णन।

आंख के कोने में कडे मांस के उत्पन्न हो जाने को गुद्दा कहते हैं, इसके होने से आंसू और गीढ आदि आंख के मवाद उसी जगह रुक रुककर नासूर पैदा कर देते हैं। इसका इलाज यह है कि शरीर को शुद्ध करके मरहम जंगार वा शियाफ जंगार लगाना चाहिये, अगर इससे अच्छा न हो तो नाखूनेकी तरह काटकर उस पर ' जरूर अजफर ' बुरक दे जिससे बाकी बचा हुआ हिस्साभी दूर हो जाय। और काटने की जगह दरद होता हो तो अंडेकी जर्दी को गुल रोगन मे मिलाकर लेप करे और घाव भरने के लिये मरहम लगावे। (शियाफ जंगारकी विधि) समग अर्बी रांग का सफेदा, और जगार प्रत्येक सात माशे इन तीनों को महीन पीसकर तुलसी में सानले और सलाई बनाकर काम में लावे।

दृष्टिकी निर्बलता का वर्णन।

निरोग अवस्था में जैसा दिखाई देता था वैसा न दीखना ही दृष्टिकी निर्बलता है। इसके होने के बहुत से कारण हैं, एक तो यह है कि ठंडी और दुष्ट प्रकृति आंखकी ज्योति को घटा देती है इस में दिमाग को साफ करने के लिये दस्त दावे और बासलीकून सुर्मा वा रोशनाई कबीर आंख में आजे। दूसरा

गर्द दुष्ट प्रकृतिसे आंख छोटी पड़जाय, देर में फिरे अथवा और कोई ऐसा ही उपद्रव हो जाय। इसमें बटेर और मुर्गे का मांस भूनकर अथवा चने और दालचीनी के साथ रांधकर खाने को दे, चमेली वा बकायन का तेल नाक में डाले। गरम दवाइयों का बफारा दे। तथा शियाफ अफजर वा शियाफ असजर आंख में लगावे।

शियाफ अजफरकी विधि।

पीली हरड, नीलाथोथा, सफेद मिरच, सगग अर्बी, प्रत्येक साढे दस माशे, केसर साढे तीन माशे इन सब दवाओं को कूट छानकर हरी सौंफके रसमें मिलाकर सलाई बना लेवे।

शियाफ असजरकी विधि।

जंगार साढे दस माशे: पीली फिटकरी फूली हुई २१ माशे पारेढी नमक, समुद्र फेन, लाल हरताल प्रत्येक साढे तीन माशे नौसादर पोने दो माशे, हिंदी छरीला साढे चार माशे। इनमें से छरीला को हरी तुलसी के रस में मिलाले और बाकी सब दवाओं को कूट छान उसमें मिलाकर सलाई बना लेवे।

एक कारण यह है कि दोष युक्त गरम दुष्ट प्रकृति से दृष्टि निर्बल हो जाती है, इसमें आंख में फुलावट, गरमी और ललाई मालूम होती है।

जो रुधिर की अधिकता हो तो हरड का काढा देकर कोष्ठ को नरम करदे, तथा प्याज गंधना आदि वातकारक द्रव्यों का सेवन वर्जित है।

बरूद हमामीकी विधि।

उक्त प्रकार के रोग में इस दवा को लगाने से आंसू बहने लगते हैं, नीलाथोथा महीन पीसकर खट्टे अंगूर के रस में भिगोकर छाया में सुखावे फिर दूसरी बार पीसकर आंख में

लगावे । नीलाथोथा के बाद करावादीनों में लिखी हुई दवा भी मिला लेनी चाहिये ।

अब हम कुछ सुर्मे वा अन्य नुसखे लिखते हैं जो आंखोंकी ज्योति बढाने में लाभकारकहैं, इनको रोगी की प्रकृति और दोष के अनुसार काम में लाना उचित है ।

गुलमुडी का शर्वत ।

मुडी के फूल पावसेर. लेकर रातको डेढ सेर पानी में भिगो दे और प्रात:काल औटावे, जब तिहाई शेष रहे तब उतार कर छानले, इसमें तीन पाव बूरेकी चाशनी करके रखले, इसको प्रतिदिन चार तोले सेवन करने से आंखोंकी ज्योति ठीक रहती है, मस्तक को तरी पहुंचती है और ऊपर को गरमी नहीं चढने देती है ।

सौंफ का प्रयोग ।

सात माशे सौंफ को कूटछान कर समान भाग बूरा मिला कर प्रतिदिन रात के समय फाक लिया करे तथा सौंफ का इत्र आंखों में लगाता रहै । इससे दृष्टि बढती है ।

तिमिरनाशक घृत ।

चार तोले जीवंती को ढाईसेर जलमें पकावै, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, फिर इस क्वाथमें दुगुना दूध आधसेर घी डालकर पकावे और इसमें प्रपौंडरीक, काकोली, पीपल, लोध, सेंधानमक, सौंफ, मुलहटी, दाख, मिश्री, देवदारू, त्रिफला प्रत्येक एक माशे डालकर पिया करे तो तिमिररोग जाता रहता है यह इस रोग पर उत्तम औषध है ।

दूसरा प्रयोग ।

दाख, चंदन, मजीठ, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, मिश्री सितावर, मेदा, प्रपौंडरीक, मुलहटी और नीलोफर प्रत्येक एक

लगावे । नीलाथोथा के बाद करावादीनों में लिखी हुई दवा भी मिला लेनी चाहिये ।

अब हम कुछ सुर्मे वा अन्य नुसखे लिखते हैं जो आंखोंकी ज्योति बढाने में लाभकारकहैं, इनको रोगी की प्रकृति और दोष के अनुसार काम में लाना उचित है ।

गुलमुंडी का शर्बत ।

मुंडी के फूल पावसेर. लेकर रातको डेढ सेर पानी में भिगो दे और प्रात काल औटावे, जब तिहाई शेष रहे तब उतार कर छानले, इसमें तीन पाव बूरेकी चाशनी करके रखले, इसको प्रतिदिन चार तोले सेवन करने से आंखोंकी ज्योति ठीक रहती है, मस्तक को तरी पहुंचती है और ऊपर को गरमी नहीं चढने देती है ।

सौंफ का प्रयोग ।

सात माशे सौंफ को कूटछान कर समान भाग बूरा मिला कर प्रतिदिन रात के समय फाक लिया करे तथा सौंफ का इत्र आंखों में लगाता रहे । इससे दृष्टि बढती है ।

तिमिरनाशक घृत ।

चार तोले जीवंती को ढाईसेर जलमें पकावे, चौथाई शेष रहने पर उतार कर छानले, फिर इस क्वाथमें दुगुना दूध आधसेर घी डालकर पकावे और इसमें प्रपौंडरीक, काकोली, पीपल,लोध, सेंधानमक, सौंफ, मुलहटी,दाख, मिश्री, देवदारू, त्रिफला प्रत्येक एक माशे डालकर पिया करे तो तिमिररोग जाता रहता है यह इस रोग पर उत्तम औषध है ।

दूसरा प्रयोग ।

दाख, चंदन, मजीठ, काकोली,क्षीरकाकोली, जीवक,मिश्री सितावर, मेदा, प्रपौंडरीक, मुलहटी और नीलोफर प्रत्येक एक

अपची और कोढ तथा विशेष करके फूला, धुध, तथा अन्य दृष्टिरोग जाते रहते हैं।

सीसे की सलाई।

सीसे को आगमें गला गला कर त्रिफला के काढे भांगरे के रस, घी, बकरी के दूध, मुलहटी के रस, मेह के पानी और शहत में अलग अलग सात सात बार बुझाकर इसकी सलाई बनवा लेवै, इस सलाई को आंखों में फेरनेसे तिमिररोग, अर्म, स्राव, गिलगिलापन, खुजली, सुन्नता और लाल डोरे जाते रहते है।

अन्य उपाय।

(१) हिंगोट की मिंगी को पानी में रिगड कर आंखमें लगाना हित है, (२) निर्मली को पानी में घिसकर आंखो मे लगाने से ज्योति बढती है, (३) सिरस के पत्तो के रस में एक कपडे को तीन बार भिगो भिगो कर सुखाले फिर इस कपडे की बत्ती बनाकर चमली के तेल में काजल पाडकर लगाना भी उक्त गुण करता है। (४) प्याज के रस में शहत मिलाकर लगाना भी दृष्टिवर्द्धक है।

दृष्टिवर्द्धक सुरमा।

काली मिरच सोलह, पीपल साठ, चमेलीकी कली पचास, तिलके फूल अस्ली; इन सबको खरल करके सुरमा बना आंखों में लगावे।

दूसरा प्रयोग।

काली मिरच एक माशे, वडी हरड का बक्कल दो माशे, हलदी छिली हुई तीन माशे, इनको गुलाबजल के साथ घोट-कर सुरमा बनाकर लगावे।

तीसरा सुरमा ।

अखरोट दो, हरड़की गुठली तीन, इन दोनों को जलाकर महीन पीसले और इसी में चार काली मिरच मिलाकर सुरमे की तरह महीन पीसकर आंखों में लगावे ।

अन्य सुरमा ।

नीम के फूलोंको छाया में सुखाकर समान भाग कलमी शोरा मिलाकर महीन पीसकर लगावे तो नेत्रोंकी ललाई जाती रहती है ।

अन्य सुरमा ।

रुई को आक के दूध में भिगोकर सुखाले, फिर इसकी बत्ती बनाकर सरसों के तेल में काजल पाड़कर कांसी की थाली में रखकर पैसे लगे हुए नीमके घोटे से घोटे; फिर सलाई द्वारा आंखों में लगावे ।

भास्कराञ्जन ।

आठ तोले नीलाथोथा के छः बेरकी लकड़ियों में जलाकर पहिले बकरी के दूध में, फिर घी में फिर शहद में बुझावे फिर इसमें सोनामक्खी, काली मिरच, अंजन, हल्दी, तगर, सेंधा नमक, लोध, मनसिल, हरड़, पीपल, रसौत, समुद्रफेन और मुलहटी हरएक एक तोला इन सबको भूगर्भयंत्र में भरकर जला देवे । यह भास्कराञ्जन प्रतिदिन लगाने से काचबिंद, अर्म, रतौंध, रक्तराजी और विशेष करके तिमिर रोग को ऐसे नष्ट कर देता है जैसे सूर्य अंधकार का नाश कर देता है ।

दूसरा भास्कराञ्जन ।

सीसा तीन भाग, गंधक दोय भाग, तांबा और हरताल दो दो भाग, रांग एक भाग, सौवीरांजन तीन भाग इन सब को अंधमूषा यंत्र में भरकर फूंकदे । यह अंजन जैसा श्री

निर्मल कर देता है और तिमिर रोग को दूर करने में दूसरे सूर्य के समान है।

दृष्टिवर्द्धक नीलाथोथा।

नीलेथोथे का एक टुकडा लेकर बारबार अग्नि में तपाकर गो मूत्र, गोवर का रस, खट्टी कांजी, स्त्री के स्तनों का दूध, घी, विष और शहत में वारवार बुझावे। इस नीलेथोथे का अंजन लगाने से दृष्टि गरुड के समान हो जाती है।

तिमिरनाशक सुरमा।

पाराऔर सीसा समान भाग।इन दोनों के बराबर सुरमा और सोलहवां भाग कपूर मिलाकर सबको बारीक पीसकर आखों मे आजने से तिमिर रोग जाता रहता है।

अन्य प्रयोग।

लाल लाल चमकीले कपोल वाला गिद्ध जो अपने आप मौत से मरगया हो उसका सिर काटकर आरने ऊपलों की आग में जलाले फिर उसके समान घी और सुरमा मिलाकर मर्दन करके आंखों में आंजे।इसके लगाने से गिद्धके समान तीव्र दृष्टि हो जाती है।

अन्य गोली।

बहेडे का बीज,कालीमिरच,आमला,दालचीनी,नीलाथोथा,मुलहटी इनको जलमें पीसकर गोली बनाकर छायामें सुखवाले इस से तिमिररोग बहुत जल्दी जाता रहता है।

अन्य सुरमा।

कालीमिरच,आमला,कमल,नीलाथोथा,सुर्मा,और सोना माखी इन सब को एक एक भाग बढाकरले और अंजन बना कर आंखों में लगावे तो तिमिर,अर्म,क्लेद,काचरोग और खुजली ये सब जाते रहते हैं।

तीसरा सुरमा ।

अखरोट दो, हरडकी गुठली तीन, इन दोनों को जलाकर महीन पीसले और इसी में चार काली मिरच मिलाकर सुरमे की तरह महीन पीसकर आंखों में लगावे ।

अन्य सुरमा ।

नीम के फूलोंको छाया मे सुखाकर समान भाग कलमी शोरा मिलाकर महीन पीसकर लगावे तो नेत्रोंकी ललाई जाती रहती है ।

अन्य सुरमा ।

रुई को आक के दूध में भिगोकर सुखाले, फिर इसकी बत्ती बनाकर सरसों के तेल में काजल पाडकर कासीकी प्याली में रखकर पैसे लगे हुए नीमके घोटे से घोटे, फिर सलाई द्वारा आंखों में लगावे ।

भास्करांजन ।

आठ तोले नीलाथोथा लेकर बेरकी लकडियों में जलाकर पहिले बकरी के दूध में, फिर घी में फिर शहद में बुझावे फिर इसमें सोनामक्खी, काली मिरच, अंजन, कुटकी, तगर, सेंधा नमक, लोध, मनसिल, हरड, पीपल, रसौत, समुद्रफेन और मुलहटी हरएक एक तोला इन सबको मूषकयंत्र में भरकर जला देवे । यह भास्करांजन प्रतिदिन लगाने से काचरोग अर्म, रतौंध, रक्तराजी और विशेष करके तिमिर रोग को ऐसे खो देता है जैसे सूर्य अंधकार का नाश कर देता है ।

दूसरा भास्करांजन ।

सीसा तीन भाग, गधक पांच भाग, तांबा और हरताल दो दो भाग, बंग एक भाग, सौवीरांजन तीन भाग इन सब को अंधमूसा यंत्र में भरकर फूंकले । यह अंजन नेत्रों की

दूसरा भेद।

इसका यह कारण है कि सिर और आंख माद्दे से भर गये हों और ग्रहण शक्ति तथा पाचक शक्ति निर्बल होगई हो इसमें दिमाग के साफ करने के लिये जुलाबदे और माद्दे के साफ करने के पीछे धुलाहुआ नीलाथोथा और दूसरे सुरमे जो इस काम के योग्य हों आंख में लगावे।

तरीसे उत्पन्न ढलके पर सुर्मा।

नीलाथोथा और हरडकी छाल इन दोनों को अलग अलग खरल करके समान भाग ले और इनको खट्टे अंगूर के रसमें सानकर सुखाले और पीसकर रखले।

तीसरा भेद।

गर्मी के कारण से होता है इसमें आंख जल्दी जल्दी चलती है और आंसू गरम तथा पतले बहते हैं।

चौथा भेद।

यह सर्दी के कारण से होता है, एकतो यह कि बाहर से सिर में सरदी पहुंचने से आंसू बहने लगते हैं. जैसा कि जाडे के दिनों में प्रातःकाल के समय हवा लगने से आंखों में से पानी बहने लगता है दूसरा अधिक हसने से भी आंखों में से पानी बहने लगता है।

गरमी से उत्पन्न ढलके का इलाज।

धुला हुआ शादनज, नीलाथोथा और सोनामक्खी प्रत्येक साढे तीन माशे मोती और मूगेकी जड प्रत्येक पौने दो माशे, शियाफ मामीसा और एलुआ प्रत्येक नौ रत्ती इनको कूटछान कर सुरमा बनाकर लगावे।

ठंडे ढलके का इलाज।

काली मिरच नमकसंग हरएक साढे तीन माशे, पीपल

दृष्टिबलकारक नस्य

तिल का तेल, बहेडे का तेल, भांगरे का रस और आमले का क्वाथ इन सबको लोहे के पात्र में पकाकर सूंघने से दृष्टि बलवान होजाती है।

ढलके का वर्णन।

जिस रोग में आखों से पानी बहा करता है उसे ढलका कहते हैं, इस रोग में फुंसी, सूखी खुजली, पलक में खुरखुरापन या बालों का उलटना कुछभी नहीं होता है। कभी यह रोग इतना बढ जाता है कि सदा आंसू बहा ही करते हैं। और कभी इसके बढने से पुतली में सफेदी पैदा होजाती है।

यह रोग दो कारणों से होता है, एक जन्मसे, दूसरा पीछे किसी ऊपरी कारण से।

जो जन्मसे होता है उसका तो इलाज ही नहीं हो सकता और जो बाहरी कारण से होता है उस में भी उस ढलके का इलाज नहीं हो सकता जो आंख के कोए में होने वाले मांस के अधिक काट देने से हो जाती है।

जो कोएका मास सब का सब या बहुत सा कट गया हो तो जरूर अफमर और शियाफ जाफरान आंखमें लगावे, तथा एलुआ, कुंदरू गोंद, शियाफ मामीसा आदि से दवा जो मांस पैदा करनेवाली हैं लगाना उचित है।

शियाफ जाफरान के बनाने की विधि।

केसर और बालछड प्रत्येक सात माशे, पीपल साडे तीन माशे, सफेद मिरच नौ रत्ती, नौसादर पौने दो माशे, माजूफल साढे दस माशे, कपूर तीन रत्ती, इन सातों दवाओं को कूट छान कर गुलाब में घोटकर सलाई बना लेवें।

दूसरा भेद।

इसका यह कारण है कि सिर और आंख माद्दे से भर गये हों और ग्रहण शक्ति तथा पाचक शक्ति निर्बल होगई हो इसमें दिमाग के साफ करने के लिये जुलावदेवे और माद्दे के साफ करने के पीछे शुधाहुआ नीलाथोथा और दूसरे सुरमे जो इस काम के योग्य हों आंख में लगावे।

तरीसे उत्पन्न ढलके पर सुर्मा।

नीलाथोथा और हरडकी छाल इन दोनों को अलग अलग खरल करके समान भाग ले और इनको खट्टे अंगूर के रसमें सानकर सुखाले और पीसकर रखले।

तीसरा भेद।

गर्मी के कारण से होता है इसमें आंख जल्दी जल्दी चलती है और आंसू गरम तथा पतले बहते हैं।

चौथा भेद।

यह सर्दी के कारण से होता है, एकतो यह कि बाहर से सिर में सरदी पहुंचने से आसू बहने लगते हैं जैसा कि जाडे के दिनों में प्रातःकाल के समय हवा लगने से आंखों में से पानी बहने लगता है दूसरा अधिक हसने से भी आंखों में से पानी बहने लगता है।

गरमी से उत्पन्न ढलके का इलाज।

धुला हुआ शादनज, नीलाथोथा और सोनामक्खी प्रत्येक साढे तीन माशे. मोती और मूंगेकी जड प्रत्येक पौने दो माशे, शियाफ मामीसा और एलुआ प्रत्येक नौ रत्ती इनको कूटछान कर सुरमा बनाकर लगावे।

ठंडे ढलके का इलाज।

काली मिरच नमकसंग हरएक साढे तीन माशे, पीपल

सात माशे, समुद्रफेन पौने दो माशे, और इन सब दवाओं से तिगुना सुरमा डालकर सबको कूटछान कर अंजन बना लेवे।

आंखकी निर्बलता का उपाय।

पीली हरडकी गुठली की राख, नमकसंग और माजू इन तीनों को बराबर कूट पीसकर आंख में लगावे।

शियाफ अहमरकी विधि।

धुला हुआ सादना इक्कीस माशे, बबूल का गोंद साढे सत्रह माशे, जला हुआ तांबा और जला हुआ जंगाल प्रत्येक सात माशे, अफीम और एलुआ प्रत्येक पौने दो माशे, केसर और मुश्की प्रत्येक आठ माशे इन सब को पीसकर सलाई बनाकर आंख में लगावे।

जो सर्दतर प्रकृति के कारण आंख से पानी बहता हो तो बासलीकून लगाना बहुत लाभदायक है। इसके बनाने की विधि पीछे लिख चुके हैं।

ढलके पर हरीतक्यादि बटी।

बडी हरड, बहेडा और आमला इन तीनोंकी गुठलियों की मिंगी निकालकर सबको समान भाग लेकर महीन पीसकर गोली बना लेवे। इसको पानी में घिसकर आंखों में लगाने से आंखों की खुजली और पानी निकलना बंद हो जाता है।

दूसरी गोली।

सिरस के बीज, काली मिर्च और बनफशा इन तीनों को समान भाग लेकर अलग अलग कूट छानकर शहद में मिलाकर आंखों लगाने से ढलका बंद हो जाता है।

तीसरा उपाय।

माजूफल, मालकंगनी(?), छोटी हरड और बडी हरड का छिलका इन सबों को समान भाग लेकर पानी में पीसकर गोली बना

ठवै। इस गोली को पानी में घिसकर लगाने से ढलका बंद हो जाता है।

चौथा उपाय।

सफेद कत्था, समुद्रफेन भुनी हुई फिटकरी, बडी हरड का छिलका, रसौत, अफीम, नीलाथोथा, इन सबको समान भाग लेकर पानी के साथ घोटकर बहुत महीन करले। इसको आंखमें लगाने से आंखोंकी खुजली, ललाई, पानी का बहना यह सब जाते रहते हैं।

पांचवां उपाय।

आबनूस की लकडी को घिसकर आंखों में लगाने से भी पानी बहना बंद हो जाता है।

बंगालतीनका वर्णन।

इस रोग में थोडी थोडी देर में आंसू निकल निकल कर बंद होजाते हैं। इसका यह कारणहै कि ऊपर वाला पलक कुछ मोटा होकर गदा होजाता है और उसके भीतर कुछ ऊंचा हो जाता है। इस उंचाई की रिगड से आंसू निकला करते हैं। यह रोग पलक के रोगों से संबध रखता है। परंतु इसमें भी आंसू बहते है। इस लिये ढलके के साथही लिखदिया है। इसका इलाज यह है कि देह को वमन विरेचन द्वारा शुद्ध करे। गरिष्ट और बादी करने वाले पदार्थो का सेवन त्यागदे। इस रोगमें कम खाना और पाचकशक्तिका बढाना उचित है।माद्दे को निकालने के लिये मामीसा बूल और केसर का लेप पलक के ऊपर करना चाहिये पीछे सिकताब करे जब सफाई हो चुके तब बासलीकून और शियाफ अहमर लगाना उचित है।

कुमना का वर्णन।

आंख के दर्द के पीछे जो लाली रह जाती है उसे कुमना

सात माशे, समुद्रफेन पौने दो माशे, और इन सब दवाओं से तिगुना सुरमा डालकर सबको कूटछान कर अंजन बना लेवै।

आंखकी निर्बलता का उपाय।

पीली हरडकी गुठली की राख, नमकसंग और माजू इन तीनो को बराबर कूट पीसकर आंख में लगावे।

शियाफ अहमरकी विधि।

धुला हुआ सादना इक्कीस माशे, बबूल का गोंद साढे सत्रह माशे, जला हुआ तांबा और जला हुआ जंगाल प्रत्येक सात माशे, अफीम और एलुआ प्रत्येक पौने दो माशे, केसर और सुरमकी प्रत्येक आठ माशे इन सब को पीसकर सलाई बनाकर आंख में लगावे।

जो सर्दतर प्रकृति के कारण आंख से पानी बहता हो तो बासलीकून लगाना बहुत लाभदायक है। इसके बनाने की विधि पीछे लिख चुके हैं।

ढलके पर हरीतक्यादि बटी।

बडी हरड, बहेडा और आमला इन तीनोकी गुठलियों की मिंगी निकालकर सबको समान भाग लेकर महीन पीसकर गोली बना लेवै। इसको पानी में घिसकर आंखो में लगाने से आंखो की खुजली और पानी निकलना बंद हो जाता है।

दूसरी गोली।

सिरस के बीज, काली मिर्च और बनफशा इन तीनों को समान भाग लेकर अलग अलग कूट छानकर शहत में मिलाकर आखों लगाने से ढलका बंद हो जाता है।

तीसरा उपाय।

माजूफल, बालछड, छोटी हरड और बडी हरड का छिलका इन चारों को समान भाग लेकर पानी में पीसकर गोली बना

लवै। इस गोली को पानी मे घिसकर लगाने से ढलका बंद हो जाता है।

चौथा उपाय।

सफेद कत्था, समुद्रफेन भुनी हुई फिटकरी, बडी हरड का छिलका, रसौत अफीम, नीलाथोथा, इन सबको समान भाग लेकर पानी के साथ घोटकर बहुत महीन करले। इसको आंखमें लगाने से आंखोंकी खुजली, ललाई, पानी का बहना यह सब जाते रहते हैं।

पांचवां उपाय।

आबनूसकी लकडी को घिसकर आंखों में लगाने से भी पानी बहना बद हो जाता है।

बगावतीनका वर्णन।

इस रोग में थोडी थोडी देर में आंसू निकल निकल कर बंद होजाते है। इसका यह कारणहै कि ऊपर वाला पलक कुछ मोटा होकर गदा होजाता है और उसके भीतर कुछ ऊंचा हो जाता है। इस उंचाई की रिगड से आसू निकला करते हैं। यह रोग पलक के रोगों से संबध रखता है। परंतु इसमें भी आंसू बहते हैं। इस लिये ढलके के साथही लिखदिया है। इसका इलाज यह है कि देह को वमन विरेचन द्वारा शुद्ध करे। गरिष्ट और बादी करने वाले पदार्थों का सेवन त्यागदे। इस रोगमें कम खाना और पाचकशक्तिका बढाना उचित है।मादे को निकालने के लिये मामीसा बूल और केसर का लेप पलक के ऊपर करना चाहिये पीछे सिकताब करे जब सफाई हो चुके तब बासलीकून और शियाफ अहमर लगाना उचित है।

कुमना का वर्णन।

आंख के दर्द के पीछे जो लाली रह जाती है उसे कुमना

कहते हैं । इसके तीन लक्षण हैं. एक तो यह कि गाढी रीह के कारण पलक में भारापन हो जाय और सोकर उठने पर रोगीको ऐसा मालूम हो कि आंख में धूल या मिट्टी पड गई है। इसका वर्णन पलक के रोगों में है।

दूसरा करनियां परदे के पीछे पीव इकट्ठा हो जाने से यह रोग हो जाता है । इस मे मेथी और अलसीका लुआब आंख में डालकर मवाद को पकावें तथा कई बार गरम पानी से स्नान करै, पीछे रूपामक्खी पीसकर आंख में लगावे ।

तीसरा यह है कि मुलतहिमा परदे में ललाई हो, इस में आंख के दुखने के समान आंख में सूखापन उत्पन्न हो जाता है और वादी की भाफ के परमाणुओं के उठने से दृष्टि निर्बल हो जाती है और चीजें ऐसी दिखलाई देने लगती हैं कि जैसे बादल और धूंए के भीतर आ गई हैं । आंख के परदों में ललाई और गदलापन हो जाता है, आंखों के चलाने फिराने में भारापन और सुस्ती होती है रोगी को अपनी आंख कुछ बड़ी मालूम होने लगती है । गरम पानी से धोने पर खुजली और भारापन कम हो जाता है ।

कुमना का इलाज ।

यारजात और अफतीमून के काढे के प्रयोग से मादा निकालना चाहिये और जरूर कुमना आंख में डाले । तथा मेथी, नाखूना, बाबूना, आदि मादे को पतला करने वाली दवा औटाकर आंखों पर सिकताव करे ।

जरूर कुमना के बनानेकी रीति ।

पीपल, मामीरा प्रत्येक १२ रत्ती, एलुआ ९रत्ती, पीलीहरड, सगुदफन, और रसौत प्रत्येक साढे तीन माशे इन सातों दवा ओंको कूट पीस कर बारीक कपडे में छान कर काम में लावे ।

इसीको कोई कोई हकीम सोंफके पानी में सानकर गोलियां बना लेते हैं और आवश्यकता के समय घिसकर आंखमें लगाते हैं।

कंजी आंखा का वर्णन।

जिस मनुष्यकी आंखों की पुतली बिल्ली की आंखों के समान सफेद होती हैं उन आंखो को कंजी कहते हैं। कंजापन दो तरह से होता है, एक जन्मसे, दूसरा जन्म लेनेके पीछे। जो जन्म से होता है उसका इलाज कुछ नही है सिवाय इसके कि उस लडके को काली धाय का दूध पिलाया जाय।

जन्म लेनेके पीछे कंजेपन के सात कारण हैं, जो कंजापन ठंडी प्रकृति से हुआ हो तो कडवे बादाम का तेल, बेद अंजीर का तेल, और रोगन गार नाक में सूंघना चाहिये। तथा शादनज, पीपल और पीली हरड आंख में लगावे। जो गरम प्रकृति हो तो ठंडी दवा जैसे समग अर्बी और ठंडे तेल नाक में डाले और काला सुरमा तथा बंशलोचन आंख में लगाना भी गुणकारक है।

गुलरोगन नाक में डालना बहुत गुणकारकहै चाहे कंजापन ठंडी प्रकृति से हो, चाहे गरम से।

जो कंजापन बचपन में होता है वह युवावस्था में अपने आप जाता रहता है।

कंजेपन को दूर करने के लिय केसरका तेल आंख में डालना बहुत ही गुणकारक है चाहे कंजापन किसी कारण से हो।

इन्द्रायण के ताजफिल में सलाई भीतर करके उस सलाईको फेरने से कंजापन दूर हो जाता है हकीमों ने यहा तक लिखाहै कि इससे बिल्ली की आखभी काली होजाती है।

जो रोग खुश्की से होता है उसमें दिखलाई देना बिलकुल

बद हो जाता है इसमें जहातक बने तरी पहुंचाने का उपाय करना चाहिये ।

खुश्की के और नजले के कंजेपन में यह अतर है कि इसमें आंख के सामने भुनगे आदि उडने हुए दिखाई नही देते। आंख का बनाना और पानी निकालनाभी कुछ लाभ नहीं पहुँचाता तथा आख दुबली हो जाती है। नजले के कजेपन में इसके विपरीत लक्षण होते है ।

कुमूर का वर्णन ।

जब कोई आदमी निरंतर किसी सफेद चमकीली वस्तुओं को देखता रहता है जैसे सूरज चांद वर्फ वा जलता हुआ लैम्प आदि । इस से दृष्टि धुंधली वा निर्बल होजाती है । कभी कभी बिलकुल मारी जती है। इस रोग को कुमूर कहते हैं इसका इलाज यह है कि एक काला कपड़ा मुख पर लटकावे, काले कपडे पहन ले और आख के नीचे काली पट्टियां बांध दे। स्त्री का दूध आख में डाले, जिससे रुह गाढी होजाय, आंख के परदे नरम होजांय ।

अगर निरंतर वर्फ देखने से यह रोग हुआ हो तो कडवे बादाम कूट पीसकर आख के ऊपर लेप करदे । और गरम पानी से सिकताव करना भी लाभदायक है। सलगम और लहसन के ताजे पत्ते, या इनके सूखे हुए छिलके, जूफाखुश्क, अकलीलुलमलिक, और बाबूना इन को पानी मे औटाकर बफारा दे अथवा चक्की के पत्थर को गरम करके उस पर निर्मल शराब डाल कर आख को बफारा दे अथवा तांबे को गरम करके उस पर शराब डालकर बफारा देवे ।

सल्हुलएन का वर्णन ।

इस रोग मे आख का ढेला दुबला पड जाता है, यहां तक कि

पलक उससे मिल जाते हैं और कभी खुश्की के कारण दीखना बिलकुल बंद हो जाता है । जब यह रोग वृद्ध मनुष्यों के हुआ करता है, तब इसका इलाज कठिन होता है, तथापि जहां तक हो तरी पहुंचाने का यत्न करना चाहिये। जब यह जवान आदमियों के होता है तो बहुधा एक ही आंख में हुआ करता है । जो यह रोग मवाद की गाठ से हुआ हो तो गांठ के खोलने का उपाय करे फिर सिर में तरी पहुंचावे। अगर मवाद की गाठ से न हुआ हो तो केवल तरी पहुंचाना ही उचित है।

आंख के बाहर निकल आने का वर्णन ।

इस रोग के तीन कारण हैं, एक तो यह है कि वादी के मवाद के आंख मे इकट्ठा हो जाने से आंख का ढेला बाहर को निकल पडता है, इस में मवाद को निकालने वाली दवाऐं काम में लावे, फिर शियाफ सिमाक लगावे ।

शियाफ सिमाक की विधि ।

सिमाक को पानी में औटाकर छान ले और इस छने हुए पानी को फिर औटावे कि गाढा होजाय तब इसमे रांग का सफेदा एक भाग, कपूर चौथाई भाग, कतीरा छटा भाग मिलाकर सलाई बना लेवे ।

दूसरा कारण यह है कि गला घुटना, सिरदर्दकी अधिकता, वमन, बहुत वेगसे चिल्लाना । मलकारुकना, प्रसव वेदना, किंचन', श्वास रुकना, इन कारणों से आंखका ढेला बाहर निकल पडता है । इस दशा में सीसेका एक टुकडा वा एक थैली में बारीक सुरमा भर कर गुद्दी के ऊपर रक्खे और आंख के ऊपर कसकर पट्टी बांधदे और रोगी को सीधा सुलादे । तथा मवाद के रोकने वाले लेप जैसे अनारकी छाल अकाकिया, फलोक और उसारे लहियतुम आंख पर लगावे ।

बहुत ठंड पानी से मुख धोना भी इस रोगमें लाभकारक है पर कभी केवल ठंडे पानी से मुख धोनेसे लाभ नहीं होता है तब ऐसा करे कि अनार के फूल, जैतून के पत्ते और खश-खाश के पत्ते पानी में औटा कर इस पानी को ठंडा करके मुख धोवे ।

तीसरा कारण यह है कि आंखके जोड़ों के ढीले होने से आंख का ढेला बाहार तो नहीं निकलता पर बेचैनी और निःबंलता अधिक हो जाती है । इसमें आंखके बंधनों को सुस्त करने वाली रतूबतों के निकालनेके लिये अयारजात किबार देवे। फिर इमली के बीज की राख, गुलाब के फूल, कुदरू गोंद और बालछड आंख के ऊपर लगावे ।

मोतियाबिंद का वर्णन ।

एक रतूबत सिर से उतरकर आंखके तीसरे पर्दे के छेद में आकर करनिया परदे तथा रतूबत बेजिया के बीच में ठहर जाती है यही छेद प्रकाश के आने जाने का मार्ग है। जब इस छिद्र का जितना भाग उक्त रतूबत से बंद होजाता है, उतनी ही आख की दृष्टि नष्ट होजाती है, और शेष खुले हुए भाग से यथावत् दिखलाई देता है। इस रोग के कारण और लक्षण बहुत सेहैं, पर ये सब विस्तार भयसे यहां नहीं लिखे गयेहैं ।

बचकी माजून ।

बच, हींग; सोंठ और सोंफ इन चारो को समान भाग लेकर कूट छान कर शुद्ध सहत में मिलाले, इसमें से प्रतिदिन प्रातः काल ४। माशे सेवन करे ।

इत्रुज्जहबके बनानेकी विधि ।

एलुआ २५ माशे, तुर्बुद २४॥ माशे, मस्तगी, गुलाबके

फूल प्रत्येक ८॥। माशे, केशर १॥। माशे, पीली हरड़ १७॥ माशे, सकमूनिया १२। माशे, इसकी मात्रा ९ माशे है, इस नुसखेकी तोल में रोगी की दशा के अनुसार न्यूनता वा अधिकता करना हकीम की सम्मति पर निर्भर है।

अन्य उपाय।

दोना मरुआ, कलौंजी और चमेली सूंघना, तथा दोना-मरुआ का तेल सिर पर लगाना लाभदायक है।

अन्य उपाय।

(१) निर्मली शहत मे पीसकर आंखों में लगावे,(२)प्याज का रस शहत में मिलाकर आंख में लगाना लाभदायक है। (३) गोंदी की मिगी दो भाग अफीम एक भाग, इसको घिसकर आंख में आंजे। (४) नौसादर को बारीक पीसकर आंखों में आंजे। (५) हींग को शहत में घिसकर लगाना भी अच्छा है (६) सफेद चिरमिठी का रस और नीबूका रस दोनों मिलाकर प्रातःकाल नेत्रों में लगावे, (७) दस तोले इमली के पत्ते कांसी के पात्रमे पैसे लगे हुए नीम के दस्ते से घोटे, इसमें बेटेकी माका दूध डालता रहे। फिर आंखमें लगावे। (८) सौंफको जलाकर बारीक पीस आंखमे लगावै, (९) अबाबील के सिर की राख शहत मे मिलाकर लगाना भी लाभदायक है।(१०) भीमसेनी कपूर लडके की माता के दूध में घिसकर लगाना भी लाभदायक है। (११) निर्मली, हींग, फिटकरी, सफेदा, खपरिया और नीला थोथा। प्रत्येक १४ माशे, इन सबको महीन पीसकर दही के साथ घोटता रहे, जब आठ सेर दही उसमें सूख जाय तब गोली बनाकर आवश्यकता के समय स्त्रीके दूधमें घिसकर आंखों में लगावे।

परवाल का वर्णन ।

जब पलक में कोई ऐसा बाल उगे जो उलट कर आंखके भीतर चुभने लगे, तो उसे परवाल कहते हैं । इससे आखकी रगें लाल हो जाती है, आंसूनिकलनेलगते हैं और खुजली चला करती है । तथा कोई बाल पलक के भीतर उगकर आंखों मे चुभाकरता है, इसे भी पर वाल कहते है ।

इस रोगका कारण दुर्गंधित तरी है, जिससे वहां मवाद इकट्ठा होने लगता है और नयाबाल जमजाता है, इस मवादको देह सेसाफ करने का उपाय करे ।

इस का उपाय पांच प्रकार से किया जाता है यथा (१) दवा लगाना, [२] निकम्मेवाल को अच्छे बालों से चिपटा देना, (३) दाग देना, [४] सीं देना और [५] काटना । [१] लगाने की दवा येहैं जैसे बासलीकूना, रासनाई कर्नार, शियाफ अखजर, अहमर हाद ।

(२) निकम्मे बाल को अच्छे बाल में लगाना--बबूल का गोंद और कतीरा पानी में भिगोकर उनका चेप उंगली पर लगाकर निकम्मे और अच्छे बालों को चिपटा कर सुखा देवे ।

(३) दागना--दागनेकी यह रीति है कि पलक को उलट कर भीतर के बाल को चिमटी से उखाड कर उस जगह को एक औजार से दागदे ।

यह औजार सुईके बराबर होता है, जो इसी कामके लिये बनाया जाता है दागने के समय आंखको औजार की गरमी से बचाने के लिये आखमे गुदा हुआ आटा भर देना चाहिये । दागने के पीछे अंडेकी सफेदी और गुलरोगन मिलाकर दागने की जगह पर लगा देना चाहिये । पहिले दागका चिन्ह और कष्ट जब तक रहे तबतक दूसरी बार न दागना चाहिये ।

एक सब से अच्छा उपाय यह है कि बालको उखाडकर उस जगह पर थोडासा नौसादर रिगड़ देवे अथवा नदी के रहने वाले हरे मेंडक का रुधिर अथवा कुत्तेकी कलीलियों का रुधिर अथवा खुटक बढैया का पित्ता, चेंटियों के अंडे वा अजीर का दूध। इनमें से जो मिल सके उस जगह पर लगा देवे। इस से नये बाल उगने नहीं पाते है। अथवा समुद्रफेन को ईसबगोल के लुआब मे मिळाकर लगाने से बालोंकी जगह सुन्न पड जाती है।

नासूर का वर्णन।

यह रोग नाक के कोए की तरफ होती है। इस जगह जो मवाद इकट्ठा हो जाता है वह कभी नाककी तरफ फूट निकलता है और कभी पलककी खालको फाडकर बाहर निकल आता है, तथा पलकको दाबने से राध निकल पडती है। एक प्रकार का ऐसा नासूर होता है जिसमें पीव बाहर नहीं निकलती भीतरही भीतर दरद होता रहता है।

नासूर का इलाज।

घाव के इलाज के अनुसार देह को मवाद से साफ करके नासूर पर शियाफ गर्व लगाना चाहिये। इस दवा के लगानेसे पहिले घाव को रुई से पोंछकर साफ करलेना चाहिये और सडे हुए मांस को अस्त्र से वा जंगारी मरहम से काटकर साफ कर दे। बिना काटे दवा लगाने से कुछ लाभ न होगा। इससे आराम न हो तो नासूरकी जगह गरम लोहे से दागकर मरहम असफदाज लगा देना चाहिये।

शियाफगर्वकी रीति।

एलुआ, कुन्दरूगोंद, अजरूत, दम्मुल अखवैन, अनार के फूल, सुर्मा, फिटकरी, इन सबको एक एक भाग, जंगार चौथाई भाग। इनको पीस कूटकर गोली बना लेवे और अवश्य-

कताके समय पानी मे घोलकर दो तीन बूंद आंखमें टपकावे।

जब तक सूजन फूटी न हो तब तक मामीसा, केसर, सुर्ं एलुआ, जली हुई सीपी, इनमे से जो मिलजाय इसीको कासनी के पानी में मिलाकर लेप करै।

अन्य उपाय।

(१] उरदको चबाकर नासूर पर लगाना गुणकारक है (२) कुटी हुई मटर को शहत मे मिलाकर लगाना (३) दरूगोंद को कबूतरकी बीट मे मिलाकर लगाना (४) फिटकरी को पीसकर सुरुबीनज को सिरके में मिलाकर लगाना चाहिये। इन दवाओं से मवाद पककर खालको फाड देता और हड्डी को भी नहीं सडने देता है।

सूजन के पकने पर बूल और मोलसरी पीसकर नासूर छेद मे भर देना उत्तम है। अथवा पिसी हुई जगा मे बत्ती लपेट कर भर देवे।

अन्य उपाय।

[१] सीप, एलुआ और बूल इन तीनोंको मिलाकर पीले यह दवा नासूर में सुख होने से पहिले वा पीछे भी लगाई जाती है (२) तुलसी के पत्तों को पानी मे पीसकर उसमें बत्ती सान कर घाव में रखदे [३] सूखे हुए सिमाक का पानी टपकाना लाभदायक है।

बंद नासूरका उपाय।

जो नासूर का मुख बंदहो जाय और पीव न निकले न हो कनूचे के बीज कूटकर स्त्री वा गधी के दूध में पकाकर थोड़ी सी केसर डालकर नासूर पर रखने से उसका मुख खुल जाता अथवा मैदाकी रोटी का गूदा और कुंदरू गोंद पीसकर सौंफ के पानी में सानकर लगाने से भी नासूर का मुख खुलता

नासूर पर मुष्टियोग ।

(१) सेलखडी को अरडके तेल मे घोटकर उसमें बत्ती सानकर नासूर में भरे । [२] दीपककी कीचड कपडे पर लगाकर नासूर पर रक्खे [३] बथुए के पत्ते और तमाखूके फूल इनको घी में घोटकर नासूर पर लगावे [४] हुक्के के नहचे की कीचड और अफीम दोनों को समान भाग लेकर बत्ती बनाकर नासूर पर रक्खे [५] समुद्रशोख को पानी मे घोटकर नासूर मे भरे । (६) नीमके पत्ते और पेवंदी बेर के पते पीसकर कपडे में छानकर लगावे । [७] सफेद कत्था और एलुआ इनको पीसकर नासूर पर रक्खे [८] कुते की जीभ की राख मनुष्य के थूक में सानकर लगावे (९) गिलोय और हलदी दोनोंको कूटकर मीठेतेलमें औटाकर कपडेमे छानकर नासूर पर लगावे [१०] शहतको औटाकर समुद्रफेन मिलाकर उसमें रूईकी बती भिगोकर नासूर पर रक्खे [११] बिनी हुई मसुर और अनार का छिलका दोनोंको समान भाग पीसकर लगावे (१२) रसौत, गेरू, जवाहरड और पोस्तके डोरे इनको पीसकर लगावे [१३] हीरा हींग को सिरके मे घोटकर गुनगुना करके लगावे ।

मरहम असफेदाज ।

चार तोले रोगनगुल में एक तोले मोम पिघलाकर इसमें इतना सफेदा मिलावे कि मिलकर एक गोलासा बनजाय फिर इसम अंडेकी सफेदी मिलादे । कभी कभी थोडासा कपूरभी मिला देते है । दूसरीविधि यह है कि केवळ सफेदा सफेद मोम और रोगनगुळ इन तीनों कोही मिळाकर मरहम बनालेतेह

तुरफा का वर्णन ।

इस रोगमें रुधिर की लाल,काळी वा नीली बूंद मुलतहिमा

परदे पर पड जाती है। यह रोग तमांचे वा आख पर चोट लगने से या मादे के भर जानेसे, या रुधिर की गरमी से, या जोरसे चिल्लाने से, बहुत डोलने फिरने, वा श्वास रुकने से होजाता है।

तुरफेका इलाज।

प्रथम ही रुईका एक फोआ अंडेकी सफेदी और जर्दी में सानकर आंख पर बांधकर रोगीको सीधा सुलादे। जब दरद कम होजाय तब कबूतर के परका गरम गरम रुधिर आखमें टपकादे। अथवा इस रुधिरमे गिलअरमनी, गेरू और खडिया पानी में पीसकर मिलालेनाभी अच्छा है। रोग के घटनेपर कुन्दरुगोंद ब्रूल और उशक कबूतर के रुधिर में मिलाकर लगावे। अथवा मुनकाके दाने निकालकर मकोयकी पत्ती, ताजा पनीर सधा-नमक मिलाकर आखके ऊपर लेपकरे। कुन्दरकी धूनी देना भी लाभदायक है।

नाखूनाका वर्णन।

यह रोग आंखके बडे कोएकी तरफ पैदा होता है, कभी कभी छोटे कोएकी तरफ वा दोनो ओरसे होता है यहांतक कि पुतलीको भी ढकलेता है। इस रोग पर शियाफ बीजज, शियाफ दीनारगू, और बासलीकन अकबर। ये दवाएं काममें आती हैं।

शियाफ बीजज के बनानेकी रीति

सुरमा नीला और शादनज प्रत्येक ५ माशे, चांदीकामैल ७ माशे, छरीला, कुन्दरगोंद और पीपल प्रत्येक ५ माशे। इन में से छरीला और कुदरूगोंद को शराब में घिसले और सब दवाओं को खूब पीसकर इसमें मिलाकर बत्ती बनालेवे।

शियाफ दीन रगूंकी विधि।

सिंगरफ, तावाजलाहुआ, हरताललाल, कुदरूगोंद; मिश्री और हिंदी छरीला, प्रत्येक एक भाग; मुर केसर और हल्दी

प्रत्येक चौथाई भाग इन सबको पानीकेसाथ खरल करके बत्ती बनालेवे ।

अन्यगोली

सिरके और खिरनी के बीजोंकी मिंगी को सिरसके पत्तोके रसमे खरल करके गोली नाबलेवे और इसको स्त्रीके दूधमें घिस कर आखमें लगानेसे फूली और जाला जाता रहता है ।

दूसरी गोली

जवाहरड, पलासपापडा, सेंधानमक,लालचंदन इन की गोली को पानी मे घिसकर लगानेसे फुली और जाले जाते रहतेहैं ।

तीसरी गोली ।

समुद्र फलकी मिंगी, रीठाकी मिंगी, खिरनीके बीजोंकी मिंगी इनको समान भाग लेकर नीबूके रसमें गोली बनाकर आखोंमें लगाने से फूली, वाफनी गलजाना और मोतियाबिद को आराम हो जाता है ।

चौथी गोली ।

लालचंदन और फूलीहुई फिटकरी इन दोनोंको समान भाग लेकर ग्वारपाठे मे खरल करके गोली बनालेवे और आवश्यकता के समय पानीमें घिसकर आखमें लगावे ।

पाचवीं गोली ।

साबुन छ: तोले, नीलाथोथा और राल प्रत्येक साडेतीन माशे, इन में से साबुन के छोटे छोटे टुकडे करके लोहेके पात्र मे रख आगपर लगावे । फिर नीलाथोथा पीसकर मिलादे । पीछे रालको पीसकर मिलादे । इसको आगके ऊपर ही लोहेके दस्ते से घोटना रहै, जब कालापडजाय तब उतारकर रखले । इसमे से एक खसखसके दानेके बराबर सीपीमें रिगडकर आखमें लगावे इस तरह तीसरे दिन लगाता रहै इससे न.खूना सफेदी और नजलेका पानी सबको आराम होजाता है ।